इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ

बीएचआईसी-106

आधुनिक पश्चिम का उदय-I

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

विशेषज्ञ समिति

डॉ. नलिनी तनेजा (*रिटायर्ड*)
स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली

प्रो. कपिल कुमार (*संयोजक*)
अध्यक्ष, इतिहास संकाय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. रोहित वांचू
इतिहास विभाग,
सेंट स्टीफन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली

प्रो. अरविन्द सिन्हा (*रिटायर्ड*)
सेन्टर फॉर हिस्टोरिकल स्टडीज़,
जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली

श्री अजय माहुरकर,
इतिहास संकाय,
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ,
इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. श्रीकृष्णा (*रिटायर्ड*)
इतिहास संकाय,
इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय,
रेवाड़ी, हरियाणा

प्रो. स्वराज बासु,
इतिहास संकाय,
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ,
इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. आभा सिंह
इतिहास संकाय,
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ,
इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. शशिभूषण उपाध्याय
इतिहास संकाय,
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ,
इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. अमर फारूखी
आचार्य इतिहास विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली

पाठ्यक्रम संयोजक : श्री अजय माहुरकर

पाठ्यक्रम निर्माण दल : श्री अजय माहूरकर,
प्रो. श्रीकृष्णा (सलाहकार)

पाठ्यक्रम श्रेय

इकाई सं.	इकाई लेखक
इकाई 1, 2 एवं 3	प्रो. श्रीकृष्णा, (*रिटायर्ड*), इतिहास विभाग, इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय, मीरपुर, रेवाड़ी
इकाई 4	डॉ. विनीता मलिक, दिल्ली विश्वविद्यालय
इकाई 5, 6, एवं 7	डॉ. वी. के. सिंह, दिल्ली विश्वविद्यालय
इकाई 8	डॉ. मोनिका सक्सेना, दिल्ली विश्वविद्यालय
इकाई 9	कुमारी नीकिता वर्मा, शोध विद्यार्थी, इतिहास संकाय, इग्नू
इकाई 10	श्री अजय माहुरकर, इतिहास संकाय, इग्नू
इकाई 11	डॉ. स्मिता मित्रा, जेडीएम, दिल्ली विश्वविद्यालय

पाठ्य-सामग्री, प्रारूप और भाषा सम्पादन

श्री अजय माहुरकर **प्रो. श्रीकृष्णा (सलाहकार)**

अनुवाद

डॉ. दिव्या सेठी **शिखा प्रकाश** **स्वाति गोयल**

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

मुद्रण प्रस्तुति

श्री तिलक राज	श्री यशपाल
सहायक कुलसचिव (प्रकाशन)	अनुभाग अधिकारी (प्रकाशन)
इग्नू, एमपीडीडी	इग्नू, एमपीडीडी

मार्च, 2021

© ***इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2021***

ISBN :

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस सामग्री के किसी भी अंश को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में मिमियोग्राफी (चक्र मुद्रण) द्वारा अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के विषय में अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के कार्यालय, मैदान गढ़ी नई दिल्ली–110068 से अथवा इग्नू की आधिकारिक वेबसाइट www.ignou.ac.in से प्राप्त की जा सकती है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से कुलसचिव, एमपीडीडी द्वारा मुद्रित और प्रकाशित।

लेजर टाईपसेटिंग व मुद्रकः गीता ऑफसेट प्रिंटर्स प्रा. लि. सी-90, ओखला औद्योगिक क्षेत्र-1, नई दिल्ली-110020

पाठ्यक्रम विवरण

पृ. सं.

पाठ्यक्रम परिचय		**7**
इकाई 1	प्रारंभिक आधुनिक पश्चिम का परिचय	9
इकाई 2	सामंतवाद से पूँजीवाद में संक्रमण-विवाद-I	21
इकाई 3	सामंतवाद से पूँजीवाद की ओर संक्रमण-विवाद-II	33
इकाई 4	खोज की यूरोपीय समुद्री यात्राएँ (पंद्रहवीं और सोलहवीं शताब्दियाँ)	44
इकाई 5	आर्थिक प्रवृत्तियाँ : विस्थापन, नैरन्तर्य और रूपांतरण	66
इकाई 6	वृक्षारोपण (बागान) अर्थव्यवस्था, दास श्रम और दास व्यापार	88
इकाई 7	यूरोप में वाणिज्यिक क्रांति	107
इकाई 8	पुनर्जागरण काल : मानवतावाद, नये विचार और विज्ञान	127
इकाई 9	धर्म सुधार	140
इकाई 10	मुद्रण आधारित सार्वजनिक क्षेत्र का उद्‌भव	150
इकाई 11	यूरोपीय राज्य प्रणाली	159

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

पाठ्यक्रम प्रस्तावना

प्रारंभिक आधुनिक पश्चिम के उद्‌य पर यह पाठ्‌यक्रम चौदहवीं से सोलहवीं शताब्दी पश्चिमी के बीच यूरोपीय समाजों के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और बौद्धिक विकासों पर एक नजर डालता है, जो इस अवधि में कभी आगे को बढ़ते हैं और कभी पीछे को भी जाते हैं। जबकि हम इस अवधि के दौरान सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और बौद्धिक विकासों को देखते हैं, लेकिन हमें यह सावधानी रखनी है कि किसी का दर्जा दूसरे के मुकाबले घटाया ना जाए। कार्य-कारण सम्बन्धों को निर्धारणवादी तरीके से नहीं देखना है। उदाहरण के लिए, जब इकाई दस में मुद्रण द्वारा जन्में सार्वजनिक क्षेत्र के उदय को देखते हैं तब हम इस घटना की स्वतंत्रता और स्वायत्तता का वर्णन करना चाहते हैं। यह पाठ्‌यक्रम **इकाई एक** में प्रारंभिक आधुनिक पश्चिम की प्रस्तावना से शुरू होता है और फिर **इकाई दो** और **तीन** में मोरिस डॉब, ताकाहासी और गाई बोइस जैसे प्रतिष्ठित इतिहासकारों द्वारा सामंतवाद से पूँजीवाद में संक्रमण की व्यापकता की जाँच की गई है। यहाँ विभिन्न मतों के बीच की बहस को सावधानीपूर्वक प्रस्तुत किया गया है और यह स्पष्ट किया गया है कि वे कैसे एक दूसरे से भिन्न हैं। व्यापारिक वर्ग या वर्ग संघर्ष जैसे विभिन्न कारकों द्वारा निभाई गई भूमिका को जिस तरह विभिन्न विद्वानों ने उजागर किया है, उसे भी सावधानी से निरूपित किया गया है। **इकाई चार** इस अवधि में यात्राओं और खोजों पर दृष्टिपात करती है। यह हमें बताती है कि वैज्ञानिक और तकनीकी ज्ञान के विकास ने कैसे यात्राओं को सुविधाजनक बनाया। इसके परिणामस्वरूप स्पेन और पुर्तगाल द्वारा शुरू की गई प्रारंभिक औपनिवेशीकरण की प्रक्रियाओं का जन्म हुआ। यह प्रारंभिक औपनिवेशीकरण साम्राज्य, दासता, और दास व्यापार और यूरोप में बहुमूल्य धातुओं सोना, चाँदी के प्रवाह का सूत्रपात करता है जिससे पूँजीवाद का विकास हुआ। **इकाई पांच** सामन्तवाद से पूँजीवाद में संक्रमण की संस्थागत बुनियाद पर नजर डालती है। यह दिखाती है कि नये शहरी केन्द्रों के उदय ने यूरोप में व्यापार और विनिमय के लिए कैसे जगह बनाई। 1450 के दशक तक आते-आते, अकालों, बीमारियों और युद्धों के पूर्ववर्ती रुझानों को उलट दिया गया था और अब जनसांख्यिकीय पुनर्जीवन से जनसंख्या में वृद्धि हो रही थी। पुर्नजागरण और धर्म-सुधार ने नई खोजों आविष्कारों और कार्य नैतिकता का मार्ग प्रशस्त किया जिसने आगे प्रारंभिक पूँजीवाद में संक्रमण को संभव बनाया। वृक्षारोपण अर्थव्यवस्थाओं और दास व्यापार पर **इकाई छः** बारीकी से यह जाँच करती है कि कैसे वृक्षारोपण एक विस्तारित कृषि प्रबंधन तकनीकों और दासता पर आधारित था। यूरोप में चीनी के आगमन ने बागानों में बड़े पैमानों पर गन्ने की खेती को बढ़ावा दिया हालांकि शुरुआती बागानों को व्यक्तिगत उद्यमियों और निजी बैंकरों द्वारा वित्त-पोषित किया गया था लेकिन विशेषरूप से अमेरिका में स्थापित बागानों को राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के राष्ट्रीय उद्यमों के रूप में वित्त-पोषित किया गया था, जो विभिन्न यूरोपीय देशों के बीच गहन वाणिज्यिवादी प्रतिद्वन्द्विता के साथ आए। **इकाई सात** वाणिज्यिक क्रांति पर एक नजर डालती है जिसने इस अवधि में पूँजीवादी विकास की नींव रखी। व्यापारिक संघों का उदय, बैकिंग और बीमा क्षेत्रों की वृद्धि और धातु मुद्रा की सफलता ने इस वाणिज्यिक क्रांति को सुविधाजनक बनाया। **इकाई आठ** से **दस** इस अवधि के बौद्धिक विकासों पर दृष्टिपात करती हैं जिन्होंने प्रारंभिक आधुनिक विश्व के उदय को सुगम बनाया। **इकाई आठ** पुर्नजागरण पर है जिसने मानवतावाद, वैज्ञानिक खोजों, आविष्कारों और कला और सौन्दर्य शास्त्र में नये विश्व की बुनियाद रखी। पुनर्जागरण ने भी व्यक्ति को मानवीय विकास के केन्द्र में स्थापित किया। लियोनार्डो द विन्सी जैसे पुरुषों के योगदान ने एक नये वैज्ञानिक और सौन्दर्यवादी दृष्टिकोण के विकास को आगे बढ़ाया, जिसने मध्यकालीन और सामन्ती दृष्टिकोण को चुनौती दी। **इकाई नौ** में धर्म सुधार की जाँच पड़ताल की गई है जो दिखाती है कि पारम्परिक कैथोलिक दृष्टिकोण को चुनौती दी जा सकती थी। **इकाई दस** मुद्रण द्वारा जन्मे

सार्वजनिक क्षेत्र के उद्‌य की जाँच करती है जिसने पुनर्जागरण की पहुंच को व्यापक जनता तक पहुंचाया और वैज्ञानिक सोच और व्यवहार के प्रति नये दृष्टिकोण का निर्माण किया। वास्तव में सार्वजनिक क्षेत्र के विस्तार ने नये दृष्टिकोणों का निर्माण किया जिन्होंने उस सीमित क्षेत्र को चुनौती दी जिसके अन्तर्गत पांडुलिपियों की संस्कृति ने पुनर्जागरण की शुरुआत की थी। प्रिन्टर कार्यशाला एक ऐसी जगह बन गई जहाँ बौद्धिक और शारीरिक श्रम के बीच की खाई को पाटा गया और ज्ञान के प्रति नये और वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित किये गये।

इकाई ग्यारह राजनैतिक क्षेत्र के बारे में है और यूरोपीय राज्य प्रणालियों के विकास की जाँच करती है। यह पूर्वी और पश्चिमी यूरोप के बीच तुलना करने का प्रयास करती है ताकि यह बताया जा सके कि कैसे पश्चिमी यूरोप में पूँजीपति वर्ग के विकास ने पश्चिमी और पूर्वी यूरोपीय राज्य प्रणालियों के भीतर एक भिन्न शक्ति संतुलन को जन्म दिया। यह इकाई निरंकुशतावादी राजतंत्रों के उदय पर भी दृष्टिपात करती है और उनकी विशेषताओं की जाँच-पड़ताल करती है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 1 प्रारंभिक आधुनिक पश्चिम का परिचय*

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 प्रारंभिक आधुनिक पश्चिम को परिभाषित करने की समस्याएँ

1.3 प्रारंभिक आधुनिक पश्चिम को परिभाषित करती विशेषताएँ

1.3.1 एकल शक्ति केन्द्र का अभाव

1.3.2 नागरिक समाज की मजबूत परंपरा

1.3.3 व्यक्तिगत और सामूहिक के बीच प्रतिवाद

1.4 एक वैश्विक उन्मुखीकरण का निर्माण और भौगोलिक अन्वेषण का युग

1.5 व्यापार, उपनिवेश और वाणिज्यवाद

1.6 दास व्यापार में वृद्धि

1.7 मुद्रण और सूचना संचार

1.8 प्रारंभिक आधुनिक पश्चिम में सामाजिक संरचना

1.9 वाणिज्यिक क्रांति और इसके परिणाम

1.10 सामाजिक संस्थाएँ और विश्वविद्यालय

1.11 सारांश

1.12 शब्दावली

1.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.14 सन्दर्भ ग्रन्थ

1.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप निम्नलिखित चीजों को समझ सकेंगे:

- पारिभाषिक शब्द प्रारंभिक आधुनिक पश्चिम का अर्थ;
- प्रारंभिक आधुनिक पश्चिम की विभिन्न विशेषताएँ;
- प्रारंभिक आधुनिक पश्चिम की राजनीति और नागरिक समाज की विभिन्न विशेषताएं;
- इस अवधि में व्यक्ति और सामूहिक के संबंध को कैसे आकार दिया गया;
- इस अवधि में मुद्रण और वाणिज्यिक क्रान्ति ने कैसे आकार लिया; और
- इस अवधि की सामाजिक संरचना की प्रकृति।

1.1 प्रस्तावना

1970 के दशक में 'प्रारंभिक आधुनिक' पारिभाषिक शब्द को इतिहास लेखन में मान्यता प्राप्त हुई। इतिहासकारों की प्रसिद्ध रचनाएँ, पीटर बर्क की *पॉपुलर कल्चर इन अर्ली मॉडर्न यूरोप*

* प्रो. श्रीकृष्णा (*रिटायर्ड*), इतिहास विभाग, इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय, मीरपुर, रेवाड़ी

(1972), और *इकोनॉमी एंड सोसाइटी इन अर्ली मॉडर्न यूरोप* (1978) और नताली जेमॉन डेविस, *सोसाइटी एंड कल्चर इन अर्ली मॉडर्न फ्रांस* (1975) स्पष्ट रूप से इस शब्द के व्यापक उपयोग का संकेत देती हैं। यह यूरोपीय इतिहास के संदर्भ में मध्ययुगीन और आधुनिक इतिहास के बीच की अवधि का वर्णन करता है और यह आवधिकता की समस्या की प्रतिक्रिया है। यह समाज, अर्थव्यवस्था और लोकप्रिय संस्कृति के अध्ययन में रुचि रखने वालों को अधिक आकर्षित कर सकता है, जिनकी राजशाही शासनकाल या राष्ट्रीय घटनाओं की संकीर्ण सीमाओं के भीतर संतोषजनक ढंग से जाँच और व्याख्या नहीं की जा सकती है। हालांकि, हम अभी भी पुनर्जागरण का अध्ययन करते हैं, लेकिन कई विद्वानों ने इस शब्द के उपयोग पर आपत्ति जताई, जिसके बारे में उनका तर्क था कि जिसके अक्सर अभिजात्य या साहित्यिक कलात्मक अर्थ है और जिसका शायद ही कभी मुख्य यूरोपीय देशों (इंग्लैंड, जर्मनी, फ्रांस) में उपयोग किया गया था। धार्मिक सुधार आंदोलन के रूप में धर्मसुधार वास्तव में एक यूरोपीय घटना है, जिसने यूरोप में बड़े भौगोलिक भाग का परिग्रहण किया और जिसमें यह फैला। यूरोप में 'आधुनिकता' कैसे सामने आती है? यह आमतौर पर इतिहासकारों द्वारा मध्य युग और आधुनिक पश्चिम के उदय के बीच परिवर्तन की लंबी अवधि के रूप में देखी जाती है। इसमें सामंतवाद से पूँजीवाद, हस्तशिल्प से मशीनी औद्योगिक उत्पादन, ऊर्जा के चेतन रूप के उपयोग सें निर्जीव जीवाश्म ईंधन के ऊर्जा के स्रोत के रूप में उपयोग, धार्मिक एकरूपता से धर्मनिरपेक्षता तक और पूजा की स्वतंत्रता, अंधकार के युग से वैज्ञानिक तर्कसंगत युग तक संक्रमण शामिल था। इसमें विकेंद्रीयकृत राज्यव्यवस्था से लेकर केंद्रीयकृत राष्ट्र राज्यों और साम्राज्यों तक और सीमित, कुलीन प्रभुत्व वाली राजनीति से प्राकृतिक, अधिकारों स्वतंत्रता, समानता की अवधारणाओं पर आधारित लोकप्रिय राजनीति और एक 'सार्वजनिक क्षेत्र' का निर्माण भी शामिल था। ये विषय 'प्रारंभिक आधुनिक' शब्द के लिए कुछ सुसंगति देते हैं लेकिन समस्याएँ बनी रहती हैं जैसा कि हम देखेंगे।

1.2 प्रारंभिक आधुनिक पश्चिम को परिभाषित करने की समस्याएँ

'प्रारंभिक आधुनिक' शब्द आवधिकता की समस्या से संबंधित है। इतिहासकार अतीत की लंबी अवधि को विशिष्ट युगों या कालखंडों में कैसे विभाजित करते हैं? अवधि को अलग अलग तरीकों से विभाजित किया जाता है। एक विधि सम्राट या परिवार के शासन से सम्बंधित है, उदाहरण के लिए, ट्यूडर इंग्लैंड 'उस समय को संदर्भित करता है जब इंग्लैंड पर ट्यूडर परिवार के राजाओं का शासन था। इतिहासकार अपने वर्णनों में विशेष कालानुक्रमिक अवधि के बारे में भी बताते हैं, जो उस विशिष्ट काल को सामान्य बनाने के लिए एक वर्णनात्मक उपकरण के रूप में है, जैसे कि 1660 के दशक का उल्लेख है – और इस अर्थ में आप 1650 दशक के अंत और 1670 दशक के प्रारम्भ को 1660 के दशक में शामिल कर सकते हैं। इस प्रकार, आवधिकता की एक प्रमुख विशेषता यह है कि प्रत्येक ऐतिहासिक अवधि में समाज, संस्कृति, राजनीति और विचारों की कुछ प्रारंभिक विशेषताएँ होती हैं जो समय को एक अंतर्निहित एकता देती हैं और इसे पहले और बाद के समय से भिन्न करती हैं। समय के ये लक्षण इतिहासकारों के सीमांकन में बड़े करीने से सही नहीं बैठते। प्रारंभिक और समाप्ति तिथियों को सुविधाजनक रूप से निर्धारित करने का यह प्रयास आसान नहीं है। उदाहरण के लिए, कौन ये निश्चितता के साथ कह सकता है कि मध्य युग कब समाप्त होता है और प्रारंभिक आधुनिक युग कब शुरू होता है। प्रारंभिक आधुनिक की शुरुआत और इस तरह मध्ययुगीन काल (जिसे मध्य युग भी कहा जाता है) का अंत इतिहासकारों द्वारा अंग्रेजी में एक पुस्तक जिसके शीर्षक में 'आधुनिक' था लियोनार्ड डिग्ज की थी जो एक मौलिक परिवर्तन जो पंद्रहवीं शताब्दी के अंत और सोलहवीं शताब्दी के प्रारंभ में हुआ था, उसको दर्शाता है। भाषा की दृष्टि से, हम यह भी कह सकते हैं कि 'प्रारंभिक आधुनिक' वह दौर था जब 'आधुनिक' को अंग्रेजी भाषा में उपयोग में लाया और समावेश किया गया था।

अरिथमेटिकल मिलिट्री ट्रिटिज (1579) पहला प्रकाशन था, जिसमें आधुनिक सैन्य मामलों पर एक लंबा भाग शामिल हुआ।

इससे पहले कि हम पश्चिम में प्रारंभिक आधुनिक काल की मुख्य विशेषताओं को देखें, स्थान या भौगोलिक आयाम से संबंधित एक और वैचारिक कठिनाई दिखती है। 'पश्चिम' से हमारा क्या तात्पर्य है? 'पश्चिम' की सीमाओं की रेखा को कहाँ से खींचना है, यह ठीक से जानना मुश्किल है। महासागर, समुद्र, पहाड़ और नदियाँ प्राकृतिक भौगोलिक सीमाओं को परिभाषित करते हैं लेकिन कोई भी प्राकृतिक, भौगोलिक विशेषता नहीं है जो स्पष्ट रूप से पूर्व और पश्चिम को चिह्नित करती है। क्या हम इसे उसी तरह से परिभाषित कर सकते हैं जिस तरह हम कुछ ऐतिहासिक सामाजिक लक्षणों द्वारा प्रारंभिक आधुनिक काल की तिथियों को परिभाषित कर सकते हैं? प्रत्येक यूरोपीय राष्ट्रीय इतिहास में अलग-अलग प्रक्षेपवक्र हैं, कम से कम, राजनीतिक इतिहास और घटनाओं के संदर्भ में और उनके औपनिवेशिक इतिहास या साम्राज्यों का इतिहास फिर से अलग हैं। तो अभिसरण के बिंदु कहाँ हैं? पश्चिम का इतिहास कई अलग-अलग देशों का इतिहास है। एक सुसंगत इतिहास के बजाय, अनिरंतरता और विभाजन की एक श्रृंखला है। अगर हम अंतरराष्ट्रीय या वैश्विक इतिहास की बात करें तो पश्चिम को बाकी दुनिया से अलग करना संभव नहीं है। यूरोपीय विदेशी उपनिवेशवाद सोलहवीं शताब्दी से उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक पश्चिम के इतिहास का सूत्रधार रहा है। दोनों को अलग नहीं किया जा सकता है।

1.3 प्रारंभिक आधुनिक पश्चिम को परिभाषित करती विशेषताएं

विचारों के क्षेत्र में, इस समय प्राचीन ग्रीस और रोम के विद्वानों के लेखन में रुचि का फिर से जागरण हुआ और ज्ञान के आधार के रूप में अवलोकन के उपयोग को एक नया महत्व दिया गया। घटनाक्रमों की इस श्रृंखला को, पुनर्जागरण कहा जाता है, परिणामस्वरूप उदारवादी मानवतावाद के नए विचारों का जन्म हुआ जो पुरुषों को (पश्चिम और यूरोप के गौरे पुरुष ही और ना ही महिलाओं और एशियाई और अश्वेतों को भी नहीं) स्वयं के इतिहास के निर्माता, साम्राज्यों के निर्माता, और भाषा और ज्ञान के स्वामी के रूप में परिभाषित करता है। प्रकृति के अवलोकन का नया तरीका और ज्ञान के उपकरण के रूप में प्रयोग करना, हालांकि अभी भी प्रारंभिक आधुनिक काल में अल्पविकसित रूप में ही था लेकिन यह उभरना शुरू हुआ। जैसे निकोलस कोपरनिकस (1473–1543) द्वारा प्रस्तावित मॉडल में स्पष्ट हैं कि सौर प्रणाली में केंद्र में सूर्य के साथ उसके चारों ओर ग्रह घूमते हैं। इन नए विचारों का प्रसार 1450 के दशक में जोहान्स गुटेनबर्ग (ब.1398–1468) द्वारा तैयार किए गए चलायमान टाइप का उपयोग करके मुद्रण के विकास के द्वारा किया गया था। सामंती व्यवस्था के तहत भूमि धारकों की संख्या में गिरावट के साथ, अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण बदलाव भी हुआ। सैन्य सेवा या अवैतनिक श्रम के बदले में भूमि तक पहुंच प्राप्त करने के बजाय, किसानों ने वस्तुओं या मुद्रा में लगान का भुगतान किया। धर्म में, कैथोलिक चर्च की शक्ति को उसके धर्मशास्त्र और व्यवहारों की आलोचना के माध्यम से चुनौती दी गई थी, जिसके परिणामस्वरूप अंततः नए प्रोटेस्टेंट चर्चों का उदय हुआ। अंत में, लगभग उसी समय, यूरोपीय लोगों ने यूरोप से परे संस्कृतियों की खोज की, सबसे प्रसिद्ध यात्रा क्रिस्टोफर कोलंबस (1451–1506) के नेतृत्व में थी जिसने अमेरिका के औपनिवेशिकरण की शुरुआत की थी।

1.3.1 एकल शक्ति केंद्र का अभाव

जब हम पश्चिम के इतिहास के बारे में बात करते हैं या तो प्रारंभिक आधुनिक दौर में या बाद में जब पूर्ण आधुनिकता का उदय हुआ, तो यह तर्क दिया जा सकता है कि किसी भी एक शक्ति ने कभी भी लंबे समय तक वर्चस्व हासिल नहीं किया। इसने पश्चिम के निर्माण पर स्थायी, दीर्घकालीन छाप छोड़ी। कई सत्ता केंद्र थे और एक सामान्य उद्देश्य वाली कोई

राजनीतिक इकाई नहीं थी। पश्चिमी विश्व का एक ऐसा ऐतिहासिक अनुभव रहा है जिसमें नगर-राज्यों, छोटे क्षेत्रीय राज्यों, क्षेत्रीय साम्राज्यों और बाद में राष्ट्र-राज्यों का वर्चस्व रहा है जिनमें कोई कभी भी सर्वोच्च वर्चस्व हासिल नहीं कर पाए और न ही लंबे समय तक स्थायी रह पाए। इन राज्य-व्यवस्थाओं में अर्थव्यवस्था, सामाजिक संरचना और संस्कृति के संदर्भ में मतभेद थे लेकिन उन्होंने महत्वपूर्ण समानताएँ भी प्रदर्शित की। पश्चिम की विभिन्न शक्तियों के बीच अक्सर युद्ध होते रहते थे लेकिन एक प्रकार की शक्ति का संतुलन भी 1648 के बाद से विकसित हुआ। विभिन्न देशों में चर्च और राज्य के बीच संघर्ष थे, लेकिन वे अपने संबंधित दावों के बीच एक समायोजन प्राप्त करने में भी सक्षम थे। यह एक समायोजन था जिसमें प्रारंभिक आधुनिक काल में राज्य को कम से कम कुछ शक्तिशाली निरकुंशतावादी राज्यों में प्रभुत्व प्राप्त हुआ। चूंकि अंतर-राज्य संबंधों में कोई एकल केंद्र नहीं था, इसलिए समाज के भीतर एकल संस्था केंद्र की कमी भी थी जो पूरे समाज को नियंत्रित कर सकती।

1.3.2 नागरिक समाज की मजबूत परंपरा

सामाजिक व्यवस्था के भीतर एक शक्तिशाली संस्था की अनुपस्थिति नागरिक समाज की एक मजबूत परंपरा के कारण थी जो प्रारंभिक आधुनिक पश्चिम में काफी स्पष्ट हो गई थी। यह मध्य युग की एक विरासत थी। सामंतवाद स्थानीय शक्तियों को कुलीन वर्ग के खिलाफ अधिकार जीतने और सत्ता के केंद्रीयकरण की सीमा को स्थापित करने से नहीं रोक सका। सामंतवाद विकेंद्रीयकृत सत्ता संरचना और पारस्परिक दायित्व की राज्य-व्यवस्था पर आधारित था। इसलिए, कुछ राज्यों में निरकुंश राजशाही के उभरने के बाद भी, सत्ताधारी कुलीनों को संगठित नागरिक समाज समूहों जैसे कि व्यापारियों, शिल्प श्रमिकों, बुद्धिजीवियों और बाद में संगठित श्रमिकों के साथ शक्ति साझा करना पड़ा। यह भाग विशेष रूप से स्वायत्त शहरों में विकसित था। वहाँ संगठित श्रेणियों और नागरिक समाज की माँगों ने निरकुंशता के विकास को रोक दिया। सामंतवाद द्वारा संस्थागत सत्ता की संरचना ने पारस्परिक मान्यता के कानूनी और प्रतीकात्मक संबंधों को एक नींव दी, जिसके तहत शासक को अपने दायित्वों के बदले में नीचे के लोगों को अधिकार देना पड़ा। यह एक ऐसी विरासत थी जिसे प्रारंभिक आधुनिक पश्चिम में मिटाया नहीं जा सकता था। प्रारंभिक आधुनिक पश्चिम का इतिहास नागरिक समाज के आंदोलनों के रूप में इस निरंतरता को प्रदर्शित करता है, जिसने सामाजिक विकास की दिशा को आकार देने में प्रमुख भूमिका निभाई। किसी भी राजनीतिक व्यवस्था की वैधता हमेशा उन लोगों के लिए पूछताछ योग्य थी, जिन्होंने इसकी वैधता को स्वीकार नहीं किया था। निस्संदेह इसका दीर्घावधि में एक लोकतांत्रिक प्रभाव था।

इसके अलावा, वर्तमान समय और अतीत के बीच का संबंध आधुनिक पश्चिम के इतिहास में बहुत पहले से था, जो की निरंतरता और अनिरंतरता के संदर्भ में देखा जा सकता है। कई विरासतें हैं जिनके मध्य युग में निशान मिलते हैं। लेकिन आवधिक विच्छेद भी परिवर्तन का कारण रहे। ईसाई धर्म के अंतर्गत धर्मग्रंथों और चर्च-संबंधी सत्ता पर विवाद कोई नई बात नहीं थी। चर्च का प्राथमिक क्षेत्र आध्यात्मिक माना जाता था, लेकिन मध्ययुगीन काल में भूस्वामियों और सांसारिक विशेषाधिकारों के मामले में यह व्यापक शक्तियों का केंद्र था। इसलिए सांसारिक दुनिया में एक शक्तिशाली सामाजिक संस्था के रूप में, तनाव उभरने लाजिमी थे, जिन्होंने मैक्स वेबर ने दावा किया कि तर्कवाद की दिशा में पश्चिम को मूल गति प्रदान की। जिन आंदोलनों ने पश्चिम के बाद के इतिहास को पुनर्जागरण और प्रबोधन काल तक मध्य युग से आकार दिया, अतीत से वर्तमान के बीच पृथकत्व की इस प्रवृत्ति को साझा किया। निश्चित रूप से, धर्मसुधार और पुनर्जागरण ने वर्तमान को एक पुराने अतीत के पुनरुत्थान से अपनी वैधता प्राप्त करने के रूप में देखा कि यदि यह पुनर्प्राप्त किया गया तो वर्तमान को अतीत से मुक्त करने में सहायक होगा। पुनर्जन्म की यह भावना या अधिक प्राचीन मानसिकता का पुनरुत्थान, फिर भी पूर्ववर्ती युग की एक निंदा थी। सत्रहवीं से

उन्नीसवीं शताब्दी के तक के कल्पनावादी आंदोलन, भविष्य की प्रगति के विचार के रूप में भविष्य उन्मुख आयाम को सामने लाने में समर्थ रहे। इस तरह से विच्छेद के माध्यम से एक बड़ी हद तक निरंतरता प्राप्त की गई थी, जिसने नए रूपों में अतीत के पुनर्निर्माण को संभव बनाया।

1.3.3 व्यक्तिगत और सामूहिक के बीच प्रतिवाद

तब व्यक्तिगत और सामूहिक स्वतंत्रता की खोज के बीच एक प्रतिवाद था। यह व्यापक रूप से माना जाता है कि व्यक्ति के विचार का आविष्कार पश्चिम में किया गया था। यह व्यक्तिगत मुक्ति के लिए खोज में ईसाई धर्म के लिए केंद्रीय था; यह पश्चिमी दर्शन और नैतिकता का आधार था। जबकि व्यक्ति की धारणा को विशेष रूप से पश्चिम का विशेषाधिकार नहीं ठहराया जा सकता है, क्योंकि इसी प्रकार के विचार अन्य प्राचीन सभ्यताओं में पाए जा सकते हैं, जो कि संभवतः अधिक पश्चिमीं था, वह यह था कि व्यक्ति की खोज के राजनीतिक निहितार्थ थे।

व्यक्ति की प्रमुखता बाद में उदारवाद के दर्शन और पूँजीवादी नैतिकता में बदल गयी। लेकिन इस विचार का सार धर्मसुधार के दौरान कैल्विन के व्यवसाय के विचार में स्पष्ट था। व्यवसाय या आजीविका की अवधारणा एक धार्मिक अवधारणा थी, जो कार्य ईश्वर द्वारा निर्धारित था। हालांकि, वेबर का तर्क है कि व्यवसाय की अवधारणा एक नया विचार, धर्मसुधार का एक परिणाम और एक प्रोटेस्टेंट धारणा थी। व्यवसाय की अवधारणा नई थी जिसमें सांसारिक मामलों में कर्त्तव्य की पूर्ति का मूल्यांकन शामिल था जो व्यक्ति की नैतिक गतिविधि के रूप में उच्चतम रूप ले सकता था। इसने दैनिक दुनियादारी को एक धार्मिक महत्व दिया और व्यक्ति को भगवान द्वारा स्वीकार्य होने के लिए दुनिया में अपनी स्थिति के दायित्वों को पूरा करना अनिवार्य था। वेबर के अनुसार, हालांकि व्यवसाय या आजीविका की अवधारणा पहली बार लूथर द्वारा विकसित की गई थी, वह पूँजीवाद या पूँजीवादी भावना के अनुकूल नहीं थी, और आर्थिक गतिविधि का अधिक पारंपरिक दृष्टिकोण लूथर की शिक्षाओं पर हावी था – वह पूँजी और मुनाफा अर्जित करने का विरोध, और अपने व्यवसाय को स्वीकार करने को दैवीय अध्यादेश के रूप में मानता था। ऐसा विचार आर्थिक गतिविधि के दृष्टिकोण से उग्र बदलाव अनुकूल के नहीं था, इसके विपरीत, कैल्विन, वेस्ले और अन्य की शिक्षाएँ भी आत्मा के उद्धार से सम्बंधित थीं, लेकिन इन शिक्षाओं के परिणाम ऐसे थे जो अप्रत्याशित थे। वेबर का तर्क है कि कैल्विन जैसे सुधारकों के लिए, प्यूरिटन संप्रदायों और मेंनो, जॉर्ज फॉक्स और वेस्ले जैसे पुरुषों के लिए व्यवसाय की स्पष्ट अभिव्यक्ति को इस तरह से देखा गया था, जिसमें पूँजीवादी भावना से विकास के संबंध थे। अर्थात इन लेखकों की शिक्षायें नैतिक संस्कृति, मानवतावाद, सामाजिक सुधार या सांस्कृतिक आदर्शों की ओर निर्देशित नहीं थी। लेकिन उनकी शिक्षाओं के अनपेक्षित परिणामों में पूँजीवादी भावना का विकास शामिल था। इस परंपरा में सबसे व्यापक रूप से ज्ञात समूह फ्रांस के ह्यूगेनोट्स, जिनेवा के कैल्विनवादी, हॉलैंड के रिफॉर्म्ड चर्च, इंग्लैंड और न्यू इंग्लैंड के प्यूरिंटन और स्कॉटलैंड और उत्तरी अमेरिका के प्रेस्बिटेरियन चर्च हैं।

बोध प्रश्न-1

1) आप प्रारंभिक आधुनिक पश्चिम को कैसे परिभाषित करते हैं?

.....

.....

.....

2) प्रारंभिक आधुनिक पश्चिम के लिए विभिन्न शक्ति केंद्रों के क्या निहितार्थ थे?

.....

.....

.....

3) प्रारंभिक आधुनिक पश्चिम में आप व्यक्ति और सामूहिक को कैसे देखते हैं?

.....

.....

.....

1.4 एक वैश्विक उन्मुखीकरण का निर्माण और भौगोलिक अन्वेषण का युग

प्रारंभिक आधुनिक पश्चिम में विश्व उन्मुखीकरण के निर्माण की ओर रुझान दिखा, एक प्रकार का विश्ववादी दृष्टिकोण। धीरे-धीरे, लोग अपने स्वयं की मातृभूमि से बड़ी, एक राजनीतिक और सांस्कृतिक इकाई के रूप में विश्व की एक अवधारणा की ओर बढ़ रहे थे। अभी भी "अन्य" के साथ तालमेल करने की आवश्यकता थी और यह देश और उपनिवेशों के बीच तनाव को दर्शाता है। कम से कम, अभिजात वर्ग के कुछ लोग इस बात से परिचित हो रहे थे कि भिन्न क्या है और देश के बाहर क्या है। यद्यपि 'अन्य' को अक्सर डरने, हमला करने, उपनिवेश बनाने, उन पर हावी होने या दूर रखने के रूप में देखा जाता था। केवल पश्चिमी शक्तियों की ही अन्य लोगों में रुचि विकसित नहीं हुई थी, बल्कि ऐसा तर्क है कि पश्चिम में अन्य संस्कृतियों के बारे में जिज्ञासा उससे आगे बढ़ गई थी। दूसरों की संस्कृति से व्यापक उधार लिया गया था, जैसा कि हाल के वर्षों में वैश्विक इतिहासकारों द्वारा बहुत अधिक प्रलेखित किया गया है। वास्तव में, यह तर्क करना संभव है कि पश्चिमी विज्ञान और प्रौद्योगिकी के सबसे प्रमुख पहलू अन्य सभ्यताओं से प्राप्त हुए थे। पश्चिमी सभ्यता का गठन सदियों से अन्य संस्कृतियों, विशेष रूप से पूर्व और भूमध्यसागरीय क्षेत्रों से संस्कृति-संश्लेषण के माध्यम से किया गया था। इस सब का केंद्र बेशक पश्चिमी शक्तियों का औपनिवेशिक अभियान और विस्तार था। जबकि दुनिया के दूर के कोनों में सभी यूरोपीय उद्यम औपनिवेशिक नहीं थे, कई थे और यह एक मुख्य तरीका था जिसमें पश्चिम न केवल गैर-यूरोपीय विश्व से बल्कि स्वयं से भी संबंधित था। मानचित्र एक पश्चिम यूरोपीय आविष्कार नहीं था, लेकिन यह प्रारंभिक आधुनिक पश्चिम में था कि परिष्कृत मानचित्रकला की तकनीकों को विकसित किया गया था जिससे दुनिया की वैश्विक सोच संभव हुई। अमेरिका के रूप में जाने जाने वाली यूरोपीय खोज एकमात्र सबसे बड़ी घटना थी जिसने पश्चिमी विश्वदृष्टि के गठन को आकार दिया। एशिया के साथ मुठभेड़ के विपरीत, अमेरिका के साथ मुठभेड़ ने एक 'खोज' का रूप ले लिया, जिसने यूरेशियन सभ्यताओं द्वारा विश्व-व्यवस्था की धारणाओं को चुनौती दी। इसने पश्चिम की व्यापक श्रेणी के उभरने का रास्ता खोल दिया, जिसने अंततः यूरोप के स्थान और महत्व को कम कर दिया। पुर्तगाली और स्पैनिश नाविकों द्वारा अपने देश के राजाओं की सहायता से खोजबीन शुरू की गई। चांदी और सोने के रूप में धन के अलावा और मसाला व्यापार, सैन्य गौरव और ईसाई मान्यताओं का प्रसार उनका मुख्य उद्देश्य था। कई तकनीकी कारकों ने उनकी सफलता में योगदान दिया। चुंबकीय कम्पास, एस्ट्रोलैब और बेहतर कार्टोग्राफी (मानचित्र-निर्माण का विज्ञान) और जलयात्रा जैसे उपकरणों की मदद से, वे नई भूमि तक पहुंचने में सक्षम थे जहाँ उन्होंने अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा किया। ***कारवेल***, पुर्तगालियों द्वारा डिजाइन किया गया एक प्रकार का उन्नत जहाज था। इसके

त्रिकोणीय पालों ने हवाओं के खिलाफ जहाजों को चलने की अनुमति दी। यह तकनीक अरबों से सीखी गई थी। चुंबकीय कम्पास का आविष्कार चीनियों और एस्ट्रोलैब का यूनानियों द्वारा किया था। यह अन्वेषण का युग भी कहलाया गया, क्योंकि जो यह प्रस्तावित करता है की धार्मिक और सांसारिक मामले प्रारंभिक पश्चिमी मस्तिष्क में निकटता से जुड़े थे। इसने 'गॉड, ग्लोरी एंड गोल्ड' वाक्यांश में अभिव्यक्ति पाई।

1.5 व्यापार, उपनिवेश और वाणिज्यवाद

1500 और 1600 की सदियों में पुर्तगाल और स्पेन द्वारा नेतृत्व में, यूरोपीय देशों ने अमेरिका और पूर्व में कई व्यापारिक चौकियों और उपनिवेशों की स्थापना की थी। एक उपनिवेश एक नए क्षेत्र में रहने वाले लोगों का एक निवास है, जो व्यापार और प्रत्यक्ष सरकारी नियंत्रण द्वारा मूल देश के साथ जुड़ा हुआ था। उपनिवेशों और व्यापारिक चौकियों के विकास के साथ, यूरोपीय लोगों ने अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि दर्ज की। उपनिवेशों ने वाणिज्यवाद के सिद्धांत में एक भूमिका निभाई, सिद्धांतों का एक संग्रह जो सत्रहवीं शताब्दी में आर्थिक विचारों पर हावी था। वाणिज्यवादियों के अनुसार, एक राष्ट्र की समृद्धि बुलियन, या सोने और चांदी की एक बड़ी आपूर्ति पर निर्भर थी। सोने और चांदी को भुगतान में लाने के लिए, राष्ट्रों ने व्यापार के अनुकूल संतुलन बनाने की कोशिश की। जो एक राष्ट्र आयात करता है और यह समय के साथ निर्यात करता है उस मूल्य में अंतर को व्यापार का संतुलन कहते हैं। जब व्यापार का संतुलन अनुकूल होता है, तो निर्यात किए गए सामान आयात किए गए से अधिक मूल्य के होते हैं। निर्यात को प्रोत्साहित करने के लिए, सरकारों ने निर्यात उद्योगों और व्यापार को बढ़ावा दिया। उन्होंने सड़कों, पुलों और नहरों के निर्माण से नए उद्योगों को सब्सिडी या भुगतान दिया और परिवहन प्रणालियों में सुधार किया। विदेशी वस्तुओं पर उच्च सीमा-शुल्क दर, या कर लगाकर, उन्होंने इन वस्तुओं को अपने देशों से बाहर रखने की कोशिश की।

1.6 दास व्यापार की वृद्धि

अन्वेषण के युग का एक और परिणाम बड़े पैमाने पर दास व्यापार का उद्भव था। उदाहरण के लिए, पंद्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध के दौरान, प्रत्येक वर्ष लगभग एक हजार दास पुर्तगाल ले जाये गए। अन्वेषण के काल से पहले, दास घरेलू नौकर थे। 1490 के दशक में अमेरिका की खोज और गन्ना बागानों की स्थापना के साथ, दासों की माँग में काफी बदलाव आया। मध्य युग के दौरान दक्षिण-पश्चिम एशिया से यूरोप में गन्ने के उगाने की शुरुआत हुई थी। सोलहवीं शताब्दी के दौरान, गन्ने को उगाने के लिए ब्राजील के तट पर और कैरिबियन के द्वीपों में बागान, बड़े कृषि क्षेत्र स्थापित किए गए थे। इससे श्रम की माँग में वृद्धि हुई। देशी या अमेरिकी भारतीय आबादी यूरोप से आयातित महामारी से खत्म हो गयी थी। इस प्रकार, अफ्रीकी दासों को बागान पर काम करने के लिए ब्राजील और कैरेबियन के लिए भेज दिया गया था। 1518 में, एक स्पेनिश जहाज ने अफ्रीकी दासों की पहली नाव को अफ्रीका से सीधे अमेरिका तक पहुंचाया। अगली दो शताब्दियों के दौरान, दासों में व्यापार कई गुना बढ़ गया और त्रिकोणीय व्यापार का हिस्सा बन गया जिसने एक नई विश्व अर्थव्यवस्था का उद्भव किया। त्रिकोणीय व्यापार के प्रारूप ने यूरोप, अफ्रीका और एशिया और अमेरिकी महाद्वीपों को जोड़ा। यूरोपीय व्यापारी जहाज द्वारा यूरोपीय निर्मित सामान, जैसे बंदूकें और कपड़े, अफ्रीका ले जाये गए, जहाँ दासों के समूह के बदले में उनका व्यापार किया गया। दासों को फिर अमेरिका भेज दिया गया और बेच दिया गया। यूरोपीय व्यापारियों ने तब तम्बाकू, सीरा, चीनी और कच्चा कपास खरीदा और उन्हें वापस यूरोपीय बाजारों में बेचने के लिए यूरोप भेज दिया। सोलहवीं शताब्दी के दौरान अनुमानित 275,000 अफ्रीकी दासों का निर्यात किया गया था। हर साल दो हजार दास अकेले अमेरिका गए। सत्रहवीं शताब्दी में, कुल व्यापार एक मिलियन से ऊपर चढ़ गया और अठारहवीं शताब्दी में छह मिलियन तक बढ़ गया। तब तक व्यापार पश्चिम अफ्रीका और मध्य अफ्रीका

से पूर्वी अफ्रीका तक फैल गया था। कुल मिलाकर, सोलहवीं शताब्दी के अंत और उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध के बीच दस मिलियन अफ्रीकी दासों को अमेरिका लाया गया था। इस संस्था को तब तक स्वाभाविक माना जाता था जब तक ईसाई सुधारकों के एक समूह क्वेकर ने इसका विरोध करना शुरू नहीं कर दिया था।

1.7 मुद्रण और सूचना संचार

तब सूचना प्रसार की एक नई प्रणाली पहले से ही अस्तित्व में थी। आरंभिक आधुनिक काल की शुरुआत को परिभाषित करने वाली दो प्रमुख घटनाएँ विचारों से जुड़ी थी। पहली तकनीक थी टाइप का उपयोग करके मुद्रण का विकास। विचार सदियों से पांडुलिपि में घूम रहे थे, लेकिन मुद्रणालय ने बहुत बड़ी संख्या में ग्रंथों को पुनः प्रस्तुत करने का एक अतिरिक्त साधन प्रदान किया। सस्ते और महंगे दोनों संस्करणों में पुस्तकों का उत्पादन किया गया। सस्ते संस्करणों का उत्पादन, उन लोगों की बढ़ती संख्या के साथ मिलकर जो पढ़ने और लिखने में सक्षम थे, उनका मतलब था कि पूरे समाज के लोग पढ़ रहे थे – धनी, मध्यम और यहाँ तक कि कुछ कामकाजी लोगों की पहुंच भी पुस्तकों और विचारों तक हो गयी थी। मुद्रण ने जीवन के सभी क्षेत्रों को प्रभावित किया। उदाहरण के लिए, सस्ती पुस्तकों की उपलब्धता का धर्म और संस्कृति पर बड़ा प्रभाव पड़ा होगा। प्रोटेस्टेंट विचारों के प्रसार के लिए, किताबें और पर्चे महत्वपूर्ण थे। पढ़ना और लिखना यूरोपीय मध्य युग और एशियाई साम्राज्यों में मौजूद था, लेकिन वे प्रतिबंधित गतिविधियाँ बनी रही, जो काफी हद तक पादरी और मध्यकालीन विद्वानों तक ही सीमित थी, जिन्होंने अथक नकल और फिर से नकल की। किसान वर्ग और अधिकांश आबादी अभी भी मौखिकता से रहते थे, हालांकि उनके पास भी जिसे इल्लीच ने ''जन-साधारण साक्षरता'' कहा, मौजूद थी; जो कि पुस्तकों के अस्तित्व और महत्व के बारे में जागरूकता थी और लिखित दस्तावेजों की सत्ता के प्रति सम्मान की भावना थी, भले ही वे स्वयं नहीं पढ सकते थे। साक्षरता एक विशिष्ट विशेषाधिकार बनी रही, और 1500 सी.ई. तक, ज्यादा संभावना नहीं थी कि दुनिया की आबादी के 10 प्रतिशत से अधिक लोग पढ़ या लिख सकते थे। प्रारंभिक आधुनिक पश्चिम में, निश्चित रूप से जो बदला वह था : गुटेनबर्ग के मुद्रणालय और चलायमान टाइप का आगमन। गुटेनबर्ग के आविष्कार तक, पाठ को पुनः पेश करने का एकमात्र तरीका हाथ से नकल करना था जो एक श्रमसाध्य कार्य था। मुद्रणालय ने पुस्तकों को एक सामूहिक वस्तु बना दिया, और ठीक उसी कारण से, साक्षरता एक व्यापक घटना बन गई। 'पुस्तक' के सामाजिक इतिहास का पता रोजर चार्टियर ने लगाया है। मानकीकृत टाइपफेस ने पढ़ने को एक आसान गतिविधि बना दिया है, क्योंकि पाठकों को अब किसी अन्य व्यक्ति की लिखावट की विलक्षणताओं से नहीं जूझना पड़ता था। लिपिकीय कॉपी करने वालों द्वारा अक्सर की जाने वाली त्रुटियों को समाप्त कर दिया गया, और इस प्रकार हजारों लोगों को एक पाठ के समान, संभवतः त्रुटि-मुक्त ''मानक संस्करण'' तक पहुंच प्राप्त हो सकी। इसने लिखित शब्द के उत्पादन, प्रसारण और ग्रहण के नए तरीके पेश किए। इसने 'लेखक', 'पुस्तक' या 'काम' की नई श्रेणियों को भी जीवन दिया और 'पाठकों के समुदाय' और 'पुस्तकालय' बनाने में मदद की। हालांकि पूर्व-औद्योगिक समाजों और प्रारंभिक आधुनिक यूरोप में साक्षरता को मापना एक कठिन काम है, लेकिन साक्षरता के प्रसार पर संदेह नहीं किया जा सकता है, हालांकि एक ही 'पाठ' को अलग-अलग सामाजिक समूहों द्वारा अलग ढंग से समझा जा सकता है।

साक्षरता का भूगोल उत्तर और उत्तर-पश्चिम यूरोप में उच्च साक्षरता का संकेत देता है, हालांकि, लिंग, व्यवसाय और सम्पदा के आधार पर असमानताएँ थीं। साक्षरता मुख्य रूप से एक व्यक्ति के काम और हैसियत से जुड़ी हुई थी। फिर, प्रारंभिक आधुनिक पश्चिम में संचार की प्रणाली को परस्पर जोड़ा गया। पश्चिम यूरोप अपनी नाविक नदियों, व्यापार मार्गों, मठों से विश्वविद्यालयों, अनुवाद, मानचित्र बनाने, छपाई के प्रारंभिक विकास और कागज के

निर्माण की तकनीकों आदि के बारे में जानने के कारण दुनिया के अन्य हिस्सों की तुलना में काफी अधिक नेटवर्क से जुड़ा था। आधुनिकता की पूँजीवादी संस्कृति, जैसे कि सेजेल दर्शाते है, ऐसे संजाल-तंत्रों पर आधारित थी जिसने इसके प्रसार को सुविधाजनक बनाया।

1.8 प्रारंभिक आधुनिक पश्चिम में सामाजिक संरचना

मध्य युग में तीन प्रमुख सामाजिक वर्गों के आधार पर समाज का गठन किया गया था—पादरी, कुलीन वर्ग और निम्न श्रेणी के किसान या कृषिदास और कारीगर। मध्ययुगीन यूरोप के वर्गीकरण को असमान रूप से पद दिया गया था और यह समाज के धार्मिक-निर्देशात्मक व्यवस्था द्वारा अनुमोदित था, पदों के इस पदानुक्रम को कानूनी रूप से मान्यता दी गई थी। यह सामाजिक संरचना का एक अधिक सरल दृष्टिकोण है क्योंकि सम्पदा, शक्ति और संसाधनों के सन्दर्भ में प्रत्येक सामाजिक स्तर के भीतर महत्वपूर्ण अंतर थे। कुलीन वर्ग अंदर से विभेदीकृत था जिसमें बड़े, सम्पदा वाले राजा, कई महल और महलों से लेकर छोटे कुलीन तक शामिल थे, जिनके पास एक छोटी जागीर और एक ही घर हो सकता था। यह व्यापारियों, और निर्माताओं को भी शामिल नहीं करता : समूह जो संख्या में बढ़े और प्रारंभिक आधुनिक काल में महत्व रखते थे। लेकिन समकालीनों ने इस रूप में समाज की श्रेणीबद्धता के बारे में सोचा। यहाँ समाज की संरचना की दो परिभाषाएँ हैं। अठारहवीं शताब्दी के एक समाचार-पत्र में, उपन्यासकार और सामाजिक टिप्पणीकार, डेनियल डेफॉ (1660—1731) ने इसे कविता के रूप में वर्णित किया है जो कि सम्पदा या सामाजिक उत्पाद पर किसी की पात्रता में परिष्कृत विविधता दर्शाती है :

महान, जो अतिव्यय से रहते हैं।

अमीर, जो प्रचुरता से रहते हैं।

मध्य क्रम, जो अच्छी तरह से रहते हैं।

काम करने वाले व्यवसायी, जो कठिन परिश्रम करते हैं लेकिन लगता है कि उनकी जरूरत कुछ नहीं।

गाँव के लोग, किसान, जो उदासीनता से बसर करते हैं ।

गरीब, वह मुश्किल से बसर करते हैं ।

दुःखी, जो वास्तव में चुभन और अभाव की पीड़ा सहते हैं ।

हालांकि प्रारंभिक आधुनिक पश्चिमी समाज में सामाजिक अभिजात्य वर्ग में कुलीन वर्ग का दबदबा कायम रहा, लेकिन भूमि और सम्पदा के स्वामित्व के कारण, समृद्ध व्यापारी और बैंकर भी सामाजिक अभिजात्य वर्ग में शामिल हो गए। कुछ व्यापारी कुलीन वर्ग की तुलना में बहुत अमीर थे। समाज ने धीमी गति से लंबे परिवर्तन के दौर से गुजरना शुरू किया। इस संक्रमण प्रक्रिया ने विद्वानों के भीतर एक रोचक बहस को जन्म दिया है, लेकिन एक बात निश्चित है कि पश्चिमी यूरोप में कृषि दासता की संस्था कमजोर हो गई थी और किसान कृषक अब एक समरूप सामाजिक समूह नहीं रहे। समाज लिंग आधार पर भी विभाजित था। प्रारंभिक आधुनिक यूरोप एक पितृसत्तात्मक समाज था, जहाँ पुरुष महिलाओं की तुलना में अधिक शक्ति रखते थे लेकिन यह वर्ग स्थिति पर भी निर्भर करता था। पुरुष व्यापार और राजनीति की दुनिया पर हावी थे, लेकिन महिलाएँ घरेलू क्षेत्र और रसोई तक ही सीमित थीं। माताओं के रूप में, उन्होंने अपने बच्चों पर कुछ भावनात्मक शक्ति का प्रयोग किया होगा। कुलीन वर्ग और धनी व्यापारियों की समृद्ध महिलाएँ बड़े परिवारों को संभालती थीं, और कुछ कुलीन वर्ग की पत्नियाँ अपने पति की जागीरों की देखभाल करती थीं, जब वे काम से या युद्ध के कारण दूर होते थे।

1.9 वाणिज्यिक क्रांति और इसके परिणाम

बाद के मध्य युग की वाणिज्यिक क्रांति का समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा जो कि इस बात से स्पष्ट है : मेलों का बढ़ना, शहरों के भौतिक विस्तार, पुस्तकों के उत्पादन में वृद्धि, और जनसंख्या और शहरीकरण का विकास। यह अनुमान है कि 900 में, पश्चिमी यूरोप में लगभग 1 प्रतिशत आबादी केवल 10,000 से अधिक जनसंख्या वाले शहरों में रहती थी; 1500 तक, पश्चिमी यूरोप के लिए शहरीकरण की दर क्रमशः 8 प्रतिशत से अधिक थी, नीदरलैंड में और बेल्जियम में क्रमशः 10 प्रतिशत और 20 प्रतिशत से अधिक शीर्ष पर थीं। मध्ययुगीन ''वाणिज्यिक क्रांति" – व्यापार का सरल विस्तार था, लेकिन इसे निम्नतरीय देशों और इंग्लैंड में प्रारंभिक आधुनिक वाणिज्यिक या वित्तीय ''क्रांतियों" के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए (जिसमें लंबे समय तक विदेशी मुद्रा बाजार के विकास, विनिमय बैंकों, संयुक्त स्टॉक कंपनियों, और अन्य विकास शामिल थे। आविष्कार, प्रसार, या होल्डिंग कंपनियों के जल्द से जल्द पूर्णता, नकदीहीन विनिमय पत्रों का उपयोग, समुद्री बीमा के लिए अनुबंधों की, और उन्नत बहीखाता तकनीकों सहित, जिनमें ''डबल-एंट्री" लेखांकन कहा जाता है, इन व्यवहारों ने लंबी-दूरी के व्यापार, अंतर्राष्ट्रीय बैंकिंग, और वाणिज्यिक और औद्योगिक साझेदारी विस्तार की सुविधा प्रदान की। व्यापारी साख की इच्छा और लंबी दूरी के व्यापार में लेन-देन की लागत में कमी के कारण खाते के धन का उपयोग और अंतर्राष्ट्रीय वित्त के प्रारंभिक साधनों का निर्माण हुआ – इनमें सबसे महत्वपूर्ण ''विनिमय पत्र" था। यह एक बहुपक्षीय भुगतान आदेश था, जो एक विदेशी मुद्रा में दूर के स्थान पर निष्पादन योग्य था। इसका आविष्कार उत्तरी इटली में किया गया था, जो चौदहवीं शताब्दी में पहले से ही व्यापक रूप से प्रचलित और उपयोग में था, – काफी हद तक अठारहवीं सदी तक अपरिवर्तित रहा। अनिवार्य पत्रों के आधार पर, मेलों में मुद्राहीन विनिमय होता था। विनिमय-पत्र क्रांतिकारी था क्योंकि जारीकर्ता किसी अन्य मुद्रा में ऋण का भुगतान करने के लिए एक दूर के तीसरे पक्ष को आदेश दे सकता था, जिसने विनिमय पत्रों को व्यापक रूप से प्रसारित करने और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में साख और हस्तातंरण दोनों के साधन के रूप में कार्य करने को सम्भव बनाया। अब, व्यापारियों ने पूँजी जमा की और खुद को और अपनी राज्य-व्यवस्थाओं को समृद्ध करने के लिए जोखिम साझा किया, बुनियादी ढाँचे और बाजारों का उपयोग किया और उन्होंने अपने व्यापारों को सुविधाजनक बनाने के लिए नए कानूनी और वित्तीय उपकरणों के निर्माण में मदद की।

1.10 सामाजिक संस्थाएँ और विश्वविद्यालय

किसी सामाजिक परिवर्तन में एक रेखांकित कारक के रूप में संस्थाओं और संस्थागत परिवर्तन की भूमिका हमेशा महत्वपूर्ण रही है। प्रारंभिक आधुनिक काल ने पश्चिमी यूरोप में न केवल आर्थिक परिवर्तन देखा, बल्कि पहले विश्वविद्यालयों की स्थापना भी की – पहली बार ग्यारहवीं शताब्दी में बोलोग्ना में स्थापित किया गया था। फिर उत्तरगामी चार शताब्दियों में पचास और उभरे। औपचारिक कानूनी संस्थाओं और राज्य प्रशासनिक प्रणालियों का विकास भी हुआ था। शायद, इन शैक्षणिक और कानूनी संस्थाओं ने आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देने में कुछ भूमिका निभाई। हफ (2003) का तर्क है कि यूरोपीय विश्वविद्यालय एक संस्था थी जो तकनीकी परिवर्तन को बढ़ावा देने के लिए विशिष्ट रूप से अनुकूल थी, और यह कि विश्वविद्यालयों के उदय का यूरोपीय विज्ञान के इतिहास में एक महत्वपूर्ण पड़ाव के रूप में देखा जा सकता है। लेकिन यह एक संदिग्ध अनुमान है और शायद एक अतिरंजित बयान है। बोलोग्ना जैसे प्रारंभिक विश्वविद्यालयों के मध्यकालीन इस्लामी शिक्षा के केंद्रों के साथ घनिष्ठ संबंध थे, हालांकि उन्होंने कुछ कॉर्पोरेट विशेषताओं और विशेषाधिकारों और कानूनी स्थिति का अधिग्रहण किया था। विश्वविद्यालयों के बाहर, उनके द्वारा दी गई

शैक्षणिक डिग्री किसी विशेष पेशे का अभ्यास करने का अधिकार प्रदान नहीं करती थी । उदाहरण के लिए, धर्मशास्त्र का अध्ययन चर्च में पुरोहिती के लिए पूर्व शर्त या पात्रता नहीं था। केवल धीरे-धीरे, विश्वविद्यालय की डिग्री आत्माओं के उपचार, कानूनी अभ्यास, सरकारी प्रशासन और चिकित्सा देखभाल और शिक्षा में लगे पेशेवर अभिजात्य लोगों का एक चिह्न बन गई। प्रारंभिक आधुनिक काल में विश्वविद्यालयों ने मुख्य रूप से कला, धर्मशास्त्र, कानून और चिकित्सा में शिक्षा प्रदान की और वास्तुकला, जहाज निर्माण, कृषि, पशु चिकित्सा और सैन्य प्रौद्योगिकी जैसे विषयों में नहीं की ।

बोध प्रश्न-2

1) क्या मुद्रण के आविष्कार ने ज्ञान को साझा और प्रसारित करने के तरीके में बदलाव लाया?

.....

.....

.....

2) प्रारंभिक आधुनिक पश्चिम में वाणिज्यिक क्रांति का क्या प्रभाव था?

.....

.....

.....

1.11 सारांश

हमने देखा है कि पश्चिमी यूरोप में मध्य युग के अंत के साथ, कैसे संक्रमण की अवधि शुरू हुई। आधुनिकता के लिए संक्रमण का यह दौर लंबा और धीमा था और इस परिवर्तन की गति देश दर देश भिन्न थी। इसने सामाजिक जीवन-धार्मिक विश्वासों, व्यापार और मानव बस्ती, अर्थव्यवस्था, सामाजिक संस्थाओं, संचार के साधनों और गैर-पश्चिमी दुनिया के साथ संबंध के लगभग सभी पहलुओं में बदलाव किया। पश्चिमी यूरोप में प्रारंभिक आधुनिक समय में, व्यापार का विस्तार हुआ था, शहरों की संख्या और आकार में वृद्धि हुई थी, और एक नया, अधिक परिष्कृत समाज उभरा था। पश्चिमी यूरोप के बड़े हिस्से में सामंतवाद अपनी खंडित सत्ता-संरचनाओं के साथ नष्ट होने लगा। इकाई ने इस बदलाव की कुछ विलक्षण विशेषताओं पर प्रकाश डाला है। बाद की इकाइयों में हम इस सामाजिक रूपांतर के बारे में अधिक विस्तार से जानेंगे।

1.12 शब्दावली

पुनर्जागरण : शाब्दिक अर्थ है, पुनर्जन्म। प्रारंभिक आधुनिक काल में पुनरुद्धार की अवधि के दौरान जब शास्त्रीय कलाओं का पुनरुत्थान, विकास और उत्कर्ष हुआ था। इसने मानवतावाद और व्यक्तिवाद की धारणाओं को जन्म दिया जिसने मध्ययुगीन और सामंती विश्व दृष्टिकोण को चुनौती दी।

धर्मसुधार : संगठित ईसाई धर्म में सुधार की प्रक्रिया जहाँ रूढ़िवादी चर्च और पोप के आधिपत्य को चुनौती दी गई थी।

कालक्रम विभाजन : इतिहास में एक विशेष चरण को अच्छी तरह से परिभाषित

विशेषताओं के संदर्भ में विभाजित करने की धारणा। यह बहस और विवाद को जन्म दे सकती है क्योंकि विभिन्न विद्वान किसी अवधि की विभिन्न विशेषताओं को उजागर करते हैं और विभिन्न वर्गीकरण शर्तों को अपनाते हैं। उदाहरण के लिए, भारत में सामंतवाद पर विवाद ।

1.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) भाग 1.2 देखें।

2) उपभाग 1.3.1 देखें।

3) उपभाग 1.3.3 देखें।

बोध प्रश्न 2

1) भाग 1.7 देखें।

2) भाग 1.9 देखें।

1.14 संदर्भ ग्रन्थ

कैमरन, ई. (सं.) (1999) *अर्ली मॉडर्न यूरोपः एन ऑक्सफोर्ड हिस्ट्री*, ऑक्सफोर्ड, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

कामेन, एच. (2000) *अर्ली मॉडर्न यूरोपियन सोसाइटी*, लंदन, रूटलेज।

लैस्लेट, पी. (1971) *द वर्ड वी हैव लॉस्ट*, लंदन, मैथ्यूएन।

सार्ती, आर. (2002) *यूरोप एट होमः फैमिली एंड मटीरियल कल्चर 1500–1800*, न्यू हेवन, सीएन और लंदन, येल यूनिवर्सिटी प्रेस।

विसनेर-हैंक्स, एम. ई. (2006) *अर्ली मॉडर्न यूरोप, 1450-1789*, कैम्ब्रिज, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

इकाई 2 सामंतवाद से पूँजीवाद में संक्रमण–विवाद 1*

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 सामंती और पूँजीवादी प्रणाली की सामान्य विशेषताएँ

2.3 एक विवाद की शुरुआत

2.4 पॉल स्वीजी का हस्तक्षेप

2.5 ताकाहाशी और रोडनी हिल्टन प्रतिस्पर्धा में

2.6 'असमान विकास' की भूमिकाः ई.जे. हॉब्सबॉम

2.7 सारांश

2.8 शब्दावली

2.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.10 संदर्भ ग्रंथ

2.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आपः

- आधुनिक पश्चिम के उदय को सामंतवाद से पूँजीवाद में संक्रमण के संदर्भ में समझ सकेंगे;
- कैसे विभिन्न इतिहासकारों ने पूँजीवाद के उद्‌भव को उजागर करने के लिए सामंतवाद में उत्पादन की शक्तियों और उत्पादन संबंधों के मध्य विरोधाभास पर ध्यान केंद्रित किया है, इसका विश्लेषण कर सकेंगे;
- कैसे इतिहासकारों ने बाद में व्यापार और शहरों के उदय की भूमिका को सामंतवाद के पतन में योगदान देने वाले नए कारकों के रूप में आगे लाने की कोशिश की है, इसकी जाँच कर सकेंगे;
- कैसे इस विवाद में वर्ग संघर्ष और वर्ग टकराव की भूमिका को एक गतिशील प्रक्रिया के रूप में उजागर किया गया है जिसने सामंतवाद से पूँजीवाद के संक्रमण में अहम भूमिका निभाई, जिसमें विभिन्न वर्गों, उत्पादन पद्धतियों, और व्यापार और वाणिज्य की भूमिका शामिल थी, उसे जान सकेंगे; और
- कैसे एक व्यापक दृष्टिकोण, जिसने उपनिवेश से पूँजी संचय और उसका शोषण को समझाने की कोशिश की है और सामंतवाद से पूँजीवाद के संक्रमण की एक असमान तस्वीर को सामने लाया, उसकी चर्चा कर सकेंगे।

* प्रो. श्रीकृष्णा (*रिटायर्ड*), इतिहास विभाग, इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय, मीरपुर, रेवाड़ी

2.1 प्रस्तावना

मार्क्स मानते थे कि मानव सभ्यता का इतिहास विभिन्न उत्पादन पद्धतियों से होकर गुजरा है जैसे आदिम साम्यवाद, दासता, सामंतवाद और पूँजीवाद। उनका सोचना था कि जीर्ण-शीर्ण पूँजीवाद का विघटन साम्यवाद का संचालन करेगा। किसी भी समाज की उत्पादन पद्धति सामान्य रूप से किस तरह से उस समाज द्वारा वस्तुएँ और सेवाएं उत्पन्न की जाती है उससे संदर्भित होता है। चूंकि कोई भी मानव समाज वस्तुओं का उत्पादन बिना मानव श्रम शक्ति और अन्य उत्पादक उपकरणों (कच्चा माल, मशीनरी, भूमि, पौधे और बुनियादी ढाँचा, इत्यादि) के बिना नहीं कर सकता है इसलिए ये एक समाज की उत्पादक शक्तियाँ थीं। लेकिन ये उत्पादक शक्तियां उन संपत्ति और नियमों के संदर्भ में उपयोग और नियंत्रित की जाती हैं, जो बताते हैं कि उत्पादक परिसंपत्तियों का उपयोग कैसे किया जाए। इसके लिए सामाजिक नियमों, कानूनों, प्रथाओं और व्यक्तियों के बीच और एक व्यापक स्तर पर लोगों के समूह या वर्गों के बीच शक्ति संबंधों की भी आवश्यकता होती है। मार्क्स द्वारा इन्हें उत्पादन के संबंध के रूप में नामित किया गया था। जब तक किसी समाज में उत्पादक शक्तियाँ उत्पादन के संबंध के साथ एक लय में होती हैं या उसके साथ तालमेल बैठा लेती हैं, समाज सुचारू रूप से चलता है और अर्थव्यवस्था की वृद्धि होती है। लेकिन जब उनके बीच तनाव (विरोधाभास) होता है, तब समाज क्रांति के माध्यम से एक उत्पादन पद्धति से दूसरी उत्पादन पद्धति में संक्रमण के लिए तैयार होता है। यह आमतौर पर स्वीकार किया जाता है कि, चौदहवीं शताब्दी में मध्ययुगीन यूरोप की सामंती पद्धति या प्रणाली में परिवर्तन आने आरंभ हुए थे जिसके कारण धीरे-धीरे पूँजीवादी अर्थव्यवस्था का विकास हुआ। संक्रमण का यह दौर सबसे विवादास्पद दौर में से एक है और विद्वानों, इतिहासकारों ने संक्रमण की इस प्रक्रिया के स्वरूप पर उनके नजरिए पर आधारित तर्क प्रस्तुत किये हैं। यह और अगली इकाई विद्वान समुदाय द्वारा इस महत्वपूर्ण परिवर्तन, जिसके द्वारा आधुनिक पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के उदय की प्रक्रिया में गति निर्धारित हुई, के बारे में दिये गए विचार और तर्क बताएगीं और समझाएगीं। इसलिए, इससे पहले कि हम इन तर्कों की गहराई में जाएं, हमारे लिए एक सामंती और पूँजीवादी समाज की कुछ सामान्य विशेषताएं जानना आवश्यक है।

2.2 सामंती और पूँजीवादी प्रणाली की सामान्य विशेषताएँ

सामंती व्यवस्था मुख्य रूप से कृषि निर्वाह अर्थव्यवस्था पर आधारित थी। जागीर (manor) या जमीन का बड़ा भू-भाग सामंती व्यवस्था का केंद्र था और जागीर का मालिक सामंत था। यह भूमि राजा के अधिपति द्वारा सामंती स्वामी को आवंटित की जाती थी। सामंती कुलीनजन (feudal lords), श्रेष्ठ वर्ग होने के नाते, खुद जमीन पर खेती नहीं करते थे। भूमि की खेती कृषिदास (serf) द्वारा की जाती थी जो जमींदारों की जागीर से बंधे थे। उनका अपनी श्रम शक्ति पर एक सीमित नियंत्रण और भूमि के छोटे टुकड़े पर, जिसपर वह और उसका परिवार निर्वाह करता था, आंशिक नियंत्रण होता था। कृषिदास जमीन का वास्तविक काश्तकार था जो सामंती स्वामी की भूमि (demesne) पर और उसे आवंटित जमीन के टुकड़े पर भी काम किया करता था। कृषि-दासता (serfdom) सामंती कुलीनजन द्वारा कृषिदास-काश्तकार के श्रम और भाग्य को नियंत्रित करने के लिए अतिरिक्त-आर्थिक दबाव पर आधारित था। सामंतों द्वारा कृषिदास पर कानूनी और न्यायिक शक्ति और विशेषाधिकार का उपभोग किया जाता था। पूरी व्यवस्था पारस्परिक दायित्व पर काम करती थी। राजा ने कुलीनों को जमीन आवंटित की और इसके बदले में कुलीनों को राजा को धन और सैनिक प्रदान करना आवश्यक था। इसी तरह, सामंती कुलीनजन को भूमि अनुदान मिला और उन्हें अधिपतियों को सुरक्षा और सेवाएं प्रदान करना अनिवार्य था। कृषिदास से सामंती कुलीनजनों की जागीर और उसकी अपनी भूमि के छोटे टुकड़े पर (सामंती कुलीनजन की भूमि का छोटा

सा टुकड़ा जिससे वह अपने परिवार का निर्वाह करता था) खेती करने की उम्मीद की जाती थी और इसके बदले में कुलीनजन उन्हें सुरक्षा प्रदान करते थे। इस तरह, एक सामंती समाज में सामंती पदानुक्रम में राजा सबसे ऊपर स्थित होता था और सबसे नीचे कृषिदास स्थित था। लेकिन लौकिक कुलीनजनों के अलावा, पादरी या पुजारी वर्ग भी भूमि के बड़े टुकड़ों के मालिक हुआ करते थे और वे सामंती कुलीनजनों की तरह व्यवहार करते थे। कैथोलिक चर्च मध्ययुगीन यूरोप की सबसे बड़ा भूमि स्वामी था, जो उतनी ही दमनकारी था बावजूद इसके की वह लोगों की मुक्ति के लिए काम करने का दावा किया करता था। ऐसे समाज में, सामाजिक स्थिति और प्रतिष्ठा तक पहुंचना जन्म के संयोग से निर्धारित किया जाता था। वैयक्तिक भूमिका या वैयक्तिक प्रतिष्ठा उसके अपने नियंत्रण के बाहर कारकों के आधार पर सौंपी जाती थी। इस निर्धारित भूमिका को दैवीय शक्ति द्वारा प्रद्धत और प्राकृतिक रूप से तर्कसंगत माना गया, और यह कानूनी रूप से मान्य और समाज के धार्मिक-निर्देशात्मक व्यवस्था द्वारा अनुमोदित थी। हालांकि, मध्ययुगीन यूरोप में कई शहर जागीरों के साथ सह-अस्तित्व में थे जो अर्थव्यवस्था के गैर-कृषि क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते थे। ये शहर विनिर्माण गतिविधियों में शामिल थे। इन केंद्रों में कारीगरों, शिल्पकारों और पेशेवरों के सहयोग से, जिसे गिल्ड (श्रेणी) कहा जाता था, विनिर्माण होता था। गिल्ड (श्रेणी) वस्तुओं के उत्पादन और बिक्री के लिए जिम्मेदार थे। उत्पादन की जाने वाली मात्रा और गुणवत्ता और कीमत गिल्ड (श्रेणी) द्वारा निर्धारित की जाती थी। गिल्ड (श्रेणी) अपने सदस्यों के सामाजिक-धार्मिक पहलुओं और उनके जीवन के लिए भी जिम्मेदार थे। गिल्ड (श्रेणी) का उत्पाद सामंती भूमि और लंबी दूरी के बाजारों में बेच दिया जाता था।

सामंती व्यवस्था के विपरीत, पूँजीवाद बड़े पैमाने पर वस्तु उत्पादन द्वारा, और श्रम के उच्च स्तर के विभाजन, और विशेषज्ञता, और उपकरणों के उपयोग के द्वारा परिलक्षित एक खुली-बाजार उन्मुख अर्थव्यवस्था है। इसलिए उत्पाद निर्वाह-उपयोग के लिए नहीं बल्कि मुनाफा कमाने के लिए बाजार में बेचे जाते हैं। समय और स्थान में निर्माता और उपभोक्ता का अलगाव होता है। इसलिए, माध्यम के रूप में मुद्रा का उपयोग करके बाजारों द्वारा उत्पादों का आदान-प्रदान किया जाता है। इस प्रणाली में उत्पादन के साधनों या उत्पादक-संपत्ति पर निजी तौर पर स्वामित्व होता है और इन निजी संपत्तियों के मालिक उनके उत्पादन कार्यों में उपयोग करने के लिए श्रम शक्ति खरीदते हैं जिसके द्वारा उत्पादित उत्पादन को वे अपने मुनाफा कमाने के लिए अपने बाज़ार में बेचते हैं। इस प्रणाली के तहत सभी उत्पादन का एकमात्र निहित उद्देश्य लाभ या संचय के लिए उत्पादन है, और यह व्यक्तिवाद, अर्जनशीलता, अधिकांश आर्थिक एजेंटों के अधिकतम व्यवहार के साथ चित्रित होता है (उत्पादकों के लिए मुनाफे को अधिकतम करना और उपभोक्ता संतुष्टि को अधिकतम करना)। पूँजीवादी व्यवस्था में व्यक्ति का व्यवसाय या व्यवसायिक भूमिका कम से कम औपचारिक और कानूनी रूप से व्यक्तिगत प्रयास और क्षमता पर निर्भर करती है। इस प्रकार, इसमें सीमित गतिशीलता की गुंजाइश प्रदान की जाती है।

2.3 एक विवाद की शुरुआत

इतिहासकारों की असहमति चरित्र में अधिक वैचारिक हो सकती है। लेकिन अधिकतम बार यह सबूतों और तथ्यों की व्याख्या के आधार पर होता है। मॉरिस डॉब की *स्टडीज इन द डेवलपमेंट ऑफ केपिटलिजम* के प्रकाशन के बाद संक्रमण संबंधि विवाद शुरू हुई थी, जिसका द्वितीय विश्व युद्ध के तुरंत बाद प्रकाशन और 1963 में प्रदर्शित संशोधित संस्करण हुआ था। डॉब ने अपना सामंतवाद से पूँजीवाद में संक्रमण का दृष्टिकोण मार्क्स की उत्पादन पद्धति की धारणा पर आधारित किया था। जबकि उन्होंने यह माना था कि किसी दिए गए युग में एक उत्पादन पद्धति वर्चस्व रखती है, उन्होंने इस बात को भी स्वीकार किया कि अन्य उत्पादन पद्धतियों के तत्व प्रमुख उत्पादन पद्धति के साथ सह-अस्तित्व में हो सकते हैं।

उनके अनुसार, सामंती से पूँजीवादी पद्धति में संक्रमण में उन्होंने तीन मुख्य चीजों पर ज़ोर दिया – चौदहवीं शताब्दी में सामंतवाद में आया संकट, सोलहवीं शताब्दी के अंत और सत्रहवीं शताब्दी में पूँजीवाद का आरंभ, और अठारहवीं और पूर्वार्द्ध उन्नीसवीं शताब्दी में औद्योगिक क्रांति। सामंतवाद के पतन और पूँजीवाद का आरंभ कम से कम दो सदियों के समय द्वारा विभाजित था। सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और आरंभिक सत्रहवीं शताब्दी में पूँजी उत्पादन में काफी हद तक प्रवेश कर गई थी। डॉब द्वारा सामंतवाद को एक ऐसी प्रणाली के रूप में परिभाषित किया गया है जिसके तहत 'आर्थिक स्थिति और सत्ता भूमि स्वामित्व से जुड़े हुए थे, और प्रत्यक्ष उत्पादक कानून या प्रथा गत अधिकार पर आधारित दायित्व के अधीन था जिसमें उसको अपने श्रम या उत्पादन का एक निश्चित अंश अपने सामंती श्रेष्ठ के लाभों के प्रति समर्पित करना होता था।' सामंतवाद यहाँ सामंती भूस्वामियों और किसानों के मध्य सामाजिक संबंधों से बना था। सामंती कुलीनजन किसानों और उनकी भूमि पर शासन करते थे। कृषिदास या बंधुआ खेती करने वाले अपनी भूमि के छोटे टुकड़ों पर अपने श्रम का उपयोग किया करते थे, और उनके लिए अपने श्रम का एक भाग सामंती कुलीनजनों के लिए आवंटित करना आवश्यक होता था।

डॉब ने यह तर्क दिया है कि सामंतवाद का पतन सामंती उत्पादन पद्धति के भीतर अंतर्विरोध का परिणाम था। इस स्पष्टीकरण को आमतौर पर 'आंतरिक-विरोधाभास प्रतिमान' के रूप में वर्णित किया जाता है।

उन्होंने तर्क दिया कि व्यापार और व्यापारिक पूँजी ने सीधे तौर पर सामंती अर्थव्यवस्था प्रणाली को परिवर्तित नहीं किया था। व्यापार का विकास श्रम विभाजन से निकटता से संबंधित था और यह श्रम विभाजन श्रम की उत्पादकता में वृद्धि पर निर्भर था। डॉब के अनुसार, पूँजीवादी विकास शहरी परिवेश के उदय द्वारा लाया गया था। उनके विचार में 'सामंती-भूस्वामी-किसान' वर्ग संबंध और 'सांमती-भूस्वामी-किसान वर्ग संघर्ष' का परिणाम सामंती समाज में शहरों की वृद्धि को समझने के लिए आवश्यक है जिसके परिणामस्वरूप वाणिज्यिक औद्योगिक पूँजी का उदय हुआ था। संक्रमण के समय के दौरान, सामंती समाज में शहरों का विकास सामंती वर्ग से आने वाली हथियारों और विलासिता की वस्तुओं की बढ़ती माँग के कारण हुआ था। यह व्यापार में वृद्धि का भी कारण था। इसके परिणामस्वरूप किसान द्वारा उत्पादित खाद्य पदार्थों को विलासिता की वस्तुओं के साथ विनिमय करने में रुचि का उदय हुआ। डॉब द्वारा सामंतवाद से पूँजीवाद में संक्रमण का विश्लेषण कुछ बिंदु पर जाकर स्वयं ही अपना विरोधाभास करता है।

सामंतवाद पर आधुनिक चर्चा उसकी अवधारणाओं पर लंबे समय से चले आ रहे विवादों से त्रस्त रही है। यह विवाद इस बात पर केंद्रित रहे हैं कि क्या सामंतवाद को मौलिक रूप से राजनीतिक और कानून के रूप में देखा जाना चाहिए या फिर सामाजिक-आर्थिक रूप में। डॉब द्वारा आर्थिक पहलुओं पर ज़ोर दिया गया है। उनके अनुसार, सामंती पद्धति को निर्वाह उत्पादकों के एक वर्ग से अधिपति द्वारा लगान और सेवाओं की अतिरिक्त-आर्थिक निकासी के रूप में परिभाषित किया गया है। किसान उत्पादक बड़े पैमाने पर उत्पादन की प्रक्रिया को नियंत्रित करते हैं लेकिन वे कानूनी रूप से स्वतंत्र नहीं हैं। सामंतवाद और कृषिदासता पर्यायवाची थे। चौदहवीं शताब्दी की आर्थिक गिरावट के तुरंत बाद, कॉर्पोरेट शहरों में राजनीतिक और आर्थिक स्वायत्तता के उदय ने सामंती पद्धति के संकट को चिह्नित किया। डॉब के अनुसार, शहरों ने सामंतवाद के पतन में कुछ भूमिका निभाई थी। उत्तर मध्ययुगीन काल के किसान विद्रोहों में भागे हुए कृषिदासों को कस्बों ने आश्रय प्रदान किया और उनके लिए स्वतंत्रता के मरु उद्यान के रूप में कार्य किया। लेकिन ग्रामीण इलाकों में किसानों और जमींदारों के मध्य का विरोध और टकराव वर्ग-संघर्ष का मुख्य अखाड़ा था।

मध्ययुग के अंत में कृषिदासता समाप्त हो गई थी, जबकि मध्यकालीन सरकारी संरचनाएँ और जमींदारों की वर्गीय शक्ति अस्तित्व में बनी रही। हालांकि एक वर्ग के तौर पर किसान मजबूत हो गए थे, फिर भी वे जागीरदारों की सत्ता के अधीन रहे। काम पर रखे जाने वाले मजदूरों का उभरता हुआ वर्ग अब बल के अधीन था। अतः मजदूरी करना अभी भी निर्वाह खेती से आधारित आजीविका के लिए एक पूरक था। व्यापारिक पूँजीपति अधिक शक्तिशाली हो गए थे, लेकिन उन्होंने जमींदारों के साथ अधिकांश रूप से सहयोग किया। हालांकि, शहरी शिल्पकार और समृद्ध और मध्यम वर्ग के किसान सामंतवाद से स्वतंत्र हो गए थे। वे क्षुद्र उत्पादक थे जो अभी तक पूँजीपति नहीं थे, लेकिन निश्चित उनमें ऐसा बनने की क्षमता थी। डॉब की अवधारणा में, यह उत्पादन की एक छोटी पद्धति थी जिसने सोलहवीं शताब्दी के मध्य में सामंती संकट की शुरुआत से पूँजीपति के आगमन तक दो सौ या इतने वर्षों में आर्थिक रूप से प्रधानता बनाये रखी थी।

डॉब के तर्क के आने तक, यह आमतौर पर माना जाता था कि बाजार के विनिमय की बढ़ती तीव्रता और मुद्रा की बढ़ती भूमिका से सामंतवाद का पतन हुआ। इसके विपरीत, डॉब ने यह प्रदर्शित किया कि मुद्रा और विनिमय ने कृषिदासता और सामंतवाद को वास्तव में मजबूत किया। व्यापारिक पूँजी का उद्भव सामंतवाद के साथ पूरी तरह से सुसंगत था। बल्कि यह सामंती उत्पादन पद्धति की आर्थिक कमजोरी थी जो राजस्व के लिए शासक वर्ग की बढ़ती जरूरतों के साथ इस व्यवस्था के संकट के लिए जिम्मेदार थी। कड़ी मेहनत करने के लिए आर्थिक प्रोत्साहन की कमी और तकनीक के निम्न स्तर ने किसान उत्पादकता पर एक सीमा तय कर दी थी। अपनी संख्या में विस्तार और जमींदारों के संस्थानों और अनुचरवर्ग की संख्या में वृद्धि के कारण, सामंती-वर्ग की किसानों पर माँग अत्यधिक बढ़ गई थी। सामंती जमींदारों द्वारा अधिक से अधिक विलासिता उपभोग की माँग, और युद्ध और लूटमार की अनिवार्यता के कारण काश्तकारों पर बोझ बढ़ा। अग्रणी कुलीनों के मध्य प्रतिस्पर्धा के कारण दावतों, विलासिता की वस्तुओं, तमाशबीनों और युद्धों पर खर्च बढ़ गये थे। इस सबने उत्पादकों पर आर्थिक दबाव बढ़ाया। इसका परिणाम आर्थिक क्षय, भूमि से पलायन और किसान विद्रोह था।

1300 के बाद, अति-शोषण और स्थिर उत्पादकता के कारण जनसंख्या में गिरावट आई। बाद में श्रम की कमी, किसान प्रतिरोध या पलायन के खतरे से श्रम के रूप में लगान के भुगतान के स्थान पर मुद्रा लगान की दिशा में व्यापक रूपांतरण हुआ। युद्ध के माध्यम से कुलीन वर्ग की संख्या में कमी होने से, जागीर को पट्टे पर देने की बढ़ती प्रथा, किसान गरीबों से विभेदित किसानों में अमीरों और मध्यवर्ग के समूह के उदय और दिहाड़ी मजदूरी के बढ़ते उपयोग के कारण जमींदारी व्यवस्था और कमजोर हुई। पंद्रहवीं शताब्दी के अंत तक, सामंती व्यवस्था का आर्थिक आधार बिखर चुका था। उत्तर मध्ययुगीन के अंत में किसान के मध्य सामाजिक विभेदीकरण, डॉब की रचना की एक प्रमुख विषय-वस्तु, ने बाद में किसानों की बड़े पैमाने पर बेदखली के लिए रास्ता तैयार किया। इस चलायमान आबादी के उद्भव ने पूँजीवाद का आगमन किया और पूँजीवादी मजदूरी के उद्भव के लिए मंच की स्थापना की। कस्बों की भूमिका यह थी कि इसने ग्रामीण इलाकों से भाग रहे कृषिदासों को आकर्षित करने में एक चुंबक के रूप में कार्य किया।

कस्बों की भूमिका पर डॉब की धारणा का बाद में दृढ़तापूर्वक विरोध हुआ। डॉब की व्याख्या – सामंतवाद का पतन किसान उत्पादकों के अति-शोषण से उपजी अपने स्वयं के आंतरिक विरोधाभासों का परिणाम था – अधिक स्वीकार्य थी। डॉब के अपने शब्दों में, ''यह सामंतवाद के उत्पादन की एक प्रणाली के रूप में अक्षमता थी, जो राजस्व के लिए शासक वर्ग की बढ़ती जरूरतों के साथ मुख्य रूप से इसके पतन के लिए जिम्मेदार थी; क्योंकि इस जरूरत ने अतिरिक्त राजस्व की आवश्यकता के लिए उत्पादक पर उस हद तक दबाव बढ़ाने

को तक प्रेरित किया पर जहां यह दबाव वस्तुतः अकल्पनीय हो गया।'' डॉब की सामंतवाद के पतन की व्याख्या ने मशहूर संक्रमण विवाद को उत्तेजित किया।

बोध प्रश्न-1

1) संक्रमण विवाद पर मौरिस डॉब के विचारों पर चर्चा किजिए।

.....

.....

.....

2) क्या आप मौरिस डॉब से सहमत हैं कि सामंतवाद का पतन अपने स्वयं के आंतरिक विरोधाभासों के कारण था ?

.....

.....

.....

2.4 पॉल स्वीजी का हस्तक्षेप

पॉल स्वीज़ी, एक और प्रतिष्ठित मार्क्सवादी अर्थशास्त्री और पॉल बरन के साथ मंथली रिव्यू के सह-संस्थापक, वे पहले थे जिन्होंने डॉब के दृष्टिकोण को चुनौती दी। वे डॉब के साथ इस बात पर सहमत थे कि, कृषिदास्ता पश्चिमी सामंतवाद उत्पादन पद्धति का प्रमुख संबंध था। परंतु यह पद्धति आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर जागीरों के आसपास आयोजित थी, सामंतवाद, पॉल के अनुसार, उपयोग के लिए एक उत्पादन पद्धति थी और उसका इस तरह से जड़ता की ओर रुझान हुआ। इस व्यवस्था को कमजोर करने के लिए बाहरी बल की जरूरत थी जो व्यापार की वृद्धि और विनिमय के लिए उत्पादन में वृद्धि के रूप में आया। उन्होंने सामंतवाद के पतन के लिए आंतरिक विरोधाभास के बारे में डॉब के दृष्टिकोण को खारिज किया। यह पतन, उनके विचारों में, केवल व्यवस्था से बाहर के कारणों से उत्पन्न होने के रूप में समझाया जा सकता है। एक बाहरी प्रमुख चालक का स्वीज़ी का दृष्टिकोण, केवल एक उपयोग के लिए उत्पादन करती बंद-आत्मनिर्भर प्रणाली के पतन की व्याख्या करने के लिए आवश्यक था। वह इस बात से असहमत थे कि परिवर्तन का मुख्य चालक सामंती प्रणाली के लिए आंतरिक था। डॉब ने स्वीज़ी के इस विचार को अस्वीकार कर दिया कि सामंतवाद जड़ता की ओर बढ़ा और ज़ोर देकर कहा कि, अपने आंतरिक – विशेष रूप से वर्ग – विरोधाभासों के आधार पर उसकी अपनी गति थी। किसानों और सामंती भूस्वामियों के मध्य वर्ग-संघर्ष ने पूँजीवाद के आगमन को सीधा जन्म नहीं दिया था। इसने उत्पादन की छोटी पद्धति की सामंती अधिपतियों पर निर्भरता को कम किया, अंततः छोटे उत्पादक को सामंती शोषण से मुक्त किया। स्वीज़ी की व्यापार-संचालित बाहरी प्रमुख चालक की धारणा एक जटिल-सामाजिक व्यवस्था के पतन का सरल एकल कारण स्पष्टीकरण प्रतीत होता है। डॉब का दृष्टिकोण अधिक ऐतिहासिक और सैद्धांतिक रूप से बेहतर बताया गया था, और वह आर्थिक विकास और वर्ग-संघर्ष द्वारा संचालित आंतरिक रूप से गतिशील प्रणाली के रूप में सामंतवाद का एक अधिक परिष्कृत विचार देता है। आंतरिक कारकों पर अधिक ज़ोर देते हुए डॉब ने व्यापार के विकास को भी एक कारक माना है। स्वीज़ी ने पूर्व-पूँजीवादी वस्तु-उत्पादन की एक प्रणाली के अस्तित्व की ओर संकेत नहीं देने के लिए डॉब की और आलोचना की, जो प्रणाली सामंतवाद के पतन के मद्देनजर न तो सामंती थी और न ही पूँजीवादी।

2.5 ताकाहाशी और रोडनी हिल्टन प्रतिस्पर्धा में

मार्क्सवादी आर्थिक इतिहासकार, कोहाचिरो ताकाहाशी, ने पहली बार इस बात पर ज़ोर दिया कि इस विवाद को इंग्लैंड मामले से आगे बढ़ाया जाना चाहिए जहाँ यूरोपीय महाद्वीप में सामंतवाद का अनुभव शामिल हो। ताकाहाशी ने स्वीज़ी द्वारा सामंतवाद की एक आत्मनिर्भर बंद-अर्थव्यवस्था के रूप में अवधारणा को अस्वीकार किया, जो विनिमय की बजाय केवल उपयोग के लिए उत्पादन किया करती थी। वस्तुओं का उत्पादन और प्रसारण सामंत पद्धति सहित विभिन्न उत्पादन पद्धतियों में किया जाता था। यह जानना आवश्यक है की उत्पादों का कैसे उत्पादन किया जाता था। वैसे तो ताकाहाशी ने डॉब के दृष्टिकोण का दृढ़ता से समर्थन किया कि सामंतवाद का पतन आंतरिक कारकों के कारण हुआ, जैसे वर्ग-संघर्ष, न कि बाहरी कारकों के कारण जैसे व्यापार। लेकिन ताकाहाशी के अनुसार डॉब की सामंतवाद की परिभाषा इस संदर्भ में अपर्याप्त थी कि उन्होंने तुरंत अपनी परिभाषा को सामंत भू-सम्पत्ति और कृषिदास्ता से शुरुआत की अमूर्त धारणाओं से की। लेकिन जैसे मार्क्स ने अपनी पूँजी के विश्लेषण को वस्तुओं के साथ आरंभ किया था, उसी तरह सामंतवाद का विश्लेषण भी पश्चिमी सामंतवाद का मूलभूत सामाजिक इकाइयों से आरंभ होना थाः यानि विरगेट (virgate; कुटीर, छोटा भूखंड, सामूहिक अधिकार), ग्राम समुदाय और जागीर (seigneurie) से, वह जागीर थी जो अन्य दो मूलभूत इकाइयों पर हावी थी, और वह उत्पादकों से सामंती लगान और श्रम की लामबंदी के माध्यम से अधिशेष के निष्कर्षण निकासी का आधार बनी।

रोडनी हिल्टन ने भी स्वीज़ी के दृष्टिकोण पर सवाल उठाया और उन्होंने यह तर्क दिया कि लंबी दूरी का व्यापार सामंतवाद के पतन के लिए जिम्मेदार नहीं था। स्वीज़ी का दृष्टिकोण तथाकथित पिरेन के शोध प्रबंध पर आधारित था। हेनरी पिरेन मध्यकाल के प्रसिद्ध बेल्जियम के इतिहासकार थे। उन्होंने यह दावा किया कि, पश्चिम की आर्थिक गिरावट पश्चिमी रोमन साम्राज्य के विनाश के साथ मेल नहीं खाती थी बल्कि आठवीं शताब्दी में मुस्लिम कब्जे के परिणामस्वरूप भूमध्यसागर के साथ मेल खाती थी। इसके विपरीत, पश्चिमी यूरोप का आर्थिक पुनरुद्धार ग्यारहवीं शताब्दी के धर्मयुद्धों के दौरान भूमध्यसागर के दोबारा खुलने के साथ आरंभ हुआ। पिरेन के खिलाफ हिल्टन ने तर्क प्रस्तुत करते हुए कहा कि रोमन साम्राज्य का पतन पश्चिम में व्यापार के विघटन के कारण नहीं हुआ था बल्कि आंतरिक कारकों के परिणामस्वरुप हुआ था। तीसरी शताब्दी से शुरू होते हुए रोमन साम्राज्य में विनिमय और व्यापार के लिए उत्पादन में पतन आंतरिक आर्थिक और जनसांख्यिकी कमजोरी के परिणामस्वरुप आरंभ हुआ था, जो रोमन राजनीतिक सत्ता के पतन से पहले सैकड़ों सालों तक चला। यह भू-मध्यसागर में अरब घुसपैठ की वजह से नहीं हुआ था। इसी प्रकार, पश्चिमी यूरोप में आंतरिक कारकों ने धर्मयुद्ध शुरू होने से पहले दूर के बाजारों के लिए उत्पादन में वृद्धि को जन्म दिया था। अगर सामंतवाद का विकास आंतरिक कारकों और प्रक्रियाओं की वजह से हुआ, तो उसका पतन भी आंतरिक कारकों की वजह से ही हुआ था।

हिल्टन ने, डॉब की तरह, इस विचार का समर्थन किया कि सामंतवाद का पतन आंतरिक वर्ग संघर्ष के कारण हुआ था। यह सामंतवाद के पतन का मुख्य कारण था और यह उत्पादन की शक्तियों के विकास पर निर्भर था। अपने गतिशील तत्वों के रूप में सामंती कुलीनजनों और किसानों के मध्य वर्ग-संघर्ष ने एक चरण में सामंतवाद उत्पादन पद्धति के उत्कर्ष को जन्म दिया था और दूसरे चरण में उसी पद्धति के पतन को। कुलीन और राजकुमार एक दूसरे के साथ अपने लगान की आय को अधिकतम करने के प्रयास में राजनीतिक प्रतिस्पर्धा में व्यस्त थे। परिणामस्वरूप बढ़ते हुए लगान की खोज ने सर्वप्रथम तकनीकी नवाचार, व्यापार और वाणिज्य के विकास, और उत्पादकता में वृद्धि को प्रोत्साहित किया और केवल बाद में जाकर इस खोज ने सामंतवाद के पतन में योगदान दिया। हिल्टन ने, जब सामंतवाद अपनी विकास की चरम सीमा पर था, तब उत्पादन की शक्तियों के विकास को रेखांकित

किया। इन कारकों के मध्य अंतःक्रिया, जिसमें बाजार के लिए उत्पादन वृद्धि शामिल थी, ने किसानों के बीच बढ़ते सामाजिक और वर्ग विभेदीकरण को जन्म दिया। अमीर किसान अपनी भूमिजोतों के आकार को बढ़ाने में सक्षम थे, उन्होंने अधिक से अधिक मजदूरों को रोजगार दिया जो ज्यादातर भूमिहीन किसानों से गठित थे बजाए छोटे भूमिधारकों से। समृद्ध किसान सामंती कुलीनजनों द्वारा बढ़ती लगान की माँगों से अप्रसन्न थे और इस नाराजगी को छोटे और गरीब खेतीहरो का समर्थन प्राप्त था, क्योंकि ज्यादा लगान की माँग आर्थिक वृद्धि पर प्रतिबंध लगाती थी और यह माँग सामान्य रूप से छोटे किसानों के निर्वाह और आजीविका को कम कर रही थी।

चौदहवीं शताब्दी में लगान के लिए संघर्ष तीव्र हुआ और अपने चरम पर पहुंच गया था। लगान में गिरावट आई और राज्य कराधान, युद्ध और लूट, और नगद भुगतान में लगान के रूपांतरण से इसकी आपूर्ति केवल आंशिक रूप से ही कर पाए। सामंती लगान उत्पादन के लिए प्रोत्साहन नहीं रह गया था, और सामंती भू-स्वामियों को अपने निरंतर अस्तित्व के लिए अंततः राज्य की उभरती हुई शक्ति पर निर्भर होना पड़ा। अपने सामंती स्वामी की जागीर-भूमि पर श्रम के लिए बाध्य काश्तकारों की संख्या और लगान के मूल्य, जिसका अब मुख्य रूप से नगद में भुगतान किया जाता था, में कमी आई। कुल मिलाकर सामंती भू-स्वामियों का अपने काश्तकारों पर कानूनी दावा कमजोर हो गया था। मुद्रा में लगान ने जागीर में अमीर और गरीब जनसंख्या के सामाजिक स्तरीकरण बढ़ाने को सहयोग दिया। भूमि की बिक्री और खरीद आरंभ हुई, जिसने एक भूमि बाजार के निर्माण को जन्म दिया। जागीर में समृद्ध किसानों की जोतों का अन्य सबकी कीमत पर विस्तार हुआ। अधिकतम किसानों को मजदूरी का सहारा लेने के लिए विवश होना पड़ा। समृद्ध किसान और निचले स्तर के कुलीन एक अधिकाधिक बाजार-उन्मुख अर्थव्यवस्था में सबसे कुशल उत्पादक थे, जिसने पूँजीवादी रूप लेना आरंभ किया। वर्ग संघर्ष की भूमिका, दोनों सामंतवाद के अधीन उत्पादन शक्तियों के विकास और उसके पतन में, किसानों के मध्य सामाजिक स्तरीकरण के बारे में हिल्टन का सजीव प्रदर्शन वह मौलिक केंद्रबिंदु बन गया जिसके इर्द-गिर्द इस संक्रमण का विवाद अब घूमता है।

हिल्टन के दृष्टिकोण में शहर और व्यापार की भूमिका, जिसे अन्य इतिहासकारों जैसे स्वीज़ी ने सामंतवाद के पतन का प्रमुख कारण या प्रमुख चालक के रूप में देखा, वह स्वयं वर्ग-संघर्ष का परिणाम था। हिल्टन ने यह तर्क दिया कि, सामंती उत्पादन पद्धति के संदर्भ में नगद भुगतान में लगान के रूपांतरण ने व्यापारी पूँजी के विकास को आगे बढ़ाया और बड़े शहरों में वृद्धि की। हिल्टन के दृष्टिकोण में शहर सामंती व्यवस्था का हिस्सा थे, बजाए पूँजीवाद के लिए एक बाहरी उत्प्रेरक। यह दृष्टिकोण जॉन मैरिंगटन द्वारा लिखे गए आलेख से बहुत प्रभावित था, जो मूल रूप से न्यू लेफ्ट रिव्यू में छपा था और यह आलेख विवाद में अंतिम योगदान के रूप में द ट्रांजिशन फ्रॉम फ्यूडलीज़म टू केपिटलिज्म में पुनः प्रकाशित किया गया था, जिसे हिल्टन ने 1976 में संपादित किया। मैरिंगटन ने यह तर्क दिया कि शहर पर आधारित वाणिज्य ने सामंती उत्पादन पद्धति के विस्तार को सुविधा प्रदान की। शहरी निगम संगठन या गिल्ड (श्रेणी) ने, हालांकि कई बार स्थानीय जागीरदारों के विरोध में थे, सामंतवाद के अधीन वास्तव में एक 'सामूहिक-जागीर' के रूप में कार्य किया और इसकी आर्थिक नींव को मजबूत किया। सामंतवाद ने अपनी संरचना में शहरी उत्पादन और विनिमय के लिए एक स्वायत्त स्थान प्रदान किया।

मैरिंगटन ने यह तर्क दिया कि शहर और व्यापार सामंतवाद के अंतर्निहित स्वाभाविक घटक थे। वे बाहरी पूँजीवादी शक्तियाँ नहीं थीं जो सामंतवाद के कार्य पद्धति को कमजोर करने के लिए काम कर रही थीं। इसलिए उन्होंने पूँजीवाद के उद्भव में कोई अहम भूमिका नहीं निभाई। व्यापारी पूँजी ने अधिशेष मूल्य का सृजन नहीं किया, केवल उसका पुनर्वितरण किया। जबकि उस ने पूँजी के प्राथमिक संचय में एक अहम भूमिका निभाई, वह स्थाई स्व-

प्रजनन संचय[1] का स्रोत नहीं हो सकता था। यह होने के लिए, प्रादेशिक राज्य में बाजार का विस्तार और कृषि पूँजीवाद का उदय आवश्यक था और जब बाजार का विस्तार हुआ और कृषि पूँजीवाद उभरा तब शहर की व्यापारिक पूँजी का परिचालन मुख्य रूप से एक घटते दायरे तक सीमित हो गया। मैरिंगटन का तर्क सामंतवाद के पतन में वर्ग-संघर्ष की भूमिका और आंतरिक तर्क का एक शक्तिशाली सुदृढ़ीकरण था। हालांकि, उन्होंने सामंतवाद के पतन में इन कारकों की भूमिका के तीन पहलुओं की अनदेखी की। पहला, शहरों ने ग्रामीण प्रजा के लिए एक संभावित या वास्तविक शरण-क्षेत्र के रूप में काम किया, जैसा की डॉब ने दर्शाया था। दूसरा, शहरी बाजारों ने ग्रामीण उत्पादकों के मध्य सामाजिक और राजनीतिक संबंधों को मजबूत किया। अंत में, जैसा कि मैरिंगटन ने खुद नोट किया था कि व्यापारिक पूँजी ने आदिम (प्राथमिक) संचय में भूमिका निभाई जो कि पूँजीवादी उत्पादन पद्धति के विकास के लिए एक पर्याप्त परिस्थिति न सही परंतु आवश्यकता थी। शहर और व्यापार की भूमिका के इन पहलुओं को इतनी आसानी से खारिज नहीं किया जा सकता था, और जैसा कि हम नीचे दी गई चर्चा में देखेंगे, बाद के वर्णनों ने वर्ग-संघर्ष और व्यापार को पूँजीवाद के उदय में संयुक्त कारकों के रूप में देखा।

2.6 'असमान विकास' की भूमिकाः ई. जे. हॉब्सबॉम

जैसा कि हम पहले चर्चा कर चुके हैं की, ताकाहाशी ने संकेत दिया था कि सामंतवाद की चर्चा को व्यापक बनाने की आवश्यकता है जिसमें यूरोप महाद्वीप और जापान की चर्चा शामिल होनी चाहिए। यह मार्क्सवाद कि एक सामान्य प्रवृत्ति का हिस्सा था, जिसमें सामंतवाद की अवधारणा का विस्तार गैर-यूरोपीय पूर्व-पूँजीवादी समाजों का विश्लेषण करना था ना कि समस्यामूलक और यूरोप-केन्द्रित अवधारणाओं जैसे सामुदायिक और एशियाई उत्पादन पद्धतियों का इस्तेमाल करना। सामंतवाद को, कम से कम हिल्टन के हस्तक्षेप के बाद, एक प्रगतिशील पद्धति के रूप में देखा जाने लगा जो पूँजीवाद की ओर विकसित होने में सक्षम थी जबकि मार्क्स द्वारा चर्चित अन्य दो श्रेणियों – संपत्ति का सामुदायिक स्वामित्व और आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्था – की एशियाई पद्धति को जड़, अपरिवर्तनीय पद्धति के रूप में देखा गया और इसलिए उसे समाज के द्वंद्वात्मक परिवर्तन की मार्क्सवादी प्रणाली के अनुरूप नहीं देखा गया। एक भ्रामक सरल योगदान में एरिक हॉब्सबाम ने मार्क्सवादी समझ को एशियाई और सामुदायिक उत्पादन पद्धतियों की अवधारणाओं से संबंधित समस्याओं से मुक्त करने में और उन्हें असमान और संयुक्त विकास से संबंधित विचारों से पुनः जोड़ने में मदद की।

हॉब्सबॉम ने बेहिचक स्वीकार किया कि यूरोप में आर्थिक विकास का निर्माण करने वाली शक्तियाँ विश्व के अन्य क्षेत्रों में भी मौजूद थीं। जापानी सामंतवाद, विशेष तौर पर, यूरोपीय सामंतवाद के आदर्श का सबसे नजदीकी स्वरूप था और ऐसी कल्पना की जाती है कि वहां पूँजीवाद का उदय यूरोपीय प्रभाव से स्वतंत्र रूप में संभव था। उनके दृष्टिकोण में यूरोपीय साम्राज्यवाद की घुसपैठ ने गैर-यूरोपीय समाज में विकास की निष्कपट आंतरिक प्रक्रिया को

[1] पूँजी के आदिम (प्राथमिक) संचय की समस्या का सरोकार पूँजी की उत्पत्ति से होता है, और इसलिए इसका सरोकार वर्ग भेद से होता है जो पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में सम्पत्तिवान और गैर-सम्पत्तिवान के बीच उभरे। एडम स्मिथ के आदिम घ्मौलिक संचय के लेखन में एक शांतिपूर्ण प्रक्रिया का चित्रण किया गया है, जिसमें कुछ श्रमिकों ने दूसरों की तुलना में अधिक परिश्रम किया और धीरे-धीरे धन को एकत्रित किया। अंततः कम मेहनती श्रमिकों को अपने स्वयं के लिए जीवित मजदूरी स्वीकार करने के लिए छोड़ दिया। कार्ल मार्क्स ने इस स्पष्टीकरण को ''बचकाना'' कहा और इसके बजाय कहा कि, आदिम संचय में सम्पत्ति-विहीन बनाने की एक हिंसक प्रक्रिया शामिल थी जिसमें भूमि और अन्य संसाधन ले लिए जाते थे, जैसे भूमिहीन सर्वहारा वर्ग का निर्माण करने के लिए भूमि को छीन लेना और एक निवासी आबादी को निष्कासित करना। यह कार्य हिंसा, युद्ध, दासता और उपनिवेशवाद के माध्यम से पूरा किया गया था।

भंग कर दिया था। पूँजीवाद के गैर–यूरोपीय रूपों की संभावना स्वीकार करने के बाद हॉब्सबाम ने इस बात पर ज़ोर दिया कि, यूरोप में पूँजीवाद की उपलब्धि अद्वितीय और बहुत खास थी। उन्होंने तर्क दिया कि यह तथ्य अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि सामंतवाद से पूँजीवाद की ओर संक्रमण विश्व स्तर पर एक अत्यधिक असमान विकास का प्रकरण है। हमें इस बात को नोट करना चाहिए कि, असमान विकास की अवधारणा नई नहीं थी और यह अवधारणा मार्क्स द्वारा उनकी रचना *ग्रउंडरिसे* (*Grundrisse*; 1857-1858) में उल्लिखित की गई थी, जबकि असमानता एक पतनशील उत्पादन पद्धति से विकसित होती अधिक प्रगतिशील दूसरी उत्पादन पद्धति में संक्रमण की परिस्थिति का प्रतिनिधित्व करती है। इसके अतिरिक्त, असमान विकास पूँजीवादी विकास के प्रारूप की एक मौलिक विशेषता है। पश्चिमी यूरोप में आसमान विकास के संदर्भ में हॉब्सबॉम के अनुसार सामंतवाद के संकट में पश्चिमी यूरोप के अंदर पूँजीवाद विकास के सबसे विकसित क्षेत्र भी शामिल थे।

चौदहवीं शताब्दी के संकट के बारे में उल्लेखनीय बात, उनके दृष्टिकोण में, न केवल बड़े पैमाने की सामंती भू-संपत्ति कृषि का पतन बल्कि इतालवी और लैमिश कपड़ा उद्योग का पतन भी था। इंग्लैंड औद्योगिक रूप से उन्नत हुआ लेकिन बहुत बड़े इतालवी और लैंडर्स कपड़ा उद्योग कभी भी इस संकट से उबर नहीं सके। असमानता सामंतवाद के संकट को ही नहीं बल्कि पूँजीवाद के उदय को भी चिह्नित करती है। संपूर्ण रूप से चौदहवीं शताब्दी से लेकर सत्रहवीं शताब्दी तक यूरोपीय विकास बार-बार संकट द्वारा चिह्नित किया गया, जिसमें एक क्षेत्र में होने वाले प्रतिगमन ने दूसरे क्षेत्र में प्रगति को प्रोत्साहित किया। पश्चिम यूरोप में होने वाली उन्नति पूर्वी-यूरोप और एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका की कीमत पर हुई। पश्चिम यूरोप में पूँजीवाद अर्थव्यवस्था में संक्रमण की प्रक्रिया अन्य क्षेत्रों को निर्भर अर्थव्यवस्थाओं और उपनिवेशओं में तब्दील करने के साथ ही साथ हुई। उन्नत क्षेत्रों से संसाधनों या बाद में उपनिवेश क्षेत्रों से संसाधन जब्त करना पश्चिमी यूरोप के पूँजीवाद विकास की एक अंतर्निहित विशेषता बन गई। दूसरे शब्दों में, यूरोप में पूँजीवाद के उदय को यूरोप के भीतर और बाहर दोनों होने वाली असमान विकास पर आधारित विनियोग की एक विश्वव्यापी प्रक्रिया के संदर्भ में समझा जाना चाहिए। हॉब्सबॉम ने यह निष्कर्ष निकाला कि, यूरोपीय पूँजीवाद का कुल प्रभाव विश्व को और अधिक तेजी से दो क्षेत्रों में विभाजित करना था ''विकसित'' और ''अविकसित'' देश, दूसरे शब्दों में, 'शोषण करने वाले' और 'शोषित' देश। हॉब्सबॉम की संक्रमण की अवधारणा में असमता ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। एक स्थान पर लाभ अन्य स्थानों की कीमत पर हुआ, यहाँ तक कि वे जो शुरू में अधिक विकसित थे उनकी की कीमत पर भी। हॉब्सबॉम का द्वंद्वात्मक गुणवत्ता और संक्रमण की प्रक्रिया की असमानता का बोध होना एक प्रभावशाली अंतर्दृष्टि थी, जो संक्रमण विवाद में एक महत्वपूर्ण योगदान का प्रतिनिधित्व करती है।

1950 के दशक के संक्रमण की विवाद पर हिल्टन का संपादन और पुनःप्रकाशन (1976 में) 1960 के दशक में विवाद के पुनरुद्धार का परिणाम था। एक द्वैमासिक राजनीतिक शैक्षणिक पत्रिका के रूप में 1960 में शुरू हुए द न्यू लेट रिव्यू ने इस पुनरुद्धार में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ब्रेनर, एंडरसन और वालरस्टीन और अन्य वामपंथी इतिहासकारों ने संक्रमण विवाद पर अपने महत्वपूर्ण योगदान को प्रकाशित किया। पोस्टन, लाडूरी, अबिल और वेरहस्ट जैसे विद्वानों ने 'जनसांख्यिकीय प्रतिमान सिद्धांत' को प्रस्तुत किया। इस सिद्धांत का निर्माण मार्क्सवादी प्रतिमान के विरोध में किया गया, जिसने इस विवाद को और समृद्ध किया। हम इन सभी विचारों और विचारों के प्रतिवाद की चर्चा अगली इकाई में जारी रखेंगे।

बोध प्रश्न-2

1) पॉल स्वीजी और रोडनी हिल्टन के मध्य मतभेदों को रेखांकित किजिए।

.....

.....

.....

2) असमान विकास से हॉब्सबॉम का क्या तात्पर्य था ?

.....

.....

.....

2.7 सारांश

इस इकाई में हमने सामंतवाद से पूँजीवाद के संक्रमण की लंबी और आसमान प्रक्रिया पर चर्चा की है। इस सवाल पर विवाद मार्क्सवादी विद्वानों के मध्य मॉरिस डॉब की पुस्तक *स्टडीज इन द डेवलपमेंट ऑफ केपिटलिज्म* के साथ आरंभ हुआ था। संक्रमण की लंबी अवधि, सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन की असमान प्रकृति, और विद्वानों के दृष्टिकोण के मध्य मतभेदों को दर्शाते हुए एक जीवंत और ऐतिहासिक रूप से समृद्ध विवाद को इस इकाई में वर्णित किया गया है। कुछ विद्वानों, जैसे पॉल स्विजी, ने सामंतवाद के पतन को समझाने के लिए बाहरी उत्प्रेरक का तर्क प्रस्तुत किया है जैसे लंबी-दूरी का व्यापार और बाजार की शक्तियाँ। जबकि अन्य विद्वानों, जैसे डॉब और रोडनी हिल्टन, ने इस संक्रमण को अंतर्जात कारकों जैसे सामंती जमींदारों और किसान कृषकों के मध्य वर्ग-संघर्ष से जोड़कर देखने की कोशिश की है। वर्ग संघर्ष की प्रकृति और कस्बों और व्यापार की विशिष्ट भूमिका के संदर्भ में तर्कों में भिन्नता है, और इस प्रक्रिया की असमानता हॉब्सवॉम और ताकाहाशी जैसे विद्वानों द्वारा उजागर की गई है। यह विवाद प्रदर्शित करता है कि, इतिहास स्थिर और अपरिवर्तनीय नहीं है इसलिए इसकी व्याख्याएँ जीवंत विवादों और सामाजिक परिवर्तन के समुचित स्वरूप और कार्य-प्रणालियों की चर्चाओं से भरी हैं।

2.8 शब्दावली

उत्पादन पद्धति (Mode of Production) : एक अनुमानी शब्द, जो उत्पादन के संबंधों और उत्पादन की शक्तियों की अवधारणाओं को, सम्पूर्णता में एक साथ, किसी सामाजिक गठन की प्रमुख उत्पादन प्रक्रिया को नामित करने के लिए उपयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए – सामंतवाद, पूँजीवाद, समाजवाद।

2.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1) भाग 2.3 देखें।

2) भाग 2.3 देखें।

बोध प्रश्न-2

1) भाग 2.5 देखें।

2) भाग 2.6 देखें।

2.10 संदर्भ ग्रंथ

मॉरिस, डॉब (1946-1963). *स्टडीज इन द डेवलपमेंट ऑफ केपिटलिजम*. न्यूयॉर्कः इंटरनेशनल पब्लिशर्स / लंदनः रूटलेज एंड केगान पॉल।

हरमन, क्रिस (1999-2008). *ए पीपल्स हिस्ट्री ऑफ द वर्ल्ड*. लंदनः बुकमार्क्स, वर्सो।

हिल्टन, रोडनी हॉवर्ड (संपा.) (1976). *द ट्रांजिशन फ्रॉम फयूडलीज़म टू केपिटलिजम*. लंदनः न्यू लेट बुक्स।

हॉल्टन, आर. जे. (1985). *द ट्रांजिशन फ्रॉम फयूडलीज़म टू केपिटलिजम*. न्यूयॉर्कः सैंट मार्टिन प्रेस।

स्वीजी, पॉल एम. और अन्य (1954). *द ट्रांजिशन फ्रॉम फयूडलीज़म टू केपिटलिजमः ए सिम्पोजीअम* (आर्टिकल्स बाय वैरीयस राइटर्स फ्रॉम साइंस एंड सोसाइटी). लंदनः फौर।

वुड, एलन मस्किइन्स (1999). *द ओरिजिन ऑफ केपिटलिज़म*. न्यूयॉर्कः मंथली रिव्यू प्रेस।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 3 सामंतवाद से पूँजीवाद की ओर संक्रमण-विवाद -II*

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 जापानी सामंतवाद का उदाहरणः ताकाहाशी और एंडरसन के बीच विवाद

3.3 संक्रमण विवाद में पेरी एंडरसन का योगदान

3.4 ब्रेनर और उत्तर मध्यकालीन संकट

3.5 ब्रेनर के दृष्टिकोण की समालोचनाः गाइ बोईस, हरमन और टेरेंस जे. बायरेस

3.6 सामंतवाद से पूँजीवाद के संक्रमण का जनसांख्यिकीय मॉडल

3.7 सारांश

3.8 शब्दावली

3.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.10 संदर्भ ग्रंथ

3.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप समझेंगेः

- सामंतवाद से पूँजीवाद के संक्रमण को समझने के लिए विद्वानों ने कैसे यूरोप से परे (जैसे जापान) देखा।
- सामंतवाद से पूँजीवाद के संक्रमण को कैसे कुछ विद्वानों द्वारा वर्गों के संघर्ष और उत्पादन की शक्तियों के संदर्भ में समझा जाता है।
- कैसे अन्य विद्वानों ने सामंती संबंधों को कमजोर करने और पूँजीवाद की ओर बढ़ने में व्यापार की गतिशीलता, शहरीकरण और जनसांख्यिकीय चक्रों को इंगित करते हुए इस सिद्धांत का खंडन किया।

3.1 प्रस्तावना

जैसा कि हमने पिछली इकाई में उल्लेख किया है, एक सोच थी कि सामंतवाद से पूँजीवाद में संक्रमण की शुरुआत यूरोप में हुई। यह विवाद का मुख्य बिंदु बन गया कि बाकी दुनिया इस विकास में शामिल है या नहीं। ब्रेनर और एंडरसन दोनों ने परिवर्तन की प्रक्रिया को समझने के लिए यूरोप के विकास पर ध्यान केंद्रित किया। हालांकि, ब्रेनर अधिक दृढ़ थे, जबकि एंडरसन ने कम से कम जापान सहित यूरोप से परे सामंतवाद की विवाद को व्यापक बनाने का प्रयास किया। लेकिन एंडरसन ने यह भी माना कि रोम की विरासत सामंतवाद के अस्तित्व और अंततः निजी संपत्ति की पूँजीवादी धारणा के विकास के लिए पहले स्थान पर आवश्यक थी। इस बीच इमैनुएल वालरस्टीन की विश्व प्रणाली ने यूरोपीय पूँजीवाद के विकास को एक अलग परिप्रेक्ष्य से देखने का प्रयास किया, जिसमें गैर-यूरोपीय देश भी शामिल थे। प्रारंभ में ताकाहाशी ने यूरोप से परे एक परिप्रेक्ष्य पर बल दिया था, बाद में

* प्रो. श्रीकृष्णा (*रिटायर्ड*), इतिहास विभाग, इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय, मीरपुर, रेवाड़ी

हॉब्सबॉम ने इस मुद्दे को असमान और संयुक्त विकास से संबंधित किया, लेकिन संक्रमण के सवाल की विवाद के पहले चरण ने यूरोप के बाहर की दुनिया को शायद ही छुआ था।

3.2 जापानी सामंतवाद का उदाहरण : ताकाहाशी और एंडरसन के बीच विवाद

ताकाहाशी का मानना था कि जापानी सामंतवाद पश्चिम की तरह ही था और पूँजीवाद की ओर इसका संक्रमण एक आंतरिक मामला था, जिसमें पश्चिमी मेइजी पुनर्स्थापना, साम्राज्यवाद के खतरे ने भी भूमिका निभाई। ऊपर से मेइजी पुनर्स्थापना या तथाकथित पूँजीवादी क्रांति इसके परिणाम के रूप में सामने आया। ताकाहाशी ने विशेष रूप से जापानी पूँजीवाद की ऊपर से नीचे की तरफ प्रकृति को उसके सामंतवादी लचीलेपन के लिए श्रेय दिया। जब पश्चिम में पूँजीवाद बढ़ रहा था तो सामंती शासन ने जापान में खुद को मजबूत किया। सत्रहवीं शताब्दी में तोकुगावा शोगुनेत बहुत ज्यादा वस्तु रूप में लगान या व्यक्तिगत कृषि-दासता पर आधारित था। जापान में छोटे उत्पादकों की आर्थिक आकांक्षाओं को सामंती लगान के भार और सूदखोरी के विकास ने कुचल दिया। किसानों पर इन बोझों ने अधिशेष के बढ़ते वाणिज्यीकरण को प्रेरित किया। इसके परिणामस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों में मजदूरी पर आधारित आद्य पूँजीवाद विनिर्माण और वाणिज्यिक कृषि का उदय हुआ। ताकाहाशी के अनुसार, शहरी व्यापारियों और वित्तदाताओं की प्रमुख आर्थिक शक्ति सामंती राज्य और बड़े जमींदारों पर निर्भर थी। राजस्व के केंद्रीयकृत संग्रह ने वाणिज्यीकरण और शहरीकरण के साथ-साथ किसान शोषण के उच्च स्तर को संभव बनाया। मेइजी पुनर्स्थापना की पूर्व संध्या पर सामंती प्रमुखों से बंधे व्यापारिक और वित्तीय एकाधिकारवादियों के खिलाफ मध्यम किसानों और छोटे विनिर्माताओं की आवाज सुनी जा सकती है। जमींदारों द्वारा किसानों के अत्यधिक शोषण के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में दुर्दशा बढ़ी और जनसंख्या में कमी आई। यह जनसांख्यिकीय और आर्थिक संकट तोकुगावा शोगुनेत को उखाड़ फेंकने के पीछे का एक मुख्य कारण था। फिर भी जापानी सामंतवाद पश्चिम के राज्यों की तुलना में बहुत अधिक मजबूत साबित हुआ और इसके लचीलेपन ने मूल रूप से उस पूँजीवाद की प्रकृति का निर्धारण किया, जो उभर कर सामने आया। अत्यधिक शोषण भोजन की कमी, किसान विद्रोहों और जनसंख्या में कमी का कारण बना। इन लोकप्रिय और आद्य पूँजीवादी विद्रोह ने उत्प्रेरक का काम किया। आधुनिकीकरण कर रहे राजनीतिक अभिजात्य वर्ग ने, किसानों के ऊपर जमींदारों की ताकत को बनाए रखते हुए इस लोकप्रिय आक्रोश का उपयोग सामंती सत्ता को खत्म करने के लिए किया था। लेकिन, सामंती जापानी सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था को बदलने में यह नीचे का विद्रोह बुनियादी रूप से विफल रहा। जमींदारों की सैन्य शक्ति खत्म कर दी गई थी, लेकिन उनका अपने काश्तकारों पर सामाजिक और आर्थिक रूप से नियंत्रण जारी रहा। अधिकांश उत्पादकों की राजनीतिक और आर्थिक स्वतंत्रता मौलिक रूप से बाधित रही। इसके परिणामस्वरूप छोटे उत्पादकों के बजाय राज्य ने पूँजीवादी विकास का नेतृत्व किया था। ताकाहाशी के अनुसार, पश्चिम की घुसपैठ केवल एक उत्प्रेरक थी, जिसने यह पूँजीवाद की ओर पहले से ही जापान के आंतरिक विकास को शुरू किया।

एंडरसन ने अपनी पुस्तक *"लाइनेज ऑफ आब्सोल्यूटिस्ट स्टेट"* में जापानी सामंतवाद के सम्बंध में एक लंबा आलेख या परिशिष्ट जोड़ा था। उन्होंने ताकाहाशी के साथ सहमति जताई कि सामंतवाद ने पूँजीवादी विकास के लिए मंच दिया और जापानी सामंतवाद कई तरह से अपने पश्चिमी समकक्ष जैसा था। एंडरसन ने सत्रहवीं शताब्दी और अठारहवीं शताब्दी में जापानी सामंती कृषि की उत्पादकता में वृद्धि पर जोर दिया। इस अवधि को वाणिज्यीकरण के वृद्धि के रूप में चिह्नित किया गया था, जिसमें चीनी, कपास, चाय, नील और तंबाकू जैसी नकदी फसलों का प्रसार शामिल था। इस दौरान शहरी व्यापारी वर्ग का विस्तार हुआ और

वह अधिक प्रभावशाली हो गया, जबकि शहरों में बड़े पैमाने पर वृद्धि हुई। पूँजीवादी विकास की क्षमता मौजूद थी। हालांकि, एंडरसन ने ताकाहाशी के इस विचार को खारिज कर दिया कि जापान अपने स्वयं के आंतरिक विरोधाभासों की शक्ति के माध्यम से सामंतवाद को समाप्त कर सकता था। विश्व बाजार से जापान के पृथक्करण ने सामंतवाद से पूँजीवाद की ओर उसके स्वतंत्र विकास को अवरुद्ध कर दिया। पश्चिमी व्यापार के विस्तार ने सामंती शासन के पतन के लिए एक बाहरी उत्प्रेरक के रूप में काम किया और मेइजी पुनर्स्थापना को जन्म दिया। एंडरसन ने तर्क दिया कि पूँजीवाद को विकसित करने के लिए विष्व बाजार से संपर्क और उत्पादन के सामाजिक संबंधों का एक उपयुक्त समूह दोनों आवश्यक हैं।

3.3 संक्रमण विवाद में पेरी एंडरसन का योगदान

लेकिन एंडरसन के अनुसार, केवल पश्चिमी यूरोपीय सामंतवाद ही पूँजीवाद का निर्माण कर सकता था। सामंतवाद और इसके पतन के बारे में एंडरसन का दृष्टिकोण विनिमय संबंधों के महत्व को स्वीकार करने के साथ वर्ग संघर्ष पर जोर देता है। प्रादेशिक राज्य के उद्भव और वैश्विक बाजार के विस्तार, दोनों ने पूँजीवाद के उद्भव के लिए बहुत महत्वपूर्ण आधार प्रदान किया। सामंतवाद में उत्पादक किसान कानूनी रूप से दास के रूप में भूमि से बंधा हुआ था। कृषि संपत्ति निजी तौर पर सामंती स्वामियों के एक वर्ग द्वारा नियंत्रित की जाती थी, जो राजनीतिक-कानूनी या अतिरिक्त–आर्थिक दबाव द्वारा किसानों से लगान के रूप में अधिशेष लेते थे। इस सामंती बंधन के बावजूद, इसने उच्च मध्य युग के दौरान उत्पादकता में प्रभावशाली वृद्धि के लिए वातावरण बनाया। डॉब और हिल्टन के विपरीत, एंडरसन सामंती संकट के स्रोत के रूप में उत्पादन की शक्तियों में आगे की प्रगति की संभावना के क्षीण होने पर जोर देते हैं। उनके विचार में यह उत्पादकों के अत्यधिक शोषण के कारण नहीं था। अधिकाधिक जनसंख्या के दबाव ने बढ़ती सीमांत भूमि को साफ करने के लिए मजबूर किया, जबकि मौजूदा कृषि भूमि की उत्पादकता में सुधार के लिए आवश्यक निवेश नहीं किया गया था। बाद के आर्थिक संकट ने व्यापक किसान विद्रोहों को उकसाया। अल्पावधि में यह विद्रोह विफल रहे। हालांकि, विद्रोहों का दीर्घकालिक प्रभाव यह था कि किसानों की आय और मजदूरी में सुधार हुआ और दासत्व में कमी आई।

एंडरसन ने जोर देकर कहा कि शहरी वाणिज्यिक संजाल सामंती सामाजिक संबंधों को कमजोर करने और नष्ट करने की ओर अग्रसर थे। किसान विद्रोहों में कारीगरों के साथ-साथ पलायन करने वाले दासों के लिए संभावित आश्रय-स्थल के रूप में शहरों ने सहायता की। वास्तव मे, सबसे महत्वपूर्ण ग्रामीण विद्रोहों के केंद्र शहरों के पास ही स्थित थे। दीर्घकाल में कुलीन स्वामियों की शहरों में उत्पादित वस्तुओं की आवश्यकता ने, कृषि-दासों की श्रम सेवाओं के बदले में मुद्रा रूप में लगान के रूपान्तरण करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने किसान काश्तदारों को भी सामंती भूमि पट्टे देने शुरू कर दिए। पंद्रहवीं शताब्दी में इंग्लैंड में कृषि-दासता लगभग लुप्त हो गई और किसानों के आय में वृद्धि हुई। गांवों में सामाजिक विभेदीकरण बढ़ गया, क्योंकि अमीर किसानों का एक समूह शीर्ष पर उभरा और मजदूरी करने वाले समाज के निचले पायदान पर पहुंच गए। एंडरसन ने स्वीकार किया कि व्यापार उत्पादन की सामंती पद्धति में अंतर्निहित था। डॉब ने पहले ही सुझाव दिया था कि प्रारंभिक आधुनिक राज्य कुलीन वर्ग की रक्षा के लिए बनाया गया था और एंडरसन इस पर सहमत हुए और इस सिद्धांत के ठोस सबूत दिए। इस तरह कृषि-दासता के अंत ने सामंतवाद को समाप्त नहीं किया था।

मध्य युग के अंत में प्रादेशिक राजतंत्रों के सुदृढ़ीकरण ने सामंती वर्चस्व के तंत्र को परिवर्तित किया। कृषि-दासता के लोप होने के परिणामस्वरूप कुलीन वर्ग की शक्तियाँ कुछ हद तक कम हो गई थीं। लेकिन नए प्रादेशिक राजतंत्रों के उद्भव के साथ इस को पुनः सुदृढ़ किया

गया, जो कि किसानों पर वर्चस्व को बनाए रखने का प्रमुख साधन बन गया। इसके अलावा, जहाँ तक, कुलीन वर्ग भूमि में मुक्त बाजार के उद्भव को अवरुद्ध कर पाये और किसानों द्वारा निर्वाह के अपने साधनों तक पहुंच बनाए रखी जा सकी, वहाँ तक सामंती संबंध बने रहे। मध्यकाल में राजनीतिक और आर्थिक नियंत्रण संयुक्त रूप से सामंती जमींदारों के हाथों में था। प्रारंभिक आधुनिक काल में प्रादेशिक राज्य की उभरने के साथ राजनीतिक शक्ति को अर्थव्यवस्था पर सीधे नियंत्रण से अलग किया जाने लगा, जिससे पूँजीवादी शक्तियों को उभरने का रास्ता मिला। हालांकि, राजनीतिक व्यवस्था सामंती बनी रही, जबकि इसके संरक्षण में समाज अधिक पूँजीवादी रूप से उन्मुख होता गया। एंडरसन के अनुसार, उभरता हुआ प्रादेशिक राज्य दो चीजों पर आधारित थाः पहला, किसान अशांति के खतरे के तहत नए निरंकुश राज्य में शक्तियों का अधिक केंद्रीयकरण था। दूसरा, पश्चिमी अर्थव्यवस्थाओं के भीतर व्यापारिक या विनिर्माण पूँजी का दबाव भी बढ़ा। प्रादेशिक राज्य के विकास ने सामंतवाद को बढ़ावा दिया और इसे एक ज्यादा बड़ा राजनीतिक स्थान प्रदान किया जिसके भीतर पूँजीवाद विकसित हो सकता था। इस तरह के स्थान में बाजार बढ़ा। जिस तरह मेरिंग्टन ने मध्ययुगीन बाजार को एक अंतर्निहित शक्ति, जागीर की शक्ति के एक स्वाभाविक तत्व के रूप में देखा था, उसी तरह एंडरसन ने भी जोर दिया कि पूँजीवादी बाजार प्रादेशिक राज्य का एक निर्माण था और यह जितनी आर्थिक थी, उतना ही राजनीतिक संस्था भी थी। राज्य की भूमिका में एंडरसन की अंतर्दृष्टि संक्रमण को समझने के लिए महत्वपूर्ण है।

बोध प्रश्न-1

1) सामंतवाद से पूँजीवाद में संक्रमण पर विवाद के लिए ताकाहाशी के योगदान पर विवाद करें।

.....

.....

.....

2. पेरी एंडरसन ने पूँजीवाद में संक्रमण को कैसे देखा?

.....

.....

.....

3.4 ब्रेनर और उत्तर मध्यकालीन संकट

डॉब से शुरू होकर, विद्वानों ने पूँजीवाद के उदय की अवधि से सामंतवाद के पतन की अवधि का सीमांकन किया है। प्रारंभिक विवाद में दो प्रमुख प्रस्तावकों डॉब और स्वीजी ने पूँजीवाद के उद्भव से पहले एक मध्यवर्ती अवधि के अस्तित्व को मान्यता दी। कमजोर सामंतवाद के इस चरण में पूर्ण रूप से पूँजीवाद के उद्भव से पहले बाजार और सुंदूर व्यापार के लिए उत्पादन करने की छोटे उत्पादकों को अपेक्षाकृत अधिक स्वतंत्रता थी। इसके अलावा, विवाद में भाग लेने वाले अधिकांश विद्वानों ने संक्रमण के लिए एक या कई कारकों की बात की, लेकिन इनके कारणों की बहुलता को स्वीकार करने प्रवृत्ति है। डॉब, हिल्टन और एंडरसन ने सामंतवाद के पतन में वर्ग-संघर्ष के महत्व पर बल दिया, लेकिन ब्रेनर ने यह कहते हुए कृषि वर्ग-संघर्ष को एक कदम आगे बढ़ाया कि जैसा यह मध्य युग के दौरान इंग्लैंड में सामने आया; इसने न केवल सामंतवाद को नष्ट किया, बल्कि पूँजीवाद के उदय का मार्ग प्रशस्त किया। इसलिए, ब्रेनर के विचार में सामंतवाद के पतन और पूँजीवाद की उत्पत्ति के बीच कोई वैचारिक और कालानुक्रमिक विभाजन नहीं था। उनका आधिकारिक शोध,*"मर्चेंट्स* ऐंड

रिवॉल्यूशनः कमर्शियल चेंज, पॉलिटिकल कन्फ्लिक्ट ऐंड लंडन'स ओवरसीज ट्रेडर्स, 1550–1653", जो सामंतवाद के विवाद पर असर नहीं डालता था, लेकिन इंग्लैंड की क्रांति पर विवाद के लिए महत्वपूर्ण साबित हुआ।

डॉब और हिल्टन ने पहले ही उत्तर मध्ययुगीन आबादी में कमी और आगामी वर्ग-संघर्ष इंग्लैंड और यूरोप में दूसरी जगह होने की अपनी केंद्रीय धारणा पर जोर दिया था। ब्रेनर के विचार में इस तरह के संघर्ष किसान संचय, उत्पादकता और अंततः अत्यधिक शोषण और जीवन निर्वाह के संकट से उत्पन्न हुए। जमींदारों के अत्यधिक शोषण और किसानों के उत्पादन के निहित रूढ़िवाद ने किसान कृषि की उत्पादकता पर निश्चित सीमाएँ लगाईं। ब्रेनर ने जोर दिया कि जमींदारों ने उत्पादकों से अधिक-से-अधिक अधिशेष वसूलने के लिए अतिरिक्त आर्थिक दबाव का प्रयोग किया। विशेष रूप से उन्होंने मध्ययुगीन जागीर की बाध्याताओं के तहत किसान जीवन निर्वाह की अंतर्निहित आर्थिक सीमाओं को प्रदर्शित किया। जागीर की सीमा के भीतर किसानों के आर्थिक उद्देश्य अपनी जोतों का सुधार, उत्पादन को अधिकतम करना या बाजार से अपने संबंध को प्रगाढ करना नहीं था, बल्कि निर्वाह उत्पादन की इकाई परिवार के प्रजनन को सुनिश्चित करना था। इसके परिणामस्वरूप आर्थिक विकास पर एक निश्चित सीमा लाद दी गई। इस परिणामी संकट ने बड़े पैमाने पर उत्पादकों के अस्तित्व पर प्रश्न खड़ा कर दिया। चौदहवीं शताब्दी के जनसांख्यिकीय पतन के बाद कृषि-दासता और भूमि नियंत्रण के मुद्दे के इर्द-गिर्द गहन वग-संघर्ष होता रहा। यूरोप के विभिन्न भागों में इन संघर्षों के परिणाम भिन्न-भिन्न ऐतिहासिक और सामाजिक परिस्थितियों पर निर्भर थे। ब्रेनर ने इस बात से इनकार किया कि संक्रमण में व्यापार या शहर महत्वपूर्ण थे। वास्तव में उन्होंने इस विचार को खारिज कर दिया कि शहरों ने किसी भी तरह से सामंतवाद के विघटन में योगदान दिया। इसके विपरीत, यह एकजुटता और सहयोग के ग्रामीण संजालों का विकास था, जो पश्चिम और पूर्वी यूरोप के बीच विशेष रूप से, मध्यकालीन वर्ग संघर्षों के भिन्न-भिन्न परिणामों के लिए महत्वपूर्ण था।

पूर्वी यूरोप में जमींदारों की शक्ति का सामना करने वाले किसान वर्ग की कमजोरी के कारण कृषि-दासता मजबूत हुई। इसके विपरीत, फ्रांस में वर्ग संघर्षों में किसान वर्ग ने न केवल अपनी स्वतंत्र स्थिति को मजबूत किया, बल्कि प्रारंभिक आधुनिक काल में भूमि और अधिकारों पर कब्जा करने में सक्षम हुए। प्रादेशिक राज्य के सुदृढ़ीकरण के माध्यम से, स्थानीय से लेकर उच्च स्तर तक, अधिशेष निष्कर्षण का हस्तांतरण कुलीन वर्ग को बनाए रखने के लिए पर्याप्त था। जबकि स्थानीय लगानों में कमी आई, शाही करों को योद्धाओं और दरबारी कुलीन वर्ग के लाभ के लिए इस्तेमाल किया गया था, जो केंद्रीयकृत लगान की एक नई प्रणाली थी। परिणामस्वरूप सामंती व्यवस्था कायम रही।

इंग्लैंड ने एक तीसरे तरीके का प्रतिनिधित्व किया, जिससे कृषि पूँजीवाद को बढ़ावा मिला। किसान व्यक्तिगत स्वतंत्रता हासिल करने में सक्षम रहे थे, लेकिन अपने फ्रांसीसी समकक्षों की तुलना में वर्ग-संघर्ष में कम सफल रहे थे। परिणामस्वरूप अंग्रेजी कुलीन वर्ग अधिकांश खेती योग्य भूमि को अपने पास बनाए रखने में सक्षम थे और पंद्रहवीं शताब्दी के अंत से उन्होंने बढ़ते मुनाफों के आधार पर इस भूमि को समृद्ध किसानों को अधिक लगानों पर देना शुरू कर दिया था। ब्रेनर के अनुसार, भूमि पर अनिवार्य रूप से पूर्ण स्वामित्व (फ्री होल्ड अधिकार) स्थापित करने में किसानों की विफलता के साथ जमींदार खेती योग्य भूमि पर कब्जा जमाने, उसको सुदृढ़ करने और उसको बाडबंद करने में सक्षम हो गए। उन्होंने बड़े खेतों का निर्माण किया और उन्हें पूँजीवादी काश्तदारों को पट्टे पर देना शुरू किया, जो पूँजी निवेश करने का खर्च उठा सकते थे। मध्ययुगीन किसानों के विपरीत, जमींदारों की उच्च लगान की माँगों को पूरा करने के लिए पूँजीवादी काश्तदारों को उत्पादकता में सुधार करने की आवश्यकता थी। उच्च लगान प्राप्त करने के लिए जमींदार उत्पादन में सुधार करने के लिए काश्तदारों को खुद पूँजी उपलब्ध कराने लगे। संचय का एक आर्थिक तर्क शुरू किया गया था। इस आधार पर

ग्रामीण समाज में जमींदार, पूँजीवादी काश्तदारों, दिहाड़ी मजदूरों के रूप में तिहरा विभाजन उभरा, जिसने इंग्लैंड की कृषि को पूँजीवादी दिशा में बदल दिया। सामंतवाद में शोषण करने वाले जमींदारों और किसान उत्पादकों, दोनों को अपने अस्तित्व को पुनः निर्मित करने के साधनों तक सीधी पहुंच थीः अर्थात् किसानों के लिए भूमि, जमींदारों के लिए लगान। अपने निर्वाह की खोज में किसानों का लक्ष्य भूमि से निर्वाह आधारित फसलों का अधिक से अधिक उत्पादन करना था, जितना वे बाजार के सहारे के बिना कर सकते थे। सामंतवाद की चरम सीमा में, भूस्वामियों को समर्थन के लिए श्रम रूप में या वस्तु रूप में लगान दिये गये। नतीजतन, दोनों वर्गों को बाजार के लिए उत्पादन करने की आवश्यकता नहीं थी और इसलिए विनिमय के लिए उत्पादन करने या प्रतिस्पर्धी रूप से बेचने की आवश्यकता लगभग अनुपस्थित थी। उन्हें लागत में कटौती करने की आवश्यकता नहीं थी और इसलिए नवाचार, विशेषज्ञता और संचय के माध्यम से उत्पादन में सुधार करने की भी जरूरत नहीं थीं। जो भी नवाचार हुए, वे किसान वर्ग के जीवन के तरीकों में समाहित हो गए, जो काफी हद तक आर्थिक निर्वाह पर आधारित था। मध्य युग के अंत में जमींदारों और आद्य पूँजीवादी काश्तदारों के बीच नए संबंधों ने निर्वाह उत्पादन के इस पारंपरिक तर्क को तोड़ दिया और संचयी आर्थिक विकास का एक और आधार लगाया, ताकि कृषि उत्पाद और आय में उनकी हिस्सेदारी बढ़ सके।

सामंतवाद के पतन और पूँजीवाद में संक्रमण के लिए निर्णायक के रूप में ग्रामीण इलाकों में वर्ग संघर्षों की भूमिका पर ब्रेनर का जोर अधिक मजबूती के साथ था। इसने डॉब और हिल्टन द्वारा अपनाये गये परिप्रेक्ष्य को अनुभवजन्य और अवधारणात्मक मजबूती प्रदान की। ब्रेनर ने संक्रमण को समझने के लिए उत्पादन या सामाजिक संपत्ति संबंधों के दृष्टिकोण पर जोर दिया। उन्होंने व्यापार या विनिमय संबंधों के महत्व पर जोर देने के लिए स्वीजी की आलोचना की। उन्होंने माइकल पॉस्टन और इमैनुएल ले रॉय लादुरी द्वारा अपनी रचनाओं में नव-माल्थसियन ऐतिहासिक मत का अनुकरण करने की भी आलोचना की। उन्होंने तर्क दिया था कि जनसंख्या में कमी के कारण सामंतवाद का विघटन हुआ था। हम इस इकाई में आगे उनके विचारों पर चर्चा करेंगे। फिर भी उन्होंने स्वीकार किया कि तकनीकी परिवर्तन के अभाव में भूमि और श्रम के अनुपात ने जनसंख्या के उतार-चढ़ाव को निर्धारित किया। लेकिन इस तर्क ने वर्ग संबंधों की केंद्रीयता को मजबूत किया। वर्ग-संबंधों ने जनसांख्यिकीय चक्र के मापदंडों को निर्धारित किया और अंततः उनकी सीमाओं को तोड़ने में मदद की।

3.5 ब्रेनर के दृष्टिकोण की समालोचना : गाइ बोईस, हरमन और टेरेंस जे. बायरेस

ब्रेनर के आलोचकों ने वर्ग पर उनके अत्यधिक जोर और उत्तर मध्य वर्ग संबंधों के बारे में उनकी गलतफहमी की आलोचना की है। वर्ग-संघर्ष के निर्धारित प्रभाव पर उनके एकतरफा जोर के विपरीत उन्होंने उत्पादन की शक्तियों के महत्व पर जोर दिया। वर्ग-संघर्ष सामंतवाद की पतन के लिए उनके दृष्टिकोण का महत्वपूर्ण बिंदु है। फ्रांसीसी मध्ययुगीन इतिहासकार गाइ बोयस ने सर्वप्रथम सामंतवाद के पतन के बारे में ब्रेनर के विचारों पर आपत्ति जताई थी। उन्होंने तर्क दिया कि वर्ग को संकीर्ण आर्थिक अर्थों में नहीं समझा जाना चाहिए। उन्होंने उत्पादन की शक्तियों के परिप्रेक्ष्य के महत्व पर जोर दिया और इसे एक वर्ग के अधिकार में भौतिक और गैर-भौतिक संसाधनों के रूप में समझा। बोइस ने सहमति व्यक्त की कि ब्रेनर ने सही ढंग से वर्ग की राजनीतिक और सामाजिक क्रियाशीलता को इंगित किया। बोइस ने स्वीकार किया कि ब्रेनर के वर्ग-संघर्ष के मजबूत तथ्य की शुरुआत सराहनीय थी जिसे अतीत में नजरअंदाज किया गया था। हालांकि, उन्होंने उस अधूरे और अत्यधिक वैचारिक तरीके पर आपत्ति जताई, जिसमें ब्रेनर ने इस अवधारणा को पेश किया था। उन्होंने इस बात पर आपत्ति जताई कि ब्रेनर के विचार सभी अन्य ठोस वस्तुनिष्ठ आकस्मिकताओं और एक विशेष

उत्पादन पद्धति के विशिष्ट नियमों से जुड़े हुए नहीं थे। दूसरे शब्दों में, बोइस ने शिकायत की कि ब्रेनर का दृष्टिकोण मध्ययुगीन काल के आर्थिक इतिहास और उत्पादन पद्धति की गतिशीलता के सतही दृष्टिकोण पर आधारित है।

उदाहरण के लिए, बोइस ने जोर देकर कहा कि छोटे और बड़े शहरों के आधार पर बाजारों के मध्ययुगीन पदानुक्रमित संजाल को सामंती भूमि या जागीर के विकास से अलग नहीं किया जा सकता है। बोइस के अनुसार, बाजार संयोगवश विकसित हुआ और सामंती भूमि या जागीर की प्रणाली पर निर्भर था। बाजार किसी भी तरह से एक ऐसी संस्था नहीं थी जो सामंती समाज से अलग थी, लेकिन मध्ययुगीन बाजार केवल एक स्वायत्त आर्थिक कार्य-प्रणाली नहीं थी जिसमें किसानों ने ब्रेनर के अनुसार, इच्छा से प्रवेश किया या वापस हो गए। यह एक बल-आधारित संस्था थी जिसके माध्यम से कृषि अधिशेष को बिचौलियों के रूप में व्यापारियों का उपयोग करके जमींदारों द्वारा उसको वाणिज्यिकृत वसूला जाता था। यह अतःदृष्टि कि बाजार एक पूरी तरह आर्थिक इकाई नहीं थी, बल्कि उत्पादन के सामंती और पूँजीवादी दोनों उत्पादन पद्धतियों में इसमें एक बल का या राजनीतिक तत्त्व भी था। इसके अलावा, सामंतवाद के पतन के संबंध में बोइस ने कहा कि सामंतवाद का पतन घटती हुई लगान की प्रवृत्ति के कारण हुआ था, जो बड़े पैमाने पर संपत्ति और छोटे पैमाने के उत्पादन के संरचनात्मक विरोध का परिणाम था। प्रमुख जमींदार वर्ग अपने वर्चस्व के आर्थिक आधार को बनाए रखने में असमर्थ था क्योंकि जनसंख्या वृद्धि के परिणामस्वरूप कृषि योग्य भूमि के अधिकाधिक छोटे आकार पर पारिवारिक श्रम की उत्पादकता में कमी आई थी। बोइस ने महसूस किया कि सामंती संकट अर्थव्यवस्था के दायरे से परे चला गया और राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक रूप में प्रकट हुआ, जो मूल्यों के संकट और वर्ग टकराव के रूप में भी परिलक्षित हुआ।

बोइस की तरह, क्रिस हरमन ने भी ब्रेनर और उनके अनुयायियों द्वारा वर्ग पर जोर देने के विरोध में उत्पादन शक्तियों के महत्व पर जोर दिया। हरमन ने जोर देकर कहा कि एक वर्ग की सामाजिक क्षमता उन उत्पादक शक्तियों पर निर्भर करती है जो उनको सशक्त करती हैं। ऐसी शक्तियों में भौतिक, बौद्धिक और राजनीतिक संसाधन शामिल हैं जो उसके अधिकार में होते हैं। उत्पादन के सामाजिक संबंधों को बदलने के लिए एक वर्ग की क्षमता ऐसे संसाधनों को जुटाने की योग्यता पर निर्भर करती है। ऐतिहासिक परिवर्तन तब होता है जब मौजूदा सामाजिक संबंध उत्पादन की शक्तियों के विकास को अवरुद्ध करते हैं। हरमन के विचार में ब्रेनर उत्पादन की शक्तियों को वर्ग संबंधों के निर्धारण के अधीन कर इन संबंधों को उल्टा कर देते हैं। हरमन इंग्लैंड और यूरोपीय महाद्वीप में उच्च मध्य युग में कृषि की उत्पादकता में वृद्धि पर जोर देते हैं। कृषि अधिशेषों को शहरी बाजारों में बेचा जाता था और इसका न केवल सामंतों द्वारा उपभोग किया जाता था, बल्कि किसान और शहरी लोगों द्वारा भी और इससे शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों के उत्पादकों के बीच व्यापारिक संबंधों को मजबूती मिलती थी। अपरिपक्व पूँजीपतियों द्वारा सीमित आधार पर मजदूरी द्वारा काम लिया गया। किसानों के बीच सामाजिक विभेदीकरण ने इन प्रवृत्तियों को मजबूत किया। बारहवीं और तेरहवीं शताब्दी की इन आर्थिक और सामाजिक उन्नतियों को नकारने के बजाय मध्य युग के अंत का संकट इनकी पुष्टि करता है। कठिनाई के उस दौर में सामंतों के विरोध का नेतृत्व उन किसानों और शिल्पकारों ने किया था, जिनके पास उत्पादन की शक्तियों की कमान थी और जो समृद्धि के पहले के दौर में विकसित हुए थे। दूसरे शब्दों में, हरमन चौदहवीं शताब्दी में पूरे पश्चिमी यूरोप में सामाजिक उथल-पुथल को एक आद्य पूँजीवादी क्रांति के रूप में मानते हैं, जो उच्च मध्य युग में उत्पादन की शक्तियों के विकास और सामंती संबंधों की अटलता पर बेड़ियाँ डालने के कारण हुई थी। हरमन के अनुसार, धार्मिक विधर्मता, नए सांस्कृतिक आंदोलनों और मध्य युग के अंत के क्रांतिकारी सामाजिक आंदोलन सामंतवाद के पतन में महत्वपूर्ण कारक थे, लेकिन ब्रेनर के दृष्टिकोण में उन्हें कोई जगह नहीं मिली।

ब्रेनर ने एक वर्ग के रूप में किसान वर्ग समरूपता पर जोर देते हुए मध्ययुगीन किसान वर्ग के भीतर सामाजिक विभेदीकरण को कम स्थान दिया, जबकि टेरेंस जे. बायर्स ने पूँजीवादी विकास की धारणा में किसान वर्ग के विभेदीकरण को प्रमुख कारक माना। इसलिए, यह सुझाव देने के बजाय कि भूमि के पट्टों ने वर्ग गठन को प्रभावित किया, बेयर्स ने तर्क दिया कि जमींदारों के बजाय धनी किसानों ने ऐतिहासिक गति को मजबूती दी। किसान एक समान और समरूप वर्ग नहीं था। तेरहवीं शताब्दी में किसान समृद्ध, मध्यम और गरीब किसानों के बीच आंतरिक रूप से विभाजित और स्तरीकृत थे। धनी किसानों के पास अधिक पशुधन और भूमि थी और वे अक्सर कारिंदा, सहायक और लगान संग्राहक के रूप में जमींदारों के लिए काम करते थे और उनकी किसानों पर नियंत्रण स्थापित करने में मदद करते थे। मध्ययुगीन किसानों के बीच एक अनिवार्य समानता की ब्रेनर की धारणा के विपरीत, कुलीन वर्ग की ओर से समृद्ध किसानों द्वारा बाकी किसानों पर कानूनी-राजनीतिक नियंत्रण लागू करने का अर्थ उन पर आर्थिक नियंत्रण था। धनी समृद्ध किसानों की शक्ति तेरहवीं शताब्दी के दौरान बढ़ गई, क्योंकि वे अपने कृषि अधिशेष का एक अंश बाजार में बेचने और गरीब किसानों व अपरिपक्व वेतनभोगी मजदूरों का श्रम खरीदने में सक्षम थे। अधिशेष उत्पादन करने की उनकी क्षमता उत्पादकता में पिछले लाभों या उत्पादन की शक्तियों में सुधार से बढ़ी थी। मध्ययुगीन संकट के अंत में बाकी किसानों वर्ग के साथ में जमींदारों की तुलना में उनकी शक्ति बढ़ गई क्योंकि लगानों और दासत्व में कमी के कारण खरीद के लिए अधिक भूमि उपलब्ध हो गई। इस संकट के कारण गरीब किसानों और मजदूरी करने वालों की संख्या में कमी आई और उसने समृद्ध किसानों द्वारा मजदूरों को किराए पर रखने को सीमित कर दिया है। को सीमित कर दिया। इस दौरान मध्यम किसानों की संख्या और आय में सबसे अधिक उल्लेखनीय बढ़ोत्तरी हुई। पंद्रहवीं शताब्दी के अंत से धनी किसान आगे आए और आबादी में वृद्धि के परिणामस्वरूप उपलब्ध सस्ते श्रम से विशेष रूप से लाभान्वित हुए। यह एक प्रक्रिया थी जो पश्चिमी यूरोप में घटित हुई, लेकिन इंग्लैंड में इसने निर्णायक महत्व हासिल किया। जैसा कि हमने उल्लेख किया है, ब्रेनर ने जमींदारों द्वारा समृद्ध किसानों को आर्थिक पट्टों की पेशकश द्वारा पूँजीवाद की शुरुआत पर जोर दिया। लेकिन उन्होंने इस बारे में कुछ नहीं कहा कि इस तरह के पट्टे लेने में सक्षम किसान कहाँ से आए। बायर्स के अनुसार, ऐसे किसान विशेष रूप से सामंतवाद के विघटन की अवधि के दौरान सामाजिक विभेदीकरण की पूर्ववर्ती प्रक्रिया से बने थे। वे फिर सोलहवीं शताब्दी के पूँजीवाद के प्रमुख वाहक बन गए, जो किसानों की बढ़ती आबादी के सम्पत्तिविहीन बनाने और ग्रामीण पूँजी की उभरती शक्ति द्वारा उनकी अधीनता पर आधारित था।

3.6 सामंतवाद से पूँजीवाद के संक्रमण का जनसांख्यिकीय मॉडल

इसे एम. एम. पॉस्टन, इमैनुएल ले. रॉय लादूरी, डब्ल्यू. एबेल और ए.ई. वेरहस्ट जैसे विद्वानों ने आगे रखा था। यह दृष्टिकोण मार्क्सवादी विश्लेषण के विरोध में था, जो आमतौर पर विवाद पर हावी था। जनसांख्यिकीय मॉडल के अनुसार, मध्ययुगीन यूरोप में किसानों की स्वतंत्रता जनसांख्यिकीय उतार-चढ़ाव या आबादी के बढ़ने और कम होने पर निर्भर थी। जनसंख्या वृद्धि के चक्र में जब जनसंख्या ने कृषि उत्पादन को पीछे छोड़ दिया तो कुछ प्राकृतिक कारणों से जनसंख्या में स्वतः ही कमी आई। एक बार उत्पादन और जनसंख्या के बीच संतुलन बहाल हो जाने के बाद चक्र फिर से शुरू हुआ। जनसंख्या में वृद्धि और कमी ने किसानों की सापेक्ष स्वतंत्रता को निर्धारित किया। दूसरे शब्दों में, मध्यकालीन अर्थव्यवस्था में कृषि-दासता जनसांख्यिकीय कारकों पर निर्भर थी। आर्थिक संरचनाओं में दीर्घकालिक परिवर्तनों में जनसंख्या की भूमिका पर सबसे पहले पॉस्टन और हब्बकुक ने जोर दिया था। लादूरी और पॉस्टन ने मध्य युग में और बाद में दीर्घकालीन जनसंख्या वृद्धि और जनसंख्या में कमी के बारे में बताने के लिए चर्च के आँकड़ों का उपयोग किया। उन्होंने जनसांख्यिकीय चक्र को प्रभावित करने वाले विवाह की आयु और छोटे व बड़े परिवारों को आर्थिक प्रोत्साहन

जैसे सामाजिक कारकों के साथ-साथ जलवायु परिवर्तन और प्लेग जैसे गैर-मानवीय कारकों पर ध्यान केंद्रित किया।

आमतौर पर यह स्वीकार किया जाता है कि दसवीं से चौदहवीं शताब्दी के मध्य तक एक जनसांख्यिकीय आधार के विस्तार की अवधि थी। यूरोप में हर जगह परिवार, शहर, बाजार, श्रेणियाँ और मेले कई गुणा हो गए। वाणिज्य और उद्योग के केंद्र बहुत तेज गति से बढ़े। इस अवधि के दौरान कीमतें तुलनात्मक रूप से स्थिर रहीं। एकमात्र बड़ी आर्थिक समस्या, ग्यारहवीं और बारहवीं शताब्दी का तथाकथित 'धन-अकाल' था। तेरहवीं शताब्दी के दौरान ग्रामीण यूरोप के बड़े हिस्से में बीसवीं शताब्दी के बराबर तक आबादी का घनत्व इतना बढ़ गया था जितना बीसवीं सदी तक कभी नहीं बढ़ने वाला था। मध्ययुगीन जनसंख्या वृद्धि का कारण मुख्य रूप से प्रजनन क्षमता में वृद्धि थी, न कि मृत्यु दर में कमी। जनसंख्या वृद्धि की अवधि के दौरान सबसे तेजी से ऊर्जा, भोजन सामग्री, आश्रय और कच्चे माल की कीमत में वृद्धि दिखाई दी, जबकि माँग की अपेक्षा उनकी आपूर्ति बहुत कम थी। आबादी से संबंधित बढ़ती कीमतों ने मजदूरी, लगान और ब्याज की दरों को भी प्रभावित किया। महान लहर के शुरुआती चरणों में मजदूरी दर की वृद्धि कीमतों के साथमाँगसाथ चली थी और कुछ दशकों के दौरान यह और भी तेजी से बढ़ी। लेकिन जब तेरहवीं शताब्दी के मध्य में मुद्रास्फीति जारी रही तो मुद्रा के रूप में मजदूरी पीछे छूट गई। परिणामस्वरूप पहले धीरे-धीरे और बाद में तेज गति से वास्तविक मजदूरी गिर गई। तेरहवीं सदी के अंत और चौदहवीं सदी की शुरुआत तक वास्तविक मजदूरी दर तेजी से गिर रही थी। जब वास्तविक मजदूरी गिर गई तो लगान और ब्याज में तेजी आई। भूस्वामियों की आय आमतौर पर मुद्रास्फीति के साथ बढ़ती गई और यहाँ तक कि इससे अधिक हो गई। कई इतिहासकारों का अनुमान है कि ब्लैक डेथ के दौरान यूरोप ने 25 से 40 प्रतिशत के बीच अपने निवासियों को खो दिया। इस महान जनसंख्या की कमी के कई आर्थिक परिणाम हुए। महामारी के वर्षों के दौरान भोजन सामग्री की कीमत तेजी से बढ़ी, फिर बहुत तेजी से गिरने लगी क्योंकि खाने वाले लोग कम हो गए। इसी समय, विनिर्मित वस्तुओं की कीमतों में आंशिक रूप से वृद्धि हुई, क्योंकि कारीगर और शिल्पकार उच्च मजदूरी की माँग कर रहे थे और आपूर्ति में अव्यवस्थाएँ भी थी।

एम. एम. पॉस्टन ने कहा कि मध्यकाल में बाजार की शक्तियों के संचालन के कारण स्वतः कृषि-दासता गायब नहीं हुई। डूम्स डे बुक से प्राप्त अनुभवजन्य आँकड़ों, ब्लैक डेथ और इतिहासकार जे. सी. रसेल के अनुमानों के आधार पर पॉस्टन ने निष्कर्ष निकाला कि चौदहवीं शताब्दी तक यूरोप में जनसंख्या लगातार बढ़ रही थी। जनसंख्या वृद्धि एक ऐसी अवस्था में पहुँच गई जब मौजूदा आबादी की खाद्य आवश्यकता पूरी नहीं हो पा रही थी और अकाल, अभाव और ब्लैक डेथ जैसी घटनाओं से जनसंख्या में भारी कमी आ गई। भूमि और अन्य पारिस्थितिक संसाधनों पर जनसंख्या के निरंतर दबाव ने भूमिजोतों का विखंडन किया और उससे उत्पादकता में कमी और खाद्य आपूर्ति की कमी हो गई और इससे भूमि से मिलने वाला लाभ लगातार कम होता रहा। उच्च आबादी के कारण मजदूरी में कमी आई और खेती के लिए भूमि की बढ़ती माँग के कारण जमींदारों द्वारा लगान में बढ़ोत्तरी की गई। जनसंख्या दबाव ने लोगों को अधिक बंजर और कम उत्पादक भूमि पर खेती करने के लिए मजबूर किया, जो कि गैर-आर्थिक था। चूंकि श्रम का बड़ा भंडार उपलब्ध था, ऐसे में खेती करने वाले जमीदारों को कृषि दासों को भूमि से बाँधकर रखने की कम आवश्यकता थी। ऐसे में एक संस्था के रूप में कृषि दासता का पतन हुआ। इस तरह जनसांख्यिकीय मॉडल में कृषि संकट को जनसांख्यिकीय कारकों के उत्पाद, विशेष रूप से जनसंख्या स्तर में परिवर्तन के रूप में देखा जाता है। डब्ल्यू. एबेल ने चौदहवीं और सतरहवीं व अठारहवीं शताब्दी में जनसंख्या में कमी या जड़ता के लिए महामारी और युद्ध जैसे बाह्य कारकों की मुख्य भूमिका को बताया है। उनकी पुस्तक *"द पीजेंड्स ऑफ लग्यूडोक"* एक ग्रामीण इतिहास है और लेखक ने इसमें किसानों के जीवन का वर्णन किया है।

ले रॉय लादुरी ''माल्थसियन मॉडल'' के साथ आगे बढ़े, जो एक जनसांख्यिकीय संरचना द्वारा संचालित था। जिसमें जैविक कारक अभी भी निर्धारक थे और उत्पादक क्षमता सीमित थी, लेकिन उसमें एक बाजार अर्थव्यवस्था पहले से मौजूद थी, जिससे कीमतों में वृद्धि और जनसंख्या में वृद्धि ने कंगाली और तीव्र वर्ग-संघर्ष को जन्म दिया। वृद्धि और कमी के क्रमिक चरणों सहित कृषि चक्र की उनकी धारणा जनसांख्यिकीय परिवर्तनों से जुड़ी हुई है। निम्न जल चिह्न नामक प्रथम अवस्था में, जिसमें ग्यारहवीं से पंद्रहवीं शताब्दी तक का समय था विकास की पूर्व-शर्तें तैयार की गईं। (निम्न लगान दर, प्रचुर भोजन) पंद्रहवीं सदी से लेकर 1600 सी.ई. तक का दूसरा चरण थोड़ा उन्नत विस्तार का समय था। तीसरे चरण 1600 सी. ई. से 1650 सी. ई. या 1680 सी. ई. तक परिपक्वता का है और इसे जमींदारों के आक्रामक लगान का दौर कहा जाता है। चौथा चरण लंबी मंदी या संकुचन की अवधि था। ये चरण एक ग्रामीण आबादी के उतार-चढ़ाव के उनके नव-माल्थसियन विचार के साथ जुड़े थे।

बोध प्रश्न-2

1) सामंतवाद से पूँजीवाद में संक्रमण की प्रक्रिया पर ब्रेनर के विचारों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करें।

.....

.....

.....

2) सामंतवाद से पूँजीवाद में संक्रमण के तथाकथित 'जनसांख्यिकीय मॉडल' का वर्णन करें।

.....

.....

.....

3.7 सारांश

हाल के दिनों में सबसे जीवंत शैक्षिक विवाद में से एक सामंतवाद की पतन और उत्पादन के पूँजीवादी पद्धति के उद्‌भव के बारे में है जिसने आधुनिक दुनिया का निर्माण किया। सामंती सम्बंधों की प्रकृति, इसके पतन के उत्तरदायी कारकों और पूँजीवाद के जन्म का इस पतन से सम्बंध, इनके बारे में विविध स्पष्टीकरण प्रस्तुत किए गऐ हैं। शायद हम इस संक्रमण के लिए किसी एक कारक को जिम्मेवार नहीं ठहरा सकते। चूंकि सामाजिक गठन जटिल है, इसलिए विभिन्न विद्वानों द्वारा बताए गए अलग-अलग कारणों की पारस्परिक अंतःक्रिया की इस सामाजिक परिवर्तन में भूमिका हो सकती है। इसके अलावा, संक्रमण की प्रक्रिया समय और स्थान में एक समान नहीं थी। संक्रमण का प्रक्षेय-पथ क्षेत्रानुसार हो सकता है, जैसा कि हम जापानी सामंतवाद के मामले में देखते हैं।

3.8 शब्दावली

जनसांख्यिकी : आबादी और जन्म और मृत्यु जैसी उसकी प्रवृत्ति का अध्ययन करने का विज्ञान।

वर्ग-संघर्ष : मार्क्सवादी अवधारणा में वर्गों के बीच संघर्ष को सामाजिक परिवर्तन की प्रेरक शक्ति के रूप में देखा जाता है और इसे वर्ग-संघर्ष कहा जाता है।

3.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) भाग 3.2 देखें।

2) भाग 3.3 देखें।

बोध प्रश्न 2

1) भाग 3.4 देखें।

2) भाग 3.6 देखें।

3.10 संदर्भ ग्रंथ

एण्डर्सन पैरी, (1974), *पैसेजेज फ्रॉम एंटीक्विटी टू फ्यूडलिज़्म*, लन्दन : वर्सो।

एण्डर्सन पैरी, (1974), *लिनिएज ऑफ दि अब्सोल्यूटिस्ट स्टेट*, लन्दन : वर्सो।

बाइअस, गाइ (1985), *अंगेस्ट दि न्यू ओ-मॉल्थ्यूसियान ऑर्थोडोक्सी*, पृ.107, इन टी.एच. ऑस्टन एण्ड सी.एच.ई. फिलिपिन (एडिटर्स), *दि बर्ननर डिबेटः अग्रेरियन क्लास स्ट्रक्चर एण्ड इकोनॉमिक डेवलपमेंट इन प्रि-इण्डिट्रियल यूरोप*, कैम्ब्रिज, लन्दन : कैम्ब्रिज यू.प्रे.।

ब्रेनर, रॉबर्ट (1976), ''*अग्रेरियन क्लास स्ट्रक्चर एण्ड इकोनॉमिक डेवलपमेंट इन प्रि-इण्डिट्रियल यूरोप* '', *पास्ट एण्ड प्रजेंट*, वॉल्यूम-70, नं.170, रिप्रिंट पृ. 30-75, इन टी. एच. एस्टन एण्ड सी.एच.ई. फिलपिन (ऐडिटर्स), दि ब्रेनर डिबेट', *अग्रेरियन क्लास स्ट्रक्चर एण्ड इकोनॉमिक डेवलपमेंट इन प्रि-इण्डस्ट्रियल*, यूरोप, कैम्ब्रिज, लन्दन : कैम्ब्रिज यू.प्रे.।

बाइरेस, टेरेंस, जे. (1985), ''*मोडस ऑफ प्रोडक्शन एण्ड नॉन-यूरोपियन प्रि-कोलोनियल सोसाइटीज* '', दि नेचर एण्ड सिग्निफिकेंस ऑफ दि डिबेट'', *जर्नल ऑफ पीसेंट स्टडीज*, वॉल्यूम-12, नं.2–3, पृ.1-18

डॉब, मॉरिस (1946/1963), *स्टडीज इन दि डेवलपमेंट ऑफ कैपिटलिज़्म*, न्यू यॉर्क, इंटरनेश्नल पब्लिशर्स, लन्दन : रूटलेज एण्ड केगन पॉल।

हर्मन क्रिस (1999/2008), *ए पीपुलस हिस्ट्री ऑफ दि वर्ल्ड*, लन्दन : बुकमार्क्स, वर्सो।

हिल्टन, रॉड्नी हॉवर्ड (एडि.) (1976), *दि ट्रांजिसन फ्रॉम फ्यूडलिज़्म टू कैपिटलिज़्म*, लंदन : न्यू लेफ्ट बुक्स।

लाडूरी, इमैनूएल, ले रॉय (1976) *दि पीसेंट् ऑफ लैंगुडॉक*, यूनिवर्सिटी ऑफ ईलीनॉइस, अबॉना एण्ड शिकागो।

स्वजी, पॉल एम. ऐट.ऑल (1954), *दि ट्रांजिशन फ्रॉम फ्यूडलिज्म टू कैपिटलिज्मः ए सिम्पोजियम* (आर्टिकल्स बाय वैरियस राइटर्स फ्रॉम साइंस एण्ड सोसाइटी), लन्दनः फोर।

वूड, ऐलन मीस्किन्स, (1999) *द ऑरिजीन ऑफ कैपटलीज्म*, न्यू यॉर्क, मन्थली रिव्यू प्रैस।

इकाई 4 खोज की यूरोपीय समुद्री यात्राएँ (पंद्रहवीं और सोलहवीं शताब्दियाँ)*

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 यात्राओं के उद्देश्य और इबेरियन राज्यों (पुर्तगाल और स्पेन) द्वारा विस्तार

4.3 नौपरिवहन सम्बंधी (Navigational)/तकनीकी ज्ञान की भूमिका

4.4 पुनर्जागरण काल का महत्व और समुद्री यात्राएँ

4.5 खोजें और यात्राएँ

4.6 पुर्तगाली और स्पेनिश अधिकृत क्षेत्रों की प्रकृति (प्रारंभिक औपनिवेशिक साम्राज्य)

4.7 उपनिवेशों के प्रकार

4.8 दासताः वृक्षारोपण और खनन

4.9 औपनिवेशीकरण का प्रभाव

4.10 सारांश

4.11 शब्दावली

4.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

4.13 संदर्भ ग्रंथ

4.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आपः

- प्रारंभिक औपनिवेशीकरण की प्रक्रिया पर चर्चा कर सकेंगे;
- यूरोप के भीतर अर्थव्यवस्था और राजनीतिक व्यवस्था की गतिशीलता और नई दुनिया के साथ उसके संबंधों का परीक्षण कर सकेंगे;
- उन प्रक्रियाओं से परिचित हो सकेंगे जिनसे औपनिवेशिक विस्तार के साथ-साथ देशी और दास श्रम के शोषण द्वारा यूरोप की अर्थव्यवस्था को लाभ हुआ;
- पश्चिमी यूरोप, नई दुनिया, पश्चिम अफ्रीका और एशिया के कुछ हिस्सों पर व्यापार और औपनिवेशीकरण के प्रभाव का विश्लेषण कर सकेंगे; और
- यूरोप-केन्द्रीयवाद (Eurocentrism) की अवधारणा को समझ सकेंगे।

4.1 प्रस्तावना

यूरोप ने पंद्रहवीं शताब्दी में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और बाद में वाणिज्यिक गतिविधियों के युग में प्रवेश किया। इस युग को पूरी तरह से समुद्री गतिविधियों द्वारा और साथ ही इबेरियन प्रायद्वीप द्वारा भौगोलिक खोजों ने चिह्नित किया, जिसके कारण पश्चिमी गोलार्द्ध की खोजें

* डॉ. विनीता मलिक, दिल्ली विश्वविद्यालय

हुई और अमेरिका, एशिया और अफ्रीका में महत्वपूर्ण विस्तार हुआ। यह पुर्तगाली और स्पेनवासी थे जिन्होंने पंद्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी की शुरुआत में नए समुद्री मार्गों की खोज का बीड़ा उठाया, यात्राओं को प्रोत्साहित किया और प्रारंभिक औपनिवेशिक साम्राज्यों का गठन किया। उन्होंने अज्ञात और दूर की भूमियों की खोज के अभियान का नेतृत्व किया और उसे संरक्षण दिया और इसके बाद उत्तर-पश्चिमी यूरोपीय राज्यों ने उनका अनुसरण किया। पंद्रहवीं से अठारहवीं शताब्दी तक औपनिवेशीकरण की प्रक्रिया तेज हो गई, जिसके परिणामस्वरूप टकराव, युद्ध और प्रतिद्वंद्विता हुई। यूरोपीय राज्यों ने खोजबीन की एक श्रृंखला शुरू की जिसने विश्व-इतिहास में एक नए अध्याय का उद्घाटन हुआ, जिसका खोज के युग (Age of Discovery) या अन्वेषण के युग (Age of Exploration) के रूप में उल्लेख किया जाता है। इस युग को प्रसिद्ध व्यक्तियों, जैसे कि फर्डिनेंड मैगेलन द्वारा परिभाषित किया जाता है। उन्होंने 1519-1522 में अटलांटिक से प्रशांत महासागर को पार किया और विश्व की समुद्री यात्रा का पहला अभियान पूरा किया था।

4.2 यात्राओं के उद्देश्य और इबेरियन राज्यों (पुर्तगाल और स्पेन) द्वारा विस्तार

इस भाग में हम उन कारकों की चर्चा करेंगे जिन्होंने राज्यों को अन्वेषण और विजय के लिए प्रेरित किया। कई उद्देश्यों के तहत यूरोपीय लोगों ने पंद्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी की समुद्रपार गतिविधियों में भाग लिया – इच्छा थी कि काफिरों पर करारा प्रहार किया जाए, अपने मूल राज्य को मजबूत किया जाए, पृथ्वी के आकार और प्रकृति का पता लगाया जाए और विशाल सम्पदा को प्राप्त की जाए या शायद इन सभी उद्देश्यों की पूर्ति की जाए। एडम स्मिथ ने 1770 में कहा था कि, अमेरिका और आशा अंतरीप के मार्ग की खोज मानवजाति के इतिहास की दो सबसे महत्वपूर्ण घटनाएँ हैं। डी. के. फील्डहाउस को यह एक यूरोसेंट्रिक यूरोप-केन्द्रित नजरिए की तरह लगा और उन्होंने कहा कि तुर्की शक्ति हिंद महासागर से पश्चिमी भूमध्य सागर तक फैली थी, भारत ने दक्षिण पूर्व एशिया को उपनिवेशित किया था और अधिकतम व्यापार को नियंत्रित किया था, मुसलमानों का मध्य पूर्व और दक्षिणी एशिया पर नियंत्रण था, और पूर्व की ओर चीनी थे। खोजों और औपनिवेशिक साम्राज्यों ने पूरी दुनिया को प्रभावित किया और वे पूर्णरूपेण यूरोपीय विश्व-अर्थव्यवस्था का हिस्सा बन गए थे। समुद्री पार विस्तार ने भौगोलिक और मनोवैज्ञानिक बाधाओं से यूरोप को मुक्त कराया। समुद्रीपार यात्राओं, अन्वेषण और विस्तार के लक्ष्यों को समझना प्रासंगिक है और यह सवाल उठाना उचित है कि किस कारण से, पुर्तगाल और स्पेन द्वारा शुरू किये गए औपनिवेशिक साम्राज्यों का उदय हुआ।

यात्राओं और विस्तार के इरादों का सामान्यीकरण करना आसान नहीं है। पंद्रहवीं शताब्दी से पहले वेनिस और जेनोआ के व्यापारियों का, भूमध्यसागर के माध्यम से, व्यापार पर एकाधिकार था। वह विविधतापूर्ण माल लाया करते थे जैसे लेवांत के माध्यम से मसाले, सूती कपड़े और रेशम। इस घटनाक्रम ने पंद्रहवीं शताब्दी में एक आवेग प्रदान किया और दूसरों को इस आकर्षक व्यापार की ओर प्रेरित किया। जी. वी. स्कैमेल के अनुसार, यूरोपीय औपनिवेशीकरण के लिए उद्देश्यों की श्रृंखला की पहचान की गई है। यह आर्थिक या वैचारिक कारक या यूरोपीयों का साहसिक स्वभाव हो सकता था। प्रारंभिक अन्वेषण के उद्देश्यों की समझ यूरोपीय समुद्री यात्राओं द्वारा ईश्वर, सोना और महिमा जैसे कारक हैं जो धार्मिक, आर्थिक और व्यक्तिगत कारकों पर प्रकाश डालते हैं। 1415 में पुर्तगाल द्वारा सेउटा पर कब्जा करने तक स्पेन और उत्तरी अफ्रीका के मध्य का भूमध्यसागर (इबेरियन प्रायद्वीप), इस्लाम द्वारा विजित था। पुर्तगालियों ने जल्द ही समुद्रीय सैन्य टोह (Reconnaissance) की ओर संक्रमण किया और मूरों (Moors) से रेकॉन्किस्टा (Reconquista) में अपनी भूमिका को पूरा किया। जबकि कास्तील को 1492 तक भी ग्रेनेड़ा के मूरों के विदेशी अंतःक्षेत्र का,

उसके पतन तक, सामना करना पड़ा था। मुस्लिम शासकों के खिलाफ लड़ाई, जो पुनर्विजय (रिकॉन्क्वेस्ट) के नाम से जानी जाती थी, ने कैथोलिकों के बीच सामूहिकता की भावना को प्रेरित किया। इतिहासकारों ने डॉर्न पेड्रो को उनके भाई प्रिंस हेनरी, नौ-परिवहक (द नेविगेटर), के साथ पुर्तगाल के नाम पर शुरुआती समुद्री अन्वेषण, व्यापार, और विजय के निर्माता के रूप में देखा। विद्वान उसकी यात्राओं को स्वीकृति देते हैं, लेकिन यात्राओं के पीछे की मंशा पर भी सवाल उठाते हैं। सम्पदा और शक्ति के बाहरी स्रोतों की राजशाही की जरूरतों को अनदेखा नहीं किया जा सकता। प्रिंस हेनरी के मार्गदर्शन में सहारा के दक्षिण से, जो मूर की सम्पदा के स्रोतों में से एक था, उसके सोने की आपूर्ति पर कब्जा करने के उद्देश्य से और इस्लाम पर हमला करने के लिए पुर्तगालियों ने पश्चिम अफ्रीकी तटरेखा की खोजबीन की। इस प्रकार दो उद्देश्यों ने एक साथ काम किया। इस दौरान पंद्रहवीं शताब्दी में कास्तील कैनरी द्वीप के अधिग्रहण से संतुष्ट था। ईश्वर संबंधित कारकों, ख़ासतौर पर ईसाइयों और मुसलमानों के मध्य धर्मयुद्ध के इतिहास के कारण नए समुद्री मार्ग की खोज हुई। सोने की बालू को इस क्षेत्र की खोज के आर्थिक उद्देश्य के रूप में पहचाना जा सकता है। एंटीला, जो अपने सम्पदा के साथ एक पौराणिक भूमि थी, को खोजना नाविकों का सपना था। महिमा उन लोगों की थी जिन्होंने खोजों और यात्राओं का कार्य किया था।

जे. एच. पैरी के अनुसार, सेउटा पर कब्जा करने के साथ धर्मयुद्ध का उत्साह अपने आधुनिक चरण में चला गया और उसने दुनिया के अन्य भागों में यूरोपीय वाणिज्य के साथ ईसाई धर्म को फैलाने के लिए संघर्ष का रूप ले लिया। यहाँ तक कि पोप के विशेषाधिकार भी मुख्य रूप से व्यापारिक एकाधिकार और ईसाई जगत की उन्नति से सम्बंधित थे। हेनरी ने उन क्षेत्रों की खोज की इच्छा की जिनके निवासी, इंडीज और प्रेस्टर जॉन की उम्मीद के साथ, मसीह की पूजा करेंगे। आंतरिक राजनीति, आर्थिक दबाव और व्यक्तिगत कारक अफ्रीका के अटलांटिक तट की खोज के लिए अधिक जिम्मेदार थे। यह पुर्तगाल में आंतरिक स्थिति के तनाव को कम करने के लिए भी थे, क्योंकि सैन्य विस्तार कुलीन वर्ग को उनका ध्यान खींचने के लिए कुछ देने वाला था जबकि व्यापारिक विस्तार शाही खजाने की स्थिति को मजबूत करने वाला था। पुर्तगालियों की उपलब्धियाँ विचारपूर्वक इरादों तक सीमित थी, चाहे यह अफ्रीका और एशिया में धार्मिक या आर्थिक उद्देश्य हों या विनीशियन एकाधिकार को तोड़ने और व्यापारिक आधार स्थापित करने के लिए और खोजकर्ताओं को व्यवस्थित करने के लिए था। हालांकि केवल खोज के लिए प्रेरणा को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। पुर्तगाल के छोटे आकार और अल्प जनसंख्या के बावजूद, उसकी उपलब्धियों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

विद्वान भी मानते हैं कि ऑटोमन साम्राज्य का उदय या तुर्कों के हाथों कुस्तुंतुनिया के पतन के कारण एशिया का भूमि मार्ग बाधित हुआ और लाल सागर से वस्तुएँ आनी बंद हो गयी, और इसने उन्हें विविध मार्गों की तलाश करने के लिए प्रोत्साहन प्रदान किया। यह तर्क इस तथ्य की समस्या को पैदा करता है कि बढ़ते मसाले के व्यापार के बावजूद कीमतें गिर रही थीं। तुर्कों ने सोलहवीं शताब्दी तक लेवांत पर विजय प्राप्त नहीं की थी, तब तक पुर्तगाली पहले से ही नौकायन कर रहे थे और तुर्की राज्य करों को कम कर रहा था अर्थात् उन्होंने व्यापार को सुविधाजनक बनाया। साम्राज्यवाद का दोहरा लक्ष्य विचारधारा और सम्पदा था। इसे बर्नाल डियाज द्वारा उपयुक्त रूप से व्यक्त किया जिन्होंने 1519 में मैक्सिको में विजेताओं के साथ यात्रा की थी, 'हम यहाँ ईश्वर की सेवा करने के लिए आए थे और धनी बनने के लिए भी'। यह अवधि पश्चिमी यूरोप में राष्ट्र-राज्यों के उदय से चिह्नित थी, उन्होंने जहाँ सत्ता के लिए प्रतिद्वंद्वियों के साथ संघर्ष किया और अभियानों को प्रोत्साहित किया। यूरोपीय शक्तियों ने वाणिज्यिक संजाल में प्रमुख बिंदुओं पर सैन्यीकृत प्रवेश द्वार स्थापित किए और राजनीतिक सत्ता और बस्तियों का विस्तार करना शुरू किया।

एक और मकसद, जो तर्क के बाद बचता है, वह है जनसांख्यिकीय कारक। विद्वानों इस बात का उल्लेख करते हैं कि सोलहवीं शताब्दी के दौरान पूरे भूमध्यसागर में जनसंख्या में वृद्धि हुई। सेविल में प्रवासियों को, जो हर जगह से आए थे, इंडीज की यात्राओं ने आकर्षित किया था और लिस्बन में, अप्रवासियों का निरंतर प्रवाह हो रहा था। विस्तृत होते शहरों ने इतालवी व्यापारियों और बैंकरों का ध्यान आकर्षित किया। समुद्र पार अभियान ने अधिक भूमि और संसाधन प्रदान किए। दूसरे विद्वानों का तर्क है कि, जब शुरुआती यात्राएँ की गई थीं तब यूरोप की जनसंख्या स्थिर थी या घट रही थी। बहुमूल्य धातुओं से समृद्ध स्पेनिश इंडीज को छोड़कर, प्रवासी नई खोज की गई भूमियों में बसने के लिए उत्सुक नहीं थे बल्कि प्रवासियों की आपूर्ति कम ही थी। इसके बावजूद, सोलहवीं शताब्दी में इबेरियन राजशाही यूरोपीय पड़ोसियों से आपूर्ति लेने के लिए बाध्य थी। स्कैमेल कहते हैं कि न ही उस समय भोजन-सामग्री की तलाश के लिए अपार दबाव था। उत्तर अफ्रीका, जहाँ पुर्तगाल ने पहले उपनिवेश बनाया, एक अन्न उत्पादक था। लेकिन मोरक्को में पुर्तगाली भोजन-सामग्री की तुलना में लूटपाट से अधिक सरोकार रखते थे। अटलांटिक द्वीप समूह में चीनी और शराब के उत्पादन द्वारा गेहूँ को जल्द ही प्रतिस्थापित कर दिया गया था। फसलों का वह समूह जिसमें उपनिवेशवादियों के कमी थी, अर्थात् मसाले, उसे भारी खर्च पर एशिया से आयात किया जाता था।

सोने की खोज शुरुआती खोजकर्ता का अधिक समझ में आने वाला मकसद दिखाई देता है। राल्फ डेविस, यात्राओं के लिए मुख्य कारक के रूप में आर्थिक तनाव और आंतरिक राजनीति के बारे में बात करते हैं। बहुमूल्य धातुओं की कमी को पूरा करने के लिए सोने और चाँदी का पता लगाने की इच्छा के साथ आर्थिक पहलुओं के लिए यूरोप की तीव्र इच्छा ज्यादा मजबूत लक्ष्य लगता है। पुर्तगाली सोना पाकर खुश थे, लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि क्या यह उनका प्रारंभिक मकसद था। विद्वानों का मानना है कि पुर्तगाली विस्तार में ऐसे आर्थिक निर्धारक संदिग्ध हैं क्योंकि यह एक गरीब, अति-आबादी वाला और आर्थिक रूप से कमजोर देश था लेकिन फिर भी यह चीनी, मसालों जैसी विलासिता की वस्तुओं की तलाश में था। ब्राउदल इनकार करते हैं कि पुर्तगाल एक गरीब देश था और तर्क प्रदान करते हैं कि उत्तरी यूरोप के लिए उसने बहुत सी वस्तुएँ उपलब्ध कराई थी। एशिया के लिए समुद्री मार्गों को पता लगाना पुर्तगाल के राजा मैनुअल की भी जिज्ञासा थी। स्पेन के फिलीप II इंड़ीज के जीवित प्राणियों के इतिहास का अध्ययन करने के इच्छुक थे। चमत्कारों की भी तलाश थी, जिनकी साहित्य में कल्पना की जा रही थी। विजय प्राप्त करने वाले (Conquistadores), प्रचारक और अधिकारियों ने शिक्षा की उन्नति की पहल शायद नहीं की थी, लेकिन 1500 तक प्रचारकों का उत्साह बहुत महत्वपूर्ण था। शुरुआती अन्वेषण और नई खोजों ने अधिक संसाधन प्रदान किए और अभियान के दौरान भिन्न-भिन्न मकसद थे। यह सब दर्शाता है कि अभियानों के पीछे मकसद विविध थे, चाहे वह गरीबी या दुःख से छुटकारा पाना हो, या फिर प्रदेशों पर कब्जा करके औपनिवेशिक सम्पदा प्राप्त करना रहा हो।

4.3 नौपरिवहन सम्बंधी (Navigational)/तकनीकी ज्ञान की भूमिका

ऊपर उल्लिखित उद्देश्यों के अलावा तकनीकी कौशल और सैद्धांतिक ज्ञान ने समुद्रपार विस्तार में यूरोपीय प्रभाव को बढ़ाने में मदद की। हम खगोलीय अवलोकनों, जहाज निर्माण, मानचित्रकला और आग्नेयास्त्रों के प्रयोग में नवाचारों की अनदेखी नहीं कर सकते, जिससे एक औपनिवेशिक उद्यम सैन्य-टोही अभियानों में बदल गए। टॉलेमी की भूगोल और स्ट्रैबो की रचनाओं के भौगोलिक और खगोलीय ज्ञान को लैटिन में अनुवादित किया गया था। अरस्तू ने एशिया के लिए एक पश्चिम की ओर के मार्ग की बात की और स्ट्रैबो ने अटलांटिक

में भारत का अनुमान लगाया था। क्रिस्टोफर पियरे डी'एली ने अपनी रचना काम इमेगो मुंडी में, पंद्रहवीं शताब्दी में एशिया के लिए पूर्व की ओर के मार्ग की पहचान की थी। प्रारंभिक अन्वेषणों ने मानचित्रों और नौवहन तकनीकों का सहारा लिया। लिस्बन में लोरेंटाइन व्यापारी मार्को पोलो और निकोलो कोंटी के लेखन से परिचित थे, जिन्होंने एशिया का दौरा किया था और उसकी सम्पदा को उजागर किया था। पुर्तगाली अरब स्रोतों से पूर्व की ओर के समुद्री मार्गों से अवगत हुए थे। जॉन द्वितीय के शासन के दौरान किताबें मुख्य रूप से एक्यूट द्वारा हिब्रू से लैटिन में अनुवादित की गई थी, और यह अक्षांशों का निरीक्षण करने के लिए एक पहली व्यावहारिक नियमावली बन गईं।

तेरहवीं शताब्दी तक, इतालवी और कैटलन जल सर्वेक्षकों ने भूमध्यसागर, काला सागर और उत्तरी यूरोप के समुद्री अनुभव के आधार पर लेखाचित्र तैयार किए थे। पुर्तगालियों ने नौपरिवहन और मानचित्र कला के क्षेत्र में योगदान दिया, जब उन्होंने समुद्री लेखाचित्र तैयार किए जिनमें अटलांटिक, इबेरिया और अफ्रीका के विभिन्न क्षेत्रों को दर्शाया गया। देशांतर निर्धारित करने के लिए उन्होंने ध्रुव तारे की जगह शीर्षलंब-दूरी प्रणाली का प्रयोग किया। 1462 में अक्षांश का अनुमान लगाने के लिए तारों का उपयोग स्पष्ट था। 1480 के दशक में जहाँ ध्रुव दिखाई नहीं देता था, पुर्तगाली खगोलविदों ने सूर्य का उपयोग करने वाली प्रणाली का यत्न करके दक्षिणी गोलार्द्ध का अक्षांश निर्धारित किया। पंद्रहवीं शताब्दी तक पुर्तगाली मानचित्रकार ने एक एकल देशांतर रेखा (मेरिडियन) चिह्नित किया था। चुंबकीय कम्पास एक चीनी योगदान था; वेधयंत्र (एस्ट्रोलैब) अरब नाविकों द्वारा सिद्ध किया गया था। एस्ट्रोलैब का उपयोग खगोलीय नौपरिवहन के लिए किया गया था और पंद्रहवीं शताब्दी में वृत्त खंडों (क्वाड्रेंट) का उत्पादन किया गया। सोलहवीं शताब्दी में चुंबकीय झुकाव निर्धारण के लिए जॉओआ डी लिसबन द्वारा चुंबकीय कम्पास का उपयोग किया गया था। एक मानचित्रकार, मर्केटर, ने कागज के एक टुकड़े पर घुमावदार पृथ्वी की एक सटीक तस्वीर प्रक्षेपित की थी। बारूद के उपयोग ने उनके सैन्य कौशल में वृद्धि की। 1430 के आसपास, उपयोग किए गए जहाज कारवेल थे। वे अपेक्षाकृत हल्के, पतले, टिकाऊ समुद्री जहाज थे, जो दोनों तेज और फुर्तीले थे और वे नौसैनिक तोपों का इस्तेमाल करते थे।

4.4 पुनर्जागरण काल का महत्व और समुद्री यात्राएँ

विद्वानों ने खोजों को प्रभावित करने में पुनर्जागरण और मानवतावाद की भावना को महत्व दिया है। प्रिंटिंग प्रेस (मुद्रण) के आविष्कार के कारण कृतियों का लैटिन में और मुख्य रूप से भूगोल सम्बंधित कृतियों का देशी भाषाओं में अनुवाद हुआ। व्याख्याओं के दो मत उनके दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हैं। वे ''पुनर्जागरण मत'' के प्रस्तावक थे जिन्होंने खोजों को पुनर्जागरण के प्रसार और जिज्ञासा और व्यावहारिक पहलुओं में आत्मनिर्भरता के उसके सिद्धांतों के साथ सहसंबद्ध किया। उन्हें प्रसिद्धि और महिमा की इच्छा थी, और वे नई दुनिया के बारे में जिज्ञासु थे। इस मत के प्रस्तावक मानते थे की समुद्रपार खोजें जिज्ञासा और प्रयोग पर आधारित थी। इटली पुनर्जागरण के लिए एक आरंभिक बिंदु के रूप में माना गया है और इस प्रकार सुझाव दिया गया था कि यमुद्रयात्री मुख्य रूप से वहाँ से थे। कोलंबस जेनोआ से था, लेकिन जेनोआ शहर ने शायद ही पुनर्जागरण में भाग लिया। दूसरा परिप्रेक्ष्य यह है कि समुद्रपार विस्तार मध्यकालीन तैयारियों से आया था। इस मत के प्रस्तावक स्पष्ट करते हैं कि समुद्रपार विस्तार के लिए सबसे महत्वपूर्ण मकसद आर्थिक था, मुख्य रूप से एशियाई मसालों की खोज (परिरक्षक, गुणों के कारण) और अन्य विलासिता की वस्तुएँ। वह मानते हैं कि बहुत पहले मध्य युग में समुद्री यात्राएँ शुरू की गईं और उन्होंने पुर्तगाली नाविकों को प्रेरित किया था।

बोध प्रश्न-1

नोट : i) दिए गए रिक्त स्थान का उपयोग अपने उत्तर लिखने के लिए कीजिए।

1) उन उद्देश्यों की चर्चा कीजिए जिन्होंने पंद्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी में यूरोपियों को यात्राओं के लिए प्रेरित किया।

.....

.....

.....

2) तकनीकी ज्ञान ने कैसे समुद्रपार विस्तार में सहायता प्रदान की ?

.....

.....

.....

3) एक शब्द में उत्तर दीजिए:

क) किसके मार्गदर्शन में पुर्तगाली नाविकों ने पश्चिम अफ्रीकी तट की खोज की थी?

.....

ख) पियरे डी 'ऐली द्वारा रचित पंद्रहवीं शताब्दी की उस कृति का नाम बताइए जिसमें उन्होंने एशिया के पूर्व की ओर जाने वाले मार्ग की पहचान की थी।

.....

ग) कौन से वर्ष में स्पेन द्वारा ग्रेनाड़ा को पुनः प्राप्त किया गया था ?

.....

4.5 खोजें और यात्राएँ

पंद्रहवीं शताब्दी के अंत में 'महान खोजें' यूरोपीय अन्वेषण और औपनिवेशीकरण का हिस्सा थीं। स्पेन और पुर्तगाल के औपनिवेशिक विजय अभियान मानव इतिहास में एक महान विच्छेद थे। यूरोपीय अभियान, विस्तार, औपनिवेशीकरण और आधिपत्य तीन प्रमुख महासागरों की सीमा से लगा हुआ था। ब्राउदल के अनुसार, अंतर्राष्ट्रीय जल क्षेत्र पर विजय ने लंबे समय तक यूरोप को विश्व वर्चस्व प्रदान किया। पुर्तगाल के उपनिवेशों में अटलांटिक के केप वर्डे द्वीप, मैडिरा और अजोरेस; ब्राजील का तट; पूर्वी अफ्रीका (मोम्बासा की तरह) और पश्चिम अफ्रीका में किलों की बस्तियाँ (साओ जॉर्ज की तरह); अफ्रीकी तटरेखा का फैलाव जैसे अंगोला और मोजाम्बिक; हिंद महासागर में अड्डे जैसे ओरमुज, गोवा, कालीकट और कोलम्बों और पूर्व में मकाओ, मलक्का, जावा, सेलेब्स और मोलूकास में स्थान शामिल थे। स्पेन के आधिपत्य में अधिक सुगठित कैनरी, वेस्ट इंडियन द्वीप, पूरा मध्य अमेरिका, दक्षिण अमेरिका के कुछ हिस्से और फिलीपींस शामिल थे।

लंबे समुद्रीतट और सामंती हस्तक्षेप से मुक्त मछली पकड़ने वाले और समुद्री नाविक और वाणिज्यिक वर्ग पुर्तगालियों के पास थे। 1415 में सेउटा की विजय के पश्चात् उसे पुर्तगाली दुर्गरक्षक सेना के अधीन रखा गया था, इसका अर्थ था कि एक मुस्लिम क्षेत्र में एक समुद्रपार कब्जे के क्षेत्र के प्रशासन पर यूरोपीय राज्य ने अधिकार कर लिया था। सेउटा ने जिब्राल्टर और अन्य मूर क्षेत्रों की बस्तियों पर हमले के लिए एक आधार और इसने अफ्रीकी अन्वेषण के लिए जानकारी प्रदान की। पंद्रहवीं शताब्दी के अंत तक पुर्तगाल ने केप बोजाडोर, केप

वर्डे और सिएरा लियोन पर विजय प्राप्त की। चीनी, सोना, हाथी दाँत जैसी वस्तुएँ और बाद में दास श्रम इन क्षेत्रों के शोषण का कारण बने और आरगूइम में पहली समुद्रपार यूरोपीय फैक्टरी 1448 में बनी। काली मिर्च के एक विकल्प, मालागूइटा, की इस क्षेत्र में भी खरीद की जाती थी। अटलांटिक में कैनरी द्वीप समूह पर विजय के माध्यम से मैडिएरा, अजोरेस केप वर्डे की तलाश की गई और इबेरियन राज्यों द्वारा उन्हें उपनिवेश बनाया गया। हेनरी ने अफ्रीकी 'नीग्रो' लोगों को ईसाई धर्म में परिवर्तित करने के धार्मिक उद्देश्य के साथ गिनी (Guinea) जाने का साहस किया। लेकिन यह एक कूटनीतिक चाल थी, और उन्होंने इसका इस्तेमाल किया और व्यापारियों और खोजकर्ताओं को वित्तपोषण प्रदान किया। अफ्रीकी संसाधनों का व्यवस्थित संगठन प्रारंभ हुआ और जॉन द्वितीय ने सोने के व्यापार को नियंत्रित करने के लिए गोल्ड कोस्ट के एल्मिना में एक किला बनाया। 1479 में, स्पेन और पुर्तगाल के मध्य अलकाकोव की एक संधि के हिस्से के रूप में, स्पेन ने मत्सय व्यापार पर एकाधिकार करने के पुर्तगाली दावों और समुद्र तट के किनारे नौपरिवहन को और उसके अटलांटिक द्वीप समूह पर शासन करने के अधिकार को मान्यता दी। अफोंसो पंचम (1448-1481) के शासन की विशेषता, उत्तरी अफ्रीका में सैन्य दुस्साहसवाद में व्यस्ता थी, जिसके परिणामस्वरूप पुर्तगाली साओ जोर्गे डा मीणा (Sao Jorge da Mina) प्राप्त करने में सक्षम रहे, जो सोने के व्यापार का एक प्रमुख केंद्र था। इस आधार के साथ और फैक्ट्रियों की श्रृंखला के साथ ताज अपने राजस्व को दोगुना करने में सक्षम रहा।

पुर्तगाली शाही वाणिज्यवाद की घटना, 1480 से 1520 के दशक की अवधि में, अपने चरम पर पहुंच गई थी। 1481 में, जॉन द्वितीय ने भारत के साथ समुद्री संपर्क स्थापित करने, हिंद महासागर मसाला व्यापार में प्रवेश करने, और इस्लाम धर्म की घेराबंदी पूर्ण करने के लिए समुद्रपार माने जाने वाले ईसाई अधिपति जैसे जॉन प्रेशर के साथ एक गठबंधन की स्थापना के लिए खोजकर्ताओं को भेजा था। वह बार्टोलोमु डियाज थे जिन्होंने अफ्रीका के पश्चिमी तट के माध्यम से वास्तव में केप, जिसे जॉन द्वितीय केप ऑफ गुड होप (आशा अंतरीय) के रूप में जिसे बुलाते थे क्योंकि इसने भारत का रास्ता खोजने में मदद की, को पार किया था। इस बीच पेड्रो डी कोविल्हाओ को हिंद महासागर में प्रवेश करने की विपरीत दिशा में भेजा गया। इन यात्राओं ने पूरे अफ्रीकी तटरेखा की जानकारी दी। वास्कोडिगामा का जहाजी बेड़ा केप ऑफ गुड होप और फिर 1498 में कालीकट पहुंचा। इस जहाजी बेड़े की पूर्वी अफ्रीकी व्यापारिक संजाल के साथ पहली प्रमुख मुठभेड़ मोजाम्बिक द्वीप, मोम्बासा और मालिंदी पर हुई। उनकी यात्रा काली मिर्च और दालचीनी की जहाज की खेप लाई और यह वास्तव में सभी उन उम्मीदों पर खरी उतरी जो एक एशिया के मार्ग की खोज से की जाती थी। केब्रल की भारत यात्रा के दौरान, वापस रास्ते में, उन्होंने ब्राजील के तट को छुआ।

कोलंबस, अपने अध्ययन और अवलोकनों से, पश्चिम विस्तार द्वारा एशिया पहुंचने के बारे में आश्वस्त थे। कोलंबस ने नौपरिवहन में बहुत अधिक व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर लिया था। उनकी यात्राओं (1492-1504) को प्रासंगिक माना जाता था, विशेष रूप से अमेरिका – एक अज्ञात महाद्वीप – की खोज जो यूरोप को शोषण के लिए खोल दिया था। उनकी खोज की दूसरी यात्रा में उन्होंने वेस्टइंडीज के कई द्वीपों का पता लगाया, लेकिन भारत के सदृश कुछ भी पता लगाने में विफल रहे। फिर भी बस्तियों के, दूर आंतरिक क्षेत्रों स्थापित होने के साथ, पचास वर्षों के भीतर स्पेनिश अधिकृत क्षेत्र तेजी से बढ़ा था। जबकि पुर्तगाली उपनिवेश अनिवार्य रूप से तटीय रहा। स्पेनिश शासक और जिनोआके बैंकरों ने अंत में उनके अभियान का समर्थन किया। कोलंबस बहामास पहुंचा और सान सल्वाडोर, क्यूबा और हिस्पानिया के द्वीप गए, और अजोरेस में उन्होंने शरण ली। उन्हें लगा कि वह एशिया के बाहरी इलाके में पहुंच गए हैं। मसाले नहीं, लेकिन वह सोना और मूल निवासी – जिन्हें दास बनाया जा सकता था और यहाँ तक कि ईसाई धर्म में परिवर्तित किया जा सकता था – उन्हें वापस ले कर आए।

कोलंबस की यात्राओं ने वेस्ट इंडीज और त्रिनिदाद की भी खोज की। 1502 में उनकी यात्रा में उन्होंने होंडुरास के तट, निकारागुआ और पनामा की खोज की। उन्होंने ला इसाबेला (डोमिनिकन गणराज्य) में एक कॉलोनी की स्थापना की जहाँ उन्होंने शासन भी किया। कुछ विद्वान उनकी आलोचना करते हैं क्योंकि यह खोज का युग साम्राज्यवाद की शुरुआत थी।

जॉन द्वितीय ने, अलकाकोवस की संधि (Treaty of Alcacovas) के माध्यम से, कोलंबस द्वारा की गई खोजों का दावे करने की कोशिश की। परिणामस्वरूप, स्पेनिश शासकों ने पोप एलेग्जेंडर पंचम की ओर रुख किया जिन्होंने पोप के आदेश-पत्र जारी किए। इन आदेश-पत्रों ने कोलंबस द्वारा खोजी गई सभी भूमि या जिन क्षेत्रों में खोज की जानी थी उनका अनुदान दिया, और अजोरेस और केप वर्डे के उत्तर से दक्षिण पश्चिम में एक काल्पनिक रेखा खींची जिसने यह स्पष्ट किया कि इस रेखा से परे भूमि और समुद्र की खोज स्पेनियों की है, और उन्हें भूमि पर कानूनी दावा भी प्रदान किया। 1494 में, ट्रोडीसैल्लस की संधि (Treaty of Tordesailles) के माध्यम से, पुर्तगाल को एंटिला की काल्पनिक भूमि के साथ भारत और दक्षिण अटलांटिक का मार्ग और ब्राजील की भूमि प्रदान की।

मकसद पूर्वी व्यापार के लिए रास्ता खोजना और पुर्तगाली एकाधिकार को तोड़ना था। जल्द ही, किसी भी सम्राट के लिए काम करने को तैयार व्यावसायिक खोजकर्ता जैसे वेस्पुची, सोलिस और मैगलन ने खोजों की जानकारी देते हुए चारों ओर भ्रमण किया। अमेरिगो वेस्पुची (Amerigo Vespucci) ने 1497.98 और 1499 के मध्य यात्रा की और क्यूबा, गयाना तट की और 1501 में, ब्राजील की खोज की। फर्डिनेंड मैगलन (Ferdinand Magellan), स्पेनिश शासक चार्ल्स पंचम के अधीन एक महान खोजकर्ता, स्पेनिश सीमांकन के भीतर सभी दक्षिणी क्षेत्रों को लाना चाहते था जिससे स्पेन को फायदा हो। उसने मसाले के टापू, मोलूकास की यात्रा की। उसे पश्चिम की ओर यात्रा करनी थी और वह 1519 में, अटलांटिक से प्रशांतसागर में रवाना हुआ। उसने दक्षिण अमेरिका के दक्षिण में मैगलन जलडमरुमध्य (Straits of Magellan) की यात्रा की और फिलीपींस पहुंच गया। अपनी क्षमता के नौसंचालक ने, अपनी यात्राओं के माध्यम से पुष्टि की कि दुनिया गोल थी। उनकी मृत्यु के बावजूद, उनका अभियान आशा अंतरीय होता हुआ वापस पहुंचा और उसने पृथ्वी का जहाज द्वारा परिभ्रमण किया।

1505 में, अल्मीडा को पुर्तगाली एशिया के पहले वाइसराय बनाया गया था। पूर्वी अफ्रीका, कोचीन और दीव में उनके अन्वेषणों से किलों की स्थापना हुई थी। 1504 में ओरमुज पर कबजा कर लिया गया था, जो भारत और फारस के मध्य व्यापार करने के लिए सबसे समृद्ध जगह में से एक था। 1510 में अल्बुकर्क ने गोवा पर विजय प्राप्त की और उसे पुर्तगाली मुख्यालय बनाया। उसके शासन के अंत तक किलवा, ओरमुज, गोवा और कैनानोर में पुर्तगाली हाथों में प्रमुख किले थे। पश्चिमी हिंद महासागर के बाहर अल्बुकर्क का एक प्रमुख कार्य, मलक्का, पर कब्जा करना था जिसे उन्होंने 1511 में अधिकृत किया। पुर्तगाली पूर्वी अफ्रीका में सफोक से मलक्का में तारंडे तक एक किलेबंद तटीय बस्तियों की दृढ़ श्रृंखला स्थापित करने और धीरे-धीरे कैंटन पोर्ट से नागासाकी तक व्यापार के लिए खोलने में सक्षम रहे थे। 1514 में, पोप लियो ने पारासेलसो डेवोशनइस नामक आदेश-पत्र को पुर्तगालियों के पक्ष में जारी किया जिसमें पूर्व की ओर नौकायन करते हुए, की गई खोजों और विजयों के लिए पोप का आशीर्वाद प्रदान किया गया। पुर्तगाली वाणिज्यिक औपनिवेशिक साम्राज्य स्थापित करने वाले पहले थे। विभिन्न स्थानों से भिन्न-भिन्न वस्तुएँ स्थानांतरित की जाती थी जैसे चीनी, मसाले, सोना और दास और उनका मुनाफा बढ़ रहा था।

स्पेनिश अमेरिका का व्यापार सेविल के बंदरगाह तक और उस शहर के व्यापारियों तक सीमित था जिन्होंने 1543 से स्वयं को कांसुलाडो (Consulado) या व्यापारिक श्रेणी में

संगठित किया हुआ था। 1540 के दशक की महान चाँदी की खोजों ने अटलांटिक-पार व्यापार में एक क्रांतिकारी परिवर्तन को जन्म दिया। बाहरी मालवाहक में निर्मित सामान शामिल था, जो अंदालुसिया में उत्पादित नहीं था और न ही स्पेन से। वापसी में इस मालवाहक में चीनी, चाँदी और तंबाकू की बढ़ी मात्रा शामिल थी।

सोलहवीं शताब्दी की शुरुआत में, पुर्तगाल का पूर्व से मसाला व्यापार पर एकाधिकार था। उस समय दो मुख्य समुद्री व्यापार मार्ग, लिस्बन से भारत तक और सेविल से वेस्ट इंडीज तक, महत्वपूर्ण थे। स्पेन और स्पेनिश अमेरिका के बीच अटलांटिक-पार व्यापार ने, स्पेनिश बसने वालों, मेस्टिज और हिस्पैनिक भारतीयों की जरूरतों को पूरा करने के लिए, अधिक वस्तुओं को स्थानांतरित किया। इन आयातों का भुगतान करने के लिए, वहाँ बसने वाले लोगों ने यूरोप में बिक्री के लिए माल का उत्पादन करने के लिए कृषि, रोपण और खनन अर्थव्यवस्था विकसित की। अपने वृक्षारोपण के लिए उन्हें दासों की आवश्यकता थी और इसलिए उन्होंने पश्चिम अफ्रीका के साथ एक नया व्यापार स्थापित किया। पूर्व के साथ व्यापार को बनाए रखने के लिए चाँदी की खदानों ने उन्हें आयात के लिए भुगतान करने में सक्षम बनाया।

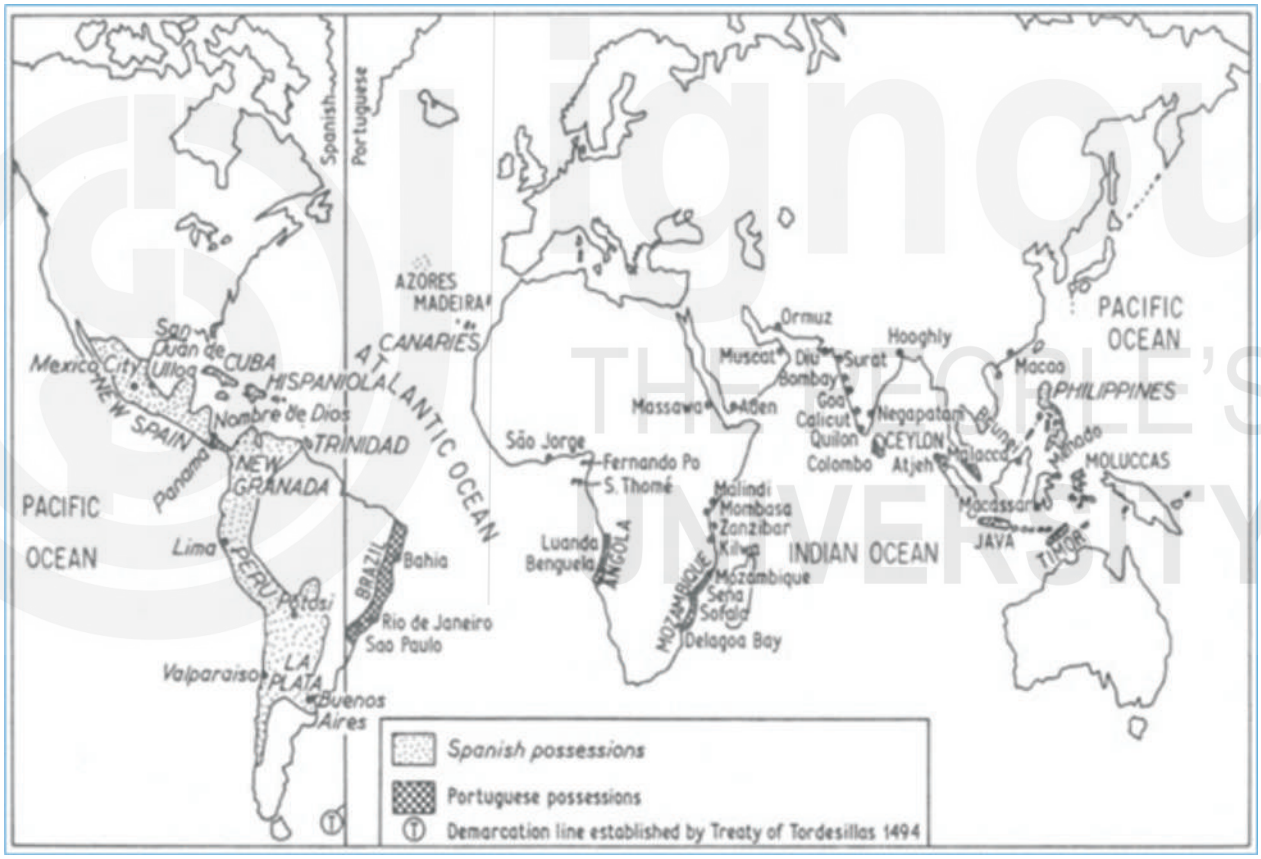

मानचित्र 4.1: कोलंबस, मैगलन, बाल्बोआ, केब्रल और वास्को डा गामा, जिन्होंने विविध क्षेत्रों का पता लगाने के लिए यात्रा की, द्वारा अनुसरित मार्ग

स्रोत :

4.6 पुर्तगाली और स्पेनिश अधिकृत क्षेत्रों की प्रकृति (प्रारंभिक औपनिवेशिक साम्राज्य)

इस उपभाग में हम प्रारंभिक औपनिवेशिक साम्राज्य की गतिशीलता; और उनके प्रभाव क्षेत्र के रूप में उपनिवेश के संबंध में विकसित वाणिज्यवादी नीतियों की जाँच करेंगे।

पुर्तगाली औपनिवेशिक साम्राज्य

आधुनिक औपनिवेशिक साम्राज्य की शुरुआत सेउटा की विजय के साथ शुरू हुई और जल्द ही पुर्तगालियों ने किलेबंद चौकियों और वाणिज्यिक उपनिवेशों की श्रृंखला की स्थापना की। आशा अंतरीय और जापान के मध्य की दुनिया, जहाँ 1500 से 1700 के बीच पुर्तगालियों के पास व्यापार और शक्ति का विस्तृत संजाल था, वह स्थिर नहीं था लेकिन परिवर्तन उसकी विशेषता थी। प्रारंभिक आधुनिक काल में यूरोपीय साम्राज्य-निर्माण की प्रकृति को देखने के लिए इतिहासकारों ने यूरोप-केंद्रित स्पष्टीकरण पर बहस की है। पुर्तगालियों को पूर्वी अफ्रीका के मुसलमानों का सामना करना पड़ा, मुगल साम्राज्य से ख़तरा था और चीनी और जापानी शक्तियों का सामना करना पड़ा। क्या पुर्तगाली राजतंत्र एक व्यावसायिक उद्यम था या शाही वाणिज्यवाद का एक केंद्र या यह एक सैन्य मशीन या स्पेन की तरह एक निरंकुश राजतंत्र?

पुर्तगाली औपनिवेशिक सरकार पुर्तगाल के राजनीतिक चरित्र को प्रतिबिंबित करती थी, जैसे की उपनिवेशों और महानगर के मध्य कोई अंतर नहीं किया जाता था। उपनिवेशों को राज्य-परिषद द्वारा देखा जाता था; इंडीज की परिषद (समुद्रपार में) उनकी सरकार के लिए जिम्मेदार थी। महानगर ने ब्राजील और अन्य अटलांटिक उपनिवेशों में पूर्ण नियंत्रण बनाए रखने की कोशिश की। पुर्तगाल ने समुद्री साम्राज्य के लिए एक मॉडल बनाया, उसने हिंद महासागर में एक वाणिज्यिक और समुद्री उद्यम का प्रबंधन किया जिसे इस्तादो दा इंडिया या लिस्बन का इंडिया हाउस के रूप में उल्लेखित किया जाता था है। एस. सुब्रह्मण्यम के अनुसार, हिंद महासागर में पुर्तगाली हस्तक्षेप की प्रकृति का, शुरुआत में वाणिज्यिक और फिर सैन्य उपस्थिति के माध्यम से किलों और कारखानों के निर्माण द्वारा, जिससे मसाला व्यापार पर एकाधिकार किया जा सके, प्रतिनिधित्व किया गया था। पुर्तगाली साम्राज्य की एक कम समरूप व्यवस्था थी; वायसराय और गवर्नर या कैप्टन जनरल की भिन्न-भिन्न उपाधियों दी जाती थी। राजा के प्रतिनिधि के रूप में वायसराय के साथ जिन्होंने भारतीय व्यापार का प्रबंधन किया वह भारत में एक संगठनात्मक संरचना बनाई। राजा के प्रतिनिधि के रूप में वह स्थानीय शासकों के साथ वाणिज्यिक संधियाँ करते थे और एशिया में उनके व्यापार का पर्यवेक्षण करते थे और उन्हें कैप्टन-जनरल द्वारा सहायता प्रदान की जाती थी। प्रत्येक किला एक कप्तान के अधीन था, जिसने न्याय के प्रशासन को भी देखा। कम वेतन के कारण एशिया में साम्राज्य में व्यापक भ्रष्टाचार और अक्षमता थी। पुर्तगाली साम्राज्य, अमेरिका के बाहर बिखरे हुए अड्डों और तटीय परिक्षेत्रों से मिलकर बना था और स्पेन के बड़े उपनिवेशों से बहुत अलग था।

ब्राजील की खोज ने पश्चिम में औपनिवेशीकरण की प्रक्रिया को शुरू की। सिसिली से मैडिएरा और साओ थोम में लगाए गये गन्ने से ब्राजील में चीनी का परिचय हुआ। चीनी व्यापार और दास व्यापार वह दो स्तंभ थे जिस पर ब्राजील के औपनिवेशिक समाज निर्मित हुआ था। सोलहवीं शताब्दी में, किंग जॉन-III ने ऐमजॉन और साओ विसेंट के बीच ब्राजील के तट को बारह कप्तानिओं में विभाजित किया जिनको भूसम्पत्तिवान जमींदारों को दिया गया था जिन्हें आदाता (Donatarios) के रूप में जाना जाता था। हिडाल्गोस या जेंट्री (कुलीन वर्ग) द्वारा अनुदान लिए गए। लागत वहन करने के लिए इनमें से कोई भी पर्याप्त धनी नहीं थे, परिणामस्वरूप चार मूल अनुदान कभी स्थायी नहीं किए गए, दूसरे चार मूल अनुदानों को मूल निवासियों के हमलों का सामना करना पड़ा। शासक को इसे बचाने के लिए केंद्रीय सत्ता स्थापित करने की आवश्यकता का एहसास हुआ। ब्राजील को कैप्टेंसी जनरल बनाया गया और उसे बाद में एक वायसरायलिटी में बदल दिया गया। जबकि जिम्मेदारी का सबसे महत्वपूर्ण पद गोवा के वायसराय का था जिसने पूरे हिंद महासागर और ईस्ट इंडीज में पुर्तगाली बस्तियों की देखरेख की। औपनिवेशिक ब्राजील के जीवन की प्रकृति ग्रामीण थी और इसमें एकल वायसरायलिटी थी, जिसे कप्तान-जनरल और कप्तान के तहत

प्रांतों में विभाजित किया गया। अफ्रीका और अटलांटिक में छोटे उपनिवेशों में भी कप्तान थे। वह कप्तान-जनरल ही थे जिनके पुर्तगाली सरकार के साथ सीधे संबंध थे। मेक्सिको शहर की तुलना में, ब्राजील की बस्तियाँ अधिकतम गाँवों की तरह थीं। गृह सरकार ने उपनिवेशों को, परिषदों और अधिकरणों के माध्यम से, नियंत्रित किया जिसका मुख्यालय लिस्बन में था। यहाँ तक कि, 1604 से 1614 तक, कॉनसेलो डा इंडिया (Conselho da India) या भारत परिषद ने अफ्रीकी और ब्राजील के मामलों को भी संभाला। सी. आर. बॉक्सर कहते हैं, सत्रहवीं शताब्दी तक ब्राजील का इतिहास सुदृढ़ीकरण और प्रगति का था, शाही सरकार ने आदाता की जगह ले ली थी।

पहले कासा डी सेउटा, फिर कासा डा गियाना, और फिर कासा डा मीना अधिकारियों की सत्ता के तहत लिस्बन में बनाया गया था जिसने पुर्तगाल के संपूर्ण आर्थिक जीवन को विनियमित किया था। बाद में राजा ने एक राज्य प्रणाली के पश्चात् फैक्ट्रियों और सरकारी गोदामों का प्रशासन करने के लिए कासा डा इंडिया बनाया। जल्द ही एक प्रशासक, फिएट्र (feitor), एकल कार्यालय के तहत दो अलग कासाओं को नियंत्रित करता था और उसके पास तीन कोषाध्यक्ष थे। पाँच सचिव थे – ऐसक्रिवेस, परोवेडोर (escrivaes, the provedor) का कार्य कासा द्वारा भेजे गये बेड़े के उपकरण को व्यवस्थित करना था। पुर्तगाल औपनिवेशिक समाज आनुवंशिकता, सामाजिक पद और वैवाहिक स्थिति पर आधारित था। पुर्तगाल में जन्म लेने वाले (राइनो; reinoes) सर्वोच्च स्थान पर थे, एशिया में जन्म लेने वाले (कास्टिओस; castios) और अगले स्तर पर और अफ्रीका में जन्म लेने वाले (मलॉटो; mulattoes) थे और क्रम में सबसे नीचे मूल देश के ईसाई थे। उपनिवेशों में पुर्तगाली आबादी चर्च के अधिकारियों, कुलिन वर्ग, साधारण विवाहित और अविवाहित पुरुषों (सोल्डातो; soldato) में विभाजित थे। अविवाहित पुरुषों को सेना में काम करना पड़ता था और हिडाल्गोस या छोटे कुलीन वर्ग के दान पर रहना होता था। सोल्डातो सामंती मिलिशिया (militia) का हिस्सा थे, हालांकि उन्हें औपनिवेशिक प्रशासन के लिए नियुक्त किया गया था।

स्पेनिश औपनिवेशिक साम्राज्य

कुछ विद्वान अंतःक्षेत्र साम्राज्य को, विशेष रूप से पुर्तगाली रूप में देखते हैं जबकि तुलना में, स्पेनिश में बस्तियों का उन्मुखीकरण था। स्पैनिश ताज ने समुद्रपार वाणिज्य को वित्त पोषण प्रदान नहीं किया, लेकिन यह सुनिश्चित किया कि काडिज या सेविल से होकर इसके लाभ गुजरें और राजतंत्र को इस लाभ का हिस्सा मिले। स्पैनिश औपनिवेशिक साम्राज्य एक शहरी साम्राज्य था और औपनिवेशिक क्षेत्र खानों और धातुओं में समृद्ध थे। इस क्षेत्र को अधिकारियों, वकीलों, नोटरी, जमींदारों (एंकोमेंडरस, रेंचर्स), खानों के मालिक, पादरी, व्यापारी और दुकानदारों द्वारा बसाया गया था। साम्राज्य निर्माण की प्रक्रिया निजी प्रयासों द्वारा शुरू कि गई थी और बाद में ताज द्वारा इस पर कब्जा कर लिया गया था। यह पुर्तगाल के विपरीत था, जहाँ यह प्रक्रिया ताज द्वारा शुरू कि गई थी।

अमेरिका पर स्पेन की विजय : विजेताओं का युग

नई दुनिया में बहुमूल्य धातुओं की खोज ने स्पेन के कई दुस्साहसी लोगों का ध्यान आकर्षित किया था। 1520-1550 का दौर विजय का युग या दुस्साहसी विजेताओं का युग था, जो मूरिश युद्धों से जुड़े थे। उन्होंने अमेरिकी भारतीय सभ्यता के मुख्य केंद्रों का अधिग्रहण किया और यूरोपीय भूमि साम्राज्य की स्थापना की। उन्होंने शहरों पर हमला किया और उन सभी पर कब्जा कर लिया। स्पैनिश विजय सभ्यताओं की कीमत पर प्राप्त की गईं जो सांस्कृतिक रूप से परिष्कृत थीं, लेकिन युद्धों के लिए सैन्य रूप से तैयार नहीं थी जो विजेताओं द्वारा संचालित थे। नई दुनिया में विजेताः

- 1521 में, हर्मांडो कोर्टेस (Hermando Cortes) ने एज्टेक पर विजय प्राप्त की और उनकी वफादारी हासिल की। उसे मेक्सिको में स्पेनिश ताज के प्रतिनिधित्व के रूप में एक नया आयोग प्राप्त हुआ।
- देशी भारतीयों की मदद से, कोर्टेस ने एज्टेक पर आक्रमण किया, और उनके शासक और साम्राज्य को हरा दिया। पुराना शहर तबाह कर दिया गया और मेक्सिको सिटी के नाम से, शासक के रूप में कोर्टेस के साथ, नया शहर बनाया गया।
- 1522 में, कोर्टेस को न्यू स्पेन का गवर्नर भी बनाया गया था।
- एक और प्रसिद्ध विजेता, फ्रांसिस्को पिजारो (Francisco Pizarro), पनामा शहर की स्थापना का हिस्सा थे। उन्होंने इंका सभ्यता की आंतरिक समस्याओं और टकराव का लाभ उठाया और अंत में पेरु पर अधिकार कर लिया, और उन्हें वहाँ का गवर्नर बनाया गया।
- विजेताः मेक्सिको में कोर्टेस, पेरू में पिजारो, ग्वाटेमाला में अल्वाराडो, न्यू ग्रेनेडा में कुसाडा, और यूकाटन में मोंटेजो।
- ये सभी विजेता स्पेन के लिए नहीं बल्कि खुद के लिए लड़े।

जैसे ही स्पेनिश सरकार को चाँदी की खानों में समृद्ध इन प्रदेशों का महत्व महसूस हुआ, उसने उन पर अपना शासन स्थापित कर लिया। आंतरिक क्षेत्रों में एक दूसरा तीव्र आगमन की शुरुआत हुईः न्यू स्पेन में (1543.8) बाहुल्य चाँदी भंडारों वाले ज़ाकाटेकास और गुआनाजुआंटो, और बोलीविया में पोटोसी (1545) में फैलती सीमाओं का सामना करने के लिए इस घटनाक्रम ने प्रशासनिक बदलावों की आवश्यकता को अनिवार्य बनाया। वहाँ बसने वाले, कास्टेलियन कुलिनों की तरह, भू-सम्पदा स्थापित करना चाहते थे और यह भूमि पशुपालन और कृषि के लिए उपयुक्त थी, और यहाँ देशी लोग किसान वर्ग के रूप में काम कर सकते थे। अधिक विकसित उपनिवेश मूल निवासियों पर निर्भर, क्रेओल्स (स्थानीय जन्मे गोरों) और मेस्टिजोस (मिश्रित जाति के लोग) के प्रभुत्व में, एक मिश्रित समाज के रूप में उभरे।

एंकोमेंडिया के मुख्य पहलू थेः

- स्पैनिश संस्था जो विवाद का विषय बन गई थी, वह थी एंकोमेंडिया।
- शुरू में यह तय किया गया था कि, किसी भी नई विजय पर गवर्नर मूल निवासियों को विजेताओं के बीच विभाजित कर सकता था। इसने स्पेन निवासियों को अधिकार प्रदान किया जिसके द्वारा वह मूल निवासियों को, अपनी पसंद अनुसार, काम दे सकते थे।
- स्पेनिश उपनिवेशों के एक शक्तिशाली स्वामी को एंकोमेंडेरो कहा जाता था और उसे कुछ जनजातियों का एक अनुदान दिया गया जिसे एंकोमेंडिया कहा जाता था। हर्मांडो कोर्टेस के पास 25,000 वर्ग मील और 100,000 भारतीयों का स्वामित्व था।
- जे. एच. पेरी के अनुसार, विजेताओं ने अधीनस्थ गाँवों को एंकोमेंडिया में परिवर्तित किया। ग्रामीणों ने नए स्वामियों को सेवा और शुल्क प्रस्तुत किया, जो वह पहले अपने भारतीय अधिपतियों को देते थे।
- एंकोमेंडिया ने औपनिवेशीकरण के लिए सामाजिक और आर्थिक आधार प्रदान किया।
- एंकोमेंडिया और पशुपालन ने पूँजी के संचय को जन्म दिया, जिससे कीमती धातुओं का खनन संभव हुआ।

परिणामस्वरूप, भारतीय व्यक्तियों की दासत्व आ गए और भारतीयों को उनके दुर्व्यवहार का खामियाजा भुगतना पड़ा। स्पेन के अधिकारी और धर्म प्रचारकों ने इस शोषण के खिलाफ

प्रचार किया। भारतीय आबादी मैक्सिको में घटकर लगभग आधी हो गई थी। कैरिबियान द्वीप में अमेरिंडियन आबादी गिर गई, और बागानों की आवश्यकता को पूरा करने के लिए अफ्रीका से दासों को लाया गया। स्पेनिश ताज ने कानूनों को लागू करने का प्रयास किया ताकि भारतीयों को स्वतंत्र व्यक्तियों के रूप में पहचाना जा सके और उनके साथ दुर्व्यवहार न हो।

स्पेनिश सरकार ने, सेविल के लिए व्यापार के एकाधिकार के साथ, कीमती धातुओं का एक. पाँचवां हिस्सा आरक्षित किया था। रॉयल क्विंटो सभी प्रगलन के लिए लाए गए बहुमूल्य धातुओं पर लगाया गया करारोपण था और अंतर-औपनिवेशिक व्यापार पर, सीमा शुल्क के रूप में लगाया गया कर था। औपनिवेशिक व्यापार एक एकाधिकार था और एकाधिकारी वाणिज्य दूतावास (Consulado) था – सेविल की व्यापारी श्रेणी थी। वाणिज्य दूतावास, व्यापारियों और प्रशासन के बीच मध्यस्थ के रूप में, कासा को सभी व्यावहारिक मामलों के विवरण को सुलझाने के लिए एक स्थायी मदद थी। व्यापार को व्यवस्थित करने के लिए, 1503 में एक कोषाध्यक्ष, नियंत्रक और सचिव के अधीन और एक 'फैक्टर' जिसका विशेष कर्त्तव्य माल के खेपों को नियंत्रित करना था, के अधीन, स्पेनिश सरकार ने कासा डी कौनट्रेटेक्शन (Casa de Contratacion) बनाया जिसने सभी उपनिवेशों से व्यापार को लाइसेंस प्रदान किया। 1524 में, इंडीज की परिषद को बनाया गया जो औपनिवेशिक मामलों में मुख्य सलाहकार और प्रशासनिक निकाय थी।

साम्राज्यों के प्रशासन में गवर्नर, कैप्टन और कोरिगिडोर्स (Corregidores) सहित अधिकारी होते थे। स्पेनिश उपनिवेशों को धीरे-धीरे वायसरायलिटी में विभाजित किया गया था। सोलहवीं शताब्दी में, इंडीज की परिषद द्वारा निरंतर जाँच के कारण स्पेनिश वायसराय गृह सरकार के नियंत्रण में बहुत अधिक थे। स्पेनिश औपनिवेशिक सरकार को नौकरशाही, मूल निवासी और उपनिवेशों में नए बसे हुए स्पेन निवासियों की निगरानी करनी होती थी। 1530 के दशक में एंकोमेंडिया को कमजोर करने के लिए, कोरिगिमेंटोस डी इंडिओ (Corregimentos de Indios) नामक संस्था बनाई गई थी। सभी मूल निवासी कोरिगिडोर्स के अधीन थे, जो शाही अधिकारी थे। उनकी सेवाओं और शुल्क का उपयोग राजा के लिए किया गया। 1542 में, स्पेनिश सरकार ने एक नये औपनिवेशिक कोड को लागू किया, जिसमें एन्कोमेंडिया (सेटलर्स विशेषाधिकार) पर प्रतिबंध लगाया गया था। सत्ता दो स्तर की थी, सबसे पहले स्पेन में उपनिवेशों को नियंत्रित करने के लिए बनाई गई थी, और दूसरी जो नई दुनिया में उभरी। मध्य अमेरिका और वेस्ट इंडीज में, निजी और शाही हितों के साथ, एक नगरपालिका प्रशासन विकसित की गई थी। नई व्यवस्था लागू करने के लिए आयुक्तों को, विज़िटाडोर (visitador) कहे जाने वाले, औपनिवेशिक सरकार के मुख्य केंद्रों पर भेजा गया। उन्होंने किसी भी अधिकारी के पूरे प्रांत का निरीक्षण किया। एक अन्य अधिकारी, रेजिडेंशिया (Residencia) था, जिसे परिषद द्वारा नियुक्त किया गया था, जो सभी प्रशासनिक और न्यायिक अधिकारियों के उनके कार्यकाल के अंत तक रिकॉर्ड को बनाए रखते थे। प्रत्येक भारतीय तब देशी अधिकारियों, राज्यपाल, अलकेल्डेस (alcaldes; शांति के न्यायाधीश), लगभग दो, रेजिडेंर्स (Residores) या नगर पार्षद की तरह, द्वारा शासित होता था। वह मिलकर नगर परिषद का गठन करते थे। वे एक वार्षिक बैठक में चुने जाते थे, जिसमें स्थानीय कुलीन वर्ग और किसान वर्ग भाग लेते थे। चुनाव की पुष्टि वाइसराय द्वारा की जाती थी। कानूनी और नामांकित गृहस्वामियों को वेसीनोस (vecinos) कहा जाता था, जो बारह रेजिडेंर्स निर्वाचित करते थे और उनमें से अलकेल्डेस या नगरपालिका मजिस्ट्रेट चुनते थे। यह प्रारूप स्पेनिश उपनिवेश द्वारा बनाए गए अन्य उपनिवेशों से अलग था। इंडीज में सरकार की संरचना जिसमें वायसराय और चार कप्तान शामिल थे, प्रत्येक एक अलग राज्य की तरह प्रांतों में विभाजित थे। प्रत्येक स्तर पर, वरिष्ठ अधिकारी की शक्ति उनके ऑडेंसिया (audencia), वाइसराय और सलाहकार परिषद के माध्यम से संतुलित थी। वायसराय और कप्तान जनरल, ऑडेंसिया के सदस्यों की तरह, सीधे इंडीज की परिषद द्वारा नियुक्त किए

जाते थे, ताकि उनकी स्वतंत्रता को सुनिश्चित की जा सके।

यह व्यवस्था विशाल प्रादेशिक साम्राज्य और उसकी सम्पदा का प्रबंधन करने, और उन्हें राजा की सत्ता को स्वीकार कराने के लिए थी। भारत सरकार के ऊपर शहर का स्पेनिश गवर्नर था जिसके पास, भारतीय कुलीन वर्ग के साथ गठबंधन में, निष्कासन करने की अपनी प्रणाली थी। प्रत्येक उपनिवेश का नियंत्रण, उसकी क्षेत्रीय विशेषताओं और आर्थिक क्षमता के आधार पर था। मूल लोगों के प्रति नीति गैर-यूरोपीय लोगों के लिए थी जहाँ भारतीयों को ताज की प्रजा माना जाता था, लेकिन स्पेन की नहीं। वे दास नहीं थे, उनकी संपत्ति भी स्पेनिश कानूनों द्वारा संरक्षित थी और उनके अपने कानून भी कायम रहे और उन्हें यूरोपीय मान्यताओं के दायरे में लाया गया। स्पेन ने औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था को विनियमित किया और संरक्षाणात्मक सीमा शुल्क लागू किए क्योंकि उपनिवेशों को हित का क्षेत्र माना जाता था। इबेरियन राज्यों ने स्वयं के लिए व्यापार का एक हिस्सा, बहुमूल्य धातुओं और वाणिज्यिक एकाधिकार को आरक्षित कर लिया था।

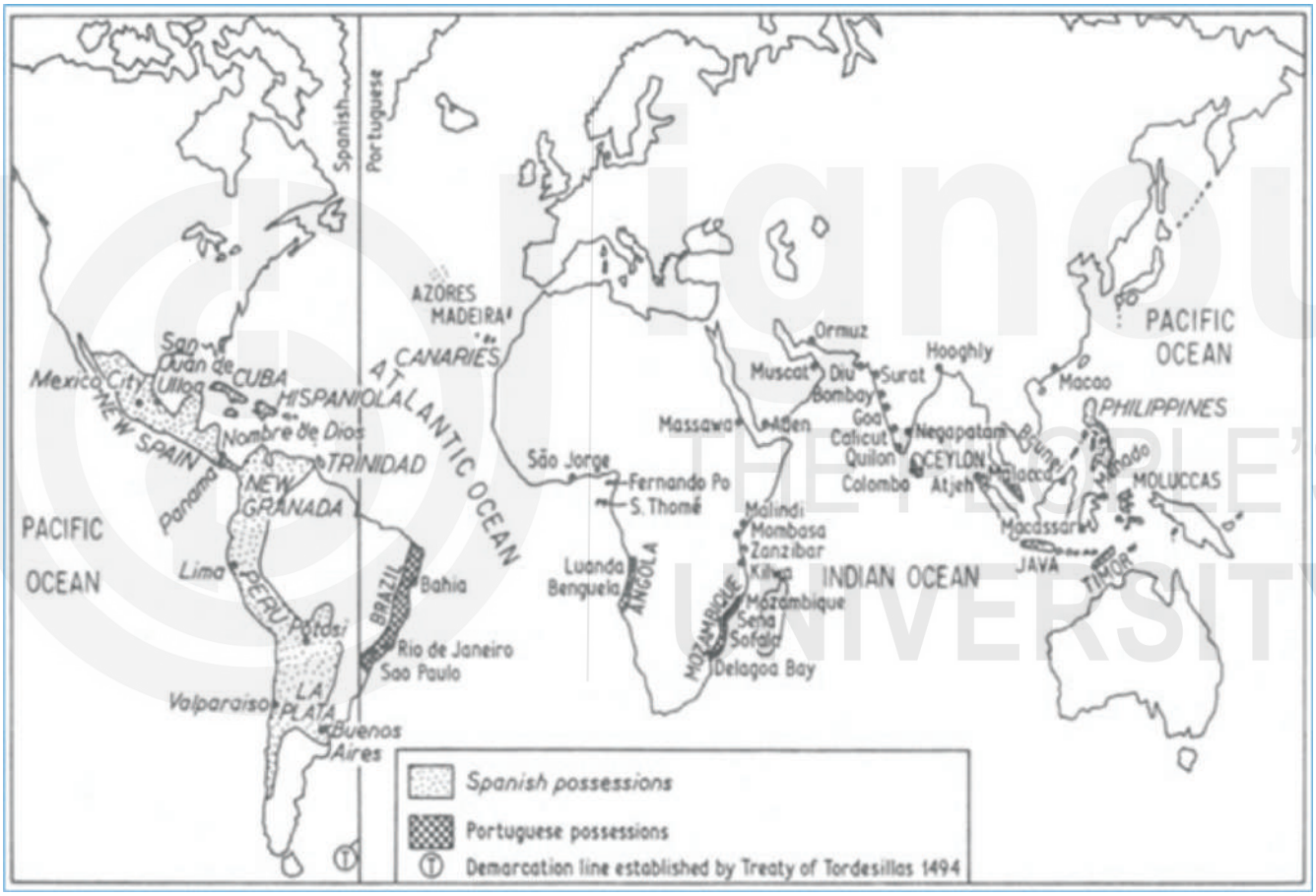

मानचित्र 4.2 : स्पेनिश और पुर्तगाली संपत्ति की एक विस्तृत तस्वीर
स्रोतः ?

4.7 उपनिवेशों के प्रकार

मेक्सिको और पेरू में स्पेनिश उपनिवेश 'मिश्रित' उपनिवेश थे, जिनमें अल्पसंख्यक श्वेत लोगों ने स्पेन जैसा समाज बनाया। अमेरिका और फिलीपींस के कुछ हिस्सों में, जहाँ बस्तियाँ बहुत आकर्षक नहीं थीं, कुछ वासियों के साथ स्पेनियों के पास ''कब्जे'' के उपनिवेश थे और देशी लोगों का ढीला-ढाला पर्यवेक्षण किया जाता था उसी तरह जैसे पुर्तगाली उपनिवेशों में, अंगोला और मोजाम्बिक में। पुर्तगाली उपनिवेशों में, ब्राजील एक ''वृक्षारोपण'' (बागान) उपनिवेश था जिसमें एक छोटा अल्पसंख्यक यूरोपीय समुदाय बस था और उसने अनेक महानगरीय सभ्यता का निर्माण करने की कोशिश की जैसा कि स्पेन ने अपने मिश्रित

उपनिवेशों में किया था। लेकिन ब्राजील में उन्होंने कृषि की ओर रुख किया था ताकि एक व्यापक वृक्षारोपण अर्थव्यवस्था स्थापित की जा सके। अफ्रीका से 'नीग्रो' दास लाए गए जिन्होंने यूरोपीय बाजारों के लिए चीनी का उत्पादन किया और खदानों में काम किया।

बोध प्रश्न-2

1) पंद्रहवी और सोलहवीं शताब्दी में पुर्तगाली साम्राज्य की यात्राओं और खोजों की संक्षेप में चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

2) स्पेनिश औपनिवेशिक साम्राज्य की प्रकृति की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

3) आप एनकोमेंडिया परिभाषिक शब्द से क्या समझते हैं ?

.....

.....

.....

4.8 दासता : वृक्षारोपण और खनन

अमेरीका में, चीनी और दासता का इतिहास इससे भी अधिक अंतरंग रूप से जुड़ा हुआ था। कृषि दासता के लिए चीनी जिम्मेदार थी और यह अफ्रीकी दास थे जिन्होंने अमेरिंडियों का स्थान लिया। 1518 में, 4,000 अफ्रीकी दासों को आयात करने के लिए पहला एसीइनटो (Asiento) या लाइसेंस प्रदान किया गया था। उपनिवेशों में स्पेनिश लोग, ट्रोडीसिल्ला की संधि (1494) द्वारा अफ्रीका में दास बनाने के अभियानों के स्वयं के अभियानों का संचालन नहीं कर सके और उन्हें विदेशी नागरिकों को आयात सौपना पड़ा उत्तर-पश्चिम अफ्रीका में सभी निवासियों को मूर माना जाता था, जिनको पकड़ने के बाद दास बनाना वैध समझा जाता था। औपनिवेशीकरण की प्रक्रिया ने वास्तव में दासता की प्रकृति को बदल दिया था, जहाँ दासों को दूर-दराज के क्षेत्रों में पहुँचाया जाता था ताकि वह यूरोपीय राज्यों के मुनाफे के लिए वृक्षारोपण और खानों में काम कर सकें। पुर्तगालियों ने न केवल ब्राजील के बागानों की आपूर्ति की; वे स्पेनिश कैरिबियन के चीनी बागान के लिए और न्यू स्पेन, और पोटोसी की खानों के लिए दासों के अनौपचारिक रूप से ले जाने वाले थे। 'नीग्रो', पहले से ही, पुर्तगाल और अटलांटिक द्वीप समूह में सामाजिक और आर्थिक प्रणाली के एक भाग के रूप में अच्छी तरह से जाना जाता था। जिसके चलते, 'नीग्रो' दास एक वाणिज्य की वस्तु बन गया, और संगठित व्यापार की आवश्यक विशेषता। दासों की आमद में प्रभाव पड़ा और इस प्रभाव ने, मुख्य रूप से चीनी बागानों में, मुक्त श्रम और भूमिधर किसान को बाहर निकाल दिया। अकुशल श्रम अमेरिकी उपनिवेशों के उत्पादों की आवश्यकता थी, मुख्य रूप से चीनी, तंबाकू और कपास उगाने के लिए, और रेपरिटिमेंटो गिरोह (Reparitimento gangs) चीनी बागानों के निरंतर श्रम के लिए अनिश्चित थे; मेस्टिजोस (स्पैनिश और भारतीय मूल के) ने निर्बल श्रम प्रदान किया और 'नीग्रो' दासों में सबसे अच्छा विकल्प दिखाई दिया।

बारबरा सॉलो का तर्क है कि, दासता और औपनिवेशिक विकास के मध्य की कड़ी आकस्मिक नहीं है लेकिन वह बस्ती स्थापित करने की कठिनाइयों से उत्पन्न होती है जहाँ भूमि या तो मूल रूप से प्रचुर मात्रा में थी या देशी आबादी के स्वामित्वहरण से प्राप्त थी। चीनी में यूरोपीयों ने अपनी लाभदायक फसल पाई, दासों में उन्होंने विवश श्रम शक्ति को पाया, और अफ्रीका में उन्होंने दासों को प्राप्त करने के लिए एक व्यापारिक संजाल पाया। कुछ विद्वानों का मानना है कि अफ्रीकी दासों के बिना अमेरिका के संभावित आर्थिक मूल्य कभी संघटित नहीं किए जा सकते थे। नई अंतर्राष्ट्रीय पूँजीवादी व्यवस्था की स्थापना में, दासता एक अपरिहार्य उत्प्रेरक थी, जो विस्तारवादी पूँजीवादी दुनिया में साम्राज्यवादी नीति का परिणाम थी। ऑइ. वालरस्टीन, एकल प्रणाली के रूप में पूँजीवाद की कल्पना करते हैं, पूँजीवादी विश्व-व्यवस्था के एक भाग के रूप में मजदूरी के साथ-साथ दासता को शोषण के रूप को मानते हैं जो सोलहवीं शताब्दी में उभरी। रॉबर्ट फोगेल और स्टेनली ऍनगरमैंन ने अर्थव्यवस्था के इतिहास पर परिमाणात्मक तकनीकों को लागू किया और दावा कि अमेरिकी दास वृक्षारोपण एक कुशल पूँजीवादी उद्यम की तरह संचालित था और इस बात से इनकार किया कि दास श्रम वेतनभोगी मजदूरी से कम उत्पादक था या वह पूँजीवाद के साथ असंगत था। उपनिवेशवाद और दासता और पूँजीवाद के विकास के साथ उनका संबंध बहुत चर्चा में रहा है। बी. सॉलो ने इस तर्क का पक्ष लिया है जिसके अनुसार उपनिवेशवाद और दासता पूँजीवाद के विकास के लिए और औद्योगीकरण के लिए महत्वपूर्ण थे।

नई दुनिया में यूरोपीय लोगों द्वारा अत्याचार पर सवाल उठाया गया था। यह स्पैनिश न्यायविदों थे जिन्होंने मूल अमेरिकियों की कानूनी स्थिति की चर्चा की थी। लास कासास वह व्यक्ति थे जिन्होंने भारतीयों के अधिकारों और अत्याचार का मुद्दा उठाया। उनके साहित्य ने स्पेन को नकारात्मक ढाँचे में चित्रित करना प्रारंभ किया। उसकी वजह से स्पेनिश राजतंत्र ने अमेरिंडियों की दासता को समाप्त कर दिया, हालांकि इसका कार्यान्वयन पूरी तरह से नहीं हुआ था। कासास की कृति, *ब्रिफ एकाउन्ट ऑफ डिस्ट्रक्सन ऑफ इंडिज़* (1552), में स्पैनिश अत्याचार प्रकाशित हुआ। थॉमस हॉब्स ने अपनी रचना लेविआथन में सामाजिक अनुबंध के आधार पर बसे समाज से पहले एक प्राकृतिक समाज का चित्र प्रस्तुत किया। दुनिया के बाकी हिस्सों पर पश्चिम आधिपत्य ने गैर-यूरोपीय लोगों पर यूरोपीय श्रेष्ठता की निरंतर भावना को पनपने दिया।

4.9 औपनिवेशीकरण का प्रभाव

हमें अन्वेषण और विजयों के प्रभाव को समझने की जरूरत है जिसने व्यापारिक गतिविधियों को बदल दिया और यूरोपीय शक्तियों द्वारा साम्राज्य निर्माण के लिए संघर्ष शुरू किया आधुनिक दुनिया के उदय और संपूर्ण विश्व के लिए एक एकल बाजार का कारण बना। राज्यों ने आधुनिक उपनिवेश बनाए; उनके तरीकों को वाणिज्यवाद के रूप में स्वीकार किया गया और वह अंततः आधुनिक पूँजीवाद के रूप में में विकसित हुए। इसका यूरोपीय अर्थव्यवस्था पर बहुत असर हुआ, जैसा कि वालरस्टीन और अन्य विद्वान पंद्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी में शुरू हुई विश्व पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के लिए औपनिवेशिक व्यापार को जिम्मेदार मानते हैं। इसका एक और प्रभाव भूमध्यसागरीय अर्थव्यवस्था का पतन और उत्तर-पश्चिमी यूरोप की ओर अटलांटिक राज्यों का उदय था। कुछ विद्वानों ने यात्राओं और खोजों को, और खोजकर्ताओं और विजयकर्ताओं को बहुत प्रासंगिकता दी है, और उन्होंने मूल निवासियों को बर्बर के रूप में चित्रित किया है। दूसरे विद्वानों ने जिन्होंने इस प्रभाव का मूल्यांकन करने की कोशिश की है, उन्होंने मूलनिवासियों को असभ्य नहीं माना है बल्कि भूमध्यसागर में धर्मयुद्ध के समय से यूरोपीय मुद्दों को दोषी ठहराया है।

पारिस्थितिक साम्राज्यवाद

यूरोपीय लोगों ने महासागरों को राजमार्ग बनाया, वे अमेरिका में विजय के लिए तोपों और संक्रामक रोगों के साथ पहुंचे, उन्होंने देशी आबादी को शोषित किया और अप्रवासी बस्ती के लिए क्षेत्रों को खोला, और नई दुनिया को यूरोपीय अर्थव्यवस्थाओं के लिए एक उपांग बनाया। यूरोपीय वहाँ पूर्व अमेरिकी वातावरण के लिए अनुकूलित फसलों और पशुओं के साथ पहुंचे। यूरोपीय मक्का, आलू इत्यादि, अमेरिकी फसलों के साथ घर लौटे जिन्होंने यूरोपीय मिट्टी में अच्छा उत्पादन दिया, और वे अमेरिकी चाँदी के साथ लौटे जिसने अर्थव्यवस्था और विश्व व्यापार को प्रोत्साहित किया। पश्चिमी यूरोप ने ऐसा ही किया लेकिन अपनी क्रूरता और तोपों के माध्यम से, और भौगोलिक और पारिस्थितिक साम्राज्यवाद के द्वारा। ब्राजील और वेस्ट इंडीज का गन्ना बागान शाही संस्थाओं के लिए पैसा बनाने की मशीन बन गई और यूरोप की आबादी के लिए कैलोरी के महत्वपूर्ण स्रोत थे।

अल्फ्रेड क्रॉसबी ने – समुद्रयात्राओं के महत्व और यूरोपीयों ने कैसे जैविक रूप से अमेरिकी पौधों और जानवरों के आदान-प्रदान से, जिसके कारण जीव-विज्ञान का वैश्वीकरण हुआ, लेकिन जिसका बीमारियों के प्रसार रूप में भी प्रभाव पड़ा – इसपर प्रकाश डाला। नई दुनिया से औद्योगिक वस्तुओं के बदले में वस्तुओं का विनिमय वास्तव में यूरोप के लिए बहुत फायदेमंद था और इसका यूरोप और दुनिया के अन्य हिस्सों के बीच व्यापार पर असर पड़ा। यह अमेरिका की खोज थी जिसने दुनिया के कृषि मानचित्र को बदल दिया। नई और पुरानी दुनिया दोनों के लिए सामान्य फसलें कपास, नारियल और कद्दू वर्गीय सब्जियाँ जैसे लौकी थे। कुत्ता एकमात्र घरेलू जानवर था, जो दोनों गोलार्द्धों के लिए आम था। परिणामस्वरूप फसलों और पशुओं का प्रसार मानव इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण घटनाक्रम था और इन खोजों के सबसे दूरगामी प्रभाव थे। कुछ विद्वानों को लगता है कि अमेरिकी फसलों के बिना, यूरोप शायद इतनी भारी आबादी का भरण-पोषण नहीं कर पाता। यूरोपीय पशुधन, विशेष रूप से परिवहन और खेती के लिए घोड़े और खच्चर, के बिना अमेरिकी महाद्वीप विकसित नहीं हो सकता था। बहुत सारी फसलें जिन्हें यूरोपीय घर वापस लाये उन्होंने उनके खाने की आदतों में बदलाव लाने में मदद की। पुर्तगाल का ताज अफ्रीकी सोने और दासों पर, और मालगुएटा और एशियाई मसाले पर निर्भर था।

समुद्रपार में यूरोपीय फसलों और पशुओं का पहला स्थानांतरण अटलांटिक द्वीपों में हुआ था। अजोरस की ढलानों और घाटियों की वनस्पति भेड़, मवेशी और बकरियों के जीने के लिए एक अच्छे वातावरण साबित हुआ। आहार में मक्का पर अधिक निर्भरता के कारण पेलगरा, विटामिन की कमी के कारण एक बीमारी, हुई। फसलों और पशुधन के प्रवेश के अपने प्रभाव और सफलताएँ थीं और उन्होंने पारिस्थितिकी सबक भी सिखाए। मदीरा समूह के पोर्टो सैंटो के द्वीप पर खरगोशों का प्रवेश वनस्पति के लिए इतना विनाशकारी हो गया था और हिसपनिओला में मवेशी तेजी से बढ़े।

जनसांख्यिकीय प्रभाव

विद्वानों ने जनसांख्यिकीय कारकों के परिणाम को देखने की कोशिश की है। ब्राउदल, वालरस्टीन और अन्य विद्वानों ने जनसंख्या प्रवासन के प्रभाव का विश्लेषण किया है, जिसके कारण विभिन्न बीमारियाँ फैल गई थी। अमेरिका में कुछ बीमारियाँ व्याप्त थी जैसे पीला बुखार, चेचक, खसरा, प्लेग, चिकनपॉक्स और मलेरिया। खोजों, विजयों और औपनिवेशीकरण ने लोगों का नई दुनिया के लिए उत्प्रवासन किया और वहाँ भूमि और को खेतों का आकर्षण था। जहाँ बागान बस्तियाँ उभर रही थी। बस्तियाँ एशिया और अफ्रीका की तुलना में नई दुनिया के प्रति अधिक आकर्षित थी। अमेरिका में मूल जनसंख्या, मुख्य रूप से अमेरिडियन, कम हो गई थी और वहाँ अफ्रीकी दासों का विस्थापन भी हुआ था।

कला और वास्तुकला

एक और प्रभाव कला के रूपों के माध्यम से स्पष्ट था। नए साम्राज्यों के उदय के लिए कई लोग जिम्मेदार थे जैसे मिशनरी, व्यापारी, दुस्साहसी लोग, खोजकर्ता और ये नई दुनिया के बारे में जानकारी फैलाने में भी जिम्मेदार थे। नौपरिवहन, भूगोल के ज्ञान और जैविक विज्ञान पर भी पुस्तकों का प्रसार हुआ। शेक्सपियर जैसे लेखक, अपनी कृति द टेम्पेस्ट में, और ई. स्पेंसर, अपनी कृति द फीयारी क्वीन में, ने नई दुनिया के संदर्भ में प्रकाश डाला और थॉमस मुन ने, अपनी कृति यूटोपिया, में एक आदर्श राज्य के बारे में बात की। कवि और लेखक जहाजों, समुद्री डाकू, और दुस्साहसी लोगों से जुड़े विचारों के बारे में बहुत उत्साहित थे और इससे जुड़े विभिन्न पात्र साहित्य का हिस्सा बन गए। उन्होंने यहाँ तक महसूस किया कि मूल निवासियों को विस्थापित नहीं किया जाना चाहिए था। कला और वास्तुकला के क्षेत्र में, विचार अधिक गोचर हो रहे थे। काले दास, साम्राज्य निर्माण के संदर्भ में, पेंटिंग का हिस्सा भी बने।

आर्थिक परिणाम और स्पेन पर प्रभाव

खदानों और वाणिज्यिक गतिविधियों से स्पेनिश और पुर्तगालियों द्वारा बहुत सी सम्पदा अर्जित की गई थी जिसके आर्थिक परिणाम थे। इन वाणिज्यवादी राज्यों ने उन नीतियों को अपनाया जहाँ विशेषाधिकार प्रदान करने, संरक्षण, एकाधिकार, बहुमूल्य छाताओं का संचय और नई दुनिया से चाँदी का आयात के साथ व्यापार की प्रमुखता थी। विद्वान व्याख्या करते हैं कि यूरोप में मूल्य क्रांति नई दुनिया से चांदी की आमद का एक परिणाम था। लेकिन बढ़ती कीमतें महज सोने और चांदी की आमद या औपनिवेशिक साम्राज्य के कारण नहीं थी। जैसा कि वालरस्टीन ने उल्लेख किया है, सोलहवीं शताब्दी में अटलांटिक महासागर से परे के व्यापार के संदर्भ में सेविल दुनिया का केंद्र था। चौनू ने कहा था कि, इस व्यापार की केंद्रीय वस्तु बहुमूल्य धातुओं और सेविल का एकाधिकार था, एक व्यापार जो इतना महत्वपूर्ण हो गया था कि सभी यूरोपीय जीवन और पूरी दुनिया का जीवन सेविल पर निर्भर था। यहाँ एक सवाल उठाने की जरूरत है, क्यों नहीं स्पेन पूँजीवाद की राह पर चला गया या इस संदर्भ में क्यों नहीं स्पेन औद्योगिक विकास का प्रथम अन्वेषक बना?

विद्वानों को ऐसा लगता है कि, स्पेन का पतन उसकी औपनिवेशिक अधिकृत भूमियों का एक परिणाम था और बहुमूल्य धातुओं की आमद ने साबित कर दिया था कि यह सब समृद्धि के बारे में नहीं था। स्पेन उपनिवेशों की बढ़ती माँगों को पूरा करने में असमर्थ था और यह अन्य राज्यों के व्यापारी थे जिन्होंने स्पेनिश उपनिवेशों की आवश्यकताओं को पूरा किया। स्पेनिश उपनिवेशवाद मुख्य रूप से बहुमूल्य धातुओं पर आधारित था, जिसने स्पेनिश जहाज़ी माल के रूप में यूरोप में प्रवेश किया। आई. वालरस्टीन के अनुसार, कारण यह प्रतीत होता है कि स्पेन ने उस तरह की राज्य मशीनरी का निर्माण नहीं किया था जिससे उसे यूरोपीय विश्व-अर्थव्यवस्था के निर्माण से लाभ हो। यह इंगित करता है कि जरूरी नहीं है कि भौगोलिक या व्यापार की गति की दृष्टि से क्षेत्र सबसे ''केंद्रीय'' हों। स्पेनिश भेड़ पालन उद्योग एक धनी किसान वर्ग के उदय के लिए महत्वपूर्ण बाधा था। पी. चौनू की वाक्यांश के अनुसार, ऐसे कारकों की वजह से ही राज्य मशीनरी पर्याप्त रूप से और उचित रूप से निर्मित नहीं की गई थी। किसी भी कारणवश, स्पेन यूरोप की प्रमुख शक्ति नहीं बन पाया बल्कि वह अर्ध-परिधीय और फिर परिधीय क्षेत्र बन कर रह गया।

स्पेनिश साम्राज्य के पास एक विशाल नौकरशाही थी जो ताज पर एक बोझ बन गई और लंबे युद्धों में इसकी भागीदारी ने उसके राजस्व और सम्पदा को कम कर दिया था। जे. एच. इलियट के अनुसार, चार्ल्स पंचम का साम्राज्यवाद घाटे की वित्त व्यवस्था और अमेरिकी चाँदी के आधार पर कायम था जो वित्तीय घरानों द्वारा स्पेनिश शासक को धन प्रदान करने का

आधार बन गया और जिसने उसे सोलहवीं शताब्दी में बनाए रखने में मदद की। शाही नीतियों और नई दुनिया में ले जाने के लिए सामान खरीदने के कारण भी अमेरिकी सम्पदा का तेजी से उपभोग किया जा रहा था। स्पेनिश चाँदी जल्द ही समाप्त होने लगी और विकल्प था करों को बढ़ाना जिससे किसान और वाणिज्यिक लोग दोनों प्रभावित हुए। सोलहवीं शताब्दी में एशिया, अफ्रीका और अमेरिका को आर्थिक संबंधों के अंतर्गत में लाया गया और उन पर विश्व अर्थव्यवस्था के संदर्भ में ध्यान देने की आवश्यकता है। यूरोप अपने नए परिभाषित संबंधों से प्रभावित था, और सत्रहवीं शताब्दी के अंत तक पुर्तगाल ने अपनी साम्राज्यवादी अधिकार क्षेत्रों का आधा हिस्सा खो दिया था और स्पेन ने भी अपने तटीय अधिकृत क्षेत्रों और समुद्री वाणिज्य के प्रति खतरों का अनुभव किया।

विचलन परिप्रेक्ष्य

पोमरांज़ का दृष्टिकोण इस विचार को महत्वपूर्ण समर्थन प्रदान करता है कि औपनिवेशीकरण और दासता ने औद्योगिक पूँजीवाद की विजय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पूँजी और शक्ति का संयुक्त संचय पूँजीवादी के पथ पर यूरोपीय विकास को परिभाषित करता है। इसके विपरीत, इस तरह की एक असीमित खोज की अनुपस्थिति ने महान विचलन विवाद (Great Divergence Debate) से पहले पूर्वी एशिया के विकास के पथ को चिह्नित किया जिसके अनुसार पूर्वी एशिया एक बाजार अर्थव्यवस्था थी लेकिन एक पूँजीवादी अर्थव्यवस्था नहीं। यूरोकेन्द्रीयता को, पूँजीवाद को कुछ यूरोपीय सार से जोड़ने के प्रयासों सहित, अस्वीकार किया जाना चाहिए। पोमरांज ब्लोट और फ्रेंक के साथ मिलरक यूरोकेन्द्रीयता को चुनौती देते हैं। तदनुसार, पूँजीवाद की उत्पत्ति का गैर-यूरोप-केन्द्रित दृष्टिकोण यूरोप के सापेक्ष पिछड़ेपन और गैर-यूरोपीय समाजों में आद्य-पूँजीवादी तत्वों के अस्तित्व को पहचानता है। जितना संभव हो सके गैर-यूरोप-केन्द्रित पूँजीवाद का इतिहास एक तुलनात्मक दृष्टिकोण अपनाता है, जो दोनों यूरोपीय और गैर-यूरोपीय संदर्भ में पूँजीवाद के विकास की जाँच करता है। अंत में, एक गैर–यूरोप–केन्द्रित इतिहास इस धारणा पर आधारित होना चाहिए कि चाहे पूँजीवाद के जो भी आर्थिक लाभ रहे हों, पूँजीवाद ने सामान्य मानवता के हित के खिलाफ काम किया है।

बोध प्रश्न-3

1) नई दुनिया के वृक्षारोपण (बागानों) और खदानों में दासता की भूमिका का संक्षेप में वर्णन किजिए।

.....

.....

.....

2) स्पेन पर यूरोप की समुद्रपार खोजों के प्रभाव का संक्षेप में विश्लेषण कीजिए।

.....

.....

.....

3) पारिस्थितिक साम्राज्यवाद की अवधारणा को समझाइए।

.....

.....

.....

4.10 सारांश

यूरोपीय यात्राओं और खोजों के युग ने वैश्विक संपर्क की एक नई अवधि का प्रतिनिधित्व किया। वह इबेरियन राज्य थे जिन्होंने समुद्रपार अन्वेषण को प्रोत्साहन प्रदान किया था। यूरोपीय अन्वेषण – आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक प्रोत्साहन और व्यक्तिगत मुखरता सहित – कई कारकों द्वारा संचालित था। और वे अनदेखे क्षेत्र में प्रवेश करने में सक्षम रहे थे, जिनकी पहचान नई दुनिया के रूप में की गई थी। यूरोपीय वैश्विक अन्वेषण की अवधि ने यूरोपीय साम्राज्य और उपनिवेशवाद के विकास का बीजारोपण किया, जो अगली कई शताब्दियों के दौरान विकसित और तीव्र होता रहता था। जैसे-जैसे यूरोपीय अन्वेषण विकसित हुआ वह देशी आबादी के उत्पीड़न और अफ्रीकियों की दासता का साक्षी बना। 1580 में ताज के संघ से बहुत पहले, दास व्यापार ने स्पेनिश और पुर्तगाली साम्राज्यों के मध्य एक वाणिज्यिक संबंध का गठन किया। यूरोपीय यात्राओं और खोजों ने नई भूमि के मार्ग खोल दिए और पूँजीवाद के लिए मार्ग प्रशस्त किया। जो ज्ञात था वह यह था कि वे साम्राज्यों की दुनिया में रहते थे और प्रत्येक – चीन से पुर्तगाल तक – अपने व्यवस्थित साधनों के साथ सत्ता बनाने और उसे बनाए रखने का प्रयास कर रहा था। पंद्रहवीं से सत्रहवीं शताब्दी तक दुनिया भर में साम्राज्यों का विस्तार सुरक्षित रूप से संगठित यूरोप की एकचित जीत नहीं थी, बल्कि यह एक बहुआयामी परिवर्तन था। समाज और राजनीतिक व्यवस्थाएँ बाधित हुई और शासकों ने सत्ता का विस्तार किया, मध्यस्थों को तलाशा और पदानुक्रमों में हेरफेर किया। रास्ते में कुछ लोगों, जैसे बर्तोलोमे द लास कासास, ने पूछा कि हमने आखिर क्या गढ़ा है?

4.11 शब्दावली

सैन्य टोह (Reconnaissance) : सैनिकों के छोटे समूह भेजकर शत्रु ताकतों की स्थिति संबंधी सूचना प्राप्त करने की प्रक्रिया।

रेकॉन्किस्टा (Reconquista) : वह सैन्य अभियान जिनसे ईसाई सेनाओं ने इबेरियन प्रायद्वीप को मूरो से, धर्मयुद्ध के माध्यम से, आठवीं शताब्दी में शुरुआत में पुनः प्राप्त किया। यह अभियान पुर्तगाल ने आगे बढ़ाए जब उसने सेउता पर कब्जा कर लिया, जो स्पेन द्वारा 1492 में ग्रेनाड़ा के पतन के पास ईसाइयों द्वारा मुसलमानों से क्षेत्र प्राप्त करने के कारण से एक साथ लाया।

मूर (Moors) : मघरिब इबेरियन प्रायद्वीप की मुस्लिम आबादी।

आदाता (Donatarios) : आदाता (donatarios) भूस्वामित्व वाले जमींदारों के रूप में जाना जाते थे; प्रमुख निवासियों को विशाल सम्पदा दी गई थी जिनमें से कुछ, वास्तव में, आकार में पुर्तगाल से अधिक थीं, और भूस्वामियों (donatarios) के पास व्यापक राजनीतिक, न्यायिक और सैन्य शक्तियाँ थीं। उन्हें अपनी लागत पर जमीन का बंदोबस्त करना था, बदले में उन्हें उपनिवेशीकृत लोगों पर व्यापक प्रशासनिक, राजकोषीय और न्यायिक शक्तियाँ प्राप्त थीं जिन्हें उन्होंने अपने संबंधित कप्तानों के पास जाने के लिए प्रेरित किया।

क्रिओल्स (Creoles) : यूरोपीय और गैर-यूरोपीय लोगों के मध्य मिश्रित विवाहों से जन्मे स्थानीय गोरे।

विजय प्राप्त करने वाले (Conquistadores) : अमेरिका को विजित करने वाले स्पैनिश विजेता।

एसीइनटो (Asiento) : विशिष्ट 'माल' ('merchandise') के आयात के लिए राजस्व लाइसेंस या एसीइनटो। दास-व्यापार की एक श्रृंखला के लिए स्पेनिश सरकार की सहमति। यह एक समझौता था जिससे एक ठेकेदार को दास व्यापार प्रदान किया जाता था, जो पूरे व्यवसाय को व्यवस्थित करे, स्पेन, अफ्रीका और इंडीज़ में अपने स्वयं के स्टेशनों को बनाए रखे। उन पर उपठेकेदार को लाइसेंस बेचने का कार्य भी सरकार से नियंत्रण में लेने और ताज को लाइसेंस फीस देने की जिम्मेदारी थी। एसीइनटो वह माध्यम था जिससे स्पेनिश सरकार ने अपने उपनिवेशों के साथ दास-व्यापार पर अप्रत्यक्ष नियंत्रण हासिल किया।

4.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1) भाग 4.2 के अनुच्छेद 2,3,4 को देखें और सामूहिक रूप से विविध उद्देश्यों का उल्लेख कीजिए जो प्रारंभिक औपनिवेशीकरण के लिए जिम्मेदार थे।

2) भाग 4.2 देखें।

3) एक शब्द में सही उत्तर

   क) प्रिंस हेनरी

   ख) इमेगो मुंडी

   ग) 1492

बोध प्रश्न-2

1) भाग 4.5 के अनुच्छेद 2,3,4 देखें।

2) भाग 4.6 देखें। इस सवाल में अमेरिकी उपनिवेशों पर नियंत्रण की प्रकृति का उल्लेख करें। संक्षेप में परिषद, अधिकारियों स्थानीय सरकार, आदि के बारे में बात करें।

3) भाग 4.6 के अनुच्छेद 3 और 4 देखें।

बोध प्रश्न-3

1) आप विवरण दे सकते हैं की कैसे और क्यों दासों को अफ्रीका से लाया गया था। साथ ही उपनिवेशवाद में निभाई गई इसकी भूमिका का उल्लेख दीजिए। भाग 4.8 का अनुच्छेद 1 और 3 देखें।

2) भाग 4.9 में स्पेन के प्रभाव से संबंधित अनुच्छेद देखें। यह समझने में मदद करता है की स्पेन में अच्छी क्रय शक्ति थी लेकिन उत्पादन क्षमता नहीं थी।

3) भाग 4.9 का अनुच्छेद 2 देखें।

4.13 संदर्भ ग्रंथ

ब्राउदल फर्नांड. (1988), *सिविलाइजेशन एंड केपिटलिजम 15थं टू 18थं सेंचुरी.* भाग.I, II, III. लंदनः कौलिंस एंड फोंटैना प्रेस।

बरबैंक, जेन एंड फ्रेडरिक, कूपर. (2010), *एंपायर्स इन वर्ल्ड हिस्ट्री. पावर एंड पॉलिटिक्स ऑफ डिफरेंट.* प्रिंसटनः प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस।

क्रॉस्बी, अल्फ्रेड डब्ल्यू. (2004), *ईकलॉजिकल इंपीरियलिज़मः द बायोलॉजिकल एक्सपेंशन ऑफ यूरोप, 900-1900.* कैंब्रिजः कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस (दूसरा संपादन)।

डेविस, राल्फ. (1973), *द राइज ऑफ अटलांटिस इकॉनॅमिज.* लंदनः विडेनफील्ड्स एंड निकोल्सन।

गुप्ता, पी. एस. (1993), *आधुनिक पश्चिम का उदय.* दिल्लीः दिल्ली यूनिवर्सिटी।

ली, स्टीफन. (1984), *ऐस्पेक्ट्स ऑफ यूरोपीयन हिस्ट्री 1494-1789.* लंदनः मेथुएन एंड ऐम्फ कंपनी लिमिटेड।

पैरी, जे. एच. (1963), *ऐज ऑफ रीकॉनसन्स.* लंदनः विडेनफील्ड्स एंड निकोल्सन।

सिन्हा, अरविंद. (2009), *संक्रांतिकालीन यूरोप.* नई दिल्लीः ग्रंथ शिल्पी (और अंग्रेजी संपादन)।

वाइट्स, बर्नार्ड. (1999), *यूरोप एंड द थर्ड वर्ल्ड फ्रॉम कॉलोनाइजेशन टू डिकॉलोनाइजेशन.* लंदनः पालग्रेव मैकमिलन।

वालर्स्टीन, इम्मानुअल. (1974), *द मॉडर्न वर्ल्ड सिस्टम भाग-1, कैपिटलइस्ट एग्रीकल्चर एंड द ओरिजिन ऑफ द यूरोपियन वर्ल्ड इकॉनॅमि इन द सिक्स्टीन्थ सेंचुरी.* न्यूयॉर्कः एकेडमिक प्रेस।

इकाई 5 आर्थिक प्रवृत्तियाँ : विस्थापन, नैरन्तर्य और रूपांतरण*

इकाई की रूपरेखा

5.0 उद्देश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 सर्वेक्षण का क्षेत्र

5.3 इतिहास लेखन

5.4 पंद्रहवीं शताब्दी : मध्य काल से बाहर निकलना

5.4.1 जनसांख्यकीय प्रवृत्तियाँ : काली मौत (Black Death) और परिणाम

5.4.2 व्यापार और विनिमय के प्रारूप

5.4.3 कृषि और औद्योगिक उत्पाद

5.5 सोलहवीं शताब्दी में वृद्धि

5.6 सोलहवीं शताब्दी में व्यापार और विनिमय

5.7 सोलहवीं शताब्दी में कृषि और उत्पाद

5.8 सोलहवीं शताब्दी में शहरी उद्योग

5.9 सांराश

5.10 शब्दावली

5.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

5.12 संदर्भ ग्रंथ

5.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप इसमें सक्षम होंगे :

- पश्चिमी अर्थव्यवस्था का सांमती अर्थवयवस्था से आरंभिक आधुनिक यूरोप में संक्रमण कैसे हुआ, इस को समझना;
- इस संक्रमण संबंधी कुछ इतिहास लेखन का विश्लेषण; और
- पंद्रहवी और सोलहवीं शताब्दी में प्रकट कुछ आर्थिक रूझान जोकि इस संक्रमण को दर्शाते हैं।

5.1 प्रस्तावना

यूरोप की आरंभिक शताब्दियों को आधुनिक औद्योगिक-पूँजीवादी पश्चिमी विश्व व्यवस्था का आर्थिक आधार माना जाता है। 'सांमतवादी अंधकारमय' की अराजकता और जड़ता से 'पूँजीवादी आधुनिक काल' में संक्रमण को संस्थागत बुनियादों के धीमे विकास के रूप में देखा जाता है जिसमें बीच-बीच में आर्थिक क्रियाकलापों व प्रगति के अवसरों और पैमाने में

* डॉ. वी. के. सिंह, दिल्ली विश्वविद्यालय

तीव्र परिर्वतन इस हद तक हुए कि उनमें से कुछ को 'क्रांतिकारी' स्वरूप में वह देखा जाता है।

प्रारंभिक आधुनिक संक्रमण को जनसांख्यिकीय विकास, स्थिरता और पतन के चक्र के रूप में देखा गया हालांकि यह संपूर्ण क्षेत्र पर समरूप में लागू नहीं थे। शीघ्रता से विकसित हो रही विश्व व्यवस्था, बाजार, विनिमय और वाणिज्य में उद्‌भव और बदलाव के साथ जटिल होती गई। भौगोलिक खोजों, नए विश्व में बसने की प्रक्रिया, विजय और औपनिवेशीकरण, सभी ने; इस नए आर्थिक और राजनैतिक क्षेत्रों में आए बदलावों ने आर्थिक ढाँचों और संस्थाओं को प्रभावित किया। राष्ट्र-राज्यों के उदय और 'राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं' पर ध्यान केन्द्रित करने से पहले के समय के स्थानीय सरोकारों की जगह आधुनिक राष्ट्र-राज्य और राष्ट्रीय बाजारों की माँग और ज़रूरतों ने ले ली जिसने स्थानीय बाजारों को एकीकृत किया।

ऊपर चर्चित इस परिवर्तन की आधारशिलाओं के अंतर्गत धार्मिक व सामाजिक संस्थाएँ और मूल्य भी सम्मिलित थे। 'पुनर्जागरण' द्वारा निर्मित जगत के विभिन्न भागों में ज्ञान के उत्पादन और प्रसार के संदर्भ में सामाजिक दृष्टिकोण में मौलिक बदलाव आए। ज्ञान के सत्यापन, उत्पादन, पुनर्निर्माण पर नए 'वैज्ञानिक रवैये' का प्रभाव सबसे प्रबल था। साथ ही धर्मसुधार के विचारों के प्रसार का रोमन कैथोलिक चर्च और उससे संबंधित संस्थाओं पर प्रभाव भी महत्वपूर्ण रहा। वैचारिक स्तर पर विश्व ब्रह्माण्ड, मनुष्यों का इनके मध्य स्थान के प्रति नज़रिए में परिवर्तन हो रहे थे। धर्मसुधार ने यूरोप के विभिन्न क्षेत्रों में प्रोटेस्टेंट चर्चों का विकास किया, सांमती मानकों की जंजीरों को तोड़ा, जिन्होंने सदियों से यूरोप के विकास और उन्नति को अवरुद्ध किया हुआ था। मौरिस डॉब के शब्दों में, आरंभिक आधुनिक पश्चिमी यूरोप में उभरी इसी 'प्रोटेस्टेंट नैतिकता ने ही अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी में 'पूँजीवाद' के उद्‌भव की आधारशिला रखी।

5.2 सर्वेक्षण का क्षेत्र

वर्तमान अध्ययन का क्षेत्र मुख्यतः पश्चिमी यूरोप के साथ मेल खाता है। एक बड़ा भूभाग जिसका वर्णन, एक महाकाय् उपमहाद्वीप, जोकि तीनों ओर से समुद्र से घिरा था, के रूप में किया गया था। मूल भूमि यूरोप के विविध भूभागों और स्थलाकृति ने आरंभिक आधुनिक पश्चिमी विश्व के राजनीतिक और आर्थिक विन्यासों को परिभाषित किया एवं आकार दिया। इस क्षेत्र का संबोधन एक 'विश्व क्षेत्र' – यानि बहु राष्ट्र समूह के रूप में था जिसकी परिभाषा राजनैतिक विभाजन पर नहीं बल्कि गहरे ऐतिहासिक और सांस्कृतिक बंधनों पर आधारित थी। इन्हीं ने इस क्षेत्र के राजनैतिक और आर्थिक विन्यासों को स्वरूप दिया। आरांभिक आधुनिक यूरोप के राजनैतिक और आर्थिक जीवन की परिरेखा को लंबी तटीयरेखा, समुद्रों के प्रसार ने भी प्रभावित किया। फरनैन्ड ब्राउदेल ने दक्षिणी यूरोप के आर्थिक व सामाजिक जीवन के गठन में भूमध्यसागर और उसकी तटरेखा की प्राथमिकता की चर्चा की है। उनके अनुसार भूमध्यसागर ने, एक सशक्त जोड़ के समान, एक विशाल भूगोलिक स्थल के जीवन और समाज के पहलुओं को एकीकृत रखा। विद्वानों ने पश्चिमी यूरोप के विशाल क्षेत्र में सर्वत्र वाणिज्य और व्यापार के एकीकृत रुझानों को खोजा, भूगौलिक जटिलता को उजागर किया, साथ ही उन सम्बंधों पर ध्यान केन्द्रित किया जिन्होंने भूगोल और जलवायु से पर यूरोप को एक अद्वितीय सांस्कृतिक व आर्थिक पहचान दी, जब इसकी वैश्विक सम्पर्कों और 'विश्व प्रणालियों' के संदर्भ में तुलना की जाती है।

पश्चिमी यूरोप की भौगोलिक पहचान, उत्तरी अटलांटिक के पूर्वी तट के सीमांत के देशों से की जा सकती है। यह क्षेत्र एक विलक्षण भौगोलिक 'अधि-क्षेत्र' और ऐतिहासिक विश्लेशण की इकाई है न केवल अटलांटिक की तट रेखा के कारण बल्कि इसके रोमन इतिहास की सांस्कृतिक एकता के कारण भी।

इस क्षेत्र का सबसे महत्वपूर्ण भूगोलिक लक्षण एक लंबी विच्छिन्न तटीय रेखा की उपस्थिति है। इस क्षेत्र की तटरेखा से भूमि क्षेत्र का अनुपात विश्व के अन्य भागों से उच्चतम है। साथ ही इस क्षेत्र में भूमि का न्यूनतम ढलाव है, कुछ जगहों पर समुद्र तल से भी नीचे, जैसा की नीदरलैंड्स में। विशाल यूरोपीय समतल मैदान जोकि उत्तर-पश्चिम में अटलांटिक के समुद्र तट से लेकर पूर्व में रूसी स्टेपी तक इस क्षेत्र को विलक्षण निरंतरता प्रदान करता है। दक्षिण के पर्वत श्रृंखला के पार जाते स्थल मार्गों के साथ, उत्तर-पश्चिम और दक्षिणी सागरों तक बहने और उनमें गिरने वाली नदियाँ इस क्षेत्र की लौकिक धमनियों के समान थी। रोमन काल से लेकर अठारहवीं शताब्दी के मध्य दशक की सहस्त्राब्दियों के दौरान विकसित और पतनग्रस्त विभिन्न शहरी केन्द्रों को जोड़ने वाले विशाल क्षेत्र में, इन्ही जल मार्गों ने ही मनुष्यों, वस्तुओं और व्यापारिक माल की आवाजाही को संभव बनाया था। अतः भौगोलिक परिस्थितियों और भूमि के उठान से काफी हद तक यूरोपीय आर्थिक विनिमय को समय और स्थान में होने में मदद की और उसे आकार दिया।

5.3 इतिहास लेखन

उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में कार्ल मार्क्स ने अपने इतिहास और मानव समुदायों के विकास संबंधी अपने अवलोकन और दृष्टिकोण को सुस्पष्ट किया। इतिहास में संबंध पर कार्य-कारण के सम्बंध पर प्रचलित धारणाओं जिनमें उस समय, हेगेलियन योजना का प्रभाव था, उनके प्रति मार्क्स में प्रतिक्रिया देते हुए भौतिक प्रगति की धारणा प्रस्तुत की। हेगेल ने 'द्वंद्वात्मक प्रगति' की परिकल्पना की, जोकि विचारों के संघर्ष पर आधारित थी। धार्मिक और सामाजिक व्यवस्था और संस्थाओं में प्रतिविम्वित वैचारिक संघर्ष ने उच्च राज्य संगठन को आकार प्रदान किया। अतः विकसित संस्कृति और प्रगति को निर्देशित किया और समर्थ बनाया। मार्क्स ने फ्रेडरिक ऐंग्लस के साथ एक योजना प्रस्तुत की जिसे 'द्वंद्वात्मक भौतिकवाद' की संज्ञा दी गई। यहाँ विचारों और चितंन की संस्थागत केंद्रीयता नहीं थी, बल्कि भौतिक आधार की भौतिक परिस्थितियाँ और वर्ग-संघर्ष सम्यता की प्रगति के एजेंट थे। द्वंद्वात्मक द्वैतवाद की परिकल्पना सामाजिक व्यवस्था से उभरने वाले विभिन्न सामाजिक वर्गों और वर्ग के संघर्ष पर की गई। यह संघर्ष, मौजूदा सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था के असमान संसाधन और उत्पादन, वितरण और नियंत्रण से जन्मा था।

सभ्यता की प्रगति को भौतिक संस्कृति के नजरिए से देखा जाता है। ऐतिहासिक काल-रेखा को किसी भी समाज की भौतिक और सामाजिक प्रगति के चरणों और प्रमुख उत्पादन के साधनों के अनुसार बाँटा जाता है। अतः ऐतिहासिक रूप से दास प्रणाली, सामंत प्रलाणी और पूँजीवादी प्रणाली के चरणों के अस्तित्व की परिकल्पना की गई जो भौतिक प्रगति की राह पर, महानतम समाजवादी प्राणली के मार्ग तक, जहाँ समाज के प्रत्येक सदस्य को उत्पादन साधनों की समतावादी पहुँच प्राप्त होगी और जहाँ वर्ग-संघर्ष का अंत होकर उच्चतम सामाजिक समन्वय की उपलब्धि तक जायेगा।

'मार्क्सवाद' के नजरिए से देखा जाए तो यूरोपीय समाज पहले दो चरणों से गुजर चुका है और पूँजीवादी चरण के साधनों के असमान पहुँच से उत्पन्न वर्ग तनाव का सामना कर रही है। यद्यपि मार्क्सवादी लेखन के अनुसार, चरणों के मध्य प्रगमन कभी भी सहज नहीं था और हिंसात्मक सामाजिक, राजनैतिक क्रांति वा विप्लव के द्वारा लाया जाना अवश्यंभावी था। जब सामाजिक-आर्थिक ढाँचों में प्रचिलत असंतोष, जनसमूह का आक्रोश, सामाजिक-आर्थिक व राजनैतिक श्रेणियों के भीतर में थमने में असमर्थ हुआ तो क्रांतियाँ हुई।

अतः मार्क्सवादी लेखन ने, आरंभिक आधुनिक यूरोप के आर्थिक ढाँचों का संक्रमण सांमतों प्रणाली के प्रथम पड़ाव से, आधुनिक विश्व की उच्च पूँजीवादी प्रणाली के रूप में देखा। यह संक्रमण सहज-सरल नहीं था। आरंभिक आधुनिक शताब्दियों के दौरान अर्थव्यवस्था और

राजनीति की व्यवस्था में परिकल्पित क्रांतिकारी बदलाव साथ साथ हुए थे। इसी कारण यूरोप के सामाजिक-राजनीति परिवर्तनों की प्रकृति उजागर करने के लिए 'वाणिज्यिक क्रांति', 'वैज्ञानिक क्रांति, ''अंग्रेजी क्रांति' शब्दावली का प्रयोग किया है। इसी प्रकार संक्रमण के अंतिम चरणों में यूरोपीय ढाँचों की अव्यवस्था को उजागर करने के लिए 'संकट' शब्द का प्रयोग किया गया है। 'सत्रहवीं शताब्दी के संकट' की परिकल्पना के तहत, लंबे समय के अंतर्गत, विभिन्न तत्वों और नियंत्रण की प्रणालियों में तीव्र परिवर्तन और विकार, उच्च स्तर की ओर प्रगति के लिए, एक आवश्यक अग्रदूत थे।

यूरोपीय अर्थव्यवस्था संबंधी लेखन में मुख्य ध्यान, उत्पादन पद्धति के एक चरण से दूसरे में परिवर्तन पर रहा है। अतः आरंभिक आधुनिक काल संबंधी प्रमुख विषय-वस्तु 'सामंतवाद से पूँजीवाद में संक्रमण का अध्ययन रहा। मौरिस डॉब द्वारा किए संक्रमण पर विश्लेषण ने संक्रमण के कारक संबंधी सिद्धांत को आधार प्रदान किया और संक्रमण के रास्ते और कारणों पर बहस हुई। यद्यपि 'सामंतवाद' और 'पूँजीवाद' के दो मूल सिद्धांत स्तंभ, मार्क्सवादी ढाँचे में यथावत बने रहे हैं। उसी तरह, रोर्बट ब्रैनर ने अपने पूर्व-औद्योगिक यूरोप के कृषि वर्ग संरचना और आर्थिक विकास के विश्लेषण के अंतर्गत 'नव-माल्थसवादी' विद्वानों द्वारा पूर्व-औद्योगिक कृषक समाज के विकास और परिवर्तनों को समझाने के लिए प्रयोग किए गए जनसांख्यिकीय निर्धारणवाद पर आक्षेप किया है। इस पर एम. एम. पोस्तन, जॉन हैचर और इमैनूयअल ले राय लडूरी ने तीक्ष्ण प्रतिक्रिया दी। यह विवाद अवस्था और दायरे में दशकों में और अधिक विस्तृत हुआ। इसमें गाय बोईस, पैट्रीशिया क्रूट, डेविड पारकर, टी. एच. ऐशटन और अन्य कई ने सक्रियता से भाग लिया।

एक अन्य क्षेत्र जिसने विद्वानों का काफी ध्यान आकार्षित किया है, वह यूरोपीय अर्थव्यवस्थाओं और यूरोपीय व्यापरिक साम्राज्यों पर औपनिवेशीक विस्तार का प्रभाव है। प्रत्यक्ष हस्तानांतरण के रूप में बहुमूल्य धातुओं के यूरोप में आने या दास व्यापार और गन्ना और कॉफी बागानों लाभप्रद बाजारों और विनिमय में भागीदारी का यूरोपीय बाजारों और संस्थाओं और व्यापार के साधनों पर एक महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। यह रूपान्तरण इतना तेज और महत्वपूर्ण था कि इसके लिए 'वाणिज्यिक क्रान्ति' शब्द का प्रयोग किया गया जो मुख्य रूप से चौदहवीं से सोलहवीं शताब्दी की अवधि में मुद्रा, विनियम के साधनों, बैकिंग संरचनाएक्र और ऋण के साधनों के रूप में परिवर्तन को दर्शाता है, जिन्होंने आधुनिक आर्थिक प्रणाली के उद्भव की नींव रखी।

इसी स्तर पर सोलहवीं शताब्दी की तुलना सत्रहवीं शताब्दी के विकासों से की गई है। ई. जे. हॉब्सबॉम जैसे मार्क्सवादी विद्वानों ने इस अवधि को जड़ता और पतन का काल कहा जो सभी आर्थिक और जनसांख्यिकीय मानकों की जड़ता को दर्शाता है लेकिन जो पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के उद्भव के लिए आवश्यक था। सत्रहवीं शताब्दी के संकट ने पश्चिमी रूप में सामंती संरचनाओं के अन्तिम अवशेषों को भी विघटित कर दिया और औद्योगिक पूँजीवादी समाज के उद्भव के लिए मार्ग प्रशस्त किया। इस विषयवस्तु पर काफी साहित्य संकट की प्रकृति के सन्दर्भ में लिखा गया है। एच.आर.टेवर रोपर, एन. स्टेन्डर्ड और ज्यॉफ्री पार्कर ने इस मुददे के इर्द-गिर्द सामाजिक संकट, जनसांख्यिकीय और पर्यावणीय कारकों की खोज से लेकर इस अवधि के आर्थिक और उत्पादन संकट जैसे विषयों पर चर्चा की है।

कार्ल मार्क्स की रचनाओं के प्रभाव या प्रतिक्रिया स्वरूप उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में, आर्थिक इतिहास लेखन मुख्यतः नियमित मंदी और वृद्धि चक्र की व्याख्या करता है जोकि इस काल के लक्षणसूचक हैं। यूरोपीय और अमरीकी विश्वविद्यालयों के विद्वान आरंभिक आधुनिक काल का इतिहास लेखन द्वारा जिन परिस्थितियों ने ऐतिहासिक रूप से वृद्धि और मंदी का निर्धारण किया, उसे जानने का प्रयास कर रहे थे। यहाँ पश्चिमी समाज की गतिशीलता और कार्य-कारण सम्बंध को उसके भौतिकवादी ढाँचे के अंतर्गत

तलाशा। साथ ही उत्पादन प्रणाली पर विभेदकारी नियंत्रण से उत्पन्न वर्ग तनावों को भी तलाशा।

वर्णक्रम के दूसरे छोर पर अनालस् मत का दृष्टिकोण है। फ्रांसीसी विद्वानों के एक समूह ने लंबे समय के संदर्भ से इतिहास लेखन का प्रयास किया है। यहाँ इतिहास को दीर्घ गमन और द्वंद्वात्मक संघर्ष के परिणामस्वरूप एक उच्च सामाजिक व्यवस्था की ओर आरोहण के रूप में नहीं माना है। मनुष्य मात्र ऐसे जीव नहीं हैं जोकि पूर्व-गठित, संरचना में कठिन विन्यासों में दी गई भूमिका निभा रहे हैं। सदियों के अंतराल में यूरोपीय इतिहास के प्रक्षेप-पथ की व्याख्या करते हुए निम्न पक्षों का ध्यान रखा गया है– जीवन की प्रतिदिन के सरोकार, विचारों का प्रभाव, अध्ययन किये जाने वाले समुदाय की स्थानिक अवस्थिति और भूगोल, जनसांख्यिकीय परिवर्तन, समय का धीमा अनावरण, मौसमी परिवर्तन, सांस्कृतिक परिवेश सभी। आर्थिक सर्वेक्षण का मुख्य ध्यान यूरोपीय राष्ट्रों के मध्य बढ़ते राष्ट्रवादी और औपनिविशिक राष्ट्रों के इस समष्टि आर्थिक विश्लेषण का प्रभाव आर्थिक इतिहास लेखन पर निरंतर रहा है। प्रारंभिक बीसवीं शताब्दी की आर्थिक इतिहास लेखनियाँ मार्क्सवादी लेखन के विशाल क्षेत्र के अंतर्गत विशद सिद्धांतों और आर्थिक विकास के प्रतिमानों (मॉड़ल) को विकसित करने का प्रयास था। इसी के अंतर्गत, प्रारंभिक आधुनिक 'राजनीतिक अर्थव्यस्वथा' के विकास और 'वाणिज्यवाद' के विवादों को भी देखा जा सकता है। अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध और उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में औद्योगिक संस्थाओं के विकास और बैकिंग सरंचनाओं को समझने के लिए श्रेणियों के विकास और प्रभाव, व्यापारिक कंपनियों और संयुक्त पूँजी उघोगों के अध्ययन का प्रयास किया गया। यूरोपीय आर्थिक मॉडलों के निर्माण में जिसे 'सिद्धांत' की प्रबलता के रूप में पहचान मिली, जैसा की विकास या पतन पर सिद्वांत विकसित करने की प्रवृत्ति, नीतियों के समग्र प्रभावों, सोना-चाँदी की गति और उपनिवेशवाद जैसा की वाणिज्यवाद के अध्ययनों में प्रतिबिम्बित होता है आर्थिक परिवर्तनों को समझने के लिए अनुभवजन्य आँकड़ा संचयों के प्रयोग का प्रयास इसमें शामिल था।

ज्यादातर इन प्रतिक्रियाओं की जड़ें 'अनालस् लेखन' से जुड़ी हैं। समाजशास्त्रियों, भूगोलवेत्ताओं, जलवायु-विज्ञानियों और जनसंख्या शोधकर्ताओं के लेखनियों के गहन शोध के प्रयास द्वारा यूरोप के आर्थिक विस्तार का स्थानीय स्तर वा सूक्ष्म-भेदी अध्ययन करने का प्रयास किया गया। इस दृष्टिकोण का प्रभाव व्यक्तिगत बैंकिग संस्थाओं, बंदरगाह कस्बों, शहरों, औद्योगिक और कृषि उत्पाद और उनकी उत्पादन प्रवृत्ति पर केन्द्रित लेखनियों में समझा जा सकता है।

कैंब्रिज आर्थिक इतिहास के पाँचवें खंड के प्रस्तावना के निबंध में सी. एच. विल्सन ने बौद्धिक प्रभाव की दो प्रचालित धाराओं को पहचाना। एक उन अर्थशास्त्रियों, सिद्धांतवादियों की, जिनके द्वारा शिल्पीसंघों निकायों, बैकों इत्यादि के विकास और पतन का एक शानदार ढाँचा प्रदान करने का प्रयास किया गया, दूसरा स्थल और कालाक्रमों की व्याख्या करती राजनैतिक इतिहासों के सरोकारों के अनुसार। प्रख्यात संस्थाओं के लगभग असमान विश्लेषण की प्रवृत्ति जोकि उनके राजनीतिक महत्व से परिचित था– शिल्पी संघ, कम्पनियाँ, औपनिवेशिक व्यापारिक संगठन, सार्वजनिक बैंक इत्यादि का विश्लेषण उस राज्य की समष्टिक अर्थव्यवस्था की रूपरेखा के चित्रण के साथ-साथ चला। बीसवीं सदी के मध्य लिखे गए अधिकांश आर्थिक इतिहास दोनों विश्वों के बीच एक संतुलन तलाशने का निरंतर प्रयास करते रहे हैं।

हाल के समय में, पश्चिमी आर्थिक अध्ययन विविध या नानारूप रहा है। एक ओर लार्स, मेगन्यूसन और स्टीव पिनक्स जैसे विद्वानों ने 'वाणिज्यवाद' के सिद्धांत का पुनर्उत्थान किया। इस सिद्धांत के विविध संप्रयोग न केवल आरंभिक आधुनिक राजनैतिक अर्थव्यवस्था के लिए, बल्कि आरंभिक पश्चिमी यूरोप के पूर्ण सामाजिक-राजनीतिक प्रणाली के ढाँचे के लिए भी किए गए। इसी प्रकार अध्ययन के अंतर्गत, आर्थिक वृद्धि और परिवर्तन के लिए एकरेखीय

प्रगति मॉडल से हटकर विविध और बहुआयामी प्रतिमानों की ओर प्रयास किया। विद्वान केनैथ पोमरांज़ और प्रसन्न पार्थासारथी ने विश्व आर्थिक व्यवस्था में 'महान विचलन' विवादों पर पुनः विचार करते हुए, कृषि सामंतीय विश्व से औद्योगिक पूँजीवादी विश्व व्यवस्था के एकरेखीय विकास मॉडल पर प्रश्न उठाया है, जिसमें इतिहास में समकालीन एंशियाई सभ्याताओं की तुलना में यूरोपीय राष्ट्रों के सफलतापूर्ण उच्च औद्योगिक चरण में पहुँचने की चर्चा है।

बोध प्रश्न-1

1) आरंभिक आधुनिक यूरोपीय अर्थव्यवस्था के संक्रमण संबंधी मार्क्सवादी विचारों पर आलोचनात्मक टिप्पणी कीजिए।

.....

.....

.....

2) अनालस मत ने आरंभिक आधुनिक यूरोपीय अर्थव्यव्स्था के संक्रमण का किस प्रकार अवलोकन किया है?

.....

.....

.....

5.4 पंद्रहवी शताब्दीः मध्य काल से बाहर निकलना

पंद्रहवी शताब्दी के दौरान यूरोपीय अर्थव्यव्स्था मध्य काल की जंजीरो से मुक्त हुई। पुराने विश्व का सामंती ढाँचा, जिसका यूरोप के सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था पर प्रभुत्व था, वह पहले काल में शुरू हुए राजनैतिक और सामाजिक नियंत्रण के नए संरचनाओं और दबाव से टूटने लगा। इस शताब्दी के आरंभिक दशक के दौरान यूरोप महामारी प्लेग, (जिसे सामान्यतया 'काली मौत' के रूप में जाना जाता है) के प्रभाव से जूझ रहा था। पहले की शताब्दियों में प्लेग ने यूरोपीय महाद्वीप के ज्यादातर भाग को ध्वस्त कर दिया था। उसी समय में ऑटोमन साम्राज्य के पूर्वी यूरोप और अंनाटोलिया में विस्तार के बावजूद, इतालवी

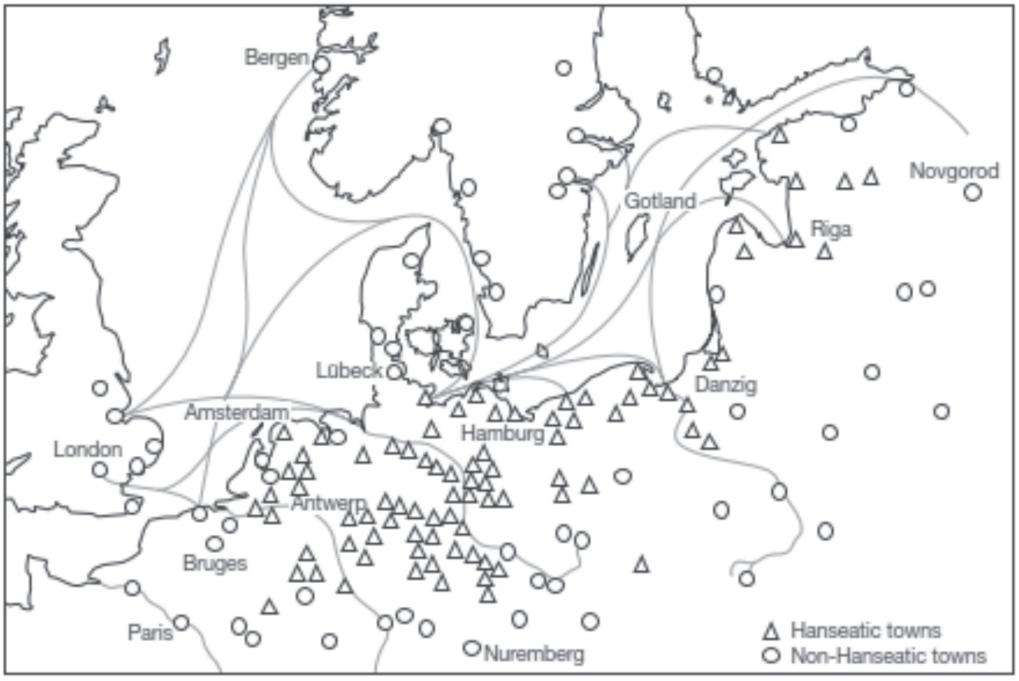

प्रायद्वीप में शहरी केन्द्रों ने नये सम्बंध बनाए और नए बाजारों में प्रवेश किया। इतालवी नगर राज्यों जैसे कि फलोरेंस, नेपल्स, वेनिस और उनके व्यापारियों और बैंकर की पूर्वी उत्पादों और एशिया से व्यापार में वर्चस्व पंद्रहवीं शताब्दी के यूरोपीय आर्थिक जीवन का महत्वपूर्ण चिह्नक बन गया था। इसी तरह से उत्तरी यूरोप में हेनसेटिक संघ की स्थापना और वर्चस्व और ब्रूगेस वा एम्स्टर्डम में वाणिज्यिक केंन्द्रों का विकास देखा गया। इस सदी के आखिरी दशक में आशा अंतरीय (केप ऑफ गुड होप) को पार कर एशियाई बाजारों तक पहुँचने के मार्ग की पुर्तगालियों द्वारा खोज और कोलंबस जैसे अनेक दुस्साहसियों द्वारा अमरीका की खोज हुई।

स्रोतः पाओलो मास्सा "द इकोनमी ऑफ फिफटिंथ सेंचुरी : प्रिकंडीशनस ऑफ यूरोपीयेन एक्सपेंशन" *इन एन इकोनोमिक हिस्ट्री ऑफ यूरोप फ्रग्स एक्सपेंशन टू डबर्लेपमेंट*, एडि. एंटोनियो डी. विटोरियो, एबिगंडन, रुटलेज, 2006, पृ. सं. 2

5.4.1 जनसांख्यिकीय प्रवृत्तियाँ : काली मौत (black death) और परिणाम

चौदहवीं शताब्दी के आरंभ में जिन अकाल और अभावग्रस्तता की परिस्थितियों का अनुभव किया गया, उनसे 1340 के दशक तक आर्थिक व जनसांख्यिकीय वृद्धि दोनों धीमी हो गई। इस अवधि के बाद फैली बुबोनिक प्लेग एक विनाशकारी महामारी थी जिसने 1350 के दशक में लगभग पूरे पश्चिमी विश्व को अपनी चपेट में ले लिया था। महामारी की पहुँच और इससे घटित मौतों का पैमाना और प्रचण्डता इस कदर थी कि आज भी यूरोपीय इतिहास में 'इसे काली मौत' के रूप में याद रखा जाता है। कुस्तुंतुतिया (इस्तंबुल) और पूर्वी भूमध्यसागर (1347) से शुरू होकर, इतालवी प्रायद्वीप, स्पेन वा फ्रांस (1348) से केन्द्रीय यूरोप (1349), उत्तरी यूरोप के निम्नटतीय देशों (1350), में प्लेग पश्चिमी यूरोपीय क्षेत्र के लिए एक जनसांख्यिकीय आपदा साबित हुई। विभिन्न क्षेत्रों पर महामारी के प्रकोप का स्तर जनसंख्या हानि में विविधता थी। एक अनुमान अनुसार पंद्रहवीं शताब्दी के मध्य तक तेरहवीं शताब्दी के अंत की तुलना में 40 प्रतिशत जनसंख्या हानि हुई थी।

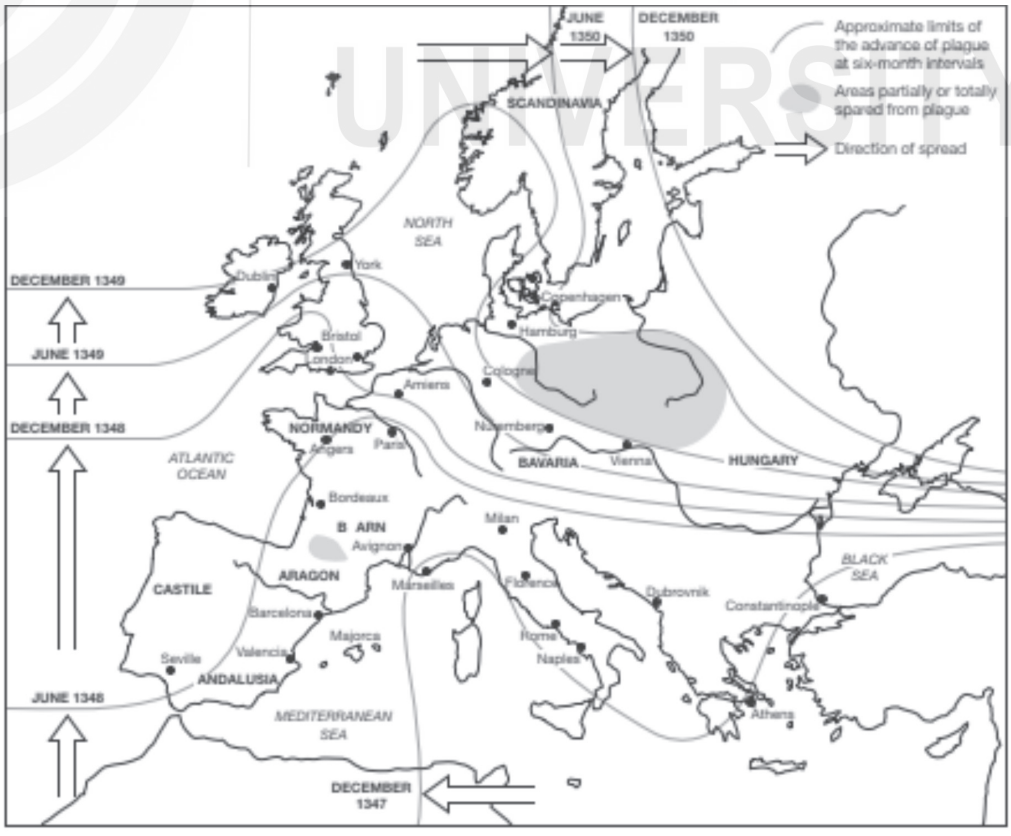

Map 2 The spread of the Black Death in Europe from 1347.

स्रोतः पाओलो मास्सा "द इकोनमी ऑफ फिफटिंथ सैचुरी : प्रिकंडीशनस ऑफ यूरोपीयेन एक्सपेशन" *इन एन इकोनोमिक हिस्ट्री ऑफ यूरोप फ्रॉम एक्सपेंशन टू डबर्लेपमेंट* पृष्ठ 8.

सदी के दौरान भारी संख्या में मौत और जनसंख्या में भारी हानि, के साथ प्लेग से यूरोपीय जनसांख्यिकी और अर्थव्यवस्था पर दो मुख्य प्रभाव पड़े। प्रथम, इसके बाद प्लेग स्थानिक बन गई, यानि प्लेग महामारी की कई अनुवर्ती घटनाएँ हुई जिनका प्रभाव हालांकि सीमित था। द्वितीय, यूरोपीय जनसंख्या को 1347 के पूर्व स्तर पर पहुँचने में सौ वर्षों से अधिक समय लग गया। पंद्रहवीं शताब्दी के अंत तक जा कर जनसंख्या 80 मिलियन के अंक को छू पायी, हालांकि वृद्धि की दर में विविधता थी लेकिन कुल मिलाकर जनसांख्यिकी सांद्रता बनी रही।

महाद्वीपीय वृद्धि विविध थी और क्रमबद्ध नहीं थी। इटली और फ्रांसीसी ग्रामीण क्षेत्र में 'सौ वर्षीय युद्ध' (1337-1453) के कारण राजनैतिक परिस्थितियाँ असंतुलित थी, जिसने वृद्धि दर को अवरूद्ध किया। आइबिरीअन प्रायद्वीप जर्मनी और इंग्लैड में जनसंख्या वृद्धि की दर काफी ज्यादा थी। 1450 के दशक के बाद आर्थिक सुधार के साथ, विकास की दर में वृद्धि हुई।

यूरोपीय जनसंख्या प्रवृत्ति का एक अन्य पक्ष, ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर प्रवासन था, जिसका आरंभ मध्य काल के अंत में हुआ और जोकि व्यवधानों से अप्रभावित रहा। रोजगार की तलाश में, अकाल और युद्धों से तबाह ग्रामीण क्षेत्रों से लोग शहरों की तरफ जा रहे थे और एक अनुमान के अनुसार पंद्रहवीं शताब्दी के मध्य तक, यूरोप की औसतन 10 प्रतिशत जनसंख्या शहरों में केन्द्रित थी। कुछ क्षेत्रों में शहरी जनसंख्या का प्रतिशत 15 प्रतिशत से 20 प्रतिशत तक था।

इस गतिशीलता और उच्च शहरी सघनता को शहरी केन्द्रों के आकार और प्रकृति संबंधी परिर्वतन और वृद्धि में देखा जा सकता है। प्रारंभिक पंद्रहवीं शताब्दी में इतालवी प्रायद्वीप में लगभग 50,000 निवासियों वाले लगभग 10 शहर थे। जबकि इसकी तुलना में संपूर्ण पश्चिमी यूरोप में इस समय लगभग 10 शहर थे।

5.4.2 व्यापार और विनिमय के प्रारूप

चौदहवीं शताब्दी के अंत तक, यूरोप ने मध्य काल के दौरान विकसित हुए अनेक कस्बों और शहरी स्थलों पर केन्द्रित संप्रेषण और व्यापार का एक संजाल विकसित कर लिया था। फ़रनेन्ड ब्राउदेल के अनुसार इन शहरी स्थलों, स्तंभों या 'शहरी ध्रुवों के इर्द-गिर्द सदियों के अंतराल में यूरोपीय आर्थिक प्रणाली विकसित हुई। यह शहर वस्तुओं के विनिमय स्थलों और कृषक ग्रामीण उत्पाद के उपभोग की माँग को पैदा करने वाले स्थलों के रूप में कार्य करते थे।

पंद्रहवीं शताब्दी में यूरोपीय वाणिज्यिक प्रणाली को कार्यशील बनाने में दो मुख्य क्षेत्र प्रबल बन गए। पहला, इतालवी प्रायद्वीप जहाँ जेनोआ, वेनिस, अमाल्फी, नेपल्स, लोरेंस और अन्य जिनका पूर्व के साथ व्यापार में बोलबाला था और उनके व्यापारी वर्ग का भूमध्यसागर क्षेत्र में मसालों के प्रवाह पर नियंत्रण था। दूसरा, बाल्टिक सागर क्षेत्र, जहाँ तेरहवीं शताब्दी में ब्रूगेस, ऐंटवर्प, हैमबर्ग, डानजिंग, स्टेटिन और रूसी तट पर नोवगोरौड ने संयुक्त रूप से जर्मनी में हेनेसेटिक संघ की संरचना की। यह संघ बाल्टिक सागर, उत्तरी सागर और उत्तरी देशों जैसे इग्लैंड के आर-पार यातायात को नियंत्रित करता था। शुरुआत में इस संघ की गतिविधियाँ ब्रूग़ेस शहर के आसपास केन्द्रित थी। अपितु सदी के दौरान सौ वर्षीय युद्ध (1337-1353) के कारण राजनैतिक अस्थिरता के परिणामस्वरूप ब्रूगेस की बजाय, ऐंटवर्प उत्तरी व्यापार का वाणिज्यिक केंद्र और प्रथम अंतर्राष्ट्रीय वस्तु विनिमय बाज़ारों का स्थल बन गया। चौदहवीं शताब्दी से शैम्पेन, जिनेवा और लिओनस उच्च मूल्य वस्तुओं के विनिमय के लिए अंतर्राष्ट्रीय मेला स्थल बन गए।

प्राकृतिक, राजनीतिक और आर्थिक अनिवार्यता की अनेक कठिनाइयों के कारण वस्तुओं का महाद्वीप (यूरोप) के आर-पार यातायात आसान नहीं था। आल्प्स (पर्वतों) जोकि भूमध्यसागर, विश्व और यूरोपीय महाद्वीप बाज़ारों के मध्य अवरोधक थे, चुनौती थे। यूरोप के आंतरिक भागों में काफी नियमित सेवाएं और नदियों और नहरों के साथ–साथ नौवहन उपलब्ध था परंतु कई अवरोधक भी थे, जैसे पनचक्कियाँ और मुध्यधारा में भराई कार्य, जिससे महंगा स्थांनातरण अनिवार्य हो जाता था। साथ ही देय राशि पथ कर, सेवाएँ भी थी जिन पर निगमों का अधिकार था। नियमित युद्धों और महाद्वीप राज्यों के मध्य राजनैतिक द्वन्द्वों के कारण अतः स्थलीय यातायात कठिन था।

अतः समुद्र चुनिंदा मार्ग था, इस पर यातायात धीमा था, मानव मूल वा प्राकृतिक कृत्यों से घटित दुर्धटनाएँ इसे संकटपूर्ण बनाती थी, परंतु इसका व्यय निसंदेह कम था। शीत ऋतु में सामान्यतः नौकायन नहीं किया जाता था। लेकिन इसकी पूर्ति, लंबी दूरी यात्रा द्वारा और कीमती वस्तुओं और अपेक्षाकृत अल्पमूल्य थोक वस्तुओं के परिवहन से प्राप्त लाभ राशि से हो जाती थी।

पंद्रहवीं शताब्दी के अंत में हुई भौगोलिक खोजों और अन्वषेण से पूर्व, जहाज जब तक संभव हो तट के नज़दीक ही जल-यात्रा करते थे, लेकिन जहाजों के टनभार में क्रमशः वृद्धि हो रही थी। जहाजों पर ज्यादा संख्या में मस्तूलों और कठोर दिक्-नियंत्रक द्वारा जलयात्रा का बेहतर और तर्कसंगत उपयोग हो पाया। लंबी नाव के साथ कैरक्स वा नैविस नामक जहाज प्रकट हो रहे थे, और पंद्रहवीं शताब्दी के ऊपर में कैरवेल (हल्का पाल-जहाज़)। तटीय नौपरिवहन के लिए छोटी नावों का इस्तेमाल किया जाता था। यह दिखने में समान थी, लेकिन इसके नाम अलग-अलग थे। इस सदी के दौरान उपकरणों में सुधार और मानचित्रण में विकास से गलती की गुंजाइश व जोखिम में क्रमशः कमी आई पहले जोकि नौपरिवहन का अभिन्न अंग था।

पंद्रहवीं शताब्दी के दौरान यूरोपीयों ने भूगौलिक क्षितिज का नाटकीय विस्तार देखा। एशिया के समुद्र मार्ग व अमरीकाओं की खोज ने विश्व संबंधीं ज्ञान और समझ को पूर्णतः परिवर्तित कर दिया। इन खोजों और अन्वेषणों के फलस्वरूप नए विश्व का औपनिवेशीकरण हुआ, साथ ही एशियाई वाणिज्यिक विश्व से ज्यादा पारस्परिक आदान प्रदान और मेल हुआ। इन नए मार्गों ने यूरोप के महाद्वीप में व्यापार स्वरूपों और वाणिज्यिक नियंत्रण को पूर्णतः बदल दिया, अब तक के भूमध्यसागर की प्रमुखता के स्थान पर अटलांटिक समुद्र तटीय भाग का उदय हुआ।

5.4.3 कृषि और औद्योगिक उत्पाद

मध्य काल के अंत तक भी – भूमि, उत्पाद मूल्य, उत्पादन, श्रमिक शक्ति के रोजगार के संदर्भ में यूरोपीय अर्थव्यवस्था का मुख्य संसाधन थी हालांकि कृषि उपज व्यवस्था, उत्पाद की पूरी तस्वीर प्रस्तुत करना मुश्किल है, क्योकि मुलतः यह महाद्वीप की जलवायु और भौगोलिक संबंधी भिन्नताओं द्वारा निधरित होता था और इससे संबंधी स्रोत सामग्री का अभाव है।

भूमध्यसागर यूरोप में अनाज के साथ-साथ अंगूर की लता, जैतून, शहतूत, निंबू जैसे खट्टे फलों की खेती की जाती थी। साथ ही कुछ गन्ने और कपास की भी खेती की जाती थी। उत्तरी और एंटालाटिक क्षेत्रों में जई, जौ, राई और वस्त्र उत्पादन के लिए प्रयोग में लाए जाने वाले पौधे जूट और पटसन उगाए जाते थे। केन्द्रीय वा पूर्वी यूरोप में अनाज फसल जोकि पूर्व महाद्वीप की आपूर्ति का मुख्य साधन थी, उगाई जाती थी।

पंद्रहवीं शताब्दी के मध्य से हुई जनसंख्या वृद्धि का यूरोपीय कृषि के प्रारूपों पर विविध प्रभाव हुए। यहाँ पश्चिमी यूरोप के बद मध्यकालीन जागीर ढाँचों के धीरे-धीरे टूटने और बाज़ार व्यापार के लिए खुलनें की प्रक्रिया देखी गई। वनोन्मूलन इसका एक अन्य प्रभाव था, जिससे

पंद्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में कृषि योग्य नए क्षेत्र उपलब्ध हुए। भूमि पुनः प्राप्ति के साथ हुई प्रगति से जोकि मूलतः इंग्लैंड और निम्नटतीय देशों में हुई, उससे यूरोप के कृषि क्षेत्र में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई। नए कृषि अनुबंधों के कारण अगली कई सदियों में कृषि प्रबंधन संरचनाओं के स्वरूपों का उद्‌भव हुआ। इस सभी की जड़ों को पंद्रहवीं शताब्दी में देखा जा सकता हैं। इसे सदी के अंत में टस्कनी में मैज़ाड्रिया, साझा खेती प्रणाली में देखा जा सकता हैं। साथ ही इटली को पो घाटी मैदानों के धान के खेतों के संदर्भ में विकसित भूमि प्रबंधक पूर्व-पूँजीवादी स्वरूप के पट्टा प्रलाणी में भी रेखांकित किया जा सकता है।

यह सब सूचक यह बताते है कि पंद्रहवीं शताब्दी एक संकट काल के बजाय हिंसात्मक कायापलट के बाद हुए पुनःसंयोजन की संक्रमण अवस्था थी। पंद्रहवीं सदी के शुरुआती दशकों में पिछली सदी में हुए अकाल, महामारी और युद्धों के कारण जनसंख्या पतन, व्यापार में गिरावट, कम उत्पादन जैसे नकारात्मक प्रभाव महसूस किए गए। हालांकि 1450 के बाद प्रक्रिया में उलटफेर हुआ, जनसंख्या में एक बार फिर से वृद्धि हुई, वेतन में वृद्धि के सूचक पहले से ही थे, कृषि योग्य भूमि के परिमाण और श्रमिक आपूर्ति के मध्य नया संतुलन पाया गया।

5.5 सोलहवीं शताब्दी में वृद्धि

सोलहवीं शताब्दी के आरंभ में यूरोपीय आर्थिक रुझानों में विकास प्रतिबिंबित होने लगा। पिछली सदी में शुरु हुई खोजों से यूरोपीय लोगों ने अटलांटिक के पार नए क्षेत्रों को उपनिवेश बनाया और बस्तियाँ स्थापित कर भारतीय महासागर विश्व के बाज़ारों तक अपनी प्रत्यक्ष पहुँच विकसित की।

आलू, टमाटर, मिर्ची, मक्का जैसी नयी फसलों के रूप में नई वस्तुओं ने भूख व अकाल का दीर्घकालीन समस्या का समाधान किया। ऑटोमन और इतालवी राज्यों द्वारा लादे गये उच्च सीमा-शुल्कों को दर किनार करके कपास वा अन्य कच्चे माल को अब प्रत्यक्ष प्राप्त किया जा सकता था। मसाले अब काफ़ी आसानी से यूरोपीय बाज़ारों तक पहुँच पा रहे थे।

नौपरिवहन तकनींकों, जहाजी तकनीक महाद्वीप के कठिन भूभागों में निर्मित नए मार्गों और महामार्गों से वस्तुओं के लिए लंबी दूरी यातायात को आसान बनाया, जिसे सोलहवीं शताब्दी की 'वाणिज्यिक क्रांति' की संज्ञा मिली। स्पेनिश विजेताओं द्वारा अमरीकाओं पर विजय और पश्चिमी, अफ्रीका के स्वर्ण व्यापारिक मार्गों पर पुर्तगालियों के नियंत्रण ने यूरोप में स्वर्ण वा चाँदी के भारी अंतर्वाह को सुनिश्चित बनाया। साथ ही खनन तकनीकों में उन्नति से महाद्वीप में चाँदी की खदानों से उन्नत आगत का आश्वासन प्राप्त हुआ। सोने-चाँदी के व्यापक अंतर्वाह से 'मूल्य कांति' का जन्म हुआ, जिससे आवश्यक और विलासिता की वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि वाणिज्य एक व्यवहार्य पेशा बन जाता है।

जनसांख्यिकीय प्रवृत्तियाँ

सोलहवीं शताब्दी तक, जनसांख्यिकीय वृद्धि केवल चर्चों और ग्रामीण चर्चो के रिर्काडों में ही नहीं, बल्कि इस समय के अन्य आर्थिक वा सामाजिक पहलुओं में भी परिलक्षित होने लगी थी। बहरहाल ग्रामीण वा शहरी आधारों की वितरित जनसंख्या का क्षेत्रीय विभाजन, पूर्व सदी के प्रारूपों का ही अनुपालन कर रहे थे, जिसमें बाद के काल में 'मेगापोलिस' (महानगर) स्थापना की दिशा में गति थी। जबकि, सदी के आरंभ में 100,000 या उससे ज्यादा अनुमानित जनसंख्या वाले शहरों में केवल चार शहरों का नाम लिया जा सकता था – मिलान नेपल्स, वेनिस और रोम, जिनमें से तीन इतालवी प्रायद्वीप उपद्वीप में थे। सदी के अंत तक यह संख्या बढ़ कर लगभग आठ हो गया, पालेरमो, रोम, लंदन और लिसबन इसमें शामिल थे। उसी प्रकार, लगभग 50,000 की जनसंख्या वाले मध्य आकार वाले महानगरों की संख्या सात से बढ़कर तेरह हो गयी। समस्त रूप से शहरी क्षेत्रों मे निवास करने वाली

जनसंख्या में एक स्पष्ट वृद्धि थी, सोलहवीं शताब्दी के आरंभ में 5.6 प्रतिशत से 7.6 प्रतिशत शताब्दी अंत तक। नए विश्व खाद्य पदार्थों के अंतर्वाह (आने वाले) से आहार में सुधार ने पहले के काल के जनसंख्या रुझानों पर अपर्याप्त कृषि वृद्धि और खाद्य उपलब्धता के कुप्रभाव को कम करने में कुछ हद तक योगदान दिया।

यूरोप और नई दुनिया के बीच जनसंख्या का प्रवाह

सोलहवीं शताब्दी के काल में, पूरे यूरोप में लोगों की गतिशीलता के प्रारूपों में परिर्वतन देखे गए। परिर्वतन और प्रवासन के विवरण में मुख्य रूप से कुछ प्रारूप देखे जा सकते हैं:

1) ग्रामीण और कृषि क्षेत्रों से लोगों की कस्बों वा शहरों की ओर गति।

2) एक देश से दूसरे की ओर गति।

3) यूरोप से नए विश्व के उपनिवेशों की ओर गति।

ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर गति

जैसा की पहले नोट किया गया, इस समय शहरी जनसंख्या आकार में तीव्र वृद्धि हो रही थी। पंद्रहवीं शताब्दी के अंत में सुस्पष्ट बड़े शहरों और नए कस्बों के उद्भव के प्रवाह ने गति पकड़ ली थी। इंग्लैंड में शहरी जनसंख्या 3.1.1 से बढ़कर लगभग 5.8 प्रतिशत हो गई, स्पेन में 6.1 प्रतिशत से 11.4 प्रतिशत, पुर्तगाल में 3 प्रतिशत से 14.1 प्रतिशत और पहले से ही शहरीकृत निम्नटतीय देशों में 15.8 प्रतिशत से बढ़कर लगभग 24.3 प्रतिशत। गति और प्रवासन का प्रारूप एक तेजी से विकसित हो रही कृषि अर्थव्यवस्था के लिए विशिष्ट था। कुछ प्रवासन में मौसमी तत्व था, जो' कंगाल सामाजिक वर्ग से जुडा था। मौसम में आए परिवर्तनों, रोपन वा कटाई के प्रारूपों के साथ-साथ उत्तरी यूरोप के कठोर मौसम में खाद्य सामग्री को भंडारण करने की इच्छा अनुसार प्रवासन की गति होती थी।

एक देश दूसरे की ओर गति

नए उभरने वाले राष्ट्र राज्यों के बीच गति राजनैतिक और आर्थिक दोनों कारणों से हो रही थी। प्रवासन, शहरों और राष्ट्रों के मध्य हो रहे युद्धों वा हिंसा की अनुक्रिया के रूप में घटित हो रहा था। मसलन, सैनिकों और संस्थाओं में प्रशासकों के रूप में रोज़गार की खोज़ में अनेकों ने विभिन्न दरबारों वा शहरों की ओर प्रवसन किया था। धार्मिक युद्धों व उत्पीड़न ने भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विभिन्न क्षेत्रों में सशस्त्र पलटन और सैनिकों की तैनाती, जैसा की स्पेनिश साम्राज्य द्वारा की गई, उसने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके अतिरिक्त बाज़ार और आर्थिक प्रबंधन में संरक्षणवादी नीतियों का अनुसरण, जिसे विद्वानों द्वारा संयुक्त रूप से 'वाणिज्यिवादी' की संज्ञा दी गई, उसने व्यापारिक वर्गों के बेहतर सुरक्षा और वाणिज्य और विनियम की ज्यादा अनुकुल परिस्थितियाँ प्रदान कराने वाले क्षेत्रों और राज्यों की ओर प्रवासन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। श्रेणियों और निगमों के संरक्षण तहत विशेषज्ञ कारीगरों और कौशलपूर्ण व्यक्तियों ने उभरते हुए राष्ट्र राज्यों की 'वाणिज्यिवादी' नीतियों द्वारा प्रदान अवसरों का उपयोग किया।

यूरोप से नए विश्व की ओर गति

हालांकि सोलहवीं शताब्दी में यूरोप से नए विश्व के औपनिवेशिक अधिष्ठानों की ओर कुछ प्रवासन की गति थी, परंतु इसके स्तर पर्याप्त रूप से उल्लेखनीय नहीं थे। अभी भी रुकावटें उपस्थित थी, जैसे की विविध विशाल भू-क्षेत्र में गति की कठिनाइयाँ, जलवायु अनुकूलन और 'नए विश्व' में अग्रणी बनना, इन कठिनाइयों को इन अभिभूत करने की आवश्यकता थी।

पुराने से नए विश्व में जनसांख्यिकीय परिवर्तनों का आकलन करते समय प्रवासित जनसंख्या के सामाजिक लिंग विभाजन को ध्यान में रखना भी आवश्यक है। गति की प्रकृति – स्थायी वा सामायिक, का अंतर भी जानना चाहिए। स्पेन वा पुर्तगाल राज्यों की सेवा में नाविकों, पदाधारियों, सैनिकों की अधिकांश गति सामयिक प्रवासियों की थी, जोकि नए विश्व में कुछ समय व्यतीत कर, वहाँ प्राप्त किए अनुभव व समृद्धि के साथ वापस घर लौट गए। दूसरी ओर, स्थायी प्रवासियों की संख्या शुरुआती वर्षों में बहुत कम थी और इस जनसंख्या समूह के अंतर्गत, निहित विकास दर कम थी। यह मुख्यताः प्रारांभिक प्रवासियों के मध्य विषम सामाजिक लिंग विभाजन के कारण हुआ, जिससे जन्म-दर कम थी, कठोर मौसम व अनजान रोगों के कारण मृत्यु दर उच्च थी।

5.6 सोलहवीं शताब्दी में व्यापार और विनिमय

सोलहवीं शताब्दी के दौरान पूरे यूरोप में व्यापार करने के तरीके में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखा गया। पूर्व में ऑटोमन की बढ़ती शक्ति के साथ इतालवी व्यापारियों के लिए पूर्वी भूमध्यसागर के पार व्यापार करना उत्तरोत्तर कठिन हो गया। इसके अलावा ऐशियाई वस्तुएँ जैसे कपास और मसालों के व्यापार आचरण में इतालवी व्यापारी बैंकरों का वर्चस्व अरबी और अन्य यूरोपीय व्यापारी समुदायों के लिए दमघोटू हो गया जो अरबी और यूरोपीय व्यपारियों के बीच मध्यस्थ के रूप में काम करते थे।

समुद्री यात्राएँ व इनकी सफलता के लिए किया गया भारी पूँजीनिवेश, इतालवी राज्यों और व्यापारिक समुदायों द्वारा पूर्वी व्यापार पर प्रभुत्तव को तितर-बितर करने के प्रयास को दर्शाता है। व्यापार में इसके संयुक्त परिणाम से व्यापारिक परिवर्तन के तहत – इतालवी अर्थव्यवस्थाओं की कीमत पर, अटलांटिक अर्थव्यवस्थाओं, विशेषतः इबेरियन देश जैसे पुर्तगाल व स्पेन का उद्‌भभव हुआ। व्यापार के यह निरंतर उत्तरवर्ती परिवर्तन, सोलहवीं और शताब्दी के अंत में इंग्लैंड व हॉलैंड के उत्थान में प्रतिबिंधित होता है।

इतालवी नगर राज्य

सोलहवीं शताब्दी के इतालवी राज्यों के आर्थिक विकास को दो पूर्णतः स्पष्ट कालों में विभाजित किया जा सकता हैः

1) सोलहवीं शताब्दी के आरंभिक दशक, राजनीतिक संघर्ष वा युद्धों से चिह्नित थे, जिससे महत्तवपूर्ण कार्यक्षेत्रों जैसे कि वस्त्र उत्पादन क्षमता में सतत पतन, साथ ही वाणिज्यिक विनिमय की समस्त मात्रा में अवनति विशेषत प्रायद्वीप में दिखाई पड़ती है।

2) सदी के उत्तरार्द्ध में कुछ पुनः प्राप्ति हुई हालांकि पिछली सदी के स्तरों की उपलब्धि नहीं हुई। इसका मूल कारण यह था कि शुरुआत में जिस वस्तुओं की आपूर्ति का एकाधिकार इतालवी लोगों को प्राप्त था जैसे रेशम, वह अब तक महाद्वीप के विभिन्न क्षेत्रों में सर्वत्र पहुँच चुका था। इतालवी व्यापारी अब इस वस्तु के एकमात्र पूर्तिकर्ता नहीं थे।

हालांकि, सामान्यीकरण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इतालवी अर्थव्यवस्था शहर राज्यों की संरचनाओं के समान ही विविध थी जोकि प्रायद्वीप के राजनीतिक विश्व का निर्मित करते थे।

विभिन्न क्षेत्रों के सूक्ष्म अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि युद्धों का विनिर्माण उत्पादन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा। उत्पादन में सामान्य गिरावट थी, विशेषतः केन्द्रीय वा उत्तरी क्षेत्रों में, जोकि पिछली सदियों में शक्तिशाली क्षेत्र थे। शहरी केन्द्रों में जनसंख्या में कम सघनता दिखती है, कम विशेषज्ञक कार्यशालाओं से देशी उपभोक्ता माँग, जोकि खुद पतनशील थी, उसे पूरी करना असंभव था, तो निर्यात के लिए पर्याप्त उत्पादन कहाँ से आता।

इन सभी सामान्य कठिनाइयों के अलावा, युद्ध की जरूरतों को पूर्ण करने हेतु अधिक से अधिक कराधान हुआ– अतः वस्त्र जैसे आवश्यक व्यापारिक वस्तु की उत्पादन लागत में वृद्धि हुई। राजनीतिक अनिश्चिताओं के कारण कठिनाइयों से कई उन्नत शहरों जैसे ब्रेसिया, रोम, पाविआ, और जेनोआ का विनाश हुआ, इसके बावजूद इतालवी व्यापारियों ने यूरोप के महत्वपूर्ण विनिमय केन्द्रों में सर्वत्र अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

इतालवियों की महत्वपूर्ण यूरोपीय मेलों में प्रतिष्ठित भूमिका ज़ारी रही, जहाँ वस्तुओं का विनिमय होता था। यह भूमिका महत्वपूर्ण वित्तीय लेन-देन वाली जगहों में महत्वपूर्ण थी जहाँ वितिय समझौते होते थे और जहाँ यूरोपीय राज्यों के सार्वजनिक ऋण पर आधारित साख के साधनों का व्यापार होता था। ऐंटवर्प, लिओनस, बेसनकौन, और पिआसैंज़ा, महत्वपूर्ण वित्तीय केन्द्र थे, जहाँ सोलहवीं शताब्दी में इतालवी अपनी गतिविधियाँ करते थे। बेसनकौन और पिआसैंज़ा में ज़ेनोआ के बैंकर विशेषतः सक्रिय थे और उन्होंने इन जगहों को व्यावहारिक रूप से विनिमय मेलों में परिवर्तित कर दिया था।

सोलहवीं शताब्दी के दौरान, इस संदर्भ में इतालवी, व्यापारियों के विशिष्टीकरण में बदलाव आया। प्रारंभ में वह व्यापारिक सौदागर थे, परंतु बाद में वह विशेष रूप से वित्तीय गतिविधियों में संलग्न होने लगे। उन्होंने चर्च के वित्त संबंधी मनोभाव में परिवर्तन के सुअवसर का उपयोग कर सार्वजनिक प्रतिभूतियों में मध्यस्तता की पेशकश की, विशेषतः स्पेनिश वा फ्रांसिसी ताज के लिए फ्रांस में लिओन्स में कार्यरत लोरंटाइन बैंकरों ने इसमें विशेषतः महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सोलहवीं सदी के दौरान, प्रायद्वीप के मार्गों और बंदरगाहों से गुजरने वाली वस्तुओं के प्रकार में खास बदलाव नहीं आया था, यद्पि उनकी मात्राओं में परिवर्तन हुआ था। भूमध्यसागर घाटी में खाद्य उत्पादों का स्थानीय उत्पाद के रूप में व्यापार था– अनाज, मदिरा, व तेल और अन्य वस्तुएँ जिसमें द्वीपों से समुद्री नमक, चीनी, कच्ची ऊन, कपास, फिटकरी, रंजक पदार्थ और पशुचर्म सम्मिलित थे। इनके साथ-साथ लोहा, विनिर्मित वस्तुएँ जैसे टसकनी और लोमबार्डी से वस्त्र, लोमबार्ड युद्ध-सामग्री, किताबें वा वेनिस का कागज़ और काँच भी शामिल थे।

सदी के अंतिम चतुर्थांश में, जेनोआ के पोतों ने स्वयं को एक बिलकुल नए व्यापार का नियंत्रक पाया। यह स्पेन से इटली, मूल्यवान धातुओं का परिवहन था, विशेषतः चाँदी के सिक्कों का, जोकि एक जटिल वित्तीय समझौते के अंतर्गत, 1557 के दिवालिएपन और 1575 के घोषित द्वितीय दिवालिएपन की घोषणा के बाद; स्पेनिश ताज जब कठिनाइयों का सामना कर रहा था, तक ओर पकड़ता है। अमरीकाओं से आने वाले चाँदी प्रवाह में असाधारण वृद्धि थी, 1570-1580 के बीच वार्षिक 100 टन से कहीं ज्यादा, और आने वाले दशकों में 200 टन प्रतिवर्ष। इसके अलावा पिआसेंज़ा के विनिमय मेलों जोकि जेनोआ के व्यापारियों द्वारा नियंत्रित थे, उनके विकास और सफलता ने जेनोआ बंदरगाह को मेलों का अंतिम स्टेशन बना दिया।

पुर्तगालियों के भारी हस्तक्षेप के बाद वेनिस ने अपने व्यापार में उतार-चढ़ाव अनुभव किया, विशेषतः पूर्व के साथ मसालों के व्यापार में। सदी के आरंभ में वेनिस ने संकट सहन किया जन उसे जबरन पुर्तगालियों द्वारा यूरोप लाई गई काली-मिर्च का व्यापार करना पड़ा। लेकिन बाद में उसने मिस्र के रास्ते प्रत्यक्ष संपर्क बना लिए। साथ ही वह यूरोप के आतंरिक भागों से अन्य वस्तुएँ जैसे – फुग्गर नियंत्रित खदानों से खनिज, जिन्हें वेनिस से निर्यात किया जाता था, टिन वा लेड की उल्लेखनीय मात्रा जोकि वेनिस शहर से गुज़रती थी, जिन्होंने इसे प्रिंटिंग टाइप और प्रिंटिंग प्रेसों की बढ़ती संख्या का विशिष्ट शहर बना दिया।

अतः सोलहवीं शताब्दी में इटली ने बहुत परिर्वतन देखे, जिन्होंने आर्थिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया। इनके द्वारा पिछली सदियों में हुए आर्थिक-सामाजिक जीवन को

बनाए रखने वाली प्रणालियों में अथाह परिवर्तन किए गए। इनका परिणाम विभिन्न क्षेत्रों के बीच एक बदला हुआ संतुलन था। कुछ जैसे की केन्द्रीय व उत्तरी क्षेत्र अन्य प्रबल यूरोपीय क्षेत्रों की तुलना में पीछे हटे। अन्य ने जैसे कि जेनोआ ने महान विकास के लिए प्रयास किया। वेनिस की महत्वपूर्ण भूमिका ज़ारी रही, जबकि दक्षिण के क्षेत्रों में, ऑटोमन की बढ़ती शक्ति के कारण पूर्वी भूमध्यसागर में युद्धों और संघर्ष से दक्षिण के क्षेत्रों को बहुत नुकसान हुआ।

पुर्तगाल

सोलहवीं शाताब्दी के आरंभ में पुर्तगाली व्यापारियों ने स्वयं को मूलत अफ्रीका और एशिया के व्यापार में सलंग्न देखा। महान जहाजों को, पश्चिमी और उत्तरी अफ्रीका के सभी प्राचीन मार्गों, जिनके द्वारा महत्वपूर्ण वस्तुओं जैसे सोना चाँदी मूलतः सोना की आपूर्ति होती थी, उनपर प्रभुत्व वा अतिक्रमण निश्चित करने के लिए सशस्त्र सेवकों के साथ एकट्ठा किया।

पुर्तगालियों द्वारा वार्षिक रूप से पूर्व की ओर अभियान, सुनियोजित किये जाते थे। सदी के आरंभ में खनिजों वा धातु जैसे कांस्य, सिनबार, मूंगा, लेड और सर्वोपरि चाँदी और सिक्कों के नौभार से लैस जहाज जाते थे। वापसी यात्रा मे जहाजों के पेंदें 1500 मैट्रिक टन तक के भार, जिसमें काली मिर्च, अन्य मसाले जैसे अदरक, दालचीनी, जायफल, लाँग व कपूर, से लदे रहते थे। दो तिहाई परिकलित काली-मिर्च होती थी और पूरे यूरोप में इसके मूल्य मे विचारणीय उतार-चढ़ाव रहता था। व्यापार वृद्धि के साथ निर्यात और आयात की वस्तुओं में वृद्धि हुई और यह पुर्तगाली व्यापार का स्वर्णिम काल था। अंत और स्पेनिश ताज से संघ बनने से पूर्व यानि 1580 तक पुर्तगाली जहाज तेल, मदिरा और वस्त्र के भार सहित जाते थे और रेशम, चीनी मिट्टी की वस्तुओं मोती, जवाहरात इत्र के लिए अर्क साथ ही साथ मसालों के साथ यूरोप लौटते थे। पूर्व के साथ पुर्तगाली व्यापार ने जल्द ही यूरोपीय व्यापारियों और बैंकरों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया और उन्होंने ताज द्वारा नियोजित अभियानों में अपनी जगह बनाई। 1500-1505 के बीच इतालवी खोज-यात्राओं में भाग लेने वालों में प्रथम थे। फलोरैन्टाइन और जेनोआ-वासियों को इसमें विशेष स्थान मिला। और जल्द ही जर्मनों ने अनुकरण किया। पुर्तगाली समुद्री यात्रा में भाग लेने वाले विदेशियों पर कई अधिनियम ताज द्वारा थोप दिए जाते थे। पूर्वी बाजारों से माल खरीदने से यूरोपीय बाजारों में उनके बिकने तक सख्त नियंत्रण रहता था। ताज के पास प्रायः विशेषाधिकार था, जिसमें कभी-कभी ढील दी जाती थी।

जल खोज-यात्राओं का व्यय बेहद मंहगा था। इसका एक कारण यात्राओं के दौरान भारी संख्या में जहाजों का लोप था। हालांकि इससे लिसबन, ओपोरतो, सेतुबाल, अजोरेस में जहाज निर्माण संबधी उल्लेखनीय विकास हुआ। यद्यपि व्यय के बावजूद मसालों के व्यापार मे भारी लाभ निशचित था। जोकि अक्सर निवेशित पूँजी का 100 प्रतिशत था। काली-मिर्च के नौभार में ताज की हिस्सेदारी 30 प्रतिशत थी जबकि उसपर अनिवार्य रूप से इतनी बड़ी मात्रा में कीमतों में होने वाली गिरावट से मसाला व्यापार में राज्य के अंशतः हस्तक्षेप की आवश्यकता पड़ी। पुर्तगाली ताज ने लिसबन को यूरोप के प्रधान वाणिज्यिक शहर के रूप मे विकसित करने का प्रयास किया, ताकि वह ऐटर्वप वा लंदन से मुकाबला कर सके, जोकि पुर्तगाली जहाजो के गंतव्य थे। सदी के आखिरी चतुरांष में पुर्तगाल– अंग्रेज, फ्रांसीसी और डच समुद्री डाकूओं का सामना कर रहा था। पूर्व की खोज-यात्राओं का व्यय पुर्तगाली राज्य वित्त के लिए अरक्षिणीय हो गया। 1578 में मसाला व्यापार को औग्सर्बग के फ्यूग्गर शहर के जर्मन व्यापारी कौनरेड रौथ अनुबंधित कर दिया गया, जिसने व्यय व जोखिमों को संभाला। आधी आयातित वस्तुएँ राजा को जाती थी, परंतु इन्हें रौथ के साथ को पूर्व-निधार्रित दाम पर पुनः दे दिया जाता था।

ब्राजील के साथ पुर्तगालियों का संबध काफी भिन्न था। यह पुर्तगाल को प्राप्त हुआ था जिसे तोर्देसिलास्व की संधि के तहत उसे दिया गया था शुरुआती खोज-यात्राओं से यह स्पष्ट हो गया था कि ब्राजील से वैसी समृद्धि प्राप्त नहीं हो सकती थी, जैसे स्पेन को अपने द्वारा विजित राज्यों से प्राप्त हुई थी। रंजक सामाग्री प्रदान करने वाले, सर्वउपलब्ध ब्राजील वुड के अलावा, जिससे इस क्षेत्र को नाम प्राप्त हुआ था, इस क्षेत्र की महानतम सम्पदा उसकी पर्यावरणीय विशेशताओं और उसके संभावित कृषि उपयोग में थी। यद्यपि यहाँ कई समस्याएँ थी। प्रथम समुद्र पार पुर्तगाल से जो लोग आए थे, उनमें कृषि के लिए कोई योग्यता नहीं थी। इसके अलावा यहाँ की मूल जनसंख्या का भी कृषि के प्रति रुझान नहीं था। साथ ही, भूमि, की स्वयं प्रकृति भी ऐसी ही थी।

भूमि रियाआतों की प्रणाली के द्वारा भूमि पर कृषि करने की शर्त पर और आयातित श्रमिकों की उपलब्धता द्वारा क्रमशः व परिश्रम से परिणाम प्राप्त हुए। यह श्रम दासों द्वारा प्रदान कराया जाता था जोकि पुर्तगालियां के लिए समस्या नहीं थी क्योकि वह अपने देश में दासों के उपयोग से परिचित थे। लगभग एक सदी से उनका अफ्रीकी तटरेखा से संपर्क था जहाँ उन्हें दास, आंतरिक भागों से आई अन्य वस्तुएँ उपलब्ध थी। अंततः गन्ने के उत्पादन को इस क्षेत्र के लिए सबसे उपयुक्त फसल माना गया और उसके बाद कपास को। अफ्रीकी दासों का व्यापार स्वयं में पुर्तगालियों के लिए मुनाफे का स्रोत बन गया। पुर्तगाली अफ्रीकी के अटलांटिक तट से व्यापार में अपने प्रभुत्व के सुअवसर द्वारा अमरीका में स्पेनियों के आपूर्तिकर्ता बन गए।

स्पेन

अमरीकाओं में स्पेनी निवेश पुर्तगालियों की तुलना मे ज्यादा गहन वा उपभोग्य था। पुर्तगालियों के विपरित, जो केवल पूर्व से यूरोप उत्पाद पहुँचाने के लिए एक स्थानांतरण ढाँचे के इच्छुक थे और जिन्होंने अमरीकाओं में अपनी सम्पदाओं में ज्यादा निवेश नहीं किया था, वहीं स्पेनियों ने मूल निवासी संस्कृतियों के विरुद्ध संघर्ष और विजय के लम्बे और कटु अभियानों को अंजाम दिया। इसके परिणामस्वरूप भूमध्यरेखा के दक्षिण में खोजे गए नए विश्व के ज्यादातर भाग स्पेनी साम्राज्य के तहत थे। कीमती धातुओं के सेविल में व्यवस्थित प्रवाह ने सोलहवीं सदी में निश्चित रूप महानतम छाप छोड़ी। लेकिन इस समय औपनिवेशिक नीतियों का विकास और अनुसरण अनन्य रूप से केवल अमरीका और स्पेन के सम्बंधों को प्रभावित करता था। बाद में इनका प्रभाव इस सदी के पार, संपूर्ण यूरोप पर पड़ा।

स्रोतः पाओलो मास्सा "द इकोनमी ऑफ फिफटिंथ सैंचुरी : प्रिकंडीशनस ऑफ यूरोपीयेन एक्सापेशन" *इन एन इकोनोमिक हिस्ट्री ऑफ यूरोप फ्रॉम एक्सपेंशन टू डबलेपमेंट*, पृष्ठ 2

इस आरांभिक काल में स्पेन ने अनाज के लिए बीज, खाद्यय पौधे, गन्ना, खट्टे फल जैतून, और अंगूर की लताएँ, भूमि पर कार्य करने के लिए औजार, मवेशियों के साथ-साथ, घोड़े, बैल, भेड़ जोकि अमरीका में अपरिचित थे, इस सबके नौभार भेजे। कृषि और पशु प्रजनन क्रियाओं का ऐन्टिल से महाद्वीप में स्थानांतरण किया गया। मैक्सिको और उसके आस-पास की खदानों से प्राप्त चाँदी, स्पेन को अमरीका से मिलने वाली सबसे महत्वपूर्ण वस्तु थी। स्पेन नए विश्व से आने वाले सोने-चाँदी के प्रवाह पर सख्त नियंत्रण रखता था, और सेविल को स्पेनी चाँदी का वितरण केन्द्र बना दिया गया था। कानूनी संरचना द्वारा यह सुनिश्चित किया गया कि चाँदी बिना अनुमति सोन के नियंत्रण क्षेत्र से बाहर न जाए। केवल वेरा क्रूज) पोर्टो बेलो और कारटागेना के अमरीकी बंदरगाह जिन्हें सेविल से लेन–देन का आधिकार था, वहाँ भी नियंत्रण लगाये गये थे।

उत्तरी अंटलांटिक अर्थव्यवस्था

सोलहवीं शताब्दी से पहले, जो क्षेत्र दक्षिणी निम्न टतीय देशों के नाम से जाना जाता था ब्रूजेस जिसका केन्द्र और ऐंटर्वप जिसका बंदरगाह था; वहाँ उल्लेखनीय विकास का अनुभव किया गया। निस्संदेह इसे इटली तुल्य यूरोपीय अर्थव्यवस्था का एक केन्द्र माना जाता था। इसके अतिरिक्त ऐमस्टरडेम, ब्रेमेन और हैमबर्ग जैसे महत्वपूर्ण वाणिज्यिक केन्द्रों ने इसके नजदीक में उन्नति की। उनकी उत्तरी सागर में स्थिति ने समुद्र से यूरोप के आंतरिक क्षेत्रों को जोड़ने वाली महान संचार रेखाओं– राइन, ऐल्ब, शैहलडट और मोसैल जैसी नौगम्य नदियों के उपयोग को संभव बनाया। उत्तरी सागर के बंदरगाहों पर बाल्टिक सागर और इंग्लैड के उत्पाद जैसे मक्का, कच्ची ऊन, लिनेन चमडा, ऊन और नमक का आंतरिक भागों में खदान, औद्योगिक वा वस्त्र गतिविधियों से प्राप्त उत्पाद का विनिमय होता था; जर्मन मेले भी व्यापारिक अवसर प्रदान करते थे। भूगौलिक खोजों वा समुद्रगामी नौवहन के विकास काल तक यही अवस्था थी।

जब पुर्तगाालियों ने पूर्व के साथ व्यापार शुरू किया, तो वह उत्तरी सागर के बंदरगाहों को इस्तेमाल करने के लिए बाध्य थे क्योंकि लिसबन को यूरोपीय व्यापार की दृष्टि से विकेन्द्रित किया हुआ था। उन्होंने यह खोजा कि ऐंटवर्प, ईस्ट इंडिज के उत्पाद का सबसे अनुकूल बाजार था, विशेषत काली मिर्च और मसालों के लिए। बाद में उन्होंने ऐमसटरडेंम वा हैमसर्बग को भी उपयोग किया। सोलहवीं शताब्दी के उसी समय में इंग्लैंड से इन बंदरगाहों में वस्त्र का अतः प्रवाह काफी उल्लेखनीय हो गया था।

सोलहवीं शताब्दी के आखिरी चतुरांष में ऐंटवर्प के पतन और निम्न तटीय देशों में ऐमसटरडेंम का आर्थिक क्रियाओं के मुख्य केन्द्र के रूप मे विकास हुआ। ऐंटवर्प का प्रशासन एक केन्द्रीयकृत प्रणाली पर आधारित था, जिसने आर्थिक गतिविधियों को प्रतिबंधित किया था, रियाअतें और विशेषाधिकार प्रदान करना इस समय उभरती नई ऊर्जाओं को आकर्षित के लिए हितकारी नहीं था। दूसरी ओर ऐमसटरडेंम का ज्यादा अनुमोदक दृष्टिकोण था, जिससे अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण किया और लोगों, उद्यमों और पूँजी के आगमन को सुगम बनाया, चाहे सक्रियता से प्रोत्साहित न किया हो।

सोलहवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में डच (वासी) ईस्टइंडिज के लिए खोज-यात्रा संगठित करने मे व्यस्त थे, इससे वह पुर्तगालियों के विरुद्ध आए और उन्हें आर्थिक विस्तार का नया प्रतिमान खोजना पड़ा। पुर्तगालियों की पूर्वी खोज-यात्राएँ जल्द ही कड़े – राज्य नियंत्रण के तहत् आ गई जबकि डच को ज्यादा निजी पहल के लिए अधिक स्वतंत्रता मिली। हालांकि निजी पहल का संगठन, इस उद्देश्य के लिए, ढीली–ढीली कम्पनियों के माध्यम से स्थापित किया गया, जोकि आंरभिक सत्रहवीं सदी में ज्यादा विनियमित हो गई थी।

हालांकि, सोलहवीं सदी में डच के लिए मुख्य आवागमन बाल्टिक सागर के रास्ते से था, साउंड के रास्ते परिवहन, जो की उत्तरी सागर को जोड़ने वाला अनिवार्य मार्ग था। इस समय के रिकार्डों से यह ज्ञात होता है कि सदी के अंत तक यहाँ से गुजरने वाले 50 फीसदी से ज्यादा जहाज डच थे। हालैंड के बंदरगाहों और बाजारों में अब समुद्र से व्यापार की जाने वाली सभी वस्तुएँ उपलब्ध थी। सोलहवीं सदी के अंत तक डच पूर्ण यूरोप के साथ व्यापार की स्थिति में थे, उपलब्ध कच्चे माल के प्रसंस्करण के लिए नए पद्धतियों का विकास कर चुके थे, परिष्कृत वाणिज्यिक और लेखा-विधि तकनीकें विकसित कर चुके थे। साधारणतया वह पूर्णतः नवप्रर्वतनशील परिस्थितियों में कार्य कर रहे थे साथ ही उनके पास भारी मात्रा में पूँजी उपलब्ध थी।

सोलहवीं शताब्दी के दौरान इंग्लैंड का आर्थिक विकास अन्य यूरोपीय देशों से भिन्न था। उसकी भूगौलिक परिस्थितियों और राज्य के संगठन ने खास परिर्वतन और अपेक्षाओं को प्रस्तुत किया। कई इतिहासकारों ने इंग्लैंड के उदाहरण का विश्लेषण किया है और विभिन्न समयों में उसकी अर्थव्यवस्था के विशेष और सामान्य पक्षों पर महत्व दिया है। सोलहवीं सदी के दौरान, कई कारकों का संयोजन कार्यरत था, इसमें ऊन उत्पादन कृषि में परिर्वतन, विनिर्माण उत्पादन में विकास, कच्चे माल की उपलब्धता, यूरापीय महाद्वीप से सबंध, समुद्रीय यातायात, निरकुंश राजतंत्र, सामाजिक वर्गों की सहभागिता और ऐंगलिकन धर्म सुधार, सम्मिलित थे।

अंग्रेजी ऊन सदैव देश के विदेशी व्यापार का, एक मुख्य उत्पाद रहा था, इसका यूरोपीय महाद्वीप में उल्लेखनीय मात्रा मे निर्यात होता रहा था। साथ ही इटली और निम्नतटीय देशों जैसे वस्त्र केन्द्रों काफी विकास हुआ था। ऊन निर्माण पर सीमा शुल्क ने तेरहवीं सदी से काफी राजस्व उपलब्ध कराया था लेकिन एक संरक्षणवादी नीति की सहायता से आंतरिक सुअवसरों का लाभ उठाने के लिए एक विनिर्माण उद्योग विकसित करने का प्रयास किया गया। हालांकि इस विशिष्ट नीति का ऊन उत्पादकों द्वारा विरोध किया गया, जोकि स्वतंत्र बाजार के सुअवसरों द्वारा सर्वश्रेष्ठ मूल्यों और परिस्थितियों का उपयोग करना चाहते थे। इस क्षेत्र ने यूरोपीय व्यापारियों से अच्छे संपर्क बना लिए थे। वह ऊन की मारी मात्रा में आपूर्ति करते थे और साथ ही उसी समय जो उच्च-मूल्य उत्पाद माँग में थे, उन्हें इंग्लैंड भेजते थे।

संपूर्ण सदी के दौरान, निर्यात किये जाने वाले वस्त्र मात्रा में उल्लेखनीय वृद्धि हुई थी, खासकर की छोटे कपड़ों के रूप में। ऐंटवर्प अंग्रेजी वस्त्रों के बाकी यूराप में वितरण का एक आदर्श केन्द्र था। प्रसार को इतालवी वस्त्र संकटावस्था का एक कारक और प्रभाव भी माना गया है।

इंग्लैंड में ऊन उत्पादन में वृद्धि ने कृषि उत्पादन के ढाँचे में परिर्वतन किए; चारागाह भूमि का विस्तार हुआ, बुनकर उद्योग मे वृद्धि हुई, जिससे श्रम की माँग बढ़ी। इन दो कारकों के परिणाम कई ऐतिहासिक विवेचनाओं की विषयवस्तु रहा है। एक ओर चारागाह के लिए माँग ने बाड़वंदी की प्रक्रिया को त्वरित किया, जिसके कारण ग्रामीण क्षेत्रों से कमजोर वर्गों का निष्कासन हुआ। दूसरी ओर विनिर्माण उत्पादन प्रक्रियाओं में रोजगार में उतार-चढ़ाव के कारण ज्यादा से ज्यादा लोगों ने स्वयं को जोखिम का सामना करते पाया।

ग्रामीण क्षेत्रों में भेड़-पालन के विस्तार के प्रभावों के अलावा, चर्च संपत्ति के दमन से हुए प्रभाव, ताज द्वारा किए गये स्वामित्वहरण से कृषि व्यवस्था मे परिर्वतन हुए, जिसके छोटे कृषकों पर नकारात्मक परिणाम हुए। जबकि यह प्रक्रियाएँ निश्चित रूप से हुई परंतु इन्होंने सम्पूर्ण देश को प्रभावित नहीं किया। जनसंख्या वृद्धि ज्यादातर सामान्य थी और कृषि क्षेत्र मे परिर्वतनों की माँग कर रही थी ताकि विस्तृत होते हुए शहरी केन्द्रों की मक्का जैसे खाद्य वस्तुओं की माँगों की आपूर्ति की गारंटी हो सके।

5.7 सोलहवीं शताब्दी में कृषि और उत्पाद

सोलहवीं शताब्दी के आरंभ में यूरोपीय कृषि द्वारा उन्हीं फसलों का उत्पादन हो रहा था, जोकि पिछली सदियों में होता था। कोई महत्वपूर्ण नवप्रर्वतन नहीं हुए थे और मौजूदा संसाधनों को यथासंभव उपयोग में लाया जा रहा था। यूरोपीय किसानों ने खाद्य सामग्री के लिए विविध किस्म के पौधों जिसमें सभी किस्म के अनाज और खाद्य फलों की खेती को जारी रखा। गेहूँ, राई, जौ, जई, स्पेलट, बाजरा, ज्वार, साथ ही साथ शाहबलूत (चेस्टनट) की खेती होती थी। जैतन व अंगूर ने कृषिविज्ञानियों का ध्यान आकर्षित किया, उन्होंने नई मुद्रण पद्धतियों के सुअवसर द्वारा अपने शोध को प्रकाशित कराया। कई क्षेत्रों में वस्त्र निर्माण के लिए पटसन और जूट की खेती की जाती थी जबकि कपास यूरोप के दक्षिणी भाग तक सीमित थी।

भूगौलिक खोजों का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम लोगों द्वारा नए पौधों की खोज थी। हालांकि इन पौधों को वास्तव में सोलहवीं शताब्दी में नहीं अपनाया किया गया था और यह अनुगामी सदियों मे यूरापीय कृषि पंरापरा का भाग बन गए, जिससे आहार में अथाह बदलाव आया, और अकाल के प्रभावों को घटाने में सहायता मिली। आलू, मक्का, टमाटर, तंबाकू, चाय, कॉफी, कोको, सोलहवीं शताब्दी के दौरान आए अनेकों पदार्थों में से सबसे पहले महत्वपूर्ण थे।

कृषि के नए अवसर उन पौधों से आए जोकि यूरोप में बहुत पहले से ही विदित थे परन्तु अब ज्यादा विस्तृत स्तर पर उगाए जाते थे और जिनका निर्यात किया जा सकता था। चावल, इवेरियन प्रायद्वीप पर अरब कब्जे की विरासत था और उत्तरी इटली तक फैल गया था। यह जहाजों पर सेवन के लिए विशेषतः उपयुक्त था। अन्य अनाज लंबी समुद्रपार यात्राओं में समस्या उत्पन्न करते थे क्योंकि उनका तेल तत्व उनके भंडारण को कठिन बनाता था और वह ज्यादा नाशवान थे। शहतूत ने रेशम कीड़ा पालन के विस्तार में योगदान दिया, पहले इटली में फिर फ्रांस में और इसने भविष्य में रेशम उद्योग की उन्नति की नींव रखी। इस समय में महान गन्ना उद्यम की शुरुआत हुई, दक्षिण के कुछ छोटे भागों के अलावा, गन्ने को कदाचित ही यूरोप में कहीं उगाया जाता था। यह पुर्तगालियों और स्पेनिश के बदौलत से मडिरा और कैनारी द्वीपों के रास्ते मध्य और दक्षिणी अमरीका पहुँचा और आने वाली शताब्दियों में नए विश्व की एक बेहद महत्वपूर्ण फसल बन गया। इसमें दासत्व नाटकीय और विशाल स्तर पर सम्मिलित था।

अन्य महाद्वीपों से संपर्क में पशु प्रजनन में महत्वपूर्ण प्रगति हुई। जीवित पशुओं को बड़ी संख्या में) दो कारणों से जल यात्रा पर ले जाया जाता था। प्रथम पशुओं विशेषकर घोड़ों की सशस्त्र सैनिकों को परिवहन और युद्ध में आवश्यकता थी। द्वितीय, जीवित पशु भोजन प्रदान कर सकते थे। माँस को जहाज पर ले जाना अव्यावहारिक था, क्योंकि माँस को संरक्षित रखना यदि असंभव नहीं तो कठिन अवश्य था। अपितु माँस के अलावा, जीवित पशुओं द्वारा दूध, अण्डों जैसे अन्य खाद्य पदार्थ भी प्राप्त होते थे। इसके अतिरिक्त, औपनिवेशीकरण का एक उद्देश्य, अपनी मातृ-भूमि समान जीवन-पद्धति, को जिस हद तक संभव हो, पुनःरचित करना था। अतः घोड़ें, मवेशी, भेड़, सुअर, खरगोश, मुर्गियाँ, चालक दल के साथ जलयात्रा पर जाते थे और नए क्षेत्रों में यूरोपीय बस्तियों में स्थापित हो जाते थे। यह तेजी से बढ़ने लगे और कई मामलों में इनकी संख्या में वृद्धि उल्लेखनीय थी। दूसरी और विश्व के अन्य भागों के बेहद कम पशु तुर्की को छोड़कर, यूरोपीय कृषि के लिए अनुकूल थे। विदेशी जानवर ज्यादातर जिज्ञासा और मनोरंजन का स्रोत थे, बजाय किसी ओर चीज के। विभिन्न स्थानों के समान प्रजाति के पशुओं के संकरण प्रयासों द्वारा ज्यादा महत्वपूर्ण नतीजे प्राप्त हुए। विशिष्ट अभिलक्षणों वाले पशु जिनका विशिष्ट परिवेश और परिस्थितियों में

उपयोग हो सके, उनका प्रजनन किया जाता था। एक अनूठा उदाहरण घोड़ों का है, जिन्हें कृषि में अधिक मात्रा में हल खींचने के लिए और अतिरिक्त शक्ति प्रदान करने के लिए प्रयोग किया जाता था, जैसा की निम्न तटीय देशों में।

5.8 सोलहवीं शताब्दी में शहरी उद्योग

खदानों के उपयोग ने विस्तार की अनुरूप प्रक्रिया को अनुभव किया और सोलहवीं शताब्दी में यद्यपि विस्तार और अधिक था। इसका आरंभ सोलहवीं सदी के शुरुआती दशकों में हो चुका था, खनिजों की बढ़ती माँग, विशेषतः तांबा, चाँदी, लोहा व पारा, साथ ही साथ सेंधा नमक, के खनन में इसके लिए कारखाने और श्रमिकों का जटिल संगठन सम्मिलित था। जिसके लिए अब तक से ज्यादा स्तर पर वित्तीय संसाधनों की आवश्यकता थी।

पंद्रहवीं शताब्दी से खदानों में निवेश अवसरों ने समृद्ध व्यापारियों की पूँजी को आकर्षित किया। खदान गतिविधि को अब पहले की तुलना में ज्यादा बड़े उद्योग के रूप में संरचित किया गया और बड़ी संख्या में वेतनभोगी श्रमिकों को, जिन्होंने विशिष्ट क्षेत्रों में श्रमिकों का प्रथम महान संकेद्रण संरचित किया, को प्रयुक्त किया गया। यह रुझान मध्य और पूर्वी यूरोप पोलैंड से टाइरोल खदान क्षेत्रों को विशेषतः चिह्नित करते थे, जिन्हें ऑग्जबर्ग के महान व्यापारी बैंकर विशेषकर फूंग्गरस की पूँजी निवेश द्वारा वित्त पोषण प्राप्त था।

विशेष रूप से शताब्दी के उत्तरार्द्ध में क्रमशः नए खदानों की खोज और उपयोग खनिज आपूर्ति के लिए बाजारों के विस्तार के साथ और नए व्यापार मार्गों द्वारा अन्य खनिज अयस्कों को प्राप्त करने की संभावना के साथ ही साथ खनन और उनमें पूँजीवादियों की रुचि का महत्व बढ़ गया। यद्यपि इसका यह अर्थ नहीं था कि खनिज अयस्कों का और उनसे प्राप्त उत्पादों का उपयोग बाद के काल में विकसित होना बंद हो गया। एक नए प्रकार की श्रम के रूप के विकास के संकेत थे, जोकि आने वाली सदियों उन्नत हुए और आने वाली तकनीकी नवाचारों के साथ चलते रहे।

द्वितीयक क्षेत्र बेहद सक्रिय था, सोलहवीं सदी में असंख्य प्रकार के व्यवसाय विनिर्माण उत्पादन उपयोग में लाए जा रहे थे। कार्य अवसर पारंपारिक वा नवरचनाओं के मध्य में उपस्थित थे। यह यूरोपीय आर्थिक विस्तार का एक सबसे महत्वपूर्ण पक्ष था।

उसके साथ-साथ यह मध्यकालीन अर्थव्यवस्था का आधुनिक काल में संक्रमण का चिह्नक था। वह दस्तकार कार्यशालाएँ जिन्होंने व्यापारियों के भाग्य को बनाए रखती थी अभी भी महत्वपूर्ण भूमिका में थी। यद्यपि, श्रेणियों को अब अपने वैधानिक अधिनियमों में निहित संकटों का अनुभव करना पड़ रहा था। जिससे नवाचारों के अपनाने को अवरुद्ध किया, विशेषतः पारम्पारिक ऊन वस्त्र क्षेत्र में। कुछ क्षेत्रों जैसे पोत-कारखानों और जहाजी शस्त्रशाला में उल्लेखनीय संख्या में श्रमजीवियों की आवश्यकता थी। यह कार्य स्थल कितने विशाल थे, इसके दृष्टिगोचर अनुस्मारक आज भी उपस्थित हैं। सभी विशेषज्ञ कार्य एक ही छत के नीचे किये जाते थे। इसमें लकड़ी व काठ को तैयार करना, रस्सी, तिरपाल नौसंचालन उपकरण, मानचित्रण वा युद्ध सामग्री सम्मिलित थे, यह सूची आर्थिक गतिविधियों की पूरी श्रृंखला को छूती है।

उपभोक्ता वस्तुओं और अर्ध-निर्मित उत्पादों का निर्माण मुख्यता खेतिहार मजदूरों के श्रम द्वारा किया जाता था। जोकि अपने खाली समय में उपलब्ध थे। कृषि कार्य मौसमी होने के कारण, अन्य गतिविधियों के लिए काफी समय उपलब्ध था, इस प्रकार कृषि श्रमिकों के घरों में रोजगार विकसित हुआ।

प्रथम औद्योगिक समाज के उद्‌भव और सदियों के दौरान इसके विभिन्न चरणों के संदर्भ में कई व्याख्याएँ प्रस्तुत की गई हैं। 'आद्य-उद्योग' वा 'पूर्व-उद्योग' संज्ञाओं द्वारा विभिन्न प्रकार

की उत्पादन संगठन की व्याख्या की गई है, जिनसे उत्पादित माल, सभी स्तरों की उपभोक्ता माँग को पूर्ण करने के लिए, किया जाता था।

सोलहवीं सदी के यूरोप में हो रहे सामान्य विस्तार के संदर्भ में संभवतः यह कहना सुरक्षित होगा कि पहले से उपस्थित औद्योगिक संगठन के स्वरूप जो कि पिछली शताब्दी में विकसित हुए थे, परंतु जहाज़ निर्माण, खनन, कृषि के क्षेत्रों में यह पहले की तुलना में ज्यादा बड़े स्तर पर दिखाई पड़ने लगे थे। विशेषतः उत्पादन प्रक्रियाओं जिनमें निश्चित (स्थायी) पूँजी पहले के तुलना में ज्यादा महत्वपूर्ण थी, को विकसित किया गया। उसी समय ऊर्जा की माँग में, विशेषतः पनचक्कियाँ और पवन चक्कियाँ इनमें तकनीकी सुधार लाए जा रहे थे ताकि उन्हें धुरों की घूर्णन को गति के अन्य रूप में परिवर्तित किया जा सके जो विभिन्न कार्य प्रक्रियाओं के लिए जरूरी था।

बोध प्रश्न-2

1) पंद्रहवीं शताब्दी यूरोपीय अर्थव्यवस्था की कुछ मुख्य प्रवृत्तियों को रूपांकित करें।

.....

.....

.....

2) क्या सोलहवीं शताब्दी की यूरोपीय अर्थव्यवस्था ने पंद्रहवीं शताब्दी से भिन्न प्रवृत्तियाँ प्रदर्शित की। टिप्पणी कीजिए।

.....

.....

.....

5.9 सारांश

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप यह कर पायेंगेः

- सामंतवाद से आधुनिक यूरोपीय अर्थव्यवस्था में संक्रमण के कुछ पक्षों का बोध।
- विभिन्न लेखकों ने इस संक्रमण को कैसे देखा, उसका बोध।
- पंद्रहवीं और सोलहवीं शताब्दियों ने कैसे इस संक्रमण के कुछ पहलुओं को स्पष्ट किया, उसका बोध।

5.10 शब्दावली

जनसांख्यिकी : निश्चित समय में जनंसख्या रुझानों का अध्ययन।

स्थायी या निश्चित पूँजी : एक उद्यम द्वारा मशीन इत्यादि पर पूँजी निवेश स्थायी या जिसे एक उद्योग की निश्चित या स्थायी पूँजी माना जाता हैं।

5.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) भाग 5.3 देखें।

2) भाग 5.3 देखें।

बोध प्रश्न 2

1) भाग 5.4 देखें।

2) भाग 5.5 देखें।

5.12 संदर्भ ग्रंथ

Antonio de Vittorio (ed.), *An Economic History of Europe: From Expansion to Development*, (London: Routledge, 2006).

Arvind Sinha, *Europe in Transition: From Feudalism to Industrialization*, (New Delhi: Manohar, 2011).

B. H. Slicher van Bath, *The Agrarian History of the Western Europe*, A.D. 500-1850 (London: Edward Arnold, 1963).

Carlo M. Cipolla, *Before the Industrial Revolution: European Society and Economy*, 1000-1700, 2nd ed. (London: Methuen & Co., 1981).

E. J. Hobsbawm, "*The Crisis of the 17th Century-II*," *Past and Present 6*, no. 1 (1954): 44-65.

E. J. Hobsbawm, "*The General Crisis of the European Economy in the 17th Century*," Past and Present 5, no. 1 (1954): 33-53.

Eli F. Heckscher, *Mercantilism*, Rev. 2nd ed (London: Allen & Unwin Macmillan, 1962).

Fernand Braudel, *Civilization and Capitalism*, 15th - 18th Century, 3 Vols: The Wheels of Commerce, vol. 2 (London: William Collins Sons & Co., 1984).

Fernand Braudel, *The Mediterranean and the Mediterranean World in the Age of Philip II* (London: Fontana, 1972).

Geoffrey Parker and Lesley M Smith, *The General Crisis of the Seventeenth Century*, (London: Routledge, 2005).

Gianni Vaggi and Peter D. Groenewegen, *A Concise History of Economic Thought: From Mercantilism to Monetarism*, (New York: Palgrave Macmillan, 2003).

H. R. Trevor-Roper, *The Crisis of the Seventeenth Century: Religion, the Reformation, and Social Change*, (Indianapolis: Liberty Fund, 1967).

Hermann Kellenbenz, *The Rise of the European Economy: An Economic History of Continental Europe from the Fifteenth to the Eighteenth Century*, (New York: Holmes & Meier Publishers, 1976).

Immanuel Maurice Wallerstein, *Capitalist Agriculture and the Origins of the European World-Economy in the Sixteenth Century*, vol. 1, 4 vols., The Modern World-System (Berkeley, Calif.: Univ. of California Press, 1974).

J. V. Polišenský, "*The Thirty Years' War and the Crises and Revolutions of Seventeenth-Century Europe*," Past and Present 39, no. 1 (1968): 34-43.

Jan de Vries, "*The Economic Crisis of the Seventeenth Century after Fifty Years*," Journal of Interdisciplinary History 40, no. 2 (October 2009): 151-94.

K. G. Davies, *The North Atlantic World in the Seventeenth Century, Europe and the World in the Age of Expansion*, v. 4 (Minneapolis: University of Minnesota Press, 1974).

Kenneth Pomeranz, *The Great Divergence: China, Europe, and the Making of the Modern World Economy*, The Princeton Economic History of the Western World (Princeton, N.J: Princeton University Press, 2000).

Prasannan Parthasarathi, *Why Europe Grew Rich and Asia Did Not: Global Economic Divergence*, 1600-1850 (Cambridge: Cambridge University Press, 2011).

Robert Brenner, *Merchants and Revolution: Commercial Change, Political Conflict, and London's Overseas Traders*, 1550-1653 (London: Verso, 2003).

S. R. Epstein and Maarten Prak, *Guilds, Innovation and the European Economy*, 1400-1800 (Cambridge University Press, 2008).

S. R. Epstein, *Freedom and Growth: The Rise of States and Markets in Europe*, 1300-1750 (London: Routledge, 2000).

T. H. Aston & C. H. E. Philpin (eds.), *The Brenner Debate: Agrarian Class Structure and Economic Development in Pre-Industrial Europe*, Past and Present Publications (Cambridge: Cambridge University Press, 1985).

The Cambridge Economic History of Europe, Vol. 5: *The Economic Organisation of Early Modern Europe*, (Cambridge: Cambridge University Press, 1977).

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 6 वृक्षारोपण (बागान) अर्थव्यवस्था, दास श्रम और दास व्यापार*

इकाई की रूपरेखा

6.0 उद्देश्य

6.1 प्रस्तावना

6.2 भूमध्य सागर में आरंभिक वृक्षारोपण

6.2.1 गन्ने का वृक्षारोपण

6.2.2 भूमध्य-सागरीय दासता

6.3 अटलांटिक वृक्षारोपण

6.4 अटलांटिक द्वीप समूह : आरंभिक बस्तियाँ

6.5 अमेरिका की दिशा में विस्थापन

6.5.1 विस्थापन के आर्थिक कारक

6.6 अफ्रीका से दास व्यापार और प्रारंभिक गन्ना वृक्षारोपण

6.7 अफ्रीकी अलगाव और व्याधियाँ

6.8 अफ्रीका में दासता

6.9 अटलांटिक व्यापार का प्रारंभ

6.10 गन्ना वृक्षारोपण और ब्राजील में दासता

6.11 चीनी उद्योग

6.12 ब्राजील का प्रारंभिक वृक्षारोपण समाज

6.13 अमेरिका

6.14 वेस्टइंडीज

6.15 सत्रहवीं शताब्दी की 'चीनी क्रांति'

6.16 चीनी का अर्थशास्त्र

6.17 सारांश

6.18 शब्दावली

6.19 बोध प्रश्नों के उत्तर

6.20 संदर्भ ग्रंथ

6.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप निम्नलिखित समझ सकेंगे:

- ऐतिहासिक संदर्भ, जिसमें वृक्षारोपण अर्थव्यवस्थाएँ उत्पन्न हुईं;
- वृक्षारोपण की कार्य–प्रणाली और दास श्रम के बीच की कड़ी; तथा
- प्रारंभ से ही वृक्षारोपण अर्थव्यवस्थाओं के विकास में चीनी का महत्व।

* डॉ. वी. के. सिंह, दिल्ली विश्वविद्यालय

6.1 प्रस्तावना

वृक्षारोपण अर्थव्यवस्थाएँ सोलहवीं शताब्दी के अंत और सत्रहवीं शताब्दी में अटलांटिक जगत में विकसित हुई। पश्चिम अफ्रीकी तट से बड़े पैमाने पर दासों के आयात से निर्मित श्रम शक्ति की मदद से बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण और खेतों की स्थापना नई दुनिया और कैरेबियन द्वीपों में प्रारंभिक औपनिवेशिक आर्थिक निवेश की विशेषता थी।

पश्चिमी सभ्यता की संरचनाओं में कृषि प्रबंधन संरचना के रूप में वृक्षारोपण और श्रम को संगठित करन वाली संस्था के रूप में दासता, दोनों का एक लंबा इतिहास रहा है। ग्रीक-रोमनकाल से ही यूरोपीय दुनिया में दासता का उल्लेख मिलता है, जब दास श्रम पर ही प्रारंभिक सभ्यता के भौतिक आधार का संयोजन किया गया था। पूर्वी यूरोप और भूमध्य सागरीय क्षेत्र इस्लामी दुनिया में सैन्य-दासों के व्यापार से परिचित थे। इसी तरह, यूरोप के लोग पश्चिम एशिया में ईसाई और मुसलमानों के बीच चल रहे धार्मिक युद्धों के दौरान 'वृक्षारोपण संगठन' खास कर गन्ने जैसे श्रम प्रधान फसलों की वृक्षारोपण के संपर्क में आए। विनिमय की एक वस्तु के रूप में चीनी का प्राचीन और मध्ययुगीन यूरोप में ज्यादा उल्लेख नहीं है, हालांकि, तेरहवीं शताब्दी के धार्मिक युद्धों के बाद की अवधि में यह कुलीन यूरोपीय वर्ग की मीठी तृष्णा को संतुष्ट करने वाली प्राथमिक वस्तुओं में से एक के रूप में उभरी। अब तक शहद यूरोपीय व्यंजनों में इस्तेमाल होने वाली मिठास का प्राथमिक स्रोत रहा था, जिसे सत्रहवीं शताब्दी के अंत तक चीनी द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया गया। गन्ने के अलावा तंबाकू नई दुनिया से आयात होने वाला अन्य प्रमुख वस्तु बन गया।

इन आयातित उत्पादों की मात्रा और वृक्षारोपण की उन माँगों ने, जो दासों के रूप में श्रमिकों के रूप में उत्पन्न की, स्पेन और पुर्तगाल के प्रारंभिक उपनिवेशी साम्राज्यों के बीच वाणिज्यिक प्रतिद्वंद्विता को बढ़ावा दिया। अंततः सत्रहवीं शताब्दी के मध्य तक ब्रिटेन, डच और फ्रांसीसी के रूप में नए प्रवेशकों द्वारा प्रभुत्व को कड़ी चुनौती दी गई, जिनमें से सभी ने औपनिवेशिक वृक्षारोपण में भारी निवेश किया और अपने हितों की रक्षा के लिए उपनिवेशों के साथ-साथ अपने निवेशों की रक्षा के लिए नौ सेना और सैन्य संरचनाओं का निर्माण किया।

6.2 भूमध्यसागर में आरंभिक वृक्षारोपण

जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, कृषि प्रबंधन के तंत्र के रूप में वृक्षारोपण परिसरों के साथ यूरोप के जुड़ाव की शुरुआत पश्चिम एशिया में ईसाई-मुसलमानों के प्रारंभिक धर्मयुद्धों की अवधि के दौरान ऐसे ही तंत्र से पश्चिम एशिया में सामना से हुआ। इस्लाम के उदय और दक्षिण एशिया से मध्य एशिया व वहाँ से उत्तरी अफ्रीकी तट और इबेरियन प्रायद्वीप तक लोगों और सेनाओं की आवाजाही से बड़े पैमाने पर वनस्पतियों और जीवों का भी स्थानांतरण हुआ। उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों से फसलों की एक श्रृंखला भूमध्यसागरीय दुनिया में आईं, जिसमें चावल (मूलतः दक्षिण-पूर्व एशिया का यह फसल दक्षिण एशिया में उगाने के कारण सदियों के संशोधन के बाद यूरोप पहुंचा), नारियल, खट्टे संतरे, नींबू, गन्ना, केले और शायद आम भी शामिल थे। समय के साथ इनमें से कई दक्षिणी यूरोप तक पहुंच गए और साइप्रस, इटली, स्पेन, पुर्तगाल में पंद्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी से उगाए जा रहे थे।

6.2.1 गन्ने का वृक्षारोपण

भूमध्यसागर में गन्ने के वृक्षारोपण में बढ़ोत्तरी चीनी व्यापार में इतालवी व्यापारियों के बढ़ते निवेश और प्रारंभिक ईसाई-मुसलमान धार्मिक लड़ाकुओं, जिन्होंने वृक्षारोपण संगठन को जाना और यूरोपीय खेतों में इसकी नकल की, के कारण हुआ।

एक फसल के रूप में गन्ने की वृक्षारोपण करने और देखभाल के लिए भारी मानव श्रम की आवश्यकता होती है, साथ ही गन्ने का पौधा बहुत भारी होता है, इसलिए इसे लंबी दूरी तक नहीं ले जाया जा सकता है। परिणामस्वरूप, गन्ना कृषि में किसी भी निवेश को गन्ने से चीनी निकालने के लिए सहायक बुनियादी ढाँचे के निर्माण की आवश्यकता होगी। एक बार गन्ने की पेराई होने के बाद फसल की तुलना में चीनी का उच्च मूल्य होता है। नतीजतन, चीनी लंबी दूरी के परिवहन के लिए आदर्श थी, खासकर जलमार्ग द्वारा। प्रारंभिक आधुनिक शताब्दियों के दौरान मुख्य रूप से मध्यम पूँजीपति वर्गों के उभरने के साथ नए बाजारों के उद्‌भव के कारण मीठा करने के लिए चीनी की माँग में कई गुना वृद्धि हुई, जो अभी तक यूरोपीय समाजों में कुलीन वर्गों द्वारा सीमित उत्पादों के क्रय का साधन रहे थे। यूरोपीय बाजारों की मूल्य क्रांति ने माँग में वृद्धि के साथ-साथ वस्तु के रूप में चीनी में निवेश की लाभप्रदता बढ़ाने में सहायता की।

यूरोपीय बाजारों के लिए चीनी उत्पादन बढ़ाने का पहला प्रयास पूर्वी भूमध्यसागर के टायर के आसपास के क्षेत्र में धर्मयुद्ध के लड़ाकुओं द्वारा किया गया था, जिन्होंने 1123 सी.ई. में शहर पर कब्जा कर लिया था। वेनिस के व्यापारियों, जिन्होंने समुद्री रास्तों पर माल और वस्तुओं की आवाजाही की सुविधा के जरिए ईसाई सेनाओं की मदद की, उन्होंने शहर के आसपास के क्षेत्रों में मौजूदा गन्ने के वृक्षारोपण का उपयोग किया। इन प्रारंभिक खेतों की लाभप्रदता और व्यवहार्यता स्थानीय चीनी निष्कर्षण तकनीकों को अपनाने का परिणाम थी, साथ ही यह एजियन और भूमध्यसागर के पार इतालवी और यूरोपीय बाजारों तक चीनी के निरंतर परिवहन को सुनिश्चित कर एक व्यवहार्य बाजार प्रदान करने का परिणाम थी। इसी अवधि में आसपास के क्षेत्र में इसी तरह के गन्ना बागान उभरने लगे। इस प्रकार, हम पाते हैं कि यरूशलेम के राजा बाल्डविन II (1118-1131 सी.ई.) अक्रे शहर के आसपास के क्षेत्र में गन्ने के खेतों में व्यक्तिगत रूप से निवेश करते थे। ट्यूटोनिक नाईट और नाईट टेम्पलर जैसे धार्मिक लड़ाकुओं के समूहों का उत्तरी लेबनान में शहर त्रिपोली के आसपास के गन्ने के खेतों पर स्वामित्व था और वे उसमें निवेश करते थे।

तेरहवीं शताब्दी तक लेबनान के आसपास के गन्ने के खेत वृक्षारोपण के प्राथमिक स्रोत और यूरोप में चीनी आयात के स्रोत रहे। इस क्षेत्र में नॉर्मन से बसे लोगों द्वारा सिसिली में यूरोपीय भूमध्य सागरीय क्षेत्र में चीनी उत्पादन की नकल करने का प्रयास किया गया था। हालांकि तकनीकी पिछड़ेपन और अनातोलियन और पश्चिम एशियाई उत्पादन केंद्रों से कड़ी प्रतिस्पर्धा के कारण उद्योग को शुरू में झटका लगा। हालांकि, पंद्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में एशियाई प्रौद्योगिकी के आत्मसात करने के साथ सिसिली यूरोप में चीनी उत्पादन और आपूर्ति के मुख्य केंद्रों में से एक के रूप में उभरा और पश्चिमी भूमध्यसागर और पूरे अटलांटिक में गन्ना वृक्षारोपणों (बागानों) के संचरण का एक महत्वपूर्ण केंद्र बना।

साइप्रस भी तेरहवीं शताब्दी से लेकर पंद्रहवीं शताब्दी के अंत तक पूर्वी भूमध्यसागर में प्रमुख चीनी उत्पादन केंद्रों में से एक के रूप में रहा। साइप्रस दूसरे ईसाई-मुसलमान धर्मयुद्ध के दौरान यूरोपीय नियंत्रण में आ गया और अंततः 1498 में वेनिस के नियंत्रण में आ गया। कृषि भूमि की वृक्षारोपण शैली प्रबंधन को अन्य इतालवी शहरों के प्रमुख व्यापारिक परिवारों और बैंकरों से भी समर्थन मिला, जिन्हें धर्मयुद्ध सेना के समर्थन के परिणामस्वरूप इन उपजाऊ क्षेत्रों तक पहुंच प्रदान की गई थी। साइप्रस में हम वेनिस के कोरनारोस और स्पेन के कैटेलोनिया सेफेर्र परिवारों की उपस्थिति पाते हैं। अन्य चीनी वृक्षारोपण (बागान) चर्च और विशेष रूप से अस्पताल मालिकों के थे।

बोध प्रश्न-1

1) भूमध्यसागर के प्रारंभिक वृक्षारोपण अर्थव्यवस्थाओं पर चर्चा करें।

.....

.....

.....

2) प्रारंभिक आधुनिक काल में चीनी को प्रमुखता कब मिली?

.....

.....

.....

6.2.2 भूमध्यसागरीय दासता

गन्ने की खेती के लिए वृक्षारोपण (बागान) संरचना के विस्तार के साथ-साथ जो एक दिलचस्प विकास हुआ, वह एशियाई और अफ्रीकी भूमध्यसागर में दास-श्रम का उपयोग था। यूरोप के विपरीत, दासता इस्लामी क्षेत्रों में पनपती रही, खासकर सैन्य दासों या श्रम-प्रधान कृषि संगठनों में दासों का उपयोग किया जाता था। भले ही इन वृक्षारोपणों (बागानों) में अधिकांश श्रमिक दास नहीं थे, लेकिन भूमध्यसागरीय दुनिया में वृक्षारोपण में श्रम की कमी को पूरा करने के लिए दास श्रम एक महत्वपूर्ण पूरक के रूप में उभर रहा था।

अठारहवीं शताब्दी तक दासता भूमध्यसागरीय आर्थिक जीवन का एक छोटा पहलू रहा। 1204 सी. ई. तक, जब धर्मयुद्ध लड़ाकू सेनाओं ने कुस्तुंतुनिया पर कब्जा कर लिया, उसके बाद अधिकांश दास व्यापार का मूल उद्भव दक्षिणी भूमध्यसागर था। कुस्तुंतुनिया की विजय के बाद लगभग 1266 सी. ई. तक दास कब्जा वाले क्षेत्र पूर्व की ओर काले सागर की तरफ स्थानांतरित हो गए, जहाँ इतालवी व्यापारियों द्वारा इसके लिए व्यापारिक बंदरगाह स्थापित किए गए थे। दास व्यापार चौदहवीं शताब्दी तक चला, उस समय तक दासों के स्रोतों ने भौगोलिक रूप से बहुत विविधता हासिल कर ली थी। तातार, मंगोल, रूसी और यूक्रेनियन दास व्यापार में शामिल हो गए। हालांकि इन दासों की केवल एक छोटी संख्या को ही वृक्षारोपण में लाया गया। इसलिए, भूमध्यसागर के इस प्रारंभिक दास व्यापार ने दासों के नस्ल, मूल और धर्म के आधार पर किसी तरह का भेद नहीं किया या भेद किया भी तो बहुत कम। अफ्रीकी दास इस प्रारंभिक विनिमय का हिस्सा नहीं थे, जो मुख्य रूप से पूर्वी यूरोप और पश्चिम एवं मध्य एशियाई क्षेत्रों से आए थे।

लगभग चौदहवीं शताब्दी तक अफ्रीकी दास भूमध्यसागरीय दास बाजारों में दिखने लगे। इन प्रारंभिक दासों में कई सहारा क्षेत्र से उत्तरी अफ्रीकी बाजारों में लाए गए थे और फिर यूरोप में बेच दिए गए। धीरे-धीरे भूमध्यसागरीय दास व्यापार में पूर्वी अफ्रीका के नील नदी घाटी, मध्य सूडान, ट्यूनीशिया और लीबिया जैसे अफ्रीका के विभिन्न क्षेत्रों से दासों को शामिल किया जाने लगा।

पंद्रहवीं शताब्दी के मध्य के दशकों तक अफ्रीकी दासों की स्थिति में तेजी से बदलाव आया। ऑटोमन तुर्कों द्वारा कुस्तुंतुनिया पर कब्जा करने से वेनिस के व्यापारियों के लिए काले सागर के बंदरगाह और पूर्वी दास खरीद क्षेत्रों के मार्ग बंद हो गए। लगभग उसी समय पुर्तगाली नाविकों ने पश्चिमी अफ्रीका के तटीय क्षेत्रों की खोज की और उस क्षेत्र के दास बाजारों का लाभ लेने लगे। अगली शताब्दी में लागोस और लिस्बन यूरोपीय और भूमध्यसागरीय बाजारों में दास खरीद के एक प्रमुख केंद्र के रूप में उभरे।

हालांकि, अटलांटिक दास श्रम बाजार की खोज के साथ यह अर्थपूर्ण हो गया कि वृक्षारोपण खरीद के स्रोतों के करीब हों। उसे कैरेबियन और अमेरिका की मुख्य भूमि में बस्तियों की स्थापना से सहायता मिली। गन्ने के वृक्षारोपण के अलावा तम्बाकू और कॉफी अन्य फसलें थीं, जिनकी वृक्षारोपण (बागान) संरचनाओं के अंतर्गत की जाने लगी। कृषि के अलावा दक्षिणी अमेरिका और मैक्सिको में तांबे और चाँदी की खदानों ने भी दास श्रम को आकर्षित किया।

6.3 अटलांटिक वृक्षारोपण

प्रारंभिक अटलांटिक वृक्षारोपण सत्रहवीं शताब्दी में ब्राजील में और अठारहवीं शताब्दी में बारबाडोस के कैरेबियन द्वीप समूह, जमैका, सेंट डोमिंग्यू (हाइती) में स्थापित किए गए थे। इनमें से कई प्रारंभिक वृक्षारोपण एक अच्छी राजनीतिक, प्रशासनिक और सामाजिक संरचना के साथ धीरे-धीरे पूर्ण विकसित कृषि बस्तियों में बदल गए। मोटे तौर पर दास श्रम पर निर्भर ये वृक्षारोपण (बागान) शुरू में एक पूरक के रूप में यूरोपीय बाजारों में सेवा देने के लिए आए थे और बाद में प्रमुख कृषि उत्पाद और खाद्यान्न के मुख्य आपूर्तिकर्ता बन गए।

फिलिप डी. कर्टिन के अनुसार, इन प्रारंभिक वृक्षारोपण बस्तियों का विश्लेषण करते समय कुछ सामान्य विशेषताओं को देखा जा सकता है।

1) इन समाजों में सबसे पहला और सबसे महत्वपूर्ण उत्पादक श्रम शक्ति दास श्रमिक हैं।

2) दूसरे, इन बस्तियों की जनसंख्या आत्मनिर्भर नहीं थी और यह अफ्रीकी दासों और यूरोपीय बसने वाले दोनों के लिए सही था। इन उपनिवेशों में मृत्यु दर अधिक थी और अफ्रीकी और गैर-अफ्रीकी दोनों की जनसांख्यिकी को सुनिश्चित करने के लिए यूरोप से नियमित रूप से अप्रवासन या अफ्रीका से दासों का प्रवाह बनाए रखना आवश्यक था। जन्म दर की अपेक्षा उच्च मृत्यु दर उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक अटलांटिक उपनिवेशों के सामाजिक जीवन में एक स्थिर कारक बनी रही।

3) तीसरा, कृषि उद्यम बड़े पैमाने पर वृक्षारोपणों (बागानों) द्वारा आयोजित किया गया था। आमतौर पर, इन वृक्षारोपणों (बागानों) के एक ही खेत में लगभग 50 से 100 श्रमिक थे, जो यूरोपीय स्थानों की तुलना में बड़े थे। वृक्षारोपण (बागान) के मालिक अपने एजेंटों की सहायता से उत्पादन के सभी चरणों को नियंत्रित और प्रबंधित करते थे। खेत में ही दैनिक जीवन के लगभग सभी पहलू होते थे, चाहे वह परिवार हो या उत्पादन से संबंधित और इन सबको मालिक द्वारा स्वयं संगठित और विनियमित किया जाता था। यह यूरोपीय खेतों की तुलना में बहुत अलग था।

4) चौथा, हालांकि पूँजीवादी प्रकृति वाले इन खेतों की कुछ सामंती विशेषताएँ हैं। जैसे कि दासों के स्वामित्व और कुछ अधिकार जो कानूनी रूप से परिभाषित और क्रियान्वयन योग्य थे। मालिक के एजेंट आमतौर पर कानून और व्यवस्था के लागू करवाने के लिए एजेंट के रूप में काम करते थे और अधिकांश विवाद स्थानीय रूप से हल किए जाते थे और उच्च नियामक अधिकारियों तक नहीं जाते थे।

5) पाँचवां, चीनी, कॉफी और कपास जैसे विशेष उत्पादों को दूर के बाजारों में आपूर्ति करने के लिए वृक्षारोपण (बागान) बनाए गए थे। चूंकि वृक्षारोपण (बागान) की सफलता उपज का निर्यात करने की सफलता में थी, इसलिए कई बार अधिकांश उपज का निर्यात किया जाता था और स्थानीय आबादी को खिलाने के लिए बहुत कम खाद्यान्न बचता था। इसलिए इनमें से अधिकांश बागान लंबी दूरी के व्यापारियों द्वारा उपलब्ध कराए गए खाद्यान्न, खाद्य सामग्री और दासों की आपूर्ति पर निर्भर थे। यूरोपीय या अफ्रीकी अर्थव्यवस्थाओं का कोई भी वर्ग इतना निर्यात उन्मुख नहीं था जितना की वृक्षारोपण (बागान) थे।

6. इन उपनिवेशों पर राजनीतिक नियंत्रण विशाल महासागरों के पार और दूर के देशों व समाजों के हाथों में था, जो अमेरिका और कैरेबियन के उपनिवेशों की तुलना में रचना और प्रकृति में बहुत अलग थे। उपनिवेशों से दासों और चीनी जैसे वस्तुओं के व्यापार और प्रवाह पर नियंत्रण की प्रतिद्वंद्विता के परिणामस्वरूप, उपनिवेशों पर गृह देश के राजनीतिक नियंत्रण की प्रकृति स्वाभाविक रूप से विखंडित थी और तनाव की आशंका तक पहुंच गई। पुर्तगाल, स्पेन, इंग्लैंड, फ्रांस, नीदरलैंड जैसे कुछ प्रमुख यूरोपीय देश अटलांटिक के परे वाणिज्य और नियंत्रण में सक्रिय रूप से भाग लेने लगे।

वृक्षारोपण (बागान) की गतिविधियों और बस्तियों के पश्चिम में अटलांटिक क्षेत्र में चले जाने के बाद वे एक अलग रूप और आकार में विकसित हुए। भूमध्यसागरीय आर्थिक क्षेत्र की सीमा पर छोटी बस्तियों से, जो दास श्रमिकों पर निर्भर थी, वे जटिल नियंत्रण और प्रबंधकीय संरचनाओं के साथ दास श्रमिकों पर निर्भर विशालकाय बस्तियों के रूप में विकसित हुए। चूंकि अटलांटिक क्षेत्र में मृत्यु दर उच्च बनी हुई थी, इसलिए दास कार्यबल का उच्च संकेन्द्रण केवल पश्चिमी अफ्रीकी तट से दासों के निरंतर प्रवाह के माध्यम से बनाए रखा जा सकता था। इससे बदले में लाभप्रद अटलांटिक परे के दास व्यापार में वृद्धि हुई जो यूरोपीय शक्तियों द्वारा प्रबंधित और नियंत्रित था और पश्चिमी यूरोपीय शक्तियाँ, जिन्होंने इसके लिए संघर्ष किया, वे अंततः प्रारंभिक आधुनिक वाणिज्यिक दुनिया को एक आकार देती हैं जिस पर पश्चिमी यूरोप की शाही और औपनिवेशिक शक्तियों का वर्चस्व था।

6.4 अटलांटिक द्वीप समूह : आरंभिक बस्तियाँ

जैसा कि यूरोपीय लोगों ने अटलांटिक में गहन जोखिम उठाकर अंदर जाने की प्रौद्योगिकी विकसित की, वे पश्चिमी यूरोप और अफ्रीका के तट से पूर्वी अटलांटिक में कुछ द्वीपों में प्रारंभिक संपर्क उपनिवेशों की स्थापना के लिए आये। उन्हें अलग-अलग उद्देश्यों के लिए विकसित किया गया था। कुछ के जलवायु यूरोप के समान थे, वे आगे पश्चिम की ओर बढ़ने के लिए व्यापारिक चौकी व जगह के तौर पर विकसित की गई थी, जबकि अन्य उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में गन्ना वृक्षारोपण (बागान) के लिए विकसित की गई और अटलांटिक क्षेत्र में प्रारंभिक दास बस्तियों की स्थापना देखी गई। इसके अलावा, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि अफ्रीकी तटीय क्षेत्र के साथ भूमध्य रेखा के करीब के कई द्वीप ज्वालामुखी प्रकृति के थे और उष्णकटिबंधीय स्थान के कारण उनकी मुख्य भूमि अफ्रीका की तुलना में वहाँ की जलवायु अधिक आर्द्र थी।

1427 सी. ई. और 1431 सी. ई. के बीच खोजे गए निर्जन अजोरेस की यूरोप की मुख्य भूमि जलवायु से समानताएँ थी और इसलिए वे वृक्षारोपण के उद्देश्य के लिए उपयुक्त नहीं थी। वे पश्चिम में आगे बढ़ने के लिए मंच के रूप में बसाई गई थी। दो मुख्य द्वीपों को मिलाकर बना मेडीरा छोटे टापुओं के एक समूह से घिरा हुआ था और अटलांटिक के प्रारंभिक वृक्षारोपण (बागान) बस्तियों में एक था। समूह का सबसे बड़ा द्वीप मेडीरा और उसके पड़ोसियों में से एक पोर्टो सैंटो में गन्ने के वृक्षारोपण के लिए उपयुक्त जलवायु थी। 1420 सी. ई. के आसपास यहाँ पुर्तगाली बस्ती स्थापित करने का प्रयास किया गया था और ठीक उसी समय नाविक पश्चिम अफ्रीकी तट के साथ दक्षिण की ओर बढ़ रहे थे। लगभग 250 मील दक्षिण में कैनरी द्वीप समूह थे, जो गन्ने के वृक्षारोपण के लिए भी विकसित किए गए थे, हालांकि वहाँ की बीहड़ स्थलाकृति ने वृक्षारोपण को मुश्किल बना दिया था। इन द्वीपों को प्राप्त करने के लिए पुर्तगाल और स्पेन के बीच कड़ी टक्कर हुई और 1480 सी.ई. के आसपास इस पर स्पेन का पूर्ण नियंत्रण स्थापित हो गया। उसके आगे दक्षिण में सेनेगल नदी के मुहाने के सामने केप वर्डे द्वीप समूह हैं। काफी शुष्क और गर्म इस द्वीप का प्रयोग पुर्तगाली मुख्य रूप से अपने अफ्रीका व्यापार के प्रबंधन, मुख्य रूप से दास व सोने के लिए एक अपतटीय आधार के रूप में करते थे। उससे आगे दक्षिण में गियाना की खाड़ी में साओ

टोम, फर्नांडो पो, प्रिंसिप और एनोबोन के द्वीप हैं। 1471 सी. ई. और 1472 सी. ई. के बीच पुर्तगालियों द्वारा सभी चार द्वीपों की खोज और उस पर आधिपत्य स्थापित किया गया था। इनमें से केवल साओ टोम और फर्नांडो पो का ही कुछ आर्थिक महत्व था। साओ टोम, एक निर्जन द्वीप को गन्ने के वृक्षारोपण के एक प्रमुख स्थान के रूप में विकसित किया गया, जबकि फर्नांडो पो पर अफ्रीकी जनजातियाँ बसी थी, जिन्हें इन प्रारंभिक अटलांटिक वृक्षारोपण में काम करने के लिए श्रम स्रोत, संभवतः दास के रूप में प्रयोग किया गया था।

जैसे ही यूरोपीय बस्तियाँ अटलांटिक में आगे बढ़ी, निवेश के तरीकों और वृक्षारोपण (बागान) के संगठन में तेजी से बदलाव और परिवर्तन हुए। अटलांटिक के द्वीपों में यूरोपीय बस्तियों का स्थानीय आबादी पर एक भयावह प्रभाव भी पड़ा और स्थानीय निवासी यूरोपीय लोगों से लड़ाई के कारण और बीमारी से तेजी से मरने लगे, क्योंकि यूरोपीय लोगों में बीमारियों से लड़ने की प्राकृतिक प्रतिरोधक क्षमता नहीं थी। इन प्रारंभिक यात्राओं में से अधिकांश लिस्बन और स्पेन में शाही परिवारों द्वारा वित्तपोषित और समर्थित थीं, जबकि इन प्रारंभिक यात्राओं में भाग लेने वाले लगभग सभी इतालवी थे। बहुत से वित्तीय निवेश इतालवी राज्यों जेनोआ और लोरेंस के बैंकिंग परिवारों से भी आए थे।

मेडीरा में लगभग 1455 सी.ई. में गन्ने का वृक्षारोपण (बागान) स्थापित किया गया था, जबकि वृक्षारोपण और चीनी निकालने का काम अलग-अलग किया जाता रहा। चीनी मिल प्रतिष्ठानों को जेनोआ जैसे शहरों के इतालवी व्यापारी बैंकर द्वारा वित्तपोषित किया जाता रहा और सिसिली के तकनीशियनों द्वारा प्रबंधित किया जाता रहा। मेडीरा से एंटवर्प तक चीनी की प्रत्यक्ष आपूर्ति 1472 सी. ई. के आसपास शुरू हुई और 1480 सी. ई. तक सालाना लगभग 70 जहाज द्वीप से व्यापार कर रहे थे। उत्पादन 1455 सी. ई. में लगभग 73 मीट्रिक टन से बढ़कर 1493 सी. ई. में लगभग 760 मीट्रिक टन और 1570 सी. ई. तक 2400 मीट्रिक टन हो गया। 1500 सी. ई. तक मडीरा चीनी उत्तरी यूरोपीय बाजार में हावी हो गई और भूमध्यसागरीय के प्रारंभिक गन्ने के वृक्षारोपण (बागानों) के स्थानों के नजदीक जेनोवा और इस्तांबुल में भी बेची गई। स्पेन द्वारा कैनरी को समान तरीके से विकसित किया गया था और जेनोआ के व्यापारियों और जर्मन पूँजी द्वारा इसकी मदद की गई थी।

साओ टोम की दिशा में गति अटलांटिक के औपनिवेशीकरण का अगला चरण था। उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में समृद्ध ज्वालामुखीय मिट्टी के साथ स्थित होने और कांगो घाटी के दास खरीद क्षेत्र के करीब होने के कारण इस द्वीप ने दास बागानों के उत्कर्ष के लिए आदर्श स्थिति प्रदान की, जो आने वाले दशकों और शताब्दियों में अटलांटिक परिदृश्य को बदल देगा। द्वीप पर चीनी का उत्पादन 1500 सी. ई. के बाद बढ़ना शुरू हुआ और 1544 सी. ई. तक लगभग 2,250 मीट्रिक टन तक पहुंच गया। हालांकि, बाद के दशकों में अंगोला के दासों द्वारा विद्रोह के कारण जिन्होंने क्षेत्र की बीहड़ता का फायदा उठाया, क्षेत्र में प्रतिष्ठानों के लिए उत्पन्न सुरक्षा समस्याओं के कारण द्वीप में उत्पादन की लागत में काफी बढ़ गई। मुख्य भूमि से द्वीप की दूरी और सुरक्षा मुद्दों के कारण निवेश करना कठिन हो गया और आने वाले वर्षों में उत्पादन लगातार गिरता गया। इसके अलावा, ब्राजील में वृक्षारोपण (बागानों) के विस्तार ने द्वीप पर गन्ना रोपने वाले व्यापारियों को व्यापार से बाहर कर दिया।

6.5 अमेरिका की दिशा में विस्थापन

अमेरिका में वृक्षारोपण (बागान) की गति ने पूरे अटलांटिक में उत्पादन और आपूर्ति दोनों के संगठन के तरीके में भारी बदलाव ला दिया। जबकि यूरोपीय देशों या पूर्वी अटलांटिक में संगठन को बैंकरों और व्यक्तिगत बागान मालिकों द्वारा वित्तपोषित किया गया था, जो एक देश या अन्य के झंडे के नीचे अपने व्यक्तिगत लाभ को अधिकतम करने की भावना से काम करते थे; अमेरिका में इस संगठन को एक प्रतिस्पर्धी वाणिज्यवादी प्रतिद्वंद्विता द्वारा एकात्मक

राष्ट्रवादी उद्यमों में बदल दिया गया था। यहाँ व्यापार का संगठन एक राष्ट्रीय एकाधिकार बन गया, जिसको सुरक्षित रखना था और जिसके लिए लड़ना था। उपज का विनिमय और बाजारों के संजाल, सभी राष्ट्रीय व्यापारिक हितों के अधीन हो गए। सोलहवीं और सत्रहवीं सदी के अटलांटिक का इतिहास पुर्तगाली और अन्य उत्तरी यूरोपीय शक्तियों के साथ स्पेन के संघर्ष के साथ-साथ ब्रिटेन और फ्रांसीसी व डच राज्यों और वाणिज्यिक एजेंटों व एजेंसियों के बीच संघर्ष से जुड़ा है।

पंद्रहवीं शताब्दी के अंत तक स्पेन और पुर्तगाल, दोनों कैनरी और मडीरा में प्रारंभिक वृक्षारोपण (बागान) बस्तियों से आगे बढ़ने लगे। स्पेनिश उद्योग कैरेबियन सेंटो डोमिंगो या हिसपनिओला द्वीप पर जाने लगा। यहाँ चीनी से सबसे पहला परिचय 1493 में कोलंबस द्वारा कराया गया था, जो सफल नहीं हुआ था। इसके बाद स्पेनवासियों ने 1503 सी. ई. में कैनरी के तकनीशियनों की सहायता से गन्ने को फिर से लगाया, जो फिर से विफल हो गया। हालांकि, इस बार असफलता का कारण प्रौद्योगिकी का अभाव नहीं, बल्कि श्रम शक्ति की कमी थी। यूरोप के लोगों द्वारा इन द्वीपों पर लाई गई बीमारियों के संपर्क में आने के बाद अधिकांश अरावाक इंडियन लोगों की मृत्यु हो गई। कैनरी के दोनों जमींदारों, तकनीशियनों और श्रमिकों द्वारा 1517 सी. ई. में एक नया प्रयास किया गया था। इस बार कुछ प्रारंभिक सफलता मिली और उत्पादन 1570 सी. ई. से पहले लगभग 1,000 मीट्रिक टन तक बढ़ गया। हालांकि, स्पेनिश सरकार के उदासीन रवैये के कारण, जो पेरू के उच्च क्षेत्रों और मेक्सिको में चाँदी की खानों और ऐसे ही उद्योगों की स्थापना में अधिक रुचि रखती थी, उत्पादन में गिरावट आई और लंबे समय तक सेंटो डोमिंगो उत्पादन अटलांटिक में अन्य प्रतिस्पर्धी उत्पादन और बाजार के मुकाबले गौण ही बना रहा। अठारहवीं शताब्दी में फ्रांसीसी कब्जे के बाद ही, जब सेंटो डोमिंगो अटलांटिक में सबसे बेशकीमती चीनी उपनिवेशों में से एक के रूप में उभरा।

ब्राजील में पुर्तगाली बस्तियों ने पूरी तरह से अलग रूप और प्रक्षेप पथ अपनाया। कैरेबियन द्वीपों की तुलना में अफ्रीकी तट के बहुत करीब ब्राजील के गन्ना कैरेबियन कम अवधि में सच्चे दास बागानों के रूप में उभरे। अटलांटिक में पुर्तगाली वर्चस्व और दास व्यापार के वास्तविक एकाधिकार ने ब्राजील में बागानों के लिए श्रम की निरंतर आपूर्ति को सुनिश्चित किया और 1540 सी. ई. से इसकी शुरुआत के कुछ ही समय के भीतर चीनी का उत्पादन साओ टोम और मेडीरा के स्तर तक बढ़ गया। 1560 सी. ई. तक यह 2,500 मीट्रिक टन था, जो 1580 सी. ई. तक बढ़कर 5,000 टन हो गया। 1600 सी. ई. तक यह आंकड़ा 16,000 टन तक पहुंच गया था और 1630 सी. ई. तक यह 20,000 टन से अधिक हो गया था। सत्रहवीं शताब्दी के बाकी दिनों में उत्पादन के आँकड़े 20,000 से 30,000 टन प्रति वर्ष के आसपास रहे। इस प्रकार सत्रहवीं शताब्दी के अंत तक ब्राजील के गन्ना कैरेबियन समकालीन कैरेबियन समकक्षों की तुलना में बहुत अधिक उत्पादन कर रहे थे।

6.5.1 विस्थापन के आर्थिक कारक

अफ्रीका से आयात किए गए दास श्रमिकों के सहयोग से मुख्य भूमि यूरोप से अनेक मील दूर गन्ना वृक्षारोपण (बागानों) की स्थापना के लिए भारी निवेश आवश्यक था और शुरुआत में बसने वाले और बागान मालिकों के इस कदम के पीछे के औचित्य को समझने की जरूरत है। इस गति और बस्तियों के पीछे के आर्थिक औचित्य को नई नौपरिवहन तकनीक की उपलब्धता, वायु और महासागरीय धाराओं के प्रारूप की नई और बेहतर समझ के साथ-साथ विशेषकर उत्तरी यूरोपीय बाजारों में चीनी के उपभोक्ता माँग में वृद्धि के संदर्भ में समझने की आवश्यकता है।

सत्रहवीं शताब्दी में उत्तरी यूरोप, विशेष रूप से इंग्लैंड और निम्न देशों के बाजारों ने सम्पदा सृजन की बेहतर परिस्थिति का अनुभव करना शुरू किया और इसके परिणामस्वरूप चीनी

के रूप में वस्तुओं की बेहतर माँग बढ़ी, जिसे अब तक विलासता के उत्पाद के रूप में देखा जाता था। मडीरा से पुर्तगाल या जेनोआ तक चीनी की नौ-परिवहन की लागत लगभग एंटवर्प के समतुल्य थी। अधिकांश मौसमों में मडीरा से पवन के रुख की ओर नीचे जिब्राल्टर है और वापसी पर एक जहाज उत्तर-पश्चिम दिशा में व्यापारिक पवन द्वारा बढ़ेगा और फिर अजोरेस से पश्चिमी पवन पूर्व की ओर से यूरोप की यात्रा को सरल और आसान बना देती थी। सोलहवीं शताब्दी में नौ परिवहन तकनीक में लगातार सुधार हुआ और इन महासागरों की यात्रा संभव हुई। निम्न तटीय देशों के जहाजों ने विशेष रूप से थोक माल की खेपों के हस्तांतरण में मदद दी।

चीनी उद्योग का प्रवासन भी ''नये सिरे से शुरू होने के लाभ'' से लाभान्वित हुआ। जब उद्योग को पहली बार एक नई जगह पर स्थापित किया गया था तो मिल के आकार ने मिल के लाभप्रद संचालन के लिए साफ की जानो वाली भूमि के उस परिमाण को नियंत्रित किया जिसका उपयोग गन्ना आपूर्ति के लिए किया जाता था। एक बार निवेश हो जाने के बाद मील का आकार बदलना मुश्किल हो जाता था या कई क्षेत्रों में खेतों की जोतों के आकार में भी बदलाव करना भी कठिन था, क्योंकि खेती के लिए प्रयोग होने वाले बहुत बड़े क्षेत्र लाभदायक नहीं हो सकते थे, क्योंकि पड़ोस के मिल गन्ने को प्रभावी ढंग से संसाधित करने में सक्षम नहीं थे। जब एक नए द्वीप को साफ किया गया था तो बसने वालों को यह निश्चय करने का लाभ था कि खेती के लिए कितना क्षेत्र उपलब्ध है और भूमि की उत्पादन क्षमता का लाभ उठाने के लिए संसाधन करने वाली मिल का आकार कितना बड़ा होना चाहिए।

6.6 अफ्रीका से दास व्यापार और गन्ना वृक्षारोपण

सोलहवीं से अठारहवीं शताब्दी के दौरान पश्चिमी विस्तार और आर्थिक उन्नति अफ्रीका से लाए गए दास श्रमिकों की बदौलत हासिल हुई। अटलांटिक दुनिया के बागानों में अफ्रीकी दास श्रमिकों के लाभदायक रोजगार ने अटलांटिक महासागर के पार दासों के व्यापार और विनिमय का को जन्म दिया था, जो पुर्तगालियों और अन्य यूरोपीय शक्तियों के सामुद्रिक साम्राज्यों द्वारा नियंत्रित था। समयांतर में इस व्यापार ने रूप और दायरे में काफी जटिलता प्राप्त की और इस कारोबार में अन्य यूरोपीय शक्तियों को आकर्षित किया। सत्रहवीं शताब्दी के दौरान डच और अंग्रेज इस व्यापार में आकर्षक प्रतिभागियों के रूप में उभरे।

यूरोपीय आर्थिक दुनिया में अफ्रीकी हमेशा दास के रूप में वांछित नहीं थे। वास्तव में, दास '(slave)' शब्द की जड़ 'स्लाव' में है, जो शाब्दिक रूप से पूर्वी यूरोपीय और बाल्टिक वंश-परम्परा के व्यक्ति की बात करता है। रोमन साम्राज्य के दौरान दासों को मुख्य रूप से पूर्वी क्षेत्रों और उत्तरी जर्मनिक जनजातियों से खरीदा गया था। ऑटोमन विजय के बाद पूर्वी मार्ग के बंद होने के बाद ही, जैसा कि पहले चर्चा की गई थी, यूरोपीय बाजारों में खेतों में शारीरिक श्रम के लिए अफ्रीकी दासों की तलाश की जाने लगी। यूरोपीय विस्तार की पूर्व संध्या पर अफ्रीका कई छोटे और बड़े राज्यों में विभाजित था, जिसमें कुछ जटिल राजनीतिक संगठन, जबकि कुछ केवल अल्पविकसित नातेदारी और कबीला आधारित संगठन थे। दक्षिण सहारा क्षेत्र के कुछ राज्य व्यापार और इस्लाम की प्रेरणा से विकसित हुए, जिससे उन्हें व्यापारिक राज्यों के रूप में संगठित किया गया, कुछ दरबारों और व्यापारियों के साथ विकसित हुए, जो समय के साथ इस्लाम में परिवर्तित हो गए। ऊंटों के पालतू बनाने और अरब व्यापारियों द्वारा सहारा क्षेत्र में इसके उपयोग ने इन अफ्रीकी व्यापारियों को अब आसानी से रेगिस्तानी स्थानों की यात्रा करने में सक्षम बनाया, जो नौवीं शताब्दी तक दक्षिण सहारा के सीमांत क्षेत्रों और भूमध्यसागरीय दुनिया के बीच विनिमय में एक बाधा थी। इन राज्यों में सबसे प्रसिद्ध सेनेगल घाटी में तकरूर थे, नाइजर और मध्य सेनेगल के उत्तर में स्थित, सहेल (दक्षिण सहारा) में घाना, मध्य नाइजर मोड़ के पास सोंनघई और चाड झील

के पास स्थित कानेम थे। अन्य राज्य भी थे जो सहारा के व्यापारिक समुदायों के संपर्क में आने के बाद दक्षिण में विकसित हुए, जैसे कि ऊपरी नाइजर घाटी में स्थित माली। शहर-राज्यों का एक और समुच्चय वर्तमान नाइजीरिया के क्षेत्र में उभरा, जहाँ हौसा भाषा थी और आज भी बोली जाती है, जबकि अन्य खुले सवाना और उष्णकटिबंधीय वर्षा वन के बीच के क्षेत्र में विकसित हुए थे। वर्तमान में पश्चिमी नाइजीरिया का राज्य ओयो और बेनिन का राज्य, जो उष्णकटिबंधीय वर्षा वन में स्थित है और उनकी इस क्षेत्र में संकरी खाड़ियों और छोटी नदियों के माध्यम से समुद्र तक पहुंच थी, सोलहवीं शताब्दी की शुरुआत में पश्चिमी और मध्य अफ्रीका में राजनीतिक विविधता और जटिलता के कुछ उदाहरण हैं ।

हालांकि, उप-सहारा अफ्रीका का अधिकांश हिस्सा औपचारिक अर्थों में राज्यों में संगठित नहीं था और राज्यविहीन समाजों के रूप में नातेदारी और कबीले के आधार पर संगठित था। अफ्रीकी तट पर पुर्तगालियों के आने से पहले पश्चिमी अफ्रीका परस्पर जुड़े व्यापारिक प्रवासियों द्वारा संगठित किया गया था, जिसमें समान जातीय समूह के लोग विनिमय की सुविधा के लिए दूरी पर बसे थे। रेगिस्तान के सीमांत क्षेत्र में वस्तुओं का विनिमय दूसरे समूहों के साथ संगठित किया गया और अन्य में जातीय आधार पर वितरित किया जाता था। पंद्रहवीं शताब्दी के अंत तक इन व्यापार तंत्रों ने वर्तमान घाना के वन क्षेत्रों में सोने के भंडारों का दोहन करना शुरू कर दिया था।

जब यूरोपीय व्यापारी तट पर पहुंचे तो उन्होंने व्यापार मार्गों का एक संजाल पाया, जो उष्णकटिबंधीय अफ्रीका को पार करते थे, और विविध वस्तुओं के विनिमय की सुविधा प्रदान करते थे, जैसे कोला नट्स, शीया बटर, कई प्रकार के नमक, वस्त्र, लोहा व लोहे के उपकरण और सबसे महत्वपूर्ण दास। इन दासों में से अधिकांश युद्ध कैदी थे, जिन्हें दूर के इलाकों में बेचने के लिए जहाँ से वापस लौटना लगभग असंभव था, गुजरने वाले व्यापारियों को बेच दिया जाता था। इनमें से कुछ दासों को उत्तरी अफ्रीका के बाजारों में बेच दिया गया। हाल के अनुमानों के अनुसार, इन दासों की संख्या प्रति वर्ष न्यूनतम 500 से लेकर अधिकतम 4000 तक होगी।

6.7 अफ्रीकी अलगाव और व्याधियाँ

जैसे ही यूरोपीय लोग अफ्रीकी तट पर पहुंचे, उन्हें बीमारी का वातावरण मिला, जो उनके पक्ष में नहीं था, जैसा कि अमेरिका में हुआ था। पश्चिम अफ्रीकी बीमारी का माहौल बाहरी लोगों के लिए इस क्षेत्र के अंदरुनी भागों में जाने के लिए बहुत खतरनाक था। यहाँ तक कि मूल निवासियों को मलेरिया और अन्य संक्रामक रोगों के रूप में असंख्य चुनौतियों का सामना करना पड़ता था। गियना वर्म, ट्रिपैनोसोमियासिस (स्लीपिंग सिकनेस), ऑनकोक्रोसेसिस (रिवर ब्लाइंडनेस) और शिस्टोसोमीसिस (लीवर सूजन) से संक्रमण बेहद अधिक था। इसके अतिरिक्त चेचक, खसरा और मलेरिया जैसी सामान्य बीमारियाँ भी व्याप्त थीं। मलेरिया से गैर-प्रतिरक्षा वयस्कों के लिए मृत्यु दर, कुल संक्रमण का लगभग 75 थी। पीले बुखार की भी इसी तरह मृत्यु दर काफी थी।

6.8 अफ्रीका में दासता

अटलांटिक वृक्षारोपण (बागान) में प्रचलित दास प्रथा की प्रकृति अफ्रीकी स्थानों में प्रचलित तरीके से बहुत अलग थी। बागानों में मानवीय श्रम कार्यों के लिए दासों को खरीदा गया था और मालिकों की निरंतर निगरानी में गिरोह की तर्ज पर काम करना पड़ता था। इस तरह की दास सेवा स्पष्ट रूप से घरेलू और सैन्य दासता से बहुत अलग थी, जैसा कि उत्तरी अफ्रीका और पूर्व के इस्लामी समुदायों में थी। घरेलू पूर्व दासता में, जो कि अमेरिका में था, दास को एक अधीनस्थ के रूप में परिवार के एक हिस्से की तरह देखा जाता था, जबकि

अमेरिका में प्रचलित कृषि दासता में दासों को अपने श्रम पर स्वामित्व था और उन्हें अपने स्वामी के साथ अपनी उपज का एक हिस्सा साझा करना होता था।

हालांकि, अफ्रीका में दास प्रथा इस्लामी और आदिवासी परंपराओं के मिश्रण के रूप दिखाई पड़ती है। इस्लाम के प्रभाव में उत्तरी अफ्रीका में दास प्रथा एक संगठित सैन्य दास के रूप में, मिस्र में मुमलुक या मोरक्को के 'ब्लैक गार्ड' या 'अबिद' के रूप में दिखती है। प्रमुख सैन्य स्थिति के कारण वे शासकों और सुल्तानों को बदलने के लिए संगठन में शामिल होते थे। सहारा पार करते ही स्थिति बदल जाती है। पंद्रहवीं शताब्दी के अंत तक पश्चिम अफ्रीकी सवाना के उत्तरी सीमांत इलाकों के इस्लामीकरण के कारण उत्तरी अफ्रीकी परंपरा और पश्चिम अफ्रीकी समाज के भीतर की परम्पराओं का मिश्रण देखा गया। यह क्षेत्र काफी कम आबादी वाला था और नातेदारी समूह अक्सर, दुश्मन समूहों के खिलाफ अपनी संख्या बढ़ाने के लिए; बाहरी दासों को समाहित करने को मजबूर थे। इसके अलावा, कई अफ्रीकी समाजों में दासों की स्थिति केवल संक्रमणकालीन थी, क्योंकि उन्हें सामाजिक व्यवस्था में आत्मसात कर लिया जाता था। पश्चिम अफ्रीका में दासों ने हर तरह का काम किया। कुछ इस्लामी समाजों की तरह सैन्य कमांडरों या महल सेवकों के रूप में कार्यरत थे। उनमें पत्नियाँ और कई उप-पत्नी थीं, जबकि अन्य खेतिहर मजदूर थे। दास श्रम की यह सूचीबद्धता केवल 'स्थापित दासों' के लिए थी। 'स्थापित दासों' और 'व्यापारिक दासों' की सामाजिक स्थिति में उल्लेखनीय अंतर था। हाल ही में पकड़े गए दास के पास कोई कानूनी या सामाजिक अधिकार नहीं होता था और उनका हर अधिकार जब्त कर लिया जाता था और उसका मालिक दास के साथ जैसा चाहे वैसा व्यवहार कर सकता था। पकड़ा गया हर दास कुछ महीनों तक एक व्यापारिक दास के रूप में रहता था, जब तक कि उसे व्यापारियों द्वारा यूरोपीय या उत्तरी अफ्रीकी तट पर बसे अफ्रीकों लोगों को बेच नहीं दिया जाता था। उनके लिए सबसे बुरा होता था जब उन्हें दास के रूप में पश्चिम अफ्रीकी तट पर बेच दिया जाता था, जहाँ अटलांटिक में वृक्षारोपण (बागान) द्वीपों पर उन्हें भेज दिया जाता था।

6.9 अटलांटिक व्यापार का प्रारंभ

अटलांटिक दुनिया में दास विनिमय पर शुरुआत की पहचान करना मुश्किल है। दास विनिमय का इतिहास लेखन आमतौर पर अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी पर केंद्रित है और पहले के शताब्दियों की जाँच नहीं करता है। तथ्य यह है कि एक विनिमय के रूप में दासता, समुद्री संपर्क की पहली दो शताब्दियों– लगभग 1450 सी. ई. से 1650 सी. ई. के दौरान तुलनात्मक रूप से महत्वहीन बनी रहती है। पुर्तगाल की प्रारंभिक रुचि सोने में थी और दास विनिमय सोने की खोज और व्यापार का एक आकस्मिक गौण उत्पाद था। पुर्तगालियों का प्रारंभिक ध्यान पश्चिम अफ्रीकी तट में गाम्बिया नदी घाटी पर केंद्रित था, जो कि ब्यूर और बाम्बूहु के सोने के क्षेत्रों तक आसान पहुंच प्रदान करता था। गाम्बिया नदी घाटी की नीचे का क्षेत्र पहले ही अफ्रीकी व्यापार संजाल में एक महत्वपूर्ण नमक खरीद का केंद्र था और यह दास बाजार के रूप में फल–फूल रहा था। पुर्तगालियों ने दासों की खरीद शुरू कर दी थी, हालांकि यह संख्या बड़ी नहीं थी और 1500 सी. ई. से पहले 1,300 दास प्रति वर्ष और अटलांटिक द्वीपों के लिए 500 दास प्रति वर्ष (साओ टोम की गिनती नहीं)।

तटीय संपर्क का दूसरा बिंदु गोल्ड कोस्ट तट, अकान स्वर्ण क्षेत्रों तक पहुंच का एक प्रवेश द्वार था। 1498 सी. ई. में पुर्तगालियों ने सोने के व्यापार की रक्षा के लिए एल्मिना में एक व्यापार दुर्ग का निर्माण शुरू किया। यहाँ भी दास विनिमय की शुरुआत हुई। हालांकि, अकान वासी दासों को बेचने के बजाय दास खरीदने में अधिक रुचि रखते थे। स्वर्ण खदानों में काम करने के लिए दास श्रम की आवश्यकता को पूरा करने के लिए पुर्तगालियों ने तटीय दास व्यापार में प्रवेश किया। उन्होंने बेनिन और कांगो में अफ्रीकी राज्यों के साथ व्यापारिक

संबंध स्थापित किए और 1520 सी.ई. तक साओ टोम भी, जिसका अपना चीनी उद्योग था, दास विनिमय के एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में उभरा। साओ टोम प्रति वर्ष लगभग 2,000 दासों का आयात करता था। इसमें से कुछ गन्ने के खेतों में श्रम के रूप में इस्तेमाल किए जाते थे और प्रति वर्ष लगभग 500 दास सोने के खदानों में काम करने के लिए अकानों को बेचे जाते थे। 1532 सी.ई. से अफ्रीका से अमेरिका तक दास भेजने का काम तक शुरू हुआ था, जो स्पेन, वेस्ट इंडीज व ब्राजील भेजे जाने लगे।

दासों के लिए ब्राजील का बाजार खुलना उस क्षेत्र के लिए किसी व्यापार के उद्भव की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण था। 1550 सी.ई. के बाद कांगो घाटी में मध्य अफ्रीकी राज्यों में अशांति और उसी दौरान ब्राजील में चीनी उद्योग के उदय ने आपूर्ति और माँग, दोनों को भारी गति दी।

6.10 गन्ना वृक्षारोपण और ब्राजील में दासता

पश्चिमी गोलार्द्ध में दास व्यापार के ढाई सदी के दौरान ब्राजील उस क्षेत्र के रूप में उभरा, जिसने दासों का अधिकतम आयात किया। यह क्षेत्र सोलहवीं शताब्दी के मध्य से पुर्तगाली नियंत्रण में गन्ना वृक्षारोपण (बागानों) और चीनी उद्योगों की स्थापना का साक्षी बना। ब्राजील में प्रारंभिक वृक्षारोपण में भूमध्यसागरीय क्षेत्र में विकसित संस्थाओं के कुछ पहलू शामिल थे, जबकि ब्राजील में सामने आई परिस्थितियों के अनुसार वृक्षारोपण (बागान) प्रणाली के संगठनात्मक पहलुओं में कई बदलाव किए गए थे। गन्ना लगाने और चीनी निकालने की तकनीक मडीरा से खरीदी गई थी। हालांकि, भूमि और संगठन का नियंत्रण यूरोप में कार्यरत सामाजिक और सामंती संस्थाओं की तर्ज पर था।

ब्राजील के साथ पुर्तगाल का प्रारंभिक जुड़ाव बहुत अधिक लाभदायक नहीं था। इस क्षेत्र को एक ऐसे स्थान के रूप में देखा जाता था जहाँ जहाज सिर्फ पानी और ताजे फलों और आसपास के तटीय क्षेत्र के जंगलों से प्राप्त किए गए। रंजक पदार्थ से भरे जा सकते थे। सोलहवीं शताब्दी के पहले तीन दशकों के लिए, यानी 1530 तक इस क्षेत्र में एक लंबी और स्थिर उपस्थिति स्थापित करने के लिए पुर्तगालियों या किसी अन्य यूरोपीय शक्ति की ओर से कोई सराहनीय प्रयास नहीं किया गया था। पेरू और मेक्सिको जैसे अन्य क्षेत्रों के विपरीत, जहाँ स्पेनवासी संघर्ष और विजय में व्यस्त थे, ब्राजील ने यूरोपीय और मूल इंडियन के बीच बहुत कम या लगभग कोई सांस्कृतिक आदान-प्रदान नहीं हुआ।

ब्राजील के क्षेत्र में प्रारंभिक रुचि अधिकांश व्यापारियों द्वारा दिखाई गई थी, यूरोप के संभ्रांत लोगों द्वारा नहीं। उन्होंने कासा डी इंडिया के साथ अनुबंध किया, जो पुर्तगाल के ताज के विदेशी व्यापार मामलों का संचालन करता था। ये अनुबंध सामंती घोषणा-पत्र नहीं थे, जो भूमि पर व्यक्तिगत शासन को अधिकृत करते थे। यह केवल व्यापार का अधिकार देते थे। कुछ निजी व्यक्तियों ने और कई सदस्यों वाले कुछ सिंडिकेट ने भी इस पर हस्ताक्षर किए।

1534 सी. ई. के बाद से फ्रांस के आगमन के साथ बस्ती स्थापना और विस्तार का दूसरा चरण शुरू हुआ, जो पुर्तगाल को, जिनका इस क्षेत्र पर अधिकार था, भुगतान किए बिना रंजक लकड़ी का व्यापार करना चाहते थे। जवाब में पुर्तगाल ने ब्राजील के लिए एक नौसैनिक अभियान को भेजा, ताकि अपने अधिकारों का दावा और भी मजबूत किया जा सके। पुर्तगाल द्वारा दावा किया गया संपूर्ण ब्राजीलियाई तट, अटलांटिक तट पश्चिम की दिशा में सीधी रेखा में पट्टियों में विभाजित था। प्रत्येक पट्टी सामंती घोषणा-पत्र के तहत व्यक्तियों या कंपनियों को सौंपी गई थी, जिन्हें उनके अनुदान वाली भूमि के संपूर्ण मामलों पर पूर्ण नियंत्रण दिया गया था। इनमें से अधिकांश अनुदान हमेशा के लिए थे और बदले में पुर्तगाली ताज कुछ सीमा शुल्क दवाओं, मसालों और रंजक लकड़ी के व्यापार पर एकाधिकार चाहता

था और सोने, चाँदी या बहुमूल्य पत्थरों के मिलने पर उनके 1/5 भाग का आश्वासन चाहता था। ऐसे लोगों को 'कैप्टन डोनैटरी' की उपाधि दी गई थी और इस प्रकार उपनिवेशों को कैप्टनियसडोनटेरियो कहा जाने लगा।

हालांकि, उपरोक्त प्रयोग दो दशकों के भीतर ध्वस्त हो गए, क्योंकि ताज के निवेश के कम रखने के इरादे से उपनिवेशों को बनाया गया था। चूंकि कप्तानों के पास पूँजी की पहले ही कमी थी और स्थानीय इंडियन के बीच उच्च मृत्यु दर के कारण उनके पास लगातार श्रम की भी कमी थी। इसके अलावा, फ्रांसीसी हस्तक्षेप का भी मुकाबला नहीं किया जा सका, क्योंकि ये बस्तियाँ यूरोपीय हमलावरों के खिलाफ बचाव के लिए सुसज्जित नहीं थीं। उपर्युक्त विफलताओं के कारण उपनिवेशों को बाद में ताज के नियंत्रण में लाया गया और प्रशासन को नौकरशाहों द्वारा प्रबंधित किया जाने लगा था। 1549 सी. ई. में ताज सरकार के हाथों पदांतरण शुरू हुआ और इससे ब्राजील के साथ पुर्तगाली संबंधों का नया चरण शुरू हुआ।

6.11 चीनी उद्योग

सोलहवीं शताब्दी के मध्य दशक तक चीनी ने निर्यात की जाने वाली प्रमुख वस्तुओं के रूप में रंजक लकड़ी और अन्य वन उत्पादों का स्थान ले लिया। प्रारंभिक वृक्षारोपण (बागान) अटलांटिक तट के किनारे अमेरिंडियन दासों को रोजगार देकर और मेडीरा द्वीपों से प्रौद्योगिकी और निष्कर्षण तकनीक का आयात करके स्थापित किए गए थे। 1570 सी.ई. में पुर्तगाली ताज द्वारा अवैध बनाने के बाद भी अमेरिंडियन दासों का उपयोग जारी रहा।

यद्यपि यूरोपीय लोगों से संपर्क में आने के कारण विभिन्न बीमारियों से ग्रसित होने के कारण मूल इंडियन आबादी के बीच मृत्यु दर बहुत अधिक होने के कारण इंडियन दास एक दीर्घकालिक विकल्प नहीं था। प्रारंभिक उपाय ब्राजील के अंदरूनी हिस्सों तक दास व्यापार स्थापित करना था, लेकिन मृत्यु दर में कोई कमी नहीं हुई और उसकी दर काफी ऊंची थी जो यह सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त थी कि तटीय वृक्षारोपण में पर्याप्त स्थायित्व और जनसांख्यिकीय स्थिरता नहीं थी। इसकी प्रतिक्रिया में 1550 सी. ई. के बाद से धीरे-धीरे अगली आधी सदी में अफ्रीकी दासों ने ब्राजील के तट के किनारे वृक्षारोपण बस्तियों में स्थानीय श्रम शक्ति के रूप में स्थानीय लोगों को प्रतिस्थापित करना शुरू कर दिया। सोलहवीं शताब्दी के अंत तक साओटोम, मडीरा और कैनरी को यूरोपीय चीनी के मुख्य स्रोत के रूप में प्रतिस्थापित करते हुए ब्राजील चीनी उत्पादन में अग्रणी बन गया।

ब्राजील में चीनी उद्योग में इस तेज वृद्धि के पीछे कई कारक थे। एक समुद्र तट के किनारे समतल उपजाऊ भूमि की बड़ी उपलब्धता ने, जिसका उपयोग वृक्षारोपण के लिए किया जा सकता था, बस्तियों के स्थान को तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। साल्वाडोर में बहिया के रेकॉनकाव विशेष रूप से पंसदीदा था, क्योंकि इसने दुनिया में गन्ने की सबसे अच्छी भूमि की आपूर्ति की। लगभग 4,000 वर्ग मील के आकार वाला क्षेत्र लगभग जमैका द्वीप जितना बड़ा था। ब्राजील के चीनी उद्योग की सफलता के लिए दासों तक आसान पहुंच भी एक प्रमुख कारण था। कैरेबियन द्वीपों के विपरीत, अफ्रीका से दासों के हस्तातंरण को प्रबंधित करना आसान था। चुने गए रास्ते के आधार पर उद्गम स्थल से दूरी भी, जैसे कि पश्चिम अफ्रीका के अंगोला तट से ब्राजील तक, कैरेबियन द्वीपों से जमैका तक से औसतन 30 से 50 प्रतिशत कम थी। इससे परिवहन में मृत्यु दर कम हुई, जिसके परिणामस्वरूप अधिक संख्या में दास श्रम के रूप में उपलब्ध हुए।

मडीरा की तरह पुरानी वृक्षारोपण बस्तियों के मुकाबले ब्राजील को 'नई शुरूआत' का भी लाभ मिला। मेडीरा में साधारण चीनी मील सालाना लगभग 15 मीट्रिक टन चीनी का उत्पादन करती थी, जो ब्राजील के प्रारंभिक टतीय बस्तियों के उत्पादन के बराबर थी। हालांकि, तटों के अंदरूनी भागों नए भूमि के औपनिवेशीकरण और रूपांतरण के कारण 1570 सी. ई. तक

ब्राजील में चीनी मिलें, स्थान के आधार पर, 30 से 130 मीट्रिक टन सालाना चीनी का उत्पादन कर रही थीं। 1600 सी.ई. तक एक साधारण मिल का औसत उत्पादन सालाना 130 मीट्रिक टन तक पहुंच गया था।

पुर्तगाली बागान एंटवर्प और मडीरा के बीच पुराने संपर्कों से भी लाभान्वित थे। जैसे-जैसे वृक्षारोपण बढ़ा और मुनाफे की संभावनाएँ बढ़ीं, वैसे ही कई प्रारंभिक बागान एंटवर्प में मौजूद लेमिश पूँजीपतियों द्वारा वित्तपोषित होने लगे। सत्रहवीं शताब्दी की शुरुआत तक पूँजी प्रवाह ने बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण (बागान) और बड़ी मिलों को स्थापित करने के साथ-साथ दास आयात की लागत, जो आमतौर पर भूमि की पूँजीगत लागत के लगभग 20 प्रतिशत के बराबर जिम्मेदार था, के लिए बड़े पैमाने पर आवश्यक निवेश का ध्यान रखा।

1600 सी.ई. तक पुर्तगाल और लेमिश फाइनेंसरों के तत्वावधान और प्रबंधन के तहत ब्राजील के तट पर जो आर्थिक संरचना उभरी, वह एक ही फसल पर केंद्रित और दास श्रम पर निर्भर होने के कारण अत्यधिक विशिष्ट हो गई। कुछ श्रमिक अभी भी अमेरिंडियन थे, जबकि अनेक अफ्रीकी दास थे, जिन्हें श्रमिक के रूप में इन बागानों में काम करने के लिए लाया गया था।

6.12 ब्राजील का प्रारंभिक वृक्षारोपण समाज

ब्राजील की बस्तियों में भूमि के साथ बागान मालिकों के पास निष्कर्षण के उपकरण – चीनी मिलों का स्वामित्व था। उत्पादन को एक तरीके से नियोजित किया गया था, ताकि अधिकतम मुनाफा हो सके। हालांकि, सत्रहवीं शताब्दी के दौरान भी बागानों ने खुद एक छोटे से सामाजिक ढांचे का गठन किया, जिसमें लगभग 100 से 300 लोग या इससे अधिक शामिल थे और सदियों तक ऐसा ही चलता रहा। विशाल ब्राजील के ग्रामीण इलाकों में बस्तियों के बिखरे हुए स्वरूप ने भी किसी भी प्रकार के राजनीतिक नियंत्रण संरचना को बनाना मुश्किल बना दिया था। राज्य संरचना के अभाव में बागानों के प्रबंधकों ने राजनीतिक और प्रशासनिक भूमिका निभाई, ताकि वृक्षारोपण समाजों' के नवजात सामाजिक समूहों में सामंजस्य और संरचना को बनाए रखा जा सके। गन्ना किसानों द्वारा भी इसी तरह के अधिकारों का दावा किया गया था, जो अपने खेतों में दासों के द्वारा काम करते थे और मिल मालिकों और प्रबंधकों को गन्ना बेचा करते थे।

किसी भी चीनी जागीर का या फाजेंडा के तहत काम करने वाले अधिकांश लोग कानूनी रूप से मालिकों – फाजेंडारियो के स्वामित्व और कानूनी नियंत्रण के अधीन थे। स्वामित्व में दासों को दंड देने का अधिकार भी शामिल था। जागीरें काफी हद तक आत्मनिर्भर थी और शाही एजेंटों के राजनीतिक नियंत्रण की कमी ने कई लोगों को अमेरींडियन दासता में संलग्न होना संभव बना दिया था, भले ही इस प्रथा को अवैध घोषित कर दिया गया था। कुछ दशक के भीतर एक नया सामाजिक पदानुक्रम उभरा, जिसमें शीर्षक और नाम गृह देश के भूस्वामियों शीर्षक और पदों के समान प्रतीत होते थे। हालांकि, ये वृक्षारोपण (बागान) के भीतर और क्षेत्र में पदानुक्रम और स्थित से ज्यादा मेल खाते थे। व्यक्तिगत मालिक या स्वामी एंटवर्प के व्यापारिक और बैंकिंग समुदायों के ऋणी हो सकते थे, लेकिन बागानों में वह समुदाय के मालिक और प्रमुख थे। मालिकों के भीतर भी गन्ना किसानों की तुलना में चीनी मिल मालिकों की स्थिति अधिक अच्छी थी।

भूमि या उत्पादन संरचनाओं पर स्वामित्व ने उत्पादन के साथ-साथ दास के शरीर और व्यक्ति पर भी पूर्ण स्वामित्व प्रदान किया। हालांकि, समय बीतने के साथ बसने वाले लोगों और मालिक के उत्तराधिकारी अब बस्तियों और लोगों पर समान नियंत्रण और स्वामित्व कायम नहीं रख पाए। समय के साथ कुछ प्रथागत संबंध विकसित हुए, जिसने मूल मालिकों के वंशजों की निरपेक्ष शक्ति और नियंत्रण के पूर्ण उपयोग को सीमित कर दिया। सामाजिक दबाव ने शक्ति के निरपेक्ष अधिकार को सीमित कर दिया। इसी तरह, आर्थिक मजबूरी ने उत्पादन के प्रारूपों

और बागानों की संरचना में बड़े पैमाने पर बदलाव की संभावना को सीमित कर दिया। सत्रहवीं शताब्दी की शुरुआत तक ब्राजील के बागान मालिक यूरोप में प्रारंभिक दौर के जागीरदार की तरह सामाजिक-आर्थिक सीमाओं से काफी हद तक बंधे हुए थे।

ब्राजील में शहरी विकास कुछ हद तक शासन और प्रबंधन की तर्ज पर था, जो यूरोप में मिले अनुभवों के आधार पर लागू किया गया था। ब्राजील में शहरी-केंद्रित स्थानीय सरकार बदल गई। महत्वपूर्ण बंदरगाहों के रूप में प्रमुख वाणिज्यिक और शहरी केंद्रों को छोड़कर अधिकांश कस्बे और शहर छोटी बस्तियाँ थीं, जो फाजेंड़ा में रहने वाले संभ्रांत वर्ग के प्रभुत्व में थीं। प्रमुख नगरपालिका संस्थान परिषद या ***सेनाडो दा कैमरा*** था। यह एक निर्वाचित निकाय नहीं था, बल्कि प्रतिनिधित्व करने के लिए आसपास के 'अच्छे लोगों' को चुना गया था। सोलहवीं शताब्दी में उत्तर-पूर्वी ब्राजील में इसका मतलब था गन्ना बागान मालिक, जिसमें व्यापारियों और अन्य कारीगर समुदायों को बाहर रखा गया था।

सेनाडो दा कैमरा ने ग्रामीण आभिजात्य वर्ग के लिए कस्बों पर हावी होना संभव बना दिया था। कई प्रतिनिधियों के एजेंट लिस्बन में थे, ताकि वहाँ उनके हित के लिए दरबार में काम कर सकें। इस प्रकार ब्राजील में ताज के अधिकारी को मजबूत स्थानीय विशेषाधिकारों का सामना करना पड़ा। समय के साथ सेनाडो ने स्थानीय पुलिस और अर्ध-सैनिक नागरिक सेना पर कार्यपद्धति और रख-रखाव पर अपना प्रभाव स्थापित कर लिया। इस प्रकार, सोलहवीं शताब्दी के मध्य से लेकर अठारहवीं शताब्दी के मध्य तक, दो शताब्दियों के दौरान प्रारंभिक पूँजीवादी वृक्षारोपण और उपक्रमों की जगह पदानुक्रम के साथ विशेषाधिकारों और नियंत्रण कार्यों वाले बागान समाजों ने ले ली थी।

6.13 अमेरिका

कोलंबस की समुद्री-यात्राओं के साथ, स्पेन के दरबार ने अटलांटिक में महत्व और संभावनाओं को महसूस करना शुरू कर दिया, हालांकि ऐसा तत्काल नहीं हुआ। स्पेन के दरबार ने कोलंबस और उसके परिवार को स्पेन के ताज के नाम पर जीते गए क्षेत्रों पर पूर्ण नियंत्रण का अधिकार दे दिया। 1593 सी. ई. में स्पेन ने लिस्बन के कासा डी इंडिया की तरह कासा डी कॉन्ट्राटेसियन या व्यापार गृह की स्थापना की। इसके पीछे मूल वजह अटलांटिक और अमेरिकी दुनिया में स्पेन के ताज के नाम पर व्यापार करना था। हालांकि, उपनिवेशों का तत्कालीन महत्व कम था और कासा एक नियामक एजेंसी के रूप में विकसित हुआ। कुछ दशकों बाद फिलीपींस में एक छोटा-सा शुरुआत करने के बाद स्पेन व्यापार चौकी के व्यवसाय से बाहर हो गया। व्यापारियों को आकर्षित करने के बजाय स्पैनिश अमेरिका/कैरेबियन द्वीपों ने दुस्साहसी और स्वतंत्र लोगों को आकर्षित किया, जिन्होंने जितना संभव हो सके उतना कब्जा करने और लूटने के लिए खुद को लड़ाकुओं के रूप में संगठित किया।

6.14 वेस्टइंडीज

अधिकांश अमेरिका के विपरीत कैरेबियन द्वीपों में अपेक्षाकृत अधिक घनी आबादी थी। जमैका, हिसपानिओला और प्यूर्टो रिको के तीन बड़े द्वीपों में अरावाक बसे हुए थे। यह एक ऐसा देशी कृषि समूह था, जो सामाजिक रूप से पदानुक्रम में संगठित थे और उनका एक अपना विश्वास मत था। क्यूबा में भी आंशिक रूप से अरावाक बसे हुए थे। यद्यपि वे मेक्सिको और पेरू की महान सभ्यताओं के समान उन्नत नहीं थे, फिर भी वे यूरोपीय आगमन से पहले, क्षेत्र के सबसे तकनीकी रूप से उन्नत समूह थे।

स्पेन ने अपना आधार हिसपानिओला में स्थापित किया, जहाँ उन्हें कुछ सोना भी मिला और वहाँ से वे पास के द्वीपों में जाने लगे। जितना हिसपानिओला जितना श्रमिक उपलब्ध करा सकता था उससे अधिक श्रमिकों की आवश्यकता अयस्क खोदने और सोने को तल से धोकर

निकालने के लिए होती थी, इसलिए आसपास के द्वीपों से श्रमिकों को दास के रूप में आयात किया जाता था। यूरोपीय और अफ्रीकी लोगों द्वारा लाई गईं बीमारियों और महामारियों के रोगाणुओं के कारण स्थानीय अरावाक आबादी घटने लगी तो दास आयात की आवश्यकता पैदा होने लगी। इसके अलावा निकटवर्ती अमेरिंडियन समूह पहले ही ईसाई धर्म में परिवर्तित हो गए थे और इसलिए अब उन्हें कानूनी रूप से दासों में परिवर्तित नहीं किया जा सकता था। परिणामस्वरूप, द्वीपों और मुख्य भूमि पर अधिक-से-अधिक अंतर्देशीय दासों की खोज शुरू हुई। सोलहवीं शताब्दी के अंत तक उष्णकटिबंधीय तराई के लगभग सभी इंडियन मर गए थे, सिवाय कैरेबियन के, जिनके पास युद्ध जैसी प्रकृति थी। कैरेबियन कुछ समय के लिए यूरोपीय बढ़त को रोकने में सक्षम रहे, जिसने उन्हें बीमारियों और रोगाणुओं के खिलाफ प्रतिरोध क्षमता विकसित करने में सक्षम बनाया।

6.15 सत्रहवीं शताब्दी की 'चीनी क्रांति'

कैरेबियन में सत्रहवीं शताब्दी की शुरुआत तकनीकी ज्ञान और अफ्रीकी दासों के साथ बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण की शुरुआत के रूप में हुई। गन्ने के वृक्षारोपण ने अधिक से अधिक भूमि को भूमि प्रबंधन और प्रयोग की एक नई प्रणाली में परिवर्तित करते हुए पूर्व की ओर बढ़ना जारी रखा। वृक्षारोपण की इन नई संरचनाओं में हालांकि ब्राजील के वृक्षारोपण की बहुत अधिक नकल थी, फिर भी पहले की संरचनाओं के मुकाबले कुछ अर्थों में यह विकसित थी। वृक्षारोपण सामुद्रिक संजाल, अंतर-महाद्वीपीय संचार पर कहीं अधिक निर्भर थे और उत्तरी अटलांटिक दुनिया में दास श्रम आधारित वृक्षारोपण के प्रयासों की शुरुआत थी। कैरेबियन में ये वृक्षारोपण उत्तरी अमेरिकी मुख्य भूमि में बड़े पैमाने पर गन्ने के वृक्षारोपण की शुरुआत के लिए महत्वपूर्ण कदम था।

कैरेबियन द्वीपों की भौगोलिक और जलवायु परिस्थितियों ने गन्ना वृक्षारोपण की सफलता के लिए एकदम आदर्श स्थिति प्रदान की। गन्ने के वृक्षारोपण के लिए सबसे अच्छी भूमि तट के पास थी, जिससे चीनी को पीपों में भरकर समुद्र तटों तक लुढ़काकर ले लाया जाता और हल्की नावों ने परिवहन को सुगम बनाया। सत्रहवीं शताब्दी में जहाज निर्माण में तेजी के साथ-साथ व्यापार पवनों की खोज और नौकायन प्रौद्योगिकी व तकनीक के विकास के कारण इसे वेस्टइंडीज से एंटवर्प और लिवरपूल जैसे यूरोपीय बाजारों में तीव्र गति से भेजा जाने लगा। जमैका जैसे द्वीपों में उच्च और स्थानीय वर्षा ने सिंचाई सुविधाओं में बहुत अधिक निवेश किए बिना वृक्षारोपण को सक्षम बनाया। इन लाभों को ध्यान में रखते हुए पूर्वी कैरेबियन द्वीपों सेंट किट्स, नेविस, गुआदेलूप और मार्टीनिक में सबसे पहले बस्तियाँ बसी थीं। एंटीगुआ और बारबाडोस में भी गन्ना बागानों को विकसित होते देखा गया, हालांकि एंटीगुआ में वर्षा अनियमित होती थी, जबकि बारबाडोस में ज्वालामुखीय प्रकृति के कारण मिट्टी की स्थिति बहुत अच्छी थी। हिसपानिओला और जमैका को विस्तार के दूसरे चरण में विकसित किया गया था और परिवहन की समस्याओं को हल करने के बाद क्यूबा से सबसे अच्छे परिणाम मिले।

द्वीप सत्रहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में यूरोपीय शक्तियों के बीच प्रतिस्पर्धा के केंद्र बिंदु के रूप में उभरे। पुर्तगाली और स्पेनिश नियंत्रण को अंग्रेज, फ्रेंच और डच की बढ़ती शक्ति द्वारा चुनौती दी गई। यूरोप में धार्मिक टकराव और समुद्रपार तक फैले स्पेन के साथ अंग्रेज और फ्रांसिसी नौसेना के तीस वर्षीय युद्ध सोलहवीं शताब्दी के अंत में अटलांटिक समुद्र तक पहुँच गए। जिब्राल्टर के तट पर स्पेन की हार के साथ अटलांटिक विनिमय पर अंग्रेज और डच हावी हो गए और कैरेबियन, मेक्सिको और दक्षिण अमेरिका में स्पेनिश प्रभाव का मुकाबला करने के लिए अभी उपनिवेश की स्थापना नहीं की गई थी। रणनीतिक अंतराल को पाटने के लिए हिंद महासागर क्षेत्र में किलेबंद बस्तियों की तर्ज पर अटलांटिक समुद्री मार्ग के बेहतर नियंत्रण के लिए उपनिवेशों को स्थापित किया गया था। इनमें से कई चौकियाँ

स्पेनिश प्रदेशों में अमेरिंडियन के साथ अवैध व्यापार के बिंदु के रूप में भी काम करती थी।

उपरोक्त वर्णित उद्देश्यों में से कुछ या सभी को ध्यान में रखकर बारबाडोस में बस्तियाँ बसाई गई थीं। यह एक ऐसा उपयुक्त उपनिवेश था, जो यूरोप के बागान मालिकों द्वारा आंशिक रूप से तंबाकू को नकदी फसल के रूप में उगाने के लिए और आंशिक रूप से स्पेनिश साम्राज्य में तस्करी के लिए एक अंग्रेजी अड्डे के रूप में प्रयोग करने के लिए बसाया गया था। 1627 सी. ई. में बसाई गई प्रारंभिक बस्ती 1635 सी. ई. में अपने आकार में धीरे-धीरे बड़ी हो गई। 1630 सी. ई. के उत्तरार्द्ध में मुख्य भूमि से अप्रवासियों की आमद बढ़ी और 1640 सी. ई. तक आबादी लगभग वर्जीनिया या मैसाचुसेट्स के बराबर हो गई।

स्पेनिश साम्राज्य में तस्करी करने और लघु एंटीलिज के कैरिब के साथ वस्तु विनिमय व्यापार में संलग्न होने का प्रारंभिक फ्रांस का उद्देश्य भी अंग्रेजों के तरह ही था। उनकी पहली बस्ती सेंट क्रिस्टोफर (बाद में सेंट किट्स) पर थी, जिसे उन्होंने कुछ समय के लिए अंग्रेजी कंपनी के साथ साझा किया था। हालांकि, असली विस्तार अमेरिकी आईलैंड कंपनी की स्थापना के साथ शुरू हुआ। कई समकालीन वाणिज्यिक उद्यमों की तरह कंपनी ने सरकारी शक्तियों के साथ वाणिज्यिक तत्वों को मिलाया। फ्रांस के ताज ने कंपनी को दक्षिण में त्रिनिदाद और उत्तर में मध्य लोरिडा के बीच कंपनी द्वारा कब्जा किए जाने वाले द्वीपों का अधिकार क्षेत्र दे दिया। इससे शेयर धारकों को व्यापार पर एकाधिकार प्राप्त हुआ और भूमि पर स्वामित्व का अधिकार मिल गया। इस लक्ष्य की पूर्ति हेतु सत्रहवीं शताब्दी के पहले बीस वर्षों में अमेरिका की फ्रांसीसी बस्तियों में लगभग 4000 कैथोलिकों को बसाया गया।

6.16 चीनी का अर्थशास्त्र

कई कारणों से बस्तियों से लेकर वृक्षारोपण (बागानों) तक में परिवर्तन हुआः इनमें से प्रमुख वस्तु के रूप में चीनी की आर्थिक प्रकृति थी। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में चीनी की माँग में बहुत अधिक मूल्य लोच थी, यानी जैसे-जैसे कीमत में कमी आई लोग वस्तु के लिए अधिक से अधिक भुगतान करने को तैयार थे। उस समय यूरोपीय बाजार में उत्पादन में दक्षता, प्रबंधन और उत्पादन व परिवहन की तकनीक में बदलाव के कारण वस्तु की माँग और भी बढ़ी। बाजार में चीनी की अधिक उपलब्धता के कारण कीमतें कम होने लगी और यूरोपीय बाजारों में चीनी की माँग, एक अतृप्त भूख की तरह, बढ़ती चली गई।

इसके मुख्य कारकों में से एक सत्रहवीं शताब्दी में समुद्री परिवहन में अधिक दक्षता थी, जो अग्रणी डच लोगों द्वारा प्राप्त की गई थी। अब मालवाहक जहाज अधिक मात्रा में सामानों को लेकर लंबी समुद्री यात्राएँ कुशलता से करने लगे थे। ये सुधार विशेष रूप से अफ्रीका से दासों को नई दुनिया में लाने पर लागू होते थे। सस्ते माल-भाड़े ने भी चीनी उत्पादन में अधिक श्रम विभाजन को संभव बनाया। सत्रहवीं शताब्दी के मध्य तक जिन द्वीपों पर गन्ना वृक्षारोपण (बागानों) के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ थीं, वहाँ अब एक फसल पर ध्यान केंद्रित किया जाने लगा, जबकि खाद्यान्न अमेरिका और ब्राजील की मुख्यभूमि से आयात होने लगा था।

एक दूसरी मौलिक स्थिति, जो धीरे-धीरे उभरी वह थी, वेस्टइंडीज में यूरोपीय और अफ्रीकी लोगों के बीच महामारी प्रसार का अंतर। सत्रहवीं शताब्दी में फ्रांसीसी और अंग्रेजी औपनिवेशिक नियोजकों का इरादा कैरिबियन द्वीपों पर केवल यूरोपीय लोगों को बसाने का था, जिसमें यूरोपीय लोगों का एक बड़ा हिस्सा 'सेवक' होगा, अर्थात इस नई दुनिया के संसाधनों तक पहुंच और प्राप्त करने काम करने के लिए वे नियोजकों के साथ अनुबंध के तहत जुड़ेंगे। हालांकि, जब उपक्रमों की अवधारणा की जा रही थी, तब अफ्रीकी दासों के उपयोग की संभावना की शायद ही कभी कल्पना की गई थी। हालांकि, ब्राजील में पुर्तगाली और स्पेनिश अनुभवों पर आधारित अफवाहों ने पहले ही बता दिया था कि अफ्रीकी लोग उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में यूरोपीय लोगों की तुलना में बेहतर काम कर सकते थे। अवलोकन के बाद पता चला

कि नवांगतुक यूरोपीय और अफ्रीकियों के लड़के अमेरिका में बड़ी संख्या में मरे, हालांकि यूरोपीय लोगों के बीच मृत्यु दर काफी अधिक थी, क्योंकि अफ्रीकियों ने कुछ घातक उष्णकटिबंधीय रोगों, विशेष रूप से पीले बुखार व मलेरिया के लिए बचपन में ही प्रतिरोधक क्षमता हासिल कर ली थी। वास्तव में, दास के रूप में द्वीपों पर लाए जाने वाले अफ्रीकी लोगों की तुलना में नवांगुक यूरोपीय लोगों में मृत्यु दर 4 गुना अधिक थी। इसके अलावा, सेवा की लागत भी कैरिबियन में दासता को सुरक्षित करने में सहायक रही।

1640 के दशक तक डच ने ब्राजील में पैर जमाने के बाद कैरेबियन के फ्रांसीसी और ब्रिटिश द्वीपों में चीनी की तकनीक शुरू की, जो बारबाडोस में पहली बार प्रयोग की गई। डच लोगों ने मुख्य रूप से फसलों के बदले में द्वीपवासियों के लिए उपकरण और दासों के आपूर्तिकर्ता के रूप में काम किया। कुछ मामलों में उन्होंने गन्ना जागीरों की स्थापना और प्रबंधन की भी पेशकश की। हालांकि ब्राजील में वृक्षारोपण करवे वाले डच मालिकों, जिन्होंने डच वेस्ट इंडियन कंपनी के तत्वावधान में उत्तर-पूर्वी ब्राजील के क्षेत्र को 1645 सी. ई. तक और पेरनामबुको को 1654 सी. ई. तक अपने प्रभुत्व में रखा और डच घुसपैठियों, जो व्यापार से लाभ प्राप्त करना चाहते थे, भले ही यह अफ्रीकी व्यापार में डच कंपनी के कानूनी एकाधिकार का उल्लंघन करता हो, के बीच विभेद करने की आवश्यकता है।

बोध प्रश्न-2

1) गन्ने के वृक्षारोपण के लिए प्रारंभिक दास श्रम और बाद के दास श्रम के बीच क्या अंतर थे?

.....

.....

.....

2) गन्ना वृक्षारोपण (बागान) यूरोप की मुख्य भूमि से इतनी दूर क्यों स्थित थे?

.....

.....

.....

3) गन्ना वृक्षारोण (बागानों) को अमेरिका में स्थानांतरित करने का क्या महत्व है?

.....

.....

.....

6.17 सारांश

अपेक्षाकृत ज्ञात भूमध्यसागरीय वातावरण में बारहवीं शताब्दी के प्रारंभ में अपनी शुरुआत से प्रबंधन की एक प्रणाली और वाणिज्यिक फसल के रूप में वृक्षारोपण (बागान) ने अमेरिका में यूरोपीय देशों के औपनिवेशिक निवेश की रीढ़ के रूप में उभरने तक सदियों में बड़े पैमाने पर परिवर्तन देखा। गन्ना, तंबाकू, नील, चावल जैसी फसलें बड़े पैमाने पर उगाई जाती थीं और यूरोप में सीमित कृषि संभावनाओं को बढ़ाने के लिए में परिवहन द्वारा लाई जाती थी। उपनिवेश के लिए संघर्ष और विनिमय संजाल को नियंत्रित करने के लिए संघर्ष ने आधुनिक विनिमय वाणिज्यिक व्यापारिक अर्थव्यवस्थाओं की नींव रखी, जिसने उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में पूँजीवादी-औद्योगिक तंत्र के उद्भव का आधार बनाया।

इस व्यापारिक सफलता को प्राप्त करना आसान नहीं था और इसे केवल श्रम शक्ति की एक वैकल्पिक आपूर्ति में भारी निवेश करके हासिल किया गया था, जिसे अफ्रीकी तटीय क्षेत्र से जबरदस्ती हासिल किया गया था और अटलांटिक भर में अमानवीय परिस्थितियों में बड़े पैमाने पर ले जाया गया था। वृक्षारोपण समाजों की बस्तियों की बसावट और दास उपनिवेशों के रूप में उनका क्रमिक परिवर्तन सत्रहवीं से उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान अमेरिका और अफ्रीका के औपनिवेशीकरण की कहानी है। यह अमेरिकी स्वतंत्रता के युद्ध और अठारहवीं शताब्दी की फ्रांस की क्रांति के पश्चात ही दासता के प्रति और अमेरिकी उपनिवेशों में निर्वासित दास श्रम का उपयोग के प्रति दृष्टिकोण में एक निश्चित बदलाव आया, जिसके कारण अंत में दास व्यापार का परित्याग कर दिया गया था।

6.18 शब्दावली

वृक्षारोपण (बागान) : बड़ी कृषि प्रबंधन संरचनाएँ, जो खासकर बड़े फॉर्म नकदी फसलों के उत्पादन और उनकी वाणिज्यिक व्यापार के लिए कृषि प्रौद्योगिकी और श्रम में भारी निवेश पर चलती हैं।

दास : यूरोपीय आर्थिक दुनिया में अफ्रीकी हमेशा दास के रूप में वांछित नहीं थे। वास्तव में 'स्लेव' शब्द की जड़ 'स्लाव' में है, जो शाब्दिक रूप से पूर्वी यूरोपीय और बाल्टिक वंश-परम्परा के व्यक्तियों की बात करता है। रोमन साम्राज्य के दौरान दासों को मुख्य रूप से पूर्वी क्षेत्रों और उत्तरी जर्मेनिक जनजातियों से खरीदा जाता था। ऑटोमन विजय के बाद पूर्वी मार्ग के बंद होने के बाद ही, जैसा कि पहले चर्चा की गई थी, यूरोपीय बाजारों में मानवीय श्रम के लिए अफ्रीकी दासों की तलाश की जाने लगी।

6.19 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) भाग 5.2 देखें।

2) उपभाग 5.2.1 देखें।

बोध प्रश्न 2

1) भाग 5.8 और 5.10 देखें।

2) उपभाग 5.5.1 और भाग 5.16 देखें।

3) भाग 5.13 देखें।

6.20 संदर्भ ग्रंथ

बनार्ड, ट्रेवोर जी. (2015), *प्लान्टर्स, मर्चेंट्स एण्ड स्लेव्स : प्लांटेशन सोसाइटीज इन ब्रिटिश अमेरिका, 1650-1820*. शिकागो : दि यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो।

कर्टिन, फिलिप, डी. (1998), *दि राइज एण्ड फाल ऑफ दि प्लांटेशन कम्पैलक्स : एस्सेज इन ऐटलांटिक हिस्ट्री*, सेकण्ड ऐडिशन, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, देखें : https://doi-org/10-1017/CBO9780511819414।

मोर्गन, कैनेथ, (2001), *स्लेवरी एण्ड दि ब्रिटिश ऐम्पायर : फ्रॉम अफ्रीका टू अमेरिका*, ऑक्सफोर्ड, न्यू यॉर्क, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2007।

इकाई 7 यूरोप में वाणिज्यिक क्रांति*

इकाई की रूपरेखा

7.0 उद्देश्य

7.1 प्रस्तावना

7.2 वाणिज्यिक क्रांति के स्थान का पता लगाना

7.3 वाणिज्यिक क्रांति की स्थापना

7.4 मूल्य वृद्धि और धातु मुद्रा का उद्भव

7.5 वाणिज्यिक क्रांति का ग्रामीण आधार

7.6 औद्योगिक उत्पादन

7.7 बैंकिग संस्थाओं का उद्भव और यूरोपीय बाज़ारों में पूँजी की उपलब्धता

7.7.1 प्रारंभिक बैकिंग संस्थाएँ

7.7.2 लॉरन्स के मेडिसी

7.7.3 ऑग्सर्बग के फूग्गरस्

7.8 वित्तीय लेन-देन की प्रणालियाँ

7.9 विनिमय-पत्र

7.10 प्रतिज्ञा-पत्र

7.11 पत्रों या नोटों को भुनाना

7.12 बीमा

7.13 व्यापार और विनिमय का संगठन : श्रेणियाँ और व्यापारिक कम्पनियाँ

7.14 विनियमित कम्पनियाँ

7.15 संयुक्त पूँजी कम्पनियाँ

7.16 स्टॉक एक्सचेंज

7.17 सारांश

7.18 शब्दावली

7.19 बोध प्रश्नों के उत्तर

7.20 संदर्भ ग्रंथ

7.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप यह करने में सक्षम होंगेः

- प्रारंभिक आधुनिक यूरोप के संदर्भ में पारिमाशिक शब्द वाणिज्यिक क्रांति, को समझना;
- विभिन्न विद्वान वाणिज्यिक क्रांति के आगमन का किस प्रकार अवलोकन करते हैं;
- इस क्रांति की मुख्य प्रवृत्तियों को समझना;

* डॉ. वी. के. सिंह, दिल्ली विश्वविद्यालय

- यह समझना कि इस क्रांति के साथ किस प्रकार विभिन्न संस्थागत परिवर्तन हुए; और
- यह समझना कि इस क्रांति के संदर्भ में विनिमय बिल जैसे विभिन्न व्यापार के साधन कैसे विकसित हुए।

7.1 प्रस्तावना

यूरोप की आंरभिक आधुनिक सदियाँ, मध्यकाल के निरूपक राजनीतिक कलह, प्रबल धार्मिकता, स्थानीय विनिमय और आंतरिक युद्धों से परिलक्षित मध्यकाल से राष्ट्र राज्यों के तहत राजनैतिक सुदृढ़ीकरण सुधारक धार्मिक परंपराओं में सुधार, नया ज्ञान, वैज्ञानिक मनोवृत्ति और पुनःजागरण के उद्‌मव, भौगोलिक खोजों और यात्राओं, लंबी दूरी व्यापार और व्यापारिक कम्पनियों की दिशा में संक्रमण द्वारा चिह्नित की जा सकती हैं। आरंभिक आधुनिक सदियों में परिवर्तन के प्रेक्षण-पथ पर आधारित, कुछ विद्वान इन परिवर्तनों को क्रांतिकारी मानते हैं, जैसे की मार्क्सवादी विचारक। वहीं अनालस् मत इसे एक प्रबल भौतिक चरण से दूसरे में जाने की लंबी उद्‌भव प्रक्रिया मानता है। हालांकि, दोनों समूह इन आंरभिक आधुनिक सदियों में यानि लगभग पंद्रहवीं शताब्दी के मध्य दशकों से लेकर अठाहरवीं शताब्दी के मध्य दशकों के समय को भौतिक और सांस्कृतिक संक्रमण के रूप में को स्वीकार करते हैं, समय के साथ विद्वानों ने इस परिर्वतन केन्द्र) को समझने का प्रयास किया हैं। कुछ के अनुसार यह परिवर्तन 'पुनर्जागरण भावना द्वारा गढ़े नये सामाजिक और राजनैतिक विन्यासों द्वारा हुआ जिन्होंने एक 'नये वैज्ञानिक मनोवृत्ति और खोज के मानोभाव को पुनः जागृत किया। दूसरों के लिए आने वाले आधुनिक विश्व को आकार देने वाले बदलावों में सुधाखादी प्रवृत्तियों के प्रभाव में धार्मिक संस्थाओं का पीछे हटना, प्रोटेंस्टैंट चर्चों का उभरना और कैथोलिकवाद के विपरीत व्यापारिक और आर्थिक गतिविधियों को वर्जित नहीं मानना आदि प्रमुख थे।

आर्थिक विद्वानों ने 'नए विश्व' की खोजों और आविष्कारों और 'पुराने विश्व' के नए मार्गों की खोज को 'आधुनिकता' में परिवर्तन के केन्द्र में माना। इन खोजों ने सदियों में पहली बार 'पश्चिमी एशिया' की 'इस्लामी' शक्तियों के नियंत्रण से मुक्त कर दिया और वस्तुओं के विनिमय को आदान-प्रदान के संपर्कों को खोल दिया। इसके परिणामस्वरूप नए बाज़ार खुल गए, नए शहरी केन्द्रों का उद्‌भव हुआ और अंतर्राष्ट्रीय और स्थानीय विनिमय को सुगम बनाने के लिए नए वाणिज्यिक संजाल और संस्थाएँ बनी; जिससे नए परिश्चमी विश्व का उदय हुआ। इस नए विश्व में राजनैतिक सीमाओं का महत्व कम था, और विभिन्न क्षेत्र वाणिज्य और आदान-प्रदान के प्रसार द्वारा परस्पर संबंद्ध में थे, जिससे एक एकीकृत 'विश्व अर्थव्यवस्था का जन्म हुआ, जिसका केन्द्र पश्चिमी यूरोप के महान वाणिज्यिक राष्ट्रों में था।

'वाणिज्यिक क्रांति' संज्ञा का उपयोग सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी की आरंभिक आधुनिक सदियों में आर्थिक और वाणिज्यिक संस्थाओं के उद्‌भव और कार्य पद्धति में साक्षी आर्थिक वृद्धि के स्तर और परिवर्तनों को समझने के लिए किया गया। इन परिवर्तनों ने पूँजीवाद की प्रगति और आगामी सदियों में इसकी संस्थाओं की आधारशीला रखी।

आंरभिक आधुनिक यूरोप के इतिहास में किसी एक विशेष काल को 'क्रांतिकारी चरण' के रूप में पहचानना कठिन हैं। जैसा कि ''क्रांति'' शब्द एक दूरगामी कायापलट और वाणिज्य संबंधी आचरण में परिवर्तन, से सम्बधित है जो संगठनों और आर्थिक संरचनाओं को विकसित करता है जो कि व्यापारिक कारोबार को सरल बना रहे थे। विभिन्न विद्वानों ने मध्यकाल और आरंभिक आधुनिक यूरोप के कई सदियों में इस क्रांतिकारी परिवर्तन को स्थापित किया है।

मूल रूप वाणिज्यिक क्रांति की ''अवधारणा'' संबंधित दो भिन्न विचार हैंः—

1) विद्वान जिन्होंने विशेषतः सोलहवीं शताब्दी को आंरभिक आधुनिक यूरोप के वाणिज्यिक जीवन में ''क्रांतिकारी'' परिवर्तन का मूल काल माना है।

2) अन्य का मानना है कि यूरोपीय वाणिज्यिक जीवन में हुए परिवर्तन धीमे या क्रमिक थे, जिनकी शुरुआत तेरहवीं सदी के मध्य दशकों में देखी जा सकती हैं, जब व्यापार के साधन द्वि-धातु मुद्रा का आरंभ पाया जाता है।

7.2 वाणिज्यिक क्रांति के स्थान का पता लगाना

कुछ विद्वानों के लिए यूरोप में 'मध्यकाल' का अंत, वाणिज्य और व्यापार के उद्घाटन द्वारा हुआ, अरब आक्रमण के परिणाम से पश्चिम और 'समृद्ध' पूर्व के मध्य व्यापार के राजनैतिक अवरोध टूट गए।

रॉबर्ट एस लोपेज ने यूरोप में वाणिज्यिक क्रांति के आरंभ को यहूदी व्यापारियों के वर्चस्व और उनके द्वारा विकसित अफ्रीका, एशिया और यूरोपीय बाज़ारों के मध्य और लंबी दूरी व्यापार को सुगम व नियंत्रित करने वाली संस्थाओं के उद्भव को कारक माना हैं। उनके शब्दों में, "दसवीं शताब्दी और ग्याहरवीं शताब्दी के आरंभ में लंबी दूरी के व्यापार में न केवल ईसाई देशों में बल्कि इस्लामिक विश्व के बड़े भाग में यहूदी वर्चस्व अंकित था। उनके लेन-देन का निरपेक्ष परिमाण उस समय के सीमित अवसरों द्वारा संकुचित था परंतु संपूर्ण हिस्से में उनका भाग इतना महत्वपूर्ण था कि विदेशी व्यापार के फ्रैंकिश का बायजैनटाइन विदेशी व्यापार विनियमन को अक्सर ''यहूदी और अन्य व्यापारी'' से संबोधित किया जाता था, जैसे कि जैनटाइल्स वर्णणातीत अल्पसंख्यक हों" (लोपेज़ 1976)

तेरहवीं शताब्दी– से मसालों और अन्य आवश्यक वस्तुओं में पूर्वी व्यापार पर इतालवी व्यापारिक वर्ग का वर्चस्व और इसे निश्चित बनाने के लिए विकसित की गई संस्थापगत संरचनाओं को कई यूरोपीय आर्थिक स्वरूपों के विश्लेषण का आंरभिक बिन्दु माना जा सकता हैं। वर्षों से विद्वानों ने यूरोपीय वाणिज्यिक प्रारूपों में बदलाव और महाद्वीप की क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था पर इसके परिणामी प्रभाव पर ध्यान दिया है। आइबिरीअन अर्थव्यवस्थाओं के उद्भव से लेकर अंतरमहाद्वीपीय व्यापारिक प्रतिष्ठानों की स्थापना तक, उत्तरी अंटलांटिक और बाल्टिक समुद-तट के यूरोपीय व्यापार के केन्द्र के उद्भव तक, पुराने और नए विश्व में अफ्रीकी तट और भारतीय महासागर क्षेत्र में उपनिवेशों की स्थापना तक, इस विकासों के यूरोपीय वाणिज्यिक संरचनाओं पर प्रभाव का विश्लेषण हुआ है। इस प्रभाव को 'क्रांतिकारी' कहा गया है विषेशतः वाणिज्य और वाणिज्यिक लेन-देन के संचालन के संदर्भ में।

'यूरोप के कैंब्रिज आर्थिक इतिहास' ने भी इतिहास में मुद्रा के रूप में लेन-देन में नई प्रणालियों के आगमन और बैंकिंग और बीमा क्षेत्रों के उद्भव को चौदहवीं शताब्दी के आरंभ में स्थित किया। हालांकि सोलहवीं शताब्दी में व्यापार और विनिमय के नए रूपों और कार्यप्रणालियों को भी स्वीकार करता है। पिछले दशकों में सोलहवीं शताब्दी को केन्द्रीय काल के रूप में माना है, जो वाणिज्यिक परिवर्तन का साक्षी बनी और इस विकास को बाद की सदियों में नए पूँजीवादी यूरोप की नींव रखते हुए देखा गया। इमैन्यूअल वालरस्टाइन ने आर्थिक विश्व प्रणाली के उद्भव पर अपने रचना में सोलहवीं शताब्दी को बुनियाद का काल माना है। फर्नंद बाउदल ने अपनी पुस्तक 'सभ्यता और पूँजीवाद' में इसी प्रारूप का पालन किया है, जहाँ सोलहवीं शताब्दी की वाणिज्यिक वृद्धि को वास्तविक परिवर्तनशील के रूप में देखा है, जहाँ वाणिज्य के प्रति नए रवैये का यूरोप के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन के प्रत्येक पक्ष पर प्रभाव पड़ा। आरंभिक आधुनिक यूरोप की अर्थव्यवस्था संबंधी बाद के लेखन में सोलहवीं शताब्दी का समान मूल्यांकन और वर्णन गया किया है। पिछले कुछ दशकों में एक संपूर्ण चित्र प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है जहाँ आर्थिक परिवर्तन के दायरे को उल्लेखनीय रूप से विस्तृत किया गया है, और इसमें वाणिज्यिक और आर्थिक महत्व के मुद्दों को सम्मिलित किया गया है जैसे मुद्रा संबंधी मामले और बैंकिंग और बीमा क्षेत्र का उद्भव ही नहीं बल्कि राजनीतिक और सामाजिक सहयोग संरचनाओं का परिवर्तन भी

शामिल हैं जिसने नए वाणिज्यिक काल के तत्वों की व्यापक स्वीकृति को सुगम बनाया।

7.3 वाणिज्यिक क्रांति की स्थापना

सोलहवीं शताब्दी से पूर्व सदियों में प्लेग, युद्ध और अकाल के कारण मध्य काल में के सामंती विघटन ने ऐसी परिस्थितियाँ बनाई कि जिन्होंने कृषक गतिशीलता को सम्भव बनाया व भूमि स्वामित्व संरचानाओं में परिवर्तन किए उसने एक ऐसे सामाजिक और राजनीतिक बातावरण को सम्भव बनाया जिसने व्यापार और वाणिज्य की वृद्धि और विस्तार को प्रोत्साहित किया। सामंतों और चर्च के मध्यकालीन यूरोप के सामाजिक और आर्थिक जीवन पर नियंत्रण भंग होने से सर्वत्र यूरोप के राजनैतिक माहौल के बारे में समकालीन मंथन हुआ। मध्यकालीन राज्य की बढ़ती हुई इच्छाओं के तहत, ज्यादा संसाधनों को नियंत्रित करने और विशाल और विविध क्षेत्रों पर प्रभाव कायम रखने की जरूरत थी ताकि अकाल व आपदा की घड़ी में जनता की सहायता के लिए, कुलीन वर्ग के सदस्यों की पूर्वी विलासता की वस्तुओं के लिए बढ़ती इच्छाओं को पूरा करने के लिए संसाधन उपलब्ध हों, जो कि ऑटोमन की पूर्वी यूरोप और अनातोलिया पर विजय से संभव हो पाया। राजनीतिक व्यवस्था के भागीदारी का पादरी वर्ग के साथ प्रत्यक्ष द्वन्द्व हुआ जोकि मध्यकाल की प्रतिबंधक, सामाजिक नैतिकता का स्रोत थे। धन की इच्छा, लंबी–दूरी के व्यापार को प्रोत्साहित कर साहूकार परिवारों और ऋण प्रबंधकों को सहयोग प्रदान कराने के लिए राज्यों की नीतियाँ सूदखोरी और व्यापार और विनिमय से प्राप्त मुनाफे के बारे में कैथोलिक चर्च के विचारों के विपरीत थी। चौदहवीं शताब्दी के अंत तक धर्मयुद्धों की समाप्ति ने एशियाई स्थलों के वाणिज्यिक मार्गों को भी खोल दिया, विशेषतः पूर्वी भूमध्यसागर के तट पर 'पवित्र' भूमि को, जिससे वाणिज्य में वृद्धि हुई। इससे तीर्थयात्रा के लिए यातायात के रूप में नई माँग, साथ ही यूरोपीय क्षेत्रों में ऑटोमन और मिश्र की दौलत का नियमित प्रवाह शुरू हुआ और विलास उत्पादों के साथ, एशिया से मसाले और वस्त्र भी यूरोप में बाजार ढूंढ़ने लगे।

बाजारों और मेलों के उद्भव ने आवश्यक विलासता की वस्तुओं के विनिमय को सरल बनाया। दक्षिणी यूरोप के नए विकसित वाणिज्यिक जीवन की वास्तविकताओं को आंतरिक भागों में पहुँचाया।

युद्धों, राजनीतिक परिस्थितियों के साथ ही साथ भौगौलिक परिस्थितियों ने वस्तुओं के स्थल मार्ग यातायात में रूकावटें उत्पन्न की, जिससे तटीय व्यापार महत्वपूर्ण हो गया। इससे पश्चिमी और उत्तर पश्चिमी यूरोप में सषक्त बदंरगाह शहरी स्थल विकसित हुए जिनसे पंद्रहवीं शताब्दी में हेंसेटिक लीग का विकास हुआ। यह लीग शहरों, बंदरगाहों और प्रमुख व्यापारी श्रेणी का वाणिज्यिक और रक्षात्मक परिसंघ था जो उत्तरी यूरोप के क्षेत्र में हन्सा के शहर के इर्द-गिर्द केन्द्रित था। समान रूप से यूहदी समुदायों के नेतृत्व पर इतालवी शहरों और व्यापारी वर्ग का दक्षिणी यूरोप में विनिमय प्रसार और बाजारों पर प्रभुत्व हो गया। दूरगामी एशियाई बाज़ारों से अनुबंध और इतनी लंबी दूरी पर वाणिज्यिक प्रबंधन के खतरों और कठिनाइयों से सामना होने पर उन्होंने एशियाई बाज़ारों के नवाचारों और तकनीकों जैसे 'विनिमय-पत्र' का अनुकरण किया और उन्हें यूरोपीय राजनीतिक और आर्थिक वातावरण के अनुरूप ढाल लिया। इन सदियों में श्रम संगठन के नये रूप के उद्भव को देखा गया, विशेष रूप से, श्रेणियों के रूप में संगठित औद्योगिक कस्बों और शहरों में। एक विशिष्ट निकाय जो समरूप कारीगरों या व्यवसायों की श्रेणी थी वह पंद्रहवीं शताब्दी यूरोपीय शहरों और शहरी स्थलों के सामाजिक-सांस्कृतिक और राजनीतिक परिदृश्य पर हावी हो गयी।

7.4 मूल्य वृद्धि और धातु मुद्रा का उद्भव

सोलहवीं शताब्दी में यूरोप ने आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में अद्भुत वृद्धि देखी। यह मूल्य

वृद्धि महत्वपूर्ण प्रतीत होती है, जब उसकी पहले की सदियों में प्रचलित मूल्यों से उनकी तुलना की जाए। हालांकि मूल्यों में उतार-चढ़ाव पूर्व मूल्यों के 2-3 प्रतिशत के भीतर ही रहा लेकिन यह मौजूदा प्रारंभिक आधुनिक संरचनाओं के टूटने का महत्वपूर्ण कारण था। कुछ विद्वानों ने वस्तुओं की मूल्य वृद्धि या मुद्रास्फीति को इतना रूपान्तरणकारी माना कि इसने बाद के काल में पूँजीवादी समाज और आर्थिक प्रणाली की नींव रखी। 'मूल्य क्रांति' संज्ञा का प्रयोग यहीं दर्शाने करने के लिए किया गया है।

वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि से निर्वाह-व्यय में हुई। वृद्धि को सर्वप्रथम अंग्रेजों और फ्रांसीसी स्रोतों में देखा गया। इसमें सम्मिलित वस्तुओं में मूलतः खाद्यन्न विशेषत अनाज था। यह वृद्धि वस्त्रों और धातु उत्पादों जैसी औद्योगिक वस्तुओं के मामले में न्यूनतम थी। दक्षिणी नीदरलैंड्स में मछली, पनीर और अन्य सामुद्रिक और दुग्ध उत्पादों की तुलना में अनाज के दामों में वृद्धि ज्यादा तीव्र और अत्याधिक थी। 1460-1559 के बीच स्वीडन में, मक्खन, लौंग और अन्य विर्निमित उत्पादों की तुलना में राई और जौं का मूल्य बेहद ज्यादा था। 1550-1650 के बीच इंग्लैंड में मूल्यों में चौगुना वृद्धि हुई जबकि मीट मवेशी और धातु के उत्पादों में उसी काल में दोगुना वृद्धि हुई। 1620-21 के बीच र्जमनी में कुछ स्थानों पर स्थानीय परिस्थितियों से प्रभावित होकर राई जैसे उत्पादों के मूल्य में 14-16 प्रतिशत वृद्धि हुई। फ्रांस में सोलहवीं शताब्दी के दौरान अनाज के दामों में दस गुना वृद्धि हुई जबकि उसी समय में दुग्ध उत्पादों में आठ गुना वृद्धि हुई। अनाज के मूल्यों में सबसे ज्यादा वृद्धि स्पेन में हुई, जहाँ हैमिलटन के अनुसार 1601-1610 के बीच मूल्य स्तर 3.4 गुना बढ गए। पिछली सदी के मुकाबले, ब्राउन और हौपकिनस के अनुसार खाद्यान्न के सूचकांक बिंदु मूल्यों में वृद्धि सबसे उच्चतम फ्रांस में थी उसके बाद इंग्लैंड में।

विद्वानों में सामान्यतः मूल्य वृद्धि की शुरुआत के संदर्भ में मतभेद हैं। कुछ विद्वान इसे अनिवार्य रूप से सोलहवीं शताब्दी की घटना मानते हैं, वहीं दूसरे इसे पंद्रहवीं शताब्दी के कुछ विकासों में खोजते हैं। केम्ब्रिज आर्थिक इतिहास पंद्रहवीं शताब्दी के मध्य से वस्तुओं के मूल्यों में एक स्थिर वृद्धि और ऊर्ध्वमुखी प्रवृत्ति देखते हैं, विषेशतः कृषि उत्पादों में। वह कहते हैं कि सोलहवीं शताब्दी में मूल्यों में आकस्मिक वृद्धि के बावजूद हमेशा एक ऊर्ध्वमुखी प्रवृत्ति थी। उसी प्रकार मूल्यों के उतार-चढ़ाव की अवधि के संबंध में भी सामान्य मतभेद हैं। जहाँ कुछ के अनुसार स्पेन में, 1580 के दशक में सामान्य मंदी की शुरुआत हुई, अन्य विद्वान सोलहवीं शताब्दी के अंतिम दशक में समान सझान पाते हैं। जर्मनी में 1620 के दशक के इर्द-गिर्द मंदी की शुरुआत हुई जबकि उत्तरी यूरोप में मंदी के संकेतक थे, परंतु घटते मूल्यों का कोई रिकार्ड नहीं हैं।

विद्वानों का सामान्यतः विचार यह है कि यूरोप में मूल्य के उतार-चढ़ाव एक चक्रीय घटना थी। बारहवीं और तेरहवीं शताब्दियों में मूल्यों में वृद्धि हुई, आने वाली आगामी सदियों में मूल्यों में गिरावट हुई। लगभग पद्रंहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में 1480-1620 तक मूल्य ऊँचे रहे, जिसके बाद लगभग, एक शताब्दी तक मंदी, का एक अन्य काल रहा, फिर पुनः अठारहवीं शताब्दी में वृद्धि हुई। पियरे चौनु के सुझाव अनुसार 1504-1550 के काल में मूल्यों में स्थिर वृद्धि अनुभव की गई, जिसके बाद 1550-1562-3 के मध्य एक अल्प मंदी हुई। अगले 50 वर्ष का समय, पुनः एक उल्लेखनीय उच्च मूल्यों का काल था, जिसके बाद मंदी का काल था।

7.5 वाणिज्यिक क्रांति का ग्रामीण आधार

वाणिज्य, व्यापार और संबंधित संस्थागत विकास के क्षेत्र में हुए संपूर्ण आधारभूत संरचनागत विकास जोकि 'कृषि अर्थव्यवस्था' में हुए तीव्र परिवर्तनों की पृष्ठभूमि में हुए; उन्हें 'वाणिज्यिक क्रांति' के रूप में पहचान प्राप्त हुई। त्रि-फसल प्रणाली की शुरुआत कृषि के नए औज़ार और

उपकरण, उत्तर में तटबंधों के निर्माण द्वारा समुद्र से भूमि को कृषि योग्य बनाया गया। इंग्लैंड और फ्रांस में दलदलों की निकासी को, साथ ही नए विश्व से आए नई फसलों का आगमन इन्होंने यूरोप के विभिन्न क्षेत्रों में कृषि के संगठन और व्यवहार में क्रांति ला दी

हालांकि कृषि और उसके प्रबंधन क्षेत्र में उपर्युक्त परिवर्तन और कई अन्य धीरे धीरे घटित हुए। चौदहवीं शताब्दी के आरंभ तक संगठन और तकनीक स्थिर बनी रही। उत्पादन, श्रम और कृषकों के भाग पर सामंती भूस्वामियों का और सामंती काश्तकारी का नियंत्रण और वर्चस्व बना रहा। चर्च के कानूनों और बाध्यता की सहायता से समाजिक और राजनीतिक व्यवस्था मूलतः सामंतीय रही। वाणिज्य और आर्थिक प्रारूप यूरोपीय सामाजिक-राजनीतिक चेतना के अधीनस्थ रहे।

चौदहवीं शताब्दी में हुए जनसांख्यिकीय परिवर्तनों, मूल्य, प्लेग और अन्य महामारियों के साथ ही निरंतर युद्धों द्वारा मृत्यु से हुए विशाल जनसंख्या ह्रास ने सामंती संगठन को पतनशील बना दिया। इन घटनाओं ने चौदहवीं शताब्दी के ज्यादातर भाग में कृषि स्थलों और कृषि उत्पादों के बाजारों को संकुचित किया। पंद्रहवीं शताब्दी के अंत में यूरोप के विभिन्न भागों में सर्वत्र दुबारा जनसंख्या वृद्धि हुई। इस जनसंख्या वृद्धि ने बढ़ती माँग के कारण भूमि पर दबाव बनाया। निम्न उत्पादकता और अधिक माँग ने खाद्य मूल्यों में वृद्धि की जो पंद्रहवीं शताब्दी की 'मूल्य क्रांति' का आधार बनी।

धीरे-धीरे बोई गई फसलों के प्रारूप में और कृषि उत्पादों की माँग में यूरोपीय बाजारों में परिवर्तन देखे गए। दक्षिण और दक्षिण पूर्व से शुरू होकर पश्चिमी और उत्तरी यूरोप के क्षेत्रों में भी नवाचार बढ़ा। कृषि के संगठन और इस क्षेत्र में कार्यरत श्रम का प्रसार हुआ और आने वाली कृषि वस्तुओं के बढ़ते मूल्यों ने नवाचार और निवेश को भी प्रेरित किया। बढ़ती हुई जनसंख्या ने आवश्यक वस्तुओं की माँग को बढ़ा दिया जैसे वस्त्र और अन्य निर्भर कृषक उद्योग जैसे तेल और मदिरा की माँग बढ़ी। खाद्यन्न और आवश्यक वस्तुओं की बढ़ती जरूरतों को पूरा करने के लिए मत्सय-पालन और डेरी महत्वपूर्ण पूरक उद्योगों के रूप में विकसित हुए। इस सब को यूरोप के एक क्षेत्र से दूसरे में वस्तुओं की आपूर्ति को सुविधाजनक बनाने की जरूरत थी। उदाहरण के लिए, पूर्वी यूरोप से खाद्यान्न को पश्चिम भेजा जाने लगा और दक्षिण में भूमध्यसागर बंदरगाहों से उत्तर में हन्सा बंदरगाहों से आने वाली वस्तुएँ जैसे मसाले आतंरिक भागों में जाने लगी। इन बंदरगाहों को आतंरिक वितरण स्थलों से जोड़ने वाले जलमार्गों के द्वारा नए बाज़ारों और मेलों से जोड़ा जाने लगा।

सर्वत्र यूरोप में कृषक परिर्तनों के महत्वपूर्ण प्रसार से सोलहवीं शताब्दी में भूमि संगठन और कृषि अर्थव्यव्स्था में महत्वपूर्ण बदलाव आया। कई स्थानों पर जागीरी भूमि, जिसके स्वामी सामंत थे, जिस पर कृषि कृषक श्रम द्वारा की जाती थी; वे तोड़ी जाने लगी और छोटे काश्तकारों को पट्टे पर दे दी गई। लगान के श्रम रूप को मुद्रा या वस्तु रूप में रूपातंरित कर दिया गया था। ऐसे पट्टे फ्रांस और इटली में व्यापक हो गए। इसका एक कारण यह भी था कि कृषि आधारित उत्पादों की बढ़ती माँग से व्यापारी वर्ग पट्टे पर भूमि का अधिग्रहण कर उत्पादन के लिए संगठित श्रम को उत्पादन में भाग के बजाय वेतन देने लगे और कारखाने में उत्पादन के लिए श्रम का संगठन करने लगे। भूमि और कृषि के प्रति यह उद्यमी रवैया सोलहवीं शताब्दी से इंग्लैण्ड में प्रत्यक्ष प्रतिष्ठित था। समृद्ध कृषकों का एक वर्ग उद्भव होने लगा। कुछ क्षेत्रों में शहरों और कस्बों के करीबी की भूमि को व्यक्तिगत व्यापारी, उद्यमी, नवोदित शहरी पूँजीपति वर्ग और कभी-कभी श्रेणियों संघों के सदस्य हासिल करने लगे ताकि ग्रामीण भू-संपत्ति द्वारा कुलीन वर्ग का दर्जा पाने के लिए सामाजिक स्थिति प्राप्त कर सकें। क्योंकि वह अभी भी भूमि से जुड़ा था, वाणिज्य से नहीं।

कृषि संबंधी कई पुस्तकें दिखाई पड़ने लगी। मुद्रण के आगमन से इनमें से ज्यादातर छपने लगी और उनका परिचलन होने लगा। जर्मनी में मार्टिन ग्रोस्सर, जोहेन कोलेर और कॉनरेड

हैरसबारन, फ्रांस में औलिवर डी सेरेस और जान लीबौल्ट, इंग्लैंड में एंथनी फिटर्स्हबर्ट और थोमस टूस्सेर ने कृषि और पशुपालन पर प्रमुख पुस्तकें लिखी।

नीदरलैंड्स में सोलहवीं शताब्दी के दौरान तीन विभिन्न प्रकार के फसल चक्र विकसित हुए। एक फसल चक्र के तहत बहु-फसल का उत्पादन था, जिससे भूमि को पौधे, पाँचवें और छठे वर्ष तक परती रखने की प्रथा का अंत हुआ। दूसरे रूप के तहत, दो वर्ष अनाज की खेती के बाद एक वर्ष भूमि को परती छोड़ना पडता था। इनमें बहुत सी पद्धतियों को पूर्वी यूरोप में अपनाया गया, जहाँ सामाजिक ढाँचे अभी भी मुख्यतः सामंती थे। इंग्लैंड में भूमि बाडवंदी की प्रथा का आरंभ हुआ, जिसने सोलहवीं शताब्दी में और अधिक गति पकड़ ली। यह पशु पालन के प्रसार की प्रतिक्रिया के रूप में हुआ, सर्वत्र यूरोपीय बाज़ारों में ऊन और ऊनी वस्त्रों की बढ़ती माँगों के कारण हुआ।

बॉडैन के अनुसार 1570-1640 के बीच, अंग्रेजी अर्थव्यवस्था न कृषि व्यापार के परिमाण संगठन और प्रभाव में इस समय गुणात्मक बदलाव आया। सामान्य साझा भूमि और बंजर भूमि का विशाल स्तर पर औपनिवेशीकरण हुआ। अधिशेष श्रमिक वर्ग का ग्रामों और ग्रामीण क्षेत्रों से वनों की नई बस्तियों और अन्य भूमि-पुनरूद्धार क्षेत्रों की ओर पलायन हुआ।

एक अनुमान अनुसार, 1485-1607 के बीच, मिडलैंड में लगभग 21 : भूमि कृषि बाड़बंद थी। अपितु मक्का के दामों में वृद्धि और कृषि-उत्पादों के नए बाजारों के यूरोप महाद्वीप में उद्‌भव से इंग्लैंड पुनः कृषि में परिवर्तित हो गया। सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में, चारागाहों की तुलना में कृषि योग्य भूमि के लगान बढ़ गए। इस प्रवृत्ति के परिर्वतन से पशु-पालन उत्तरोत्तर आयरलैंड की ओर स्थानांरित हो गया। चौदहवीं से सौलहवीं सदी के मध्य तक कुटीर-उद्योग में तीव्र गति वृद्धि हुई, विशेषतः ग्रामीण क्षेत्रों में शहरों और कस्बों से दूर। वस्त्र की बढ़ती माँग और कृषि के विस्तार से नए उपकरणों और ऊर्जा के नए स्रोतों के प्रयोग की माँग हुई। इसके कारण बहुतों को कृषि उपकरणों के उत्पादन में कच्चे माल के उत्पादन स्थलों के समीप वस्त्र बुनाई में विविधता लाने के लिए प्रेरित किया। ग्रामीण क्षेत्रों में श्रमिकों की बेहतर उपलब्धता ने यह संभव बनाया। इस समय विकसित कुटीर-उद्योगों में ढलाई-गृह, तेल, पत्थर, अनाज पीसाई की चक्कियाँ और आराधार, कागज उत्पादन, शोधशाला और खनन गतिविधियाँ सम्मिलित थी।

7.6 औद्योगिक उत्पादन

सोलहवीं शताब्दी में उद्योग और कृषि का विकास घनिष्ट रूप से जुड़ा हुआ था। एक क्षेत्र की प्रगति दूसरे की सहायक, सहयोगी, अंनुकूल थी हालांकि सोलहवीं शताब्दी से पहले की सदियों में उत्पादन तकनीक में ज्यादा परिवर्तन नहीं हुआ था, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में औद्योगिक उत्पादन का काफी प्रवेश हो चुका था। जे.एफ.नैफ ने सोलहवीं शताब्दी को औद्योगिक क्रांति में से एक मानने के तर्क दिए हैं –

1) कोयला उत्पादन में 14 गुना वृद्धि हुई, 1550 के दशक में सालाना 17000 टन से 1680 के दशक में 25,00,000 टन; जिसने शहरों के विकास और जहाज़ निर्माण को सुगम बनाया। लौह उद्योग और धातुकर्मी कारखानों में अनुरूपी विकास था, जहाँ ग्रामीण क्षेत्रों के बहुत श्रमिकों को कार्यरत किया।

2) नए उद्योगों के विकास और इसमें बढ़ते रोजगार ने नई तकनीकी और उत्पादन प्रक्रियाओं को अपनाया गया।

यद्यपि इस बात को अस्वीकार किया गया है, विशेषतः 'क्रांति' शब्द का प्रयोग। तकनीक और उत्पादन के संगठन में कोई मूलभूत परिवर्तन नहीं पहचाना गया है। सोलहवीं शताब्दी के मध्य से यूरोप के कुछ भागों में जोरदार विकास का चरण रहा, विशेषतः धातुओं और खनिजों

का वात्या-भट्टी के आगमन से लोह उत्पादन का विस्तार हुआ और इसने कई अन्य उद्योगों को प्रोत्साहित किया जैसे कि अस्त्र-शस्त्र, पीतल, ताँबे की वस्तुएँ और काँच। वस्त्र उत्पादन भी बढ़ गया और उसके साथ फिटकरी और रंजक साम्रगी जैसे उत्पाद भी।

कृषि के अलावा संपूर्ण सोलहवीं शताब्दी में वस्त्र उद्योगों में सबसे बड़ी संख्या में लोग कार्यरत थे। इस समय उद्योग में संगठन में कुछ महत्वपूर्ण रुझान दिखाई पड़े। एक शहरी शिल्प होने के कारण, यह कुशल कारीगरों पर निर्भर थे जोकि अपने घर या कार्यशाला से कार्य करते थे। इन्हें पारम्परिक श्रेणियों के अधिनियमों के तहत रखा जाता था, और इस प्रकार इन कार्यशालाओं में नई तकनीक और नवाचारों की अपनाने की संभावना बेहद कम थी। एक अन्य प्रवृत्ति वस्त्र उत्पादन के ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानांतरण की दिशा में थी। इस संगठन से ग्रामीण मज़दूरों को अंशकालिक रोजगार प्राप्त हुआ। अतः कताई असल में एक ग्रामीण व्यवसाय बन गया, शहरी बुनकरों के लिए भी, जो इसकी निकटवर्ती, गाँवों से आपूर्ति पर निर्भर हो गए। इससे ग्रामीण जनसंख्या को अतिरिक्त आमदनी प्राप्त होने लगी, विशेषतः इंग्लैंड, जर्मनी और नीदरलैंड में। इसने कृषि समृद्धि को लाने में सहायता की। यूरोप के वस्त्र उद्योग अलग-अलग किस्म के वस्त्रों का उत्पादन कर रहे थे, जैसे ऊनी, लिनन सूती, मिश्रित माल और कुछ विलसिता वस्त्र भी।

सर्वत्र सोलहवीं शताब्दी में विनिर्माण और खनन गतिविधियों में विस्तार हुआ परंतु इसका परिणाम कारखाना उत्पादन प्रणाली में नहीं हुआ। हालांकि व्यापार का परिमाण बढा था, जनसंख्या में वृद्धि और मूल्यों में स्थिर वृद्धि थी, लेकिन फिर भी यूरोप में व्यापक माँग की कमी थी, क्योंकि अभी भी यूरोप के ज्यादातर भाग सामतंवाद की गिरफ्त में थे। निवेश में पूँजी की कमी थी और प्रबंधन की अवधारणा त्रुटिपूर्ण थी।

ज्यादातर राज्यों में राज्य सरंचनाएँ सामंतीय मापदंडों के अंतर्गत ही विकसित हुई थी। कई स्थानों पर जैसे इंग्लैंड और फ्रांस में सरकारों ने नई प्रकार की तकनीकी और नवाचारों पर प्रतिबंध लगाए हुए थे। पूँजी–प्रधान पद्धतियों को अस्वीकार किया गया और राज्य-कानून श्रेणियों निर्माण के पक्ष में थे। इन प्रतिबंधों के बावजूद विर्निमाण क्षेत्र ने इन प्रतिबंधनों से बचने का प्रयास किया, अपनी औद्योगिक गतिविधियों को ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानांतरित कर, जिससे ग्रामीण कुटीर उद्योग का उन क्षेत्रों में उद्भव हुआ जहाँ पूँजीवादी तत्व उत्पादन में प्रमुख हो गए थे।

आर्थिक इतिहासकर सोलहवीं शताब्दी को यूरोप में महत्वपूर्ण मानते हैं, क्योंकि इस समय औपनिवेशिक साम्राज्य के कारण व्यापारिक मार्गों और व्यापारिक क्षेत्र में परिवर्तन से अटलांटिक अर्थव्यवस्था का उदय हुआ। एशिया से यूरोप के लिए व्यापार मार्गों की खोज के साथ, दीर्घकाल से स्थापित व्यापार मार्ग जो कि कुस्तुतुंनिया से होकर जेनोआ और वेनिस से गुजरते थे, उन्होंने अपना महत्व खो दिया, तदोपरांतः अंटलांटिक तट के सीमांत राज्यों की अर्थव्यवस्थाओं को समर्थन मिला। इस परिवर्तन का प्रथम संकेत निम्न तटीय देशों में ऐंटवर्प के उदय के रूप में देखा जा सकता है।

ऐंटवर्प के उदय के लिए कई सहायक कारक थे, जिन्होंने अप्रत्यक्ष रूप से अटलांटिक अर्थव्यवस्था के उदय का संकेत दिया। सोलहवीं शताब्दी के दौरान ऐंटवर्प को विश्व की 'वाणिज्यिक राजधानी' के रूप में वर्णित किया गया। ऐंटवर्प का उत्कर्ष पद्रंहवीं शताब्दी के अंत के समय शुरू हुआ, जब वेनीशियन व्यापारियों ने एशियाई मसालों के व्यापार का एकाधिकार पुर्तगालियों को खो दिया। पुर्तगालियों ने ऐंटवर्प बंदरगाह को निकासी के बंदरगाह के रूप में प्रयोग करना शुरू किया और इस इलाके के जर्मन व्यापारियों और वाणिज्यिक समुदायों जैसे फुग्गरों के साथ करीबी वाणिज्यिक संबंध स्थापित किए। जर्मन व्यापारी पुर्तगाली व्यापारियों द्वारा सप्लाई किए गए मसालों के बदले उन्हें (पुर्तगालियों को)

उनके व्यापार के वित्तपोषण के लिए अति-आवश्यक पूँजी प्रदान करने लगे। इंग्लैंड के ऊन व्यापारियों से करीबी व्यापारिक सम्बंध स्थापित करने से ऐंटवर्प को हितलाभ हुआ। व्यापारी दुस्साहसियों की इंग्लिश कंपनी ने शहर में एक निकासी घर स्थापित किया, जहाँ वस्तुओं को संचय किया जाता था, और वहाँ से उनको सर्वत्र बाल्टिक तट और उत्तरी यूरोप सप्लाई किया जाता था।

ऐंटवर्प जैसे वाणिज्यिक केन्द्रों की प्रगति जोकि उत्तरी यूरोप के ज्यादातर क्षेत्रों के वाणिज्यिक जीवन पर हावी था, इस समय की प्रगति का लक्षणसूचक है। उत्तरी यूरोप में ऐंटवर्प जैसे शहरी केन्द्र, बाद में ऐम्सर्टरडैंम और लंदन इस काल के नमूने के शहरी बाजार का प्रतिनिधित्व करते हैं। बहु बाजारों वाला शहर जोकि व्यापारियों और उत्पादकों की श्रेणियों द्वारा नियंत्रित था, प्रवासित ग्रामीण जनसंख्या बड़ी संख्या में कुछ शिल्पों और तकनीकी में कार्यरत थी। श्रेणियों शहरों और कभी-कभी सम्राज्यों के आर्थिक निर्णय प्रक्रिया में प्रमुख थी। दूर-दराज के क्षेत्रों पर औपनिपवेशिक नियंत्रण उपनिवेशों, उनके संसाधनों और यूरोपीय साम्रगी के लिए बाज़ारों के नियंत्रण और प्रबंधन का उपयोग कर रहा था। इस समय का वाणिज्यवादी नीतियों ने व्यापारी श्रेणियों, बैंकरों, हितधारकों और राज्य अधिकारियों और सम्राटों के संरक्षणचादी हितों की प्रतिरक्षा की, जिन सबकी भागीदारी ने सोलहवीं शताब्दी के वाणिज्यिक विश्व को आकार दिया।

7.7 बैंकिंग संस्थानों का उद्‌भव और यूरोपीय बाज़ारों में पूँजी की उपलब्धता

यूरोपीय ग्रामीण क्षेत्र में वाणिज्य के विस्तार और मुद्रा अर्थव्यवस्था के गहरे प्रवेश से सोना-चाँदी के प्रवाह पर नियंत्रण और विनियमन करने की आवश्यकता थी और अमेरिका से एशियाई देशों के विशाल भूगौलिक क्षेत्र के विभिन्न बाजारों में वस्तुओं की विनिमय दर पर नियंत्रण कायम रखने की जरूरत थी। समुद्र पार अमरीकी चाँदी की खदानों और जमीन से आने वाले विशाल सोना-चाँदी के प्रवाह ने विनियम का सुगम बनाया और वाणिज्य विनियमन की अपनी समस्याएँ उत्पन्न की। लंबी दूरी व्यापार में शामिल निजी व्यापारी परिवारों, विशेषतः जिनका पंद्रहवीं शताब्दी से यूरोपीय बाजारों में भारी निवेश था, उन्होंने यूरोपीय बाजारों में बैंकिंग सुविधाओं का प्राथमिक रूप में नवचार किया और उन्हें शुरू किया। यही आरंभिक व्यापारी-बैंकर आरंभिक आधुनिक यूरोपीय अर्थव्यवस्था के उभरते वाणिज्य की रीढ़ की हड्डी बन गए, उन्होंने खोजी समुद्री यात्राओं को समर्थन देकर साथ ही वाणिज्य में कुलीन वर्ग के निवेश का वित्तपोषण भी किया।

इतावली बैंकरों वित्त के बेहतर संचालन के लिए ने दोहरी प्रविष्टि वाली बही खाता पद्धति का नवाचार का विकसित किया। सोलहवीं शताब्दी के अंत में इन व्यापारी बैंकरों का सर्वत्र यूरोपीय बाजारों में उद्‌भव हुआ। औद्योगिक कार्यों और कृषि संचालन के लिए उनका प्राथमिक निवेशक और सोना-चाँदी आपूर्तिकर्त्ताओं के रूप में उद्‌भव हुआ जो, एक प्रकार से माँग को निर्धारित करते थे और वस्तुओं के उत्पादन और वितरण को नियंत्रित करते थे। जैसे-जैसे व्यापार की संचालन ज्यादा जटिल हुआ और युद्धों, संघर्ष साथ ही सर्वत्र विशाल समुद्रपार क्षेत्रों में उपनिवेशों की स्थापना से जोखिमों में वृद्धि हुई, वैसे ही इन व्यापारी बैंकरों का महत्व बढ़ गया। इंग्लैंड, फ्रांस, हॉलैंड, लैनडरस, इटली और जर्मनी के बहुत से शहरों ने इन व्यापारी-बैंकरों का उद्‌भव देखा। यद्यपि आधुनिक रूप से, बड़े स्तर पर परिचालन वाले बैंकों की स्थापना सत्रहवीं शताब्दी की घटना रही। आईबिरीअन राज्यों के इन आरंभिक उद्यमों का सहयोग करने वाले महत्वपूर्ण साहूकार परिवारों में इटली स्थित जेनोआ, वेनिस और लोरेंस के व्यापारिक-बैंकरों घराने थे। लोरेंस का मेडिसी घराना इटली के बैंकिंग घरानों में से सबसे प्रख्यात था।

पद्रंहवीं शताब्दी के अंत और सोलहवीं शताब्दी में जर्मेनिक राज्यों जैसे कि ऑग्सर्बग ने भी व्यापारी प्रसार और स्थानीय बैंकिंग परिवारों का उद्भव देखा, फुग्गर इनमें सबसे प्रख्यात थे।

7.7.1 प्रारंभिक बैंकिंग संस्थाएँ

आधुनिक बैंकिंग का आरंभ इतालवी शहरों में ऐसे साहूकार बैंकों की स्थापना के साथ बारहवीं शताब्दी में देखा जा सकता हैं। यह क्षेत्र के यहूदी समुदाय और शहरी कुलीन वर्ग की मदद से हुआ। सर्वप्रथम अभिलिखित बैंक की स्थापना राज्य की गारंटी के साथ वेनिस में हुई थी। 1407 में जेनोआ के बैंक के उद्घाटन तक यह क्षेत्र का एकमात्र कार्यवाहित बैंक था। इटली में, आगामी काल में मेडिसी सबसे शक्तिशाली बैंकिंग घराने के रूप में उभरा। मेडिसी, लोरेंस शहर का बैंकिंग घराना था जिसने 1892 में अपना प्रचालन आरंभ किया और 1494 सी.ई. तक चालू रखा। इन प्रारंभिक बैंकों की स्थापना का प्राथमिक कारण आंरभिक धर्मयुद्धों को कोष प्रदान करना था, साथ ही साथ पवित्र भूमि जाने वाले यात्रियों और पश्चिमी एशिया के बाजारों के व्यापारियों को सोना-चाँदी की आपूर्ति करना भी था। 1401 सी.ई. में वेनिशियन मॉडल पर आधारित तौला डे कान्वी-विनिमय सूची पर आधारित यूरोप का पहला बैंक बारसीलोना, स्पेन में खुला। यूरोप में बैंकिग कार्यवाही यहूदियों के एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में प्रवासन के कारण हुई।

नई वस्तुओं की बढ़ती हुई माँगों के साथ ही साथ यूरोपीय ग्रामीण क्षेत्रों और शहर के गहरे मुद्रीकरण से इस सदी के दौरान विनिमय कार्यवाही बेहद जटिल हो गई, जिस कारण बड़े बैंकों की आवश्यकता महसूस की गई। निजी और सार्वजनिक बैंकों की कार्यवाही और कार्यक्षेत्र में क्रमशः सीमांकन आ गया। प्रारंभिक सार्वजनिक बैंक जेनोआ और बारसीलोना में स्थापित किए गए। 1587 सी.ई. में वेनिशियन सरकार ने बैंक ऑफ रिआल्टो की स्थापना की, जोकि मूलतः जमा राशि स्वीकृत करता था और मुद्रा का स्थानातंरण करता था। इसी प्रकार के बैंकों की स्थापना मिलान (1593), एम्स्टर्डम (1609), हैम्बर्ग (1619) और न्यूरेम्बर्ग (1621) में हुई। नए विकासशील वाणिज्यिक बाज़ारों के लिए उत्तरी यूरोप और जर्मन क्षेत्र केन्द्रीय बने रहे, जहाँ परिष्कृत विनियम उपकरणों की आवश्यकता थी। यद्यपि यह सार्वजनिक बैंक स्वयं की केवल सोना-चाँदी के संचय में शामिल थे और उसे एक जगह से दूसरे स्थानांतरित करने का कार्य करने थे। अतः इसने विनियम को सुगम बनाया। इसका मूल कारण सत्रहवीं शताब्दी के आरंभ तक ब्याज और अन्य गतिविधियों से मुनाफाखोरी के विरुद्ध, चर्च के आज्ञापत्रों का प्रबल प्रभाव था।

7.7.2. लोरेंस के मेडिसी

लोरेंस के मेडिसी घराने का लोरेंस शहर के वाणिज्य के साथ ही इटली के दक्षिणी और पूर्वी भागों पर भी पर उल्लेखनीय प्रभाव और नियंत्रण था। यह (मेडिसी) असल में टस्कनी के म्यूगेल्लो क्षेत्र से थे, इस परिवार ने वाणिज्य और बैंकिंग में अपने रुझान को विविध करके समृद्धि प्राप्त की। इनकी आरंभिक संपत्ति वस्त्र व्यापार और लोरेंस के 'ऊनी' श्रेणी के साथ अतः क्रिया से उत्पन्न हुई। पद्रंहवीं शताब्दी के अंत तक मेडिसी घराना राजाओं, राजकुमारी, व्यापारियों यहाँ तक की रोमन कैथोलिक चर्च और उससे संबंधित संस्थाओं के बैंकर और सोना-चाँदी के आपूर्तिकर्ता बन गए थे।

वह उल्लेखनीय रूप से लोरेंस की राजनीति में शामिल थे, और बाद में उन्होंने यूरोप के प्रमुख दरबारों से संबंध स्थापित कर लिए थे। इस घराने के प्रभाव की पहुँच इस कदर थी कि इसके चार सदस्यों ने पोप का कार्यभार संभाला (लीओ X (1513-1521), क्लीमेंट VII (1523-1534) पारस IV (1559-1565) और लीओ XI (1604) उन्होंने फ्रांसीसी महाराजाओं से वैवाहिक संबंध स्थापित किए, फ्रांस को दो महारानियाँ मेडिसी परिवार की थी– कैथरीन डी मेडिसी (1547-1589) और मैरी दी मेडिसी (1680-1630)। 1532 में मेडिसी घराने ने डयूक

ऑफ लोरेंस की आनुवंशिक उपाधि प्राप्त की, जिसे 1569 में क्षेत्रीय विस्तार के कारण उन्नत कर ग्रैंड डची ऑफ टसकनी बना दिया गया।

मेडिसी कला के महान संरक्षक थे उन्होंने पियानों जैसे संगीतात्मक उपकरण के उद्‌भव और ओपेरा जैसी प्रदर्शन कला को सहयोग प्रदान किया। उन्होंने सेंट पीटर बैसिलिका और सांता मारिया डैल फिओरे के निर्माण को धन दिया। उन्होंने लिओनारडो डॉ विन्ची, माईकल ऐंजेलों, मैक्यावेली, और गैलीलियो को संरक्षण दिया। वह प्रति धर्म सुधार के समर्थक थे, धर्म-सुधार आंदोलन की शुरुआत से लेकर टेरेंट की परिषद् और फ्रांसीसी धर्म युद्धों तक प्रति-धर्मसुधार का समर्थन करते रहे।

7.7.3 ऑग्सर्बग के फूग्गरस

फूग्गरस परिवार की शुरुआत कृषक बुनकरों के रूप में हुई, धीरे-धीरे उन्होंने चाँदी, ताँबा और पारा खनन में भाग लिया। उस काल के प्रधान ऋणदाता के रूप में वह स्पेन के समुद्रपार साम्राज्य के मूल बैंकर बन गए, साथ ही स्पेन के समुद्रपार सीमा शुल्क पर नियंत्रण करने लगे। उनकी कार्यवाही का प्रभाव रोम से बुडापेस्ट, लिस्बन से डैनजिंग, मास्को से चिली तक फैला हुआ था। बैंकर के रूप में वह लाखों डकाट (मुद्रा का नाम) राजाओं, कार्डिनलों, पवित्र रोमन सम्राटों को देने लगे और युद्ध, अभियानों यूरोपीय राजाओं के औपनिवेशीकरण के प्रयासों इत्यादि के लिए वित्त प्रदान करने लगे। 1514 में पवित्र रोमन सम्राट मैक्समिलन I ने जेकब फूग्गर II की अपने मुख्य वित्तीय अधिकारी के रूप में भूमिका को स्वीकृति दी, और उसे पवित्र रोमन साम्राज्य का आनुवंशिक नाइट (वीर योद्धा पदवी) बना दिया। 1516, में एक जटिल ऋण का समझौता करवा कर, उसनें इंग्लैंड के हैनरी VII को फूग्गर घराने मित्र का बना लिया। वस्तुतः फुग्गर के पवित्र रोमन साम्राज्य वैटिकन दरबार के कामकाज पर प्रभाव के परिणामस्वरूप, 1517 के पोप के अध्यादेश द्वारा सूदखोरी पर से प्रतिबंध हट गया।

बोध प्रश्न-1

1) आप वाणिज्यिक क्रांति के स्थान को कैसे देखते हैं?

.....

.....

2) इस काल में औद्योगिक उत्पादन के क्या पहलू थे?

.....

.....

7.8 वित्तीय लेन-देन की प्रणालियाँ

यूरोपीय महाद्वीप के विशाल क्षेत्र में वाणिज्यिक लेन-देन की मात्रा में वृद्धि हुई। स्थानीय केन्द्रों की बढ़ती जनसंख्या के कारण से बढ़ती माँग, साथ ही यूरोप के कई क्षेत्रों में वाणिज्यिक कृषि के उद्‌भव ने इसमें मदद की और विभिन्न बाजारों में और बड़ी संख्या में वित्तीय कारोबारियों के बीच विशाल स्तर के वित्त स्थानातंरण को आवश्यक बना दिया। बढ़ती हुई राजनीतिक अस्थिरता, धार्मिक कलहों के कारण उत्पन्न युद्धों और कृषि समृद्ध और खनिज भंडार विशेषतः सोना और चाँदी वाले क्षेत्रों के लिए युद्ध लड़ने वाले हठधर्मी राष्ट्र राज्यों ने परिस्थिति को और अधिक जटिल बनाया।

साख के साधन और सुविधाएँ जिनका पहले ही उदय हो चुका था, और जो इतालवी राज्यों में प्रयोग में थी, उन्हें अपनाया गया और वे अन्य क्षेत्रों में भी स्थानीय होने लगी। यूरोपीय

व्यापारी कारोबारी वर्ग की इन विनिमय साधनों से अच्छी जानकारी ने अठारहवीं शताब्दी और उन्नीसवीं शताब्दी में पूँजीवादी संरचनाओं के उद्‌भव की नींव रखी।

मध्यकालीन साख साधनों की अध्ययन-संबंधी अपनी कठिनाइयाँ हैं। प्रथम संभवत साख साधनों की शब्दावली आधुनिक काल के समान हो, परन्तु उनकी प्रकृति और कार्य-प्रणाली का तरीका बेहद भिन्न था। एक स्वरूप, लैटर डी फायरे का कोई आधुनिक सम्बंध बोधक नहीं है और उसकी सटीकता से व्याख्या करने वाले कोई शब्द नहीं है। इस काल के अन्य साधनों की तुलना प्रतिज्ञा-पत्रों, ऋण-पत्रों से की जा सकती हैं, परन्तु समरूपता पूर्णरूप से उचित नहीं है। मुद्रा स्थानातंरण केवल मेलों-शहरों, या मेला काल तक ही सीमित नहीं था। उपभोग व्यय, व्यापारिक व्यय उन शहरों में जहाँ मेले नहीं थे, दोनों को अलग साधनों की आवश्यकता थी, और यह माँग उतनी ही जरूरी थी, जितना की मेलों के मध्य की। वहाँ विनिमय के विशिष्ट साधनों का विकास किया गया। निसंदेह यह कहना अतिशोक्ति नहीं होगा कि मुद्रा स्थानातंरण के संदर्भ में बारहवीं, तेरहवीं, चौदहवीं शताब्दी की किसी भी सूरत में प्रभावशाली भूमिका नहीं थी। यह पर्याप्त रूप से निश्चित हैं कि इस समय बहुत से साख के मुद्रा स्थानातरंण लैटर डी फायरे के अलावा साधनों से प्रभावित हुए थे।

साख स्थानातरंण का एक महत्वपूर्ण स्वरूप प्रतिज्ञा-पत्र था, जिसमें उत्तरगामी तिथि पर किसी दूर स्थान पर अदायगी का अनुबंध था। सामान्यतः केवल दो पक्ष होते थे, लेनदार और देनदार और दोनों को दूसरे स्थल पर उपस्थित होने की बाध्यता थी या फिर प्रतिनिधि को भेजकर कार्य संपादन करवाया जाता था।

7.9 विनिमय-पत्र

एक विनिमय-पत्र, आमतौर पर एक माँग आधारित या समय निर्धारित, एक निश्चित धनराशि के भुगतान की गारंटी देने वाला दस्तावेज़ था। विशेषतौर पर यह एक अपेक्षित दस्तावेज था या अनुबंध युक्त, जिसके अंतर्गत बिना शर्त धन भुगतान का वादा होता था, जोकि या तो एक निश्चित तिथि पर या फिर माँग पर दिया जाता था। इस शब्द के विभिन्न अर्थ हो सकते हैं, जोकि किस कानून को लागू किया गया, किस देश या किस संदर्भ में इसका प्रयोग किया गया, इस पर निर्भर था।

यह सामान्यतः आंतरिक और बाहरी दोनों व्यापारिक लेन-देन में प्रयुक्त थे। इनके द्वारा धन की बड़ी राशि को एक स्थान से दूसरे स्थान ले जाए बिना। लंबी दूरी के भुगतान सुगम थे, साथ ही पत्रों को अन्ततः जमा होने से पहले बहुसंख्यक व्यापारियों और सौदागरों के मध्य हस्तांतरित होने का सुअवसर था, अधिकांश-पत्र वहाँ के बैंकों द्वारा पुष्टि पर आधरित थे, जहाँ पत्र प्रस्तुत किया जाता था।

पत्रों के सर्वप्रथम प्रयोग का श्रेय टेम्पलर नाइटों को प्राप्त है, जो कि तीर्थ यात्रियों को नोटस जारी करते थे, यह तीर्थ यात्री पवित्र भूमि के संकटपूर्ण यात्रा प्रारंभ करने से पहले अपनी कीमती वस्तुओं को टेम्परलस के पास ज़माकर देते थे। इन तीर्थ यात्रियों को अपनी निधि गंतव्य पर पहुँचकर समान मात्रा में, पुनः प्राप्त हो जाती थी। एशियाई बाज़ारों में ऐसे दस्तावेज नौवीं शताब्दी के बाद से प्रयोग में थे। बाद में बारहवीं शताब्दी में आइबिरियन और इतालवी व्यापारियों द्वारा ऐसे प्रतिमानों का प्रयोग किया गया। इस प्रकार के पत्रों पर प्रारंभिक प्रयोग जेनोआ के व्यापारियों द्वारा किया गया।

तेरहवीं से पद्रंहवीं शताब्दी में इटली में विनियम-पत्रों और प्रतिज्ञा-पत्रों ने अपने मुख्य लक्षण प्राप्त किए। उनके बाद के विकास चरणों को फ्रांस (सोलहवीं-अठारहवीं शताब्दी के दौरान जहाँ पुष्टिकरण शुरू हुआ) और जर्मनी (उन्नीसवीं शताब्दी में विनिमय कानून का औपचारिकीकरण हुआ) से जोड़ा जाता है। अंग्रेजी कानूनों में इन पत्रों के सर्वप्रथम प्रयोग का उल्लेख 1381

में रीचर्ड II काल के दौरान पाया गया। यह कानून, इंग्लैंड में इस प्रकार के साधनों के प्रयोग को अनिवार्य बनाता है और भविष्य के सोना-चाँदी, नकद के निर्यात को, किसी भी रूप में, विदेशी वाणिज्यिक लेन-देन के लिए भुगतान करने को प्रतिबंधित करते हैं।

सत्रहवीं शताब्दी तक डच व्यापारियों द्वारा इन पत्रों का, साधनों के रूप में प्रयोग बटाविया, सीलोन (श्रीलंका) और बंगाल जैसे एशियाई बाजारों में धन स्थानातंरित करने के लिए किया जाता था। एफ. स. गास्त्रा के शब्दों में: "कंपनी सेवक और अन्य जोकि अपने धन को नीदरलैंड भेजना चाहते थे, वह बटाविया, सिलोन और बंगाल की VOC कोषागार में अपना पैसा जमा करा देते थे। इस धन के बदले उन्हें विनिमय-पत्र प्राप्त होते थे। इन पत्रों को यूरोप लौटने वाले जहाजों के बेड़ों के साथ वापस भेज दिया जाता था, जहाँ फलतः इन्हें एक्सटर्ड्म या कोई अन्य कोष्ठ शहर में नकदी में बदल लिया जाता था। बहुत से अधिकारी स्वदेश लौटते समय, बड़ी मात्रा में धन स्थानातंरित करते थे, अतः वह इन बिलों को स्वयं नकदी में परिवर्तित करा पाते थे। अन्य परिस्थितियों में इस धन को नीदरलैंड्स से बैंकरों या ऐजेन्टों, रिश्तेदारों द्वारा प्राप्त किया जाता था"।

7.10 प्रतिज्ञा-पत्र

प्रतिज्ञा पत्रों को आधुनिक मुद्रा नोटों का अग्रगामी माना जाता है। प्रतिज्ञा-पत्रों का ऋण स्थानातंरण और विनिमय के साधनों के रूप में प्रयोग किया जाता था, विशेषतः हॉलैंड, ऐंटवर्प और फ्रांस में। प्रतिज्ञा-पत्र को अक्सर देय-पत्र भी कहा जाता हैं, यह एक कानूनी साधन (विशेषतः एक वित्तीय साधन या ऋण साधन) है, जिसमें एक पक्ष (निर्माता या जारीकर्ता) लिखित में एक निश्चित धनराशि को दूसरे पक्ष (प्राप्तकर्ता) को देने का वादा करता है या तो एक नियत या निर्धारत योग्य भविष्य काल में या फिर प्राप्तकर्ता की विशिष्ट शर्तों की माँग के तहत। पत्र की शर्तों में सामान्यतः मूलधन राशि, ब्याज दर यदि है तो पक्ष, तिथि, वापस अदायगी की शर्तें (जिनमें ब्याज दर भी शामिल हो सकती थी, और समाप्ति की तारीख, सम्मिलित होती थी। कभी-कभी भुगतान न होने की परिस्थिति में प्राप्तकर्ता के अधिकार संबंधी प्रावधान भी होते हैं, जिसमें जारीकर्ता की परिसंपत्ति का मोचन-निषेध (Foreclosure) सम्मिलित हो सकता है।

मूलतः यूरोप में प्रतिज्ञा-पत्र जारी करने की प्रथा पूर्व में व्यापार करने वाले वेनिशियन व्यापारियों द्वारा आरंभ की गयी। कुछ विद्वान मार्को पोलो को यूरोप से विभिन्न प्रकार के चीनी प्रतिज्ञा-पत्रों को परिचित कराने का श्रेय देते हैं। प्रतिज्ञा-पत्र का प्रथम अभिलिखित प्रमाण, 1325 मिलान में मिला हैं। 1384 में जेनोआ और बारसिलोना के मध्य प्रतिज्ञा-पत्रों के जारी होने के प्रमाण हैं, हालांकि यह पत्र स्वंय खो चुके हैं। बर्नेट डे कोडीनैक द्वारा मैन्यूएल डी. ऐटंका, ह्यूस्का के एक व्यापारी के लिए 1371 में वैलिन्सिया में कुल 100 लोरीन की मात्रा के पत्र जारी किए गए, इन सभी मामलों में प्रतिज्ञा-पत्रों का प्रयोग कागजी मुद्रा की अल्पविकसित प्रणाली के रूप में किया गया, क्योंकि जारी करी गई राशि को धातु के सिक्कों के रूप में शहरों के मध्य भेजना सरल नहीं था। 1553 में गिनाल्डो गिओवानी बतीस्ता स्ट्रोज़ी ने स्पेन के मेदिना डेल कैम्पो में बैसनकॉन नगर के विरुद्ध प्रतिज्ञा-पत्रों का आरंभिक स्वरूप जारी किया। हालांकि भूमध्यसागर वाणिज्य में इस तिथि से बहुत पहले से प्रतिज्ञा-पत्रों के प्रयोग की सूचना उपलब्ध है।

वाणिज्यिक और अवाणिज्यिक को सापेक्ष मुद्रा स्थानातंरण की मात्रा को सुनिश्चित करना संभव नहीं है, परंतु मध्यकालीन सामुदायिक जीवन में मुद्रा स्थानातंरण जिन कारणों से था उसे वाणिज्यिक कहना कठिन हैं। इन स्थानातंरण में सबसे, विचारनीय तीर्थ-यात्रा, धर्म युद्ध, पादरी निधि की गतिविधि, दूर शहरों-कस्बों में पढ़ रहे विद्यार्थियों के व्यय के लिए किए गए स्थानातंरण सम्मिलित हैं। धर्म योद्धा प्रायः उत्तरी इटली में ऋण समझौते करते थे, नार सुर

औब या शैंपेन के मेलों में कर्ज अदायगी के वादे के साथ। समान दस्तावेज वेनिस में भी दिखाई पड़ते हैं। इस प्रकार के पत्रों का उपयोग विद्यार्थियों द्वारा प्रायः किया जाता था, ताकि स्वयं धन ले जाने के खतरे से बचा जा सके।

7.11 पत्रों या नोटों को भुनाना

विनिमय-पत्र या प्रतिज्ञा-पत्रों के प्रत्यक्ष मूल्य से एक नियत प्रतिशत काटा जाता था, जब भी वह एक से दूसरे के हाथ में उत्पाद के रूप में जाते थे या सेवा शुल्क के रूप में लिया जाता था। यह कटौती व्यापारी को समय से पहले उसका धन प्रदान करती थी, साथ ही साथ बैंकर की आमदनी को भी निश्चित करती थी।

इन विनिमय साधनों का एक महत्वपूर्ण लक्षण विशेषतः स्वीकृति और संचलन के प्रारंभिक चरणों में उनकी परक्राम्यता, (Negotiability) यानि एक व्यक्ति से दूसरे के मध्य पत्र का स्थानातंरण और उसका नकदी में परिवर्तन था। पूर्वकथित परिवर्तन संबंधी कानूनी मुद्दे और स्वीकृति और पुष्टिकरण की जिम्मेदारियाँ को सत्रहवीं शताब्दी के अंत तक धीरे-धीरे दूर कर दिया गया।

अतः विनिमय बिलों, प्रतिज्ञा-पत्रों और ऋण स्थानातंरण के अन्य साधनों के उपयोग के प्रभाव के समग्र मूल्यांकन से पता चलता है कि वह व्यापक और दूरगामी थे क्योंकि इसने मुद्रा के महान विकल्प के रूप में काम किया और बैंकिग के साख स्रोत को सार्थक बनाया, कारोबारी कंपनी में वृद्धि की और उसे असल राशि से कहीं बढ़कर दिखाया।

7.12 बीमा

जैसे-जैसे वाणिज्य विविध हो गया और लंबी दूरी का विनिमय व्यवस्थित होने लगा, उसके साथ-साथ व्यापारियों को इतनी लंबी दूरी में वस्तुओं के स्थानातंरण के खतरों से बचाने की आवश्यकता उत्पन्न हुई। समुद्री व्यापार के खतरों से बचाव के लिए समुद्रवर्ती बीमा का एक वाणिज्यिक व्यवहार के रूप में विकसित हुआ, जोकि एजेंटों और व्यापारियों द्वारा संभाला जाता था। 1504 तक बीमा प्रदान करने का व्यवहार काफी विकसित हो गया था, इस कदर की ऐंटवर्प शहर में ही अकेले लगभग 600 लोग इस पर निर्वाह कर रहे थे। सर्दियों के दौरान, विभिन्न प्रकार के बीमे का आरंभ हुआ जो युद्ध के कारण माल को क्षति, टकरावों, प्रधान-मार्ग पर लूट, भंडारण सुविधाओं में आग इत्यादि से संरक्षण के लिए शुरू होते हैं।

पारम्परिक सामुद्रिक बीमा से पूर्व, जिसमें एक निवेशक अपना धन एक यात्री व्यापारी को ऋण में देता था, जिसे व्यापारी जहाज़ के सुरक्षित लौट आने पर चुकाने के लिए उत्तरदायी था। मध्यकाल में, इस प्रकार का समुद्री ऋण, (या Foenus Nauticum) सामान्य था। इस प्रकार ऋण और समुद्री बीमा एक समय ही प्रदान किया जाता था। समुद्री ऋण की ब्याज दर ऊँची थी, उसमें उपस्थित उच्च स्तर खतरों की क्षतिपूर्ति करने के लिए समुद्री ऋण लेने वाले व्यापारियों को उच्च ब्याज चुकाना पड़ता था क्योंकि इसमें साहूकार को, समुद्री खतरा उठाना पड़ता था जबकि जब व्यापारी स्थल मार्ग से माल ले जाते थे, उसमें वह साहूकार के साथ मुनाफा साझा करते थे।

चूंकि समुद्री ऋण में खतरों के लिए भुगतान संलग्न था इसलिए पोप ग्रैगरी IX ने इस गतिविधि को, 1236 के Naviganti अध्यादेश में सूदखोरी घोषित कर दिया। कोम्मैंडा अनुबंध पत्र का परिचय पोप ग्रैगरी IX के समुद्री ऋणों को निंदा करने पर हुआ। कोम्मैंडा अनुबंध पत्र के तहत पूँजीवादी, उद्योग में साझेदार के रूप में व्यापार करने के लिए, मुनाफा साझा करते हुए, व्यवसायी को राशि मुहैया कराते थे, परंतु समुद्री और वाणिज्यिक खतरा पूँजीवादी का था। चौदहवीं शताब्दी में इतालवी व्यापारियों ने कैबियम अनुबंध-पत्रों को आरंभ किया,

जहाँ कर्जदार को व्यापारी साहूकारों से विनिमय-पत्र खरीदने पड़ते थे। चूंकि विनिमय-पत्रों का चाहे किसी भी परिस्थिति में भुगतान करना पडता था, वह किसी भी प्रकार के समुद्री खतरे से रक्षा नहीं करते थे। समुद्री खतरों से बचाव के लिए, जिनका वह सामना कर रहे थे, व्यापारियों ने बीमा ऋणों को ईज़ाद कर लिया, जोकि आज के सामुद्रिक बीमा से काफी मिलते हैं, "बीमाकृत और उधारकर्ता भूमि पर ही रहता था। बीमाकृत माल को बिना सहचर भेजा जाता था, और ऋण का बकाया जहाज़ के सुरक्षित आगमन से नहीं, बल्कि माल के सुरक्षित आगमन पर था।

तेरहवीं और चौदहवीं शताब्दी में अपना माल बेचने के लिए यूरोपीय व्यापारी सर्वत्र विश्व यात्रा करते थे, साथ ही कप्तान और चालक दल से चोरी या कपट से बचाव करना पड़ता था। जिसे Ricicum Gentium कहा जाता है, चालक। हालांकि उन्होंने यह अहसास किया कि इस प्रकार बेचने में ना केवल हानि का खतरा संलग्न था, बल्कि वह विस्तृत बाज़ार नहीं कवर कर पाते थे। अतः विभिन्न बाजारों में कमीशन आधारित दलालों को नियुक्त करने की प्रवृत्ति उभरी। व्यापारी अपना माल इन दलालों को भेजते थे, जोकि व्यापारियों की ओर से उन्हें बेच देते थे। स्थल मार्ग और समुद्र के द्वारा दलालों को माल भेजना विपदा से घिरा था, जैसे की समुद्री तूफान, समुद्री लूटेरों द्वारा हमला, माल लादते या उतारते समय अपर्याप्त प्रबंधन से माल को हानि हो सकती थी। व्यापारी, निर्यात संबंधी खतरों से बचाव के लिए विभिन्न युक्तियाँ उपयोग करते थे। संपूर्ण माल की एक ही जहाज या माल वाहन पर लादने के बजाय वह माल को कई जहाजों पर लदवाते थे, ताकि पूरे नौभार को समुद्री तूफान, समुद्री लूटेरों, आगजनी से नुकसान न हो। किन्तु यह इसमें संलग्न दीर्घकालीन समय और प्रयासों के कारण एक अच्छा व्यवहार नहीं था, बीमा जोखिम खतरों के स्थानातंरण का सबसे पुराना व्यवहार है, जोकि व्यापार या कारोबार के खतरे को घटाने के लिए विकसित हुआ था।

कुछ प्रारंभिक लिखित बीमा अनुबंध-पत्र 1340 के दशक के हैं, पीसा या जेनोआ जैसे इतालवी शहरों के। इटली से बीमा अनुबंध-पत्रों के ज्ञान का प्रयोग अन्य यूरोपीय बाजारों में फैल गया। सोलहवीं शताब्दी तक यह व्यवहार इंग्लैंड, फ्रांस और नीदरलैंड्स में काफी सामान्य हो गया था। बीमा के नियम और अधिनियम, इतालवी व्यापारियों से अपनाए गए थे, जिन्हें ''व्यापारी कानून कहा जाता था। प्रारंभ में इन नियमों ने दुनियाभर के समुद्रीय बीमा को नियंत्रित किया। विवाद की परिस्थिति में, नीति लेखक और पॉलिसी धारक दोनों एक एक मध्यस्थ जो एक तीसरा मध्यस्थ चुनते थे और एक पंच ढूंढने को इख़्तियार करते थे। दोनों पक्षों को बहुमत निर्णय को मानना आवश्यक था। इन अनौपचारिक न्यायालयों की निर्णयों को बाध्य करने की असमर्थता के कारण सोलहवीं शताब्दी में व्यापारी अपने मुद्दे सुलझाने के लिए औपचारिक न्यायालयों की ओर मुड़ गए। सामुद्रिक बीमा मुद्दों को सुलझाने के लिए विषेश न्यायालयों को स्थापित किया जाता था, जैसे की जेनोआ बीमा अधि ानियम पास किया गया जिसने चर्च की 1369 सूदखोरी पर प्रतिबंध का पालन नहीं करने वालों पर जुर्माना लगाया। 1435 बारसिलोना अध्यादेश द्वारा बीमा मुद्दों पर व्यापारियों को औपचारिक न्यायालयों की सहायता लेना अनिवार्य कर दिया गया। वेनिस में 1436 में समुद्रीय बीमा को संभालने के लिए "Consoli Dei Mercanti" (व्यापारियों की पंचायत) नामक विशिष्ट न्यायालय स्थापित किया गया। 1520 में जेनोआ के वाणिज्यिक न्यायालय के बदले ज्यादा विशिष्ट न्यायालय ''रोटा/Rota'' को स्थापित किया, जिसने न केवल व्यापारिक परिपाटी का पालन किया, बल्कि विधिसम्मत कानूनों को भी समाहित किया था।

यह नए बीमा अनुबंध बीमा को निवेश से पृथक रखने की अनुमति देते थे, भूमिकाओं को पृथक रखा गया जोकि पहले समुद्रीय बीमा में उपयोगी साबित हुआ। बीमा पर छपी पहली पुस्तक '*Legal treatise on Insurance and Merchants*' पैड्रो डे सैनटारेम द्वारा 1488 में लिखी गई और 1552 में प्रकाशित हुई।

7.13 व्यापार और विनिमय का संगठन : श्रेणियाँ और व्यापारिक कम्पनियाँ

सोलहवीं शताब्दी तक यूरोपीय ग्रामीण क्षेत्रों के छोटे मेलों और बाजारों की जगह शहरों और बाजारों ने ले ली थी जो विनिमय के स्थायी केंन्द्र बन गए। चौदहवीं और पंद्रहवीं शताब्दी के दौरान विकसित हुई श्रेणियों ने वस्तुओं के विभिन्न शहरों केन्द्रों में उत्पादन, वितरण और विनिमय दर को निर्धारित किया। सर्वत्र यूरोप में शहरी केन्द्रों का प्रसार यूरोपीय परिदृश्य का भाग बन गया। बढ़ते वाणिज्यिक बैंकर और श्रेणियाँ शहरों और कस्बों के आर्थिक और राजनीतिक जीवन पर हावी हो गए। उत्तरी यूरोप को प्रचलित करने वाली हंसेटिक लीग और इतालवी और जर्मन शहरों के व्यापारी-बैंकिंग घराने इसके उदाहरण हैं।

निर्यात व्यापार में पंद्रहवीं से सत्रहवीं शताब्दी के मध्य महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। इस समय ऊन और खाद्यान्न की अंग्रेंजी निर्यात में महत्वपूर्ण भूमिका थी, परन्तु मध्य सोलहवीं शताब्दी से वस्त्रों ने कृषि उत्पादों का स्थान ले लिया। इस परिवर्तन का परिणाम पंद्रहवीं शताब्दी में होने वाली मुख्य व्यापारिक मंदी थी, जिसने यूरोपीय बाजारों को प्रभावित किया। निरंतर युद्धों के साथ जनसांख्कीय संकट ने लंबी दूरी व्यापार करने वाले व्यक्तिगत व्यापारियों के लिए मुसीबत खड़ी कर दी। इन प्रगतियों के परिणामस्वरूप श्रेणियों और वाणिज्यिक संगठन द्वारा किए विकास सामने आते हैं, जिन्होंने व्यापार और वाणिज्य को सुगम बनाया। 1486 में 'लंदन व्यापारी साहसिकों के संघ' का निर्माण किया गया जिन्होंने इतालवी और डल मूल के मध्यस्त व्यापारियों को हटाकर, ऐंटवर्प और अन्य उत्तरी यूरोपीय वस्त्र बाजारों में अपना एकाधिपत्य स्थापित किया। व्यापार में वृद्धि का एक महत्वपूर्ण कारक चार्टर कंपनियों का उद्भव था। बहुत सी कंपनियों की रचना की गई और राज्य द्वारा एकाधिकार प्रदान कर अति कृपा की गई। इनमें मसकोवी कंपनी, लेवांत कंपनी, हडसन बे कंपनी और ईस्ट इंडिया कंपनी शामिल थी। यह या तो संयुक्त पूँजी कंपिनियाँ थी या फिर विनियमित। इन्होंने न केवल व्यापार के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई बल्कि अंग्रेजी औपनिवेषिक साम्राज्य की रचना में भी।

यद्यपि सोलहवीं शताब्दी के व्यापार के संदर्भ में सबसे महत्वपूर्ण विकास मध्यस्थ वर्ग और फेरी वाले व्यापारियों के एक नए संघ का उदय था, जोकि ना केवल शहरी बाजारों से उपभोक्ता वस्तुएँ बाहरी क्षेत्रों में ले जाते थे, बल्कि साथ ही कारीगरों को कच्चा माल उपलब्ध कराते थे। यह गतिविधियाँ ज्यादातर अनियंत्रित थी। अतः बाजारों के पारंपारिक नियंत्रक और राज्य अधिकारियों द्वारा घृणास्पद मानी जाती थी। इंग्लैंड में वस्त्र व्यापार की ओर परिवर्तन, अंग्रेजी कृषि के विर्निमाण क्षेत्र से घनिष्ट एकीकरण को प्रदर्शित करता हैं, जिसने इंग्लैंड या उससे बाहर व्यापार वृद्धि में स्वयं को व्यक्त किया।

बोध प्रश्न-2

1) इस समय वित्तीय लेन-देन की क्या पद्यतियाँ थी?

.....

.....

.....

2) इस समय व्यापार और वाणिज्य को किस प्रकार संगठित किया जाता था?

.....

.....

.....

7.14 विनियमित कम्पनियाँ

सोलहवीं शताब्दी एक संक्रमण काल था, जिसके अंतर्गत निर्वाह अर्थव्यवस्था से विनिमय अर्थव्यवस्था में परिवर्तन होकर प्रारंभिक पूँजीवादी चरण की ओर बढ़ रही थी। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर वाणिज्यिक विस्तार के लिए व्यावसायिक संरचना की प्रकृति में परिवर्तनों की आवश्यकता थी। मध्यकाल के अंत में व्यक्तियों द्वारा या पारिवारिक साझेदारी द्वारा व्यवस्थित किया जाता था। बारहवीं और तेरहवीं शताब्दियों के दौरान अल्पकालिक संगठन विकसित हुए, जिन्हें कोमेन्डा या सोसाईटा (न्याय या संघ) के नाम से जाना गया।

व्यापार के विस्तार से संगठनों के स्तर और व्यवस्थापन के रूप में परिवर्तन आने लगे। साझेदारी के आरंभिक रूप के तहत उनके सदस्य ऋण और नुकसान के संदर्भ में असीमित उत्तर दायित्व के अलाभ के अधीन थे। वह भारी नुकसान का सामना करने या बड़े पूँजी निवेश करने में असमर्थ थे। समुद्रपार भूभागों के खुलने और थोक वस्तुओं के व्यापार ने नई समस्याएँ उत्पन्न की। जब डचों ने अपनी व्यापारिक गतिविधियों को बाल्टिक क्षेत्र में बढ़ाया, तब डच फर्मों द्वारा बाल्टिक बदंरगाह में अपने एक सहभागी को नियुक्त कर उसे वहाँ स्थायी रूप से कारोबार संभालने का कार्य सौंपना बेहद सामान्य हो गया। उसी प्रकार स्पेनिश फर्म कभी-कभी अपने एक सहभागी को सेविल और अन्य को अमरीकी उपनिवेश में एक प्रतिनिधि या अभिकर्ता एजेंट के रूप में नियुक्त कर देती थी। इस प्रकार डच फ्रांसीसी और अंग्रेज व्यापारी, स्पेनिश व्यापारियों के साथ गुप्त सहभागी समझौतों द्वारा स्पेनिश सरकार के अधिनियमों से बचते थे जो उन्हें (विदेशियों– अंग्रेज, फ्रांसीसी डच) अमरीकी व्यापार में भाग लेने से रोकते थे। धीरे-धीरे व्यावसायिक संरचना के ज्यादा उपयुक्त रूपों को बनाने का प्रयास किया गया। इसका एक रूप विनियमित कंपनियाँ थी।

विनियमित कंपनी का उद्य मध्य काल के दौरान हुआ, विषेशतः इंग्लैंड में, जहाँ व्यापारी व्यवसायी बनाए गए, लेकिन पूर्ण विकसित रूप में नहीं। यह विनियमित कंपनी अंशतः साझेदारी और अंशतः श्रेणी के समान थी। कुछ मायनों यह बाद में उद्भव होने वाली संयुक्त पूँजी कंपनी के समान थी। यह व्यापार की किसी विशिष्ट शाखा को समान उद्यम की तरह, एकाधिकार, लाभ उठाने, नियंत्रण करने वाला व्यापारी संघ था। इसके सदस्य कुछ निश्चित अधिनियमों के पालन को स्वीकार करते थे, परन्तु वह अपने संसाधनों का संयोजन नहीं करते थे। बल्कि वह केवल पारस्परिक हितलाभ के लिए सहयोग देने की हामी भरते थे। इन कंपनियों को सरकार द्वारा चार्टर और एकाधिकार प्राप्त होता था। यह विनियमित कंपनियाँ थी, क्योंकि यह कारोबारी कार्य-संचालन के लिए लागू नियमों का पालन करती थी। यह विदेष में साझा व्यापार केन्द्र कायम रखते थे और एकाधिकार अधिकारों का लाभ उठाते थे। उनकी अपनी सरकारें उन्हें इंटरलोपर्स (एकाधिकार तोड़ने की कोशिश करने वाले) से संरक्षण प्रदान करती थी। इंग्लैंड में ऐसी कई कंपनियाँ थी जैसे कि मर्चेन्ट एडवेन्चरर्स, ईस्टलैंड कंपनी, मस्कोवी कंपनी, और लेवांन कंपनी।

7.15 संयुक्त पूँजी कम्पनियाँ

व्यापार की बढ़ती मात्रा और वाणिज्यिक अर्थव्यवस्था के विस्तार से वाणिज्य की संस्थाओं के स्वरूप में परिवर्तन हुए। विनियमित कंपनी एक नई संस्था–संयुक्त पूँजी कम्पनी में विकसित हो गई। इस तरह की कंपनी का पूर्ववर्ती जर्मनी की कोयला खनन कंपनियों में देखा गया, क्योंकि खनन क्रिया में भारी पूँजी निवेश व्यक्तिगत भागीदारी को रोकता था। कंपनी के शेयर कई व्यक्तियों द्वारा खरीदे जाते थे कम्पनी का संचालन निर्देशक मंडल को सौंप दिया जाता था। संयुक्त पूँजी कम्पनी एक स्थायी संस्था के रूप में कार्य करती थी, जोकि उसके सदस्यों की मृत्यु या छोड़ देने मात्र से बशर्ते विघटित नहीं हो जाती थी। बड़ी कंपनी ज्यादा संसाधनों

को नियंत्रित रख सकती थी, जैसा की आरंभिक सत्रहवीं शताब्दी की अंग्रेजी और डच संयुक्त पूँजी उद्यम एशियाई बाजारों से व्यापार के लिए करते थे। इससे आरंभिक निवेश साथ ही साथ वस्तुओं के निश्चित व्यापार के लिए बड़ी पूँजी को हासिल किया जा सकता था।

शुरुआती संयुक्त पूँजी कम्पनियाँ धीमी गति से विकसित हुई और बहुत से व्यापारी इन कम्पनियों में निवेश करने या भागीदारी करने में हिचकते थे। आरंभिक पूर्वी समुद्रीय यात्राओं में प्रदर्शित उपयुक्त भरोसे के बाद ही पूँजी और निवेश आसानी से उपलब्ध हुआ। आरंभिक अंग्रेजी और डच कंपनियों ने प्रत्येक समुदी यात्रा के अंत में पूँजी और लाभ राशि बाँटने की प्रथा का पालन किया, जिसने आरंभिक शेयरधारकों में विभ्रांति उत्पन्न की।

1602 में बनी डच ईस्ट इंडिया कंपनी को अपने निवेशकों को दस वर्ष के काल के अंत में भुगतान करना था। यह करने में असमर्थ होने के कारण उसने अपने शेयर धारकों से ऐंमसर्टडेम शेयर बाजार में अपने शेयर बेचने का निवेदन किया, जिससे खुले बाजार में शेयरों की बिक्री की प्रथा की शुरुआत हुई। इन संयुक्त पूँजी कम्पनियों ने केवल व्यापारियों की ही नहीं बल्कि व्यक्तियों के लिए भी अपनी जमा राशि को स्थायी निगमों में निवेश करने में सक्षम बनाया और उन्हें पूर्वी व्यापार से बढ़ते मुनाफे और कम्पनी के शेयरों के खुले बाजार में बढ़ते दामों द्वारा अपनी आमदनी की वृद्धि की आशा प्रदान की। संयुक्त पूँजी कम्पनियाँ औद्योगिक उद्यम भी व्यवस्थित करने लगी और विशिष्ट माँगों के अनुसार पूर्वी और अन्य समुद्रपार बाजारों की माँग स्वरूप वस्तुओं का उत्पादन संगठित करने लगी। वह सर्वत्र लंबी दूरी से सोना-चाँदी प्रेषण शाखाओं के रूप में कार्य करने लगी और अंततः वह वस्तुओं और मार्गों पर सरकार के एकाधिकार कायम करने के साधनों के रूप में उभरी। जहाँ वह वाणिज्यिक अनुसरण के लिए, अधिकतम मुनाफ और व्यापार के लिए एक दूसरे से स्पर्धा कर रही थी। ज्यादातर व्यापारिक कम्पनियाँ सरकार से अपने विशेषाधिकार, एकाधिकार, विशिष्ट क्षेत्र जहाँ वह कार्यवाही कर सकें के निर्धारण संबंधी चॉर्टर प्राप्त करती थे। 1568 में इंग्लैंड में दो संयुक्त पूँजी कम्पनियाँ संगठित हुई, एक बिल्कुल भिन्न उद्देश्य के लिए– मिनरल एंड बैट्री वर्क्स कंपनी पीतल ढालकर, ताँबे और पीतल तारों के निर्माण के लिए और माईन्स रॉयल कंपनी चाँदी और ताँबा खनन के लिए।

7.16 स्टॉक एक्सचेंज

वाणिज्यिक क्रांति का एक रोचक पहलू यूरोप की वाणिज्यिक शहरों से स्टॉक एक्सचेंज का गठन था। स्टॉक विनिमय केन्द्रों को बुअर्स भी कहा जाता था, इनकी उत्पत्ति ब्रुजेस में हुई थी। ब्राउदल के अनुसार स्टॉक एक्सचेंज बैकरों, व्यापारियों, कारोबारियों, दलालों, बैंकरों के एजेंटों, निवेशकों के लिए एक बैठक-स्थल था। हांलाकि ऐमर्स्टडेंम में ऐसे एक्सचेंजों की उत्पत्ति के कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं हैं, नए एक्सचेंज की स्थापना 1609 में हुई जबकि पुराने वाले की तिथि 1530 के दशक की थी। ब्रुजेस एक्सचेंज का निर्माण 1409 में हुआ, ऐंटवर्प का 1460 में, लिओनस की 1462 में, लंदन की 1554 में, पेरिस की 1563 में, बोर्दो की 1564 में और पूरी सत्रहवीं शताब्दी के दौरान इनकी संख्या बढ़ती चली गई।

ऐम्सर्टडेंम स्टॉक एक्सचेंज ने न केवल पैमाने बल्कि संगठन के संदर्भ में भी महत्वपूर्ण उन्नति की। 1631 में इसके लिए नई इमारत का निर्माण किया गया, जहाँ सट्टेबाजी पूर्णतः आधुनिक रूप से की जाती थी। ऐम्सर्टडेंम स्टॉक बाजार के नए तत्वों में मात्रा, बाजार की तरलता, लोक प्रसिद्धि और लेन-देन के लिए सट्टेबाजी की स्वतंत्रता थी। स्टॉक एक्सचेंज़ का मुख्य योगदान विशाल स्तर पर पूँजीवादी उद्यमों के शेयरों की खरीद-फ़रोख्त और सावर्जनिक निवेशों को प्रोत्साहित करना था।

7.17 सारांश

अंत में प्राप्त तस्वीर धीरे-धीरे रूपान्तरित हो रही अर्थव्यवस्था की है, जो एक आंतरिक स्थानीय केन्द्र से ज्यादा वैश्विक संपर्क मे बदल रही थी जोकि आर्थिक प्रणालियों के अंतर्गत धीरे से विकसित हो रही, कृषि और औद्योगिक संरचनाओं और श्रमिक संबंधों पर बनी थी। राष्ट्र राज्यों और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं की उत्पत्ति से क्षेत्र में आर्थिक संरचनाओं का राजनीतिक प्रणालियों से ज्यादा करीबी संबंध बना। विभिन्न सामाजिक वर्गों की महत्वाकांक्षाओं ने मध्यकाल के ध्वस्त होते हुए सामाजिक और आर्थिक अवरोधकों के बीच प्रगति करना सीखा। यूरोपीय समाज में तरल मुद्रा और बहुमूल्य धातुओं के आने से और उसके परिणामी वाणिज्यिकरण का यूरोपीय राजनीतिक और सामाजिक परिदृश्य पर दूरगामी प्रभाव पड़ा। राष्ट्र की समृद्धि और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं को संपत्ति के विचार पर केन्द्रित वाणिज्यिक मुद्रा नीतियों के शुरू होने से, बाजारों, श्रम, कच्चा माल, मातृ अर्थव्यवस्थाओं को संबल करने के लिए उपनिवेशों पर विजय की दौड़ आरंभ हो गई। इसी समय, सामाजिक और राजनैतिक स्थिति में धन का महत्व बढ़ गया और संपत्ति और विरासत और विवाह की संस्थाएँ उभरी और आकार लेने लगी। यह विकसित होने वाले कानून 'आधुनिक पश्चिमी कानून और कानूनी संरचनाओं' के बुनियादी ढाँचे बन गए। अतः कई मायनों में मध्यकाल के अंत और आरंभिक आधुनिक काल की वाणिज्यिक क्रांति ने आधुनिक अर्थव्यवस्थाओं के उद्भव और आधुनिक कानूनी संरचनाओं के उद्भव की बुनियाद रखी।

7.18 शब्दावली

स्थानीय विनिमय : स्थानीय क्षेत्रों तक सीमित व्यापार या विनिमय जोकि विस्तृत वैश्विक व्यापार और विनिमय संरचना में अभी तक एकीकृत नहीं हुआ हो।

अनालस मत : फ्रांस का इतिहास लेखन का मत जो मार्क्सवादी मत के कार्य-कारण सम्बंध में पदानुक्रम की धारणा के विपरीत सभी पहलूओं को समान महत्व देते हुए उनका विवेचन करता है।

7.19 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1) भाग 7.2 देखें।

2) भाग 7.6 देखें।

बोध प्रश्न 2

1) भाग 7.8-7.12 देखें।

2) भाग 7.13 देखें।

7.20 संदर्भ ग्रंथ

Anrunes, Catia. 'Amsterdam and Lisbon, 1640-1710: Urban Links and Networks in Early Modern Period'. In *Rivalry and Conflict: European Traders and Asian Trading Networks in the 16th and 17th Centuries*, edited by Ernst van Veen and Leonard Blusse, 315–41. Lieden: CNWS Publications, 2017.

Braudel, Fernand. *Civilization and Capitalism, 15th and 18th Century, Vol. 2 - The Wheels of Commerce*. Translated by Sian Reynolds. London: William Collins Sons & Co. Ltd., 1979.

Brenner, Robert. *Merchants and Revolution: Commercial Change, Political Conflict, and London's Overseas Traders, 1550-1653*. London: Verso, 2003.

Gelderblom, Oscar, and Joost Jonker. 'With a View to Hold: The Emergence of Institutional Investors on the Amsterdam Securities Market during the Seventeenth and Eighteenth Centuries'. In *The Origins and Developments of Financial Markets and Institutions: From the Seventeenth Century to the Present*, edited by Jeremy Atack and Larry Neal, 71–98. Cambridge: Cambridge University Press, 2009.

Grafe, Regina. 'Northern Spain between the Iberian and the Atlantic Worlds: Trade and Regional Specialisation, 1550-1650'. *The Journal of Economic History* 62, no. 2 (June 2002): 533-37.

Howell, Martha C. *Commerce Before Capitalism in Europe, 1300-1600*. Cambridge: Cambridge University Press, 2010.

Lopez, Robert S. 'The Trade of Medieval Europe: The South'. In *The Cambridge Economic History of Europe: Trade and Industry in the Middle Ages*, edited by M. M. Postan and Edward Miller, 2nd ed., 2:306–401. Cambridge: Cambridge University Press, 1987.

Munro, John H. 'The "New Institutional Economics" and the Changing Fortunes of Fairs in Medieval and Early Modern Europe – The Textile Trade, Warfare and, Transaction Costs'. *VSWG: Vierteljahrschrift Für Sozial- Und Wirtschaftsgeschichte* 88, no. 1 (2001): 1-47.

Postan, M. M. *Medieval Trade and Finance*. Cambridge: Cambridge University Press, 1973.

Quinn, Stephen. 'Gold, Silver, and the Glorious Revolution - Arbitrage between Bills of Exchange and Bullion'. *The Economic History Review, New Series* 49, no. 3 (August 1996): 473-90.

Quinn, Stephen, and William Roberds. 'An Economic Explanation of the Early Bank of Amsterdam, Debasement, Bills of Exchange, and the Emergence of First Central Bank'. In *The Origins and Developments of Financial Markets and Institutions: From the Seventeenth Century to the Present*, edited by Jeremy Atack and Larry Neal, 32-70. Cambridge: Cambridge University Press, 2009.

Roover, Raymond de. *Money, Banking and Credit in Medieval Bruges: Italian Merchant-Bankers Lombards and Money Changers - A Study in the Origins of Banking*. Cambridge, Massachusetts: The mediaeval Academy of America, 1948.

Rubin, J. 'Bills of Exchange, Interest Bans, and Impersonal Exchange in Islam and Christianity'. *Explorations in Economic History* 47 (2010): 213-27.

Santarosa, Veronica A. '2015, V. A. Santarosa, Financing Long-Distance Trade - The Joint Liability Rule and Bills of Exchange in Eighteenth Century France'. *The Journal of Economic History* 75, no. 3 (n.d.): 690-719.

Sinha, Arvind. *Europe in Transition: From Feudalism to Industrialization*. New Delhi: Manohar, 2011.

Stein, Stanley J., and Barbara H. Stein. *Silver, Trade, and War - Spain and America in the Making of Early Modern Europe*. Baltimore: The John Hopkins University Press, 2000.

Vance, W. R. 'The Early History of Insurance Law'. *Columbia Law Review* 8, no. 1 (January 1908): 1-17.

इकाई 8 पुनर्जागरण काल : मानवतावाद, नये विचार और विज्ञान*

इकाई की रूपरेखा

8.0 उद्देश्य

8.1 प्रस्तावना

8.2 सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश

8.3 पुनर्जागरण काल : अर्थ और व्याख्या

8.4 मानवतावाद

8.5 साहित्य और नई विद्वता का विकास

8.6 राजनीतिक सिद्धांत और दर्शन-शास्त्र

8.7 कला और कला के रूप

8.8 विज्ञान

8.9 सारांश

8.10 शब्दावली

8.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

8.12 संदर्भ ग्रंथ

8.0 उद्देश्य

यह इकाई यूरोपीय इतिहास की एक अत्यधिक जीवंत अवधि से संबंधित है, जिसका विस्तार लगभग 1500 से 1800 सी. ई. तक था। इस अवधि के दौरान एक जबरदस्त सांस्कृतिक पुनरुत्थान हुआ था जिसे पुनर्जागरण काल के नाम से जाना गया, जिसका अर्थ है 'पुनर्जन्म'।

इसने यूरोपीय जीवन के सभी क्षेत्रों, सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक को प्रभावित किया और अंततः लोगों के बौद्धिक क्षितिज में एक बहुत महत्वपूर्ण विस्तार किया। वास्तव में, इसने आधुनिक पश्चिम और आधुनिक विश्व की शुरुआत की।

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आप निम्न सहित कई मर्मज्ञ विचारों को समझ सकेंगेः

- सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक कारक जिसके कारण पुनर्जागरण काल का उदय हुआ,
- पुनर्जागरण काल के साथ जुड़े इतिहास लेखन के आयाम,
- मानवतावाद के संदर्भ में विचार और दर्शन, और
- पुनर्जागरण काल की साहित्यिक, कलात्मक और वैज्ञानिक उपलब्धियाँ।

* डॉ. मोनिका सक्सेना, दिल्ली विश्वविद्यालय

8.1 प्रस्तावना

पुनर्जागरण की उत्पत्ति पंद्रहवीं शताब्दी की शुरुआत से अठारहवीं शताब्दी के अंत तक यूरोप में सामाजिक-आर्थिक विकास की पृष्ठभूमि में स्थित करके देखी जा सकती है। यह सामंतवाद से पूँजीवाद तक संक्रमण का काल था। इटली में पुनर्जागरण की शुरुआत को मध्य युग; ग्यारहवीं से तेरहवीं शताब्दी की अवधि से रेखांकित किया जा सकता है। यह ध्यान देना दिलचस्प है की उच्च मध्य युग के दौरान इटली शेष यूरोप से काफी भिन्न था। इटली के नगर-राज्यों ने सांस्कृतिक नवीकरण का नेतृत्व किया जिसके कारण पुनर्जागरण हुआ। नवजागरण का अर्थ केवल शास्त्रीय परंपरा का पुनरुद्धार ही नहीं है, जो मध्य युग के दौरान आँखों से ओझल हो गया था। पुनर्जागरण एक पृथक घटना नहीं थी। पुनर्जागरण और इसका प्रभाव पुनरुद्धार से कहीं आगे तक महसूस किया गया था। इटली में होने वाले घटनाक्रम ने साहित्य, दर्शनशास्त्र और कला पर इस कदर प्रभाव डाला जिसने मानवता की समझ में ही एक प्रमुख अवधारणामूल परिवर्तन का गठन किया।

8.2 सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश

कई सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक कारकों ने एक दूसरे के साथ मिलकर इटली के नगर-राज्यों में पुनर्जागरण के लिए योगदान दिया। इटली में पोप और पवित्र रोमन साम्राज्य के मध्य क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्विता के कारणवश इटली के नगर-राज्य स्वतंत्र हुए। इतालवी लोगों ने कभी सुसंगत राजनीतिक तंत्र का आनंद नहीं लिया, लेकिन वे तेरहवीं शताब्दी के काल से ही आर्थिक रूप से जीवंत और गतिशील थे। हालांकि कुछ नगर राज्यों में गणतंत्रीय शासन प्रणाली का प्रारूप मौजूद था (कम्यून्स) और कुछ का निरंकुश शासन (साइनोरी) द्वारा शासन किया जा रहा था। शहरी जीवन का अस्तित्व पूरे देश में बहुत महत्वपूर्ण था। दोनों का उद्देश्य एक ही था, वाणिज्यिक और व्यापारिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करना।

वेनिस, अमाल्फी, बारी और लोरेंस के नगर-राज्यों ने व्यापारिक क्रांति की अगुवाई की थी, जिसके परिणामस्वरूप जन्म के बजाय धन पर आधारित एक नई सामाजिक व्यवस्था का निर्माण हुआ। सामंतवाद कभी इटली में मजबूत जड़ें विकसित नहीं कर सका। कुलीन और व्यापारिक वर्ग के मध्य सामाजिक और वैवाहिक संबंधों ने शिक्षा, कला के फलने-फूलने, आबादी के बीच चेतना का प्रसार और सबसे ऊपर व्यक्तिवाद के लिए अनुकूल माहौल बनाया। व्यापारी, राजकुमारों और यहाँ तक कि पोप ने कला के कार्यों को शुरू करवाया। पुनर्जागरण अपनी कला और साहित्यिक रूप में शहरी था, और समाज ने नई सामाजिक-आर्थिक संस्कृति के अनुसार स्वयं को नये अंदाज में पुनः गढ़ा।

8.3 पुनर्जागरण काल : अर्थ और व्याख्या

सरल अर्थ में पुनर्जागरण शब्द का अर्थ पुनर्जन्म या पुनः जागृति होता है। एक संकीर्ण दृष्टिकोण इसे शास्त्रीय पुरातनता के पुनरुद्धार के साथ जुड़े हुए एक आंदोलन के रूप में मानता है, जिसका तात्पर्य है कि प्राचीन यूनानी और रोमन संस्कृतियाँ उनके साहित्य, दर्शनशास्त्र और कला की रचनाओं के माध्यम से फिर से खोजी गई थी। उनके विचारों का विश्लेषण और व्याख्या की गई। प्रमुख ग्रीक ग्रंथों को बहाल किया गया और लैटिन में उनका अनुवाद किया गया। लेकिन पुनर्जागरण फिर से जागृति से कहीं अधिक था। इसने यूरोपीय समाज और संस्कृति के सभी पहलुओं को प्रभावित किया, और एक नए युग की शुरुआत को चिह्नित किया– आधुनिकता का युग।

इतिहासकारों ने अपने तरीकों से पुनर्जागरण शब्द की व्याख्या और नयी व्याख्या में योगदान प्रदान किया है। जैसा कि डेनिस हे के द्वारा यह सुझाया गया है कि, पुनर्जागरण की धारणा मध्य चौदहवीं सदी से लेकर मध्य उन्नीसवीं सदी तक की लंबी अवधि के दौरान विकसित

हो रही थी। पुनर्जागरण की अवधारणा को गिओर्गिऔ वासरी की ''रिनासिता'' के दौरान अनुरेखित किया जा सकता है, जिसका उपयोग विशेष रूप से इटली के कलात्मक विकास में एक चरण को संदर्भित करने के लिए किया जाता था (*द लाईव्स ऑफ द मोस्ट एक्सीलेंट पेंटर्स, सक्पटर्स एंड आर्किटेक्ट्स*)।

शिक्षाविदों और विद्वानों ने, जैसे जोहान हुईजिंगा ने *द वेनिंग ऑफ द मिडल ऐज़िस* और वालेस के. फगर्यूसन ने अपने रचना *इंटरप्रिटेशन ऑफ द रेनेसांः सजेशंस फॉर ए सिंथेसिस* में, पुनर्जागरण की उत्पत्ति को मध्य युग में रेखांकित किया है। हालांकि जैकब बर्कहार्ट की *द सिविलाइजेशन ऑफ द रेनेसां इन इटली* के अनुसार पुनर्जागरण एक आंदोलन था जिसने नए रूपों और दृष्टिकोणों की शुरुआत की और व्यक्तित्व को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान की।

पूर्व-पुनर्जागरण समाज में (मध्य युग), दो प्रमुख संस्थाओं ने यूरोप के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन को प्रभावित किया। वे कैथोलिक चर्च और सामंती व्यवस्था थे, जो जमींदारों और चर्च की पूरी अधीनता के आसपास केंद्रित जागीर की सम्पदा और मूल्यों के एक पिरामिड पर बनाए गए थे। एक कृषिदास अपने भू-स्वामित्व प्राप्त 'जमींदार' और जिस भूमि पर उसने काम किया था उससे बंधा था; वह एक भिन्न जीवन का सपना भी नहीं देख सकता था। पुनर्जागरण ने एक विशिष्ट विचार प्रक्रिया की शुरुआत की, जिसने चर्च और सामंतवाद से जुड़े कई पारंपरिक विचारों को कमजोर करने में मदद की।

पुनर्जागरण की एक विशिष्ट अवधि या आधुनिक युग से मध्य युग को विभाजित करने वाले आमूल परिवर्तन काल की एक धारणा सदियों तक ऐतिहासिक लेखन पर हावी रही। हालांकि, यह याद रखना चाहिए कि पुनर्जागरण एक अलग घटना नहीं थी; इसे चल रहे ऐतिहासिक घटनाक्रम के दायरे में स्थित करके देखा जाना चाहिए।

पुनर्जागरण, या सांस्कृतिक जागरण, सिर्फ एक समय अवधि में नहीं हुआ था। नौवीं शताब्दी का'कैरोलिंगियन पुनर्जागरण' लैटिन भाषा की रचनाओं का नवीनीकरण लाया, जबकि 'बारहवीं शताब्दी' का पुनर्जागरण अरबों के साथ संपर्क के माध्यम से यूनानी और रोमन कानून के पुनरुद्धार के लिए प्रसिद्ध था। इसलिए यूनानी और रोमन संस्कृति की फिर से जागृति इटली में अचानक उथल-पुथल के रूप में नहीं आई। इतिहासकारों ने पुनर्जागरण में इटली की भूमिका पर जोर दिया है, क्योंकि इटली प्राचीन रोमन सभ्यता की मातृभूमि थी। नतीजतन पंद्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी के दौरान यूरोप में पुनर्जागरण को यूरोप में सांस्कृतिक पुनरुत्थान की दिशा में आंदोलन की बजाए परिणति के रूप में देखा जाना चाहिए। इतालवी शहर कुलीन वर्ग की शिष्ट संस्कृति और पादरी की पांडित्यदंभी संस्कृति से अलग एक नई संस्कृति की ओर अपना रास्ता बना रहे थे। इस अर्थ में, पुनर्जागरण शास्त्रीय शिक्षा के पुनरुद्धार से कहीं अधिक था। इसने मानवतावाद के विचार का मार्ग प्रशस्त किया और इससे कला, वास्तुकला, पेंटिंग, मूर्तिकला, संगीत और साहित्य में एक नई भावना प्रकट हुई।

8.4 मानवतावाद

इतालवी पुनर्जागरण की सबसे प्रमुख विषय-वस्तु मानवतावाद थी। यह एक शब्द था, जिसका उपयोग उन्नीसवीं शताब्दी के इतिहासकारों द्वारा पुनर्जागरण के विचारकों के सरोकारों के वर्णन करने के लिए किया था, जिन्होंने अपना ध्यान इस दुनिया में मनुष्य की गरिमा और उसकी विशेषाधिकार प्राप्त स्थिति की ओर केंद्रित किया।

यह मानवतावादी आंदोलन नव-प्लेटोनिक दर्शन पर आधारित था, जिसने सामंती और चर्च-संबंधी संस्थाओं के बजाय मानवीय मूल्यों की प्रधानता पर ज़ोर दिया। मानवतावादियों का मानना था कि, दैव्य सत्ता और पारंपरिक संस्थाओं पर भरोसा किए बिना मानव मस्तिष्क स्वयं

सोचने के लिए सक्षम था। संक्षेप में, मानवतावाद ने मनुष्य को समाज में सभी चीजों के मापदंड बनाया। हालांकि, मानव और विश्व पर इस नए केंद्रित ध्यान को ईश्वर में विश्वास गवां देने के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। यह वास्तव में मध्यकालीन धर्मशास्त्रियों के विचारों का एक महत्वपूर्ण पुनर्आंकलन था। पेट्रार्क, बोकासियो और दांते पुनर्जागरण काल के विचारों के अग्रदूत थे जिन्होंने अपनी जड़ें जमायी।

मानवतावाद पुनर्जागरण के सभी सांस्कृतिक परिवर्तनों के लिए प्रेरणा का मूल स्रोत था जिसका कला, साहित्य, इतिहास और राजनीतिक विचार पर भारी प्रभाव था। मानवतावादी विद्वानों ने खुद को स्टूडिया ह्यूमनिटाज़ (मानवता का अध्ययन) के लिए समर्पित किया जिसमें अंलकार-शास्त्र, व्याकरण, काव्य और नीतिशास्त्र का अध्ययन शामिल था।

भौगोलिक रूप से मानवतावाद की उत्पत्ति इटली में हुई, जिसका लोरेंस में अपने मूल केंद्र से पूरे प्रायद्वीप में फैलाव हुआ। नव-प्लैटोनिज्म पंद्रहवीं शताब्दी इटली में उभरा। प्रारंभ में यह एक दार्शनिक आंदोलन था, जिसने प्लेटों की रिपब्लिक से प्रेरणा प्राप्त की, जो मध्यकालीन धर्मशास्त्र और पांडित्यदंभी दर्शनशास्त्र की तुलना में बिल्कुल विपरीत था।

नव-प्लेटोनिक अकादमी के कुछ प्रमुख सदस्य मार्सिलियो फिसीनो और पिकोडेला मिरांडोला थे। फिसीनो ने प्लेटो के विचारों और ईसाई धर्म के मध्य समानताएँ खोजने की कोशिश की। उन्होंने प्लेटो के साथ सहमति व्यक्त की– आत्मा मृत्यु के अधीन नहीं थी और इस दुनिया को छोड़ने के बाद यह भगवान के साथ एकीकृत हो जाएगी। वो यह भी मानते थे की सभी प्रेम का स्रोत ईश्वर है और यह सभी मनुष्यों को एक दूसरे से जोड़ता है (रॉय टी. मैथ्यू और फ. डी. विट प्लाट)।

मार्सिलियो के विद्यार्थी पिकोडेला मिरांडोला ने अपनी रचना 'ओरेशन ऑन द डिग्निटी ऑफ मैन'' में यह स्वीकार किया कि, मनुष्य ईश्वर द्वारा बनाए गए प्राणियों के एक महान पदानुक्रम के बीच में स्थित है और वह पशु के स्तर पर गिरने या उच्च रूपों पर आरोहण की स्वतंत्रता से संपन्न है। उनका अंतर्निहित तर्क यहीं था की मनुष्य अपने भाग्य को साँचें में ढालने वाला और उसका निर्माता है।

पुनर्जागरण की मूल्य प्रणाली जैसा कि मानवतावाद की अवधारणा में माना जा सकता है–नियो-प्लेटोनिक दर्शन पर जोर, सभ्य मानव का पुनर्जवन, एक अधिक व्यावहारिक प्रकार की शिक्षा, पूछताछ की एक नई भावना, और अंध विश्वास को चुनौती –जैसे विचारों को मूर्त रूप प्रदान करता है। मानवतावाद की भावना धर्म के प्रति संशोधित दृष्टिकोण के पक्ष में थी। इसका अर्थ यह नहीं है कि, पुनर्जागरण के विद्वान और कलाकार नास्तिक या पादरी विराधी थे। बल्कि वे चर्च और पादरियों के आलोचक थे, जिन्होंने भगवान के लिए प्राकृतिक मानव प्रेम की वास्तविकता से अलग अर्मूत और संकीर्ण विचार अपना लिए थे।

मानवतावादियों का उद्देश्य समाज में अपनी जगह लेने के लिए आदमी को तैयार करना था। इसका उद्देश्य मनुष्य को एक उच्च प्रशिक्षित विद्वान बनाना नहीं था, बल्कि सही सामाजिक मूल्यों और सही प्रकार की अभिव्यक्ति को विकसित करना था।

मार्सिलियो फिसीनो ने बहुत सारी लैटिन कृतियों का अनुवाद किया। उन्होंने लिखा कि, मानवता के पास एक अद्वितीय क्षमता थी अर्थात बुद्धि, जिसे उन्होंने 'बोधगम्य प्रकाश की दिशा में एक दृष्टि' के रूप में वर्णित किया।

मानवतावाद ने सांसारिक सरोकारों और प्रयासों की खोज को महत्व दिया। इसने जीवन के एक नए तरीके को संदर्भित किया, जिसने भगवान के अस्तित्व को स्वीकार किया, परंतु यह माना कि मनुष्य और भगवान के बीच सीधा संबंध था। इसलिए इसका परिणाम यह हुआ कि आदमी खुद को मध्ययुगीन चर्च की ''सर्वव्यापकता'' और हठधर्मिता से मुक्त कर रहा था,

जिनको तर्कसंगत नहीं बनाया जा सकता था। नियो-प्लैटोनिज्म ने धर्म के लिए एक अधिक व्यक्तिवादी दृष्टिकोण प्रदान किया। इसने मध्यस्थ संस्थाओं जैसे चर्च, बिशप और पुजारी पदानुक्रम के अन्य सदस्य के सर्वोच्च अधिकार पर सवाल उठाया, और इस विचार को आगे रखा कि वे मोक्ष प्राप्त करने के लिए अनावश्यक थे। मनुष्य अब अपने दिमाग को खुला रख सकते थे और अपने स्वयं के लिए ज्ञान के अधिग्रहण के लिए और अपनी शर्तों पर दुनिया को समझने का लक्ष्य रख सकते थे।

इसलिए यह सुझाव दिया जा सकता है कि, व्यक्तिवाद की भावना पुनर्जागरण की सबसे प्रमुख धारणा थी। निर्धनता, ब्रह्मचर्य और एकांत जैसे मूल्यों के मध्ययुगीन आदर्शीकरण पर इतावली विचारकों ने हमला किया और इसके बजाय विवाह और पारिवारिक जीवन की संस्थाओं की प्रशंसा की। पुनर्जागरण के लिए कहा जाता है कि, उसने मानव को धर्मकेन्द्रित विश्व (धर्मशास्त्रीय दुनिया) से मुक्त कराया और मानव-केन्द्रित (मानवीय विश्व) बनाया।

8.5 साहित्य और नई विद्वता का विकास

इस नए दृष्टिकोण की वृद्धि ने एक नई रुचि और शास्त्रीय साहित्य के अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण दृष्टिकोण को प्रोत्साहित किया। पत्रिकाओं, किताबों और प्राचीन पांडुलिपियों के प्रकाशन ने इस समय के इन परिवर्तनों को दर्शाया। मध्य युग की अवधि के दौरान सभी विद्वतापूर्ण और धार्मिक साहित्य लैटिन में लिखा गया था। यह कुलीन और उच्च वर्ग की भाषा थी। पुनर्जागरण ने एक विशिष्ट साहित्यिक संस्कृति का निर्माण किया। पुनर्जागरण काव्य, नाटक कला और इतिहास की कृतियों को व्यापक जनता के लिए सुलभ बनाने में एक निर्णायक बदलाव लाया। न केवल लैटिन को माध्यम के रूप में प्रतिस्थापित किया गया, लेकिन इसके परिणामस्वरूप उस समय की आमतौर पर बोली जाने वाली भाषाओं में साहित्य में बहुत महत्वपूर्ण वृद्धि हुई जैसे टस्कन, अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच और स्पेनिश। पुनर्जागरण ने साहित्य में महापुरुषों की एक श्रृंखला का निर्माण किया जैसे इटली में पेट्रार्क और बोकासिओ, इंग्लैंड में थॉमस मोरे और विलियम शेक्सपियर, स्पेन में बॉस्कन और गोसीलासो डी ला वेगा, फ्रांस में राबेलाइस, नीदरलैंड में इरास्मस, और जर्मनी में उलरिख वॉन हटन।

पुनर्जागरण साहित्य ने विषय और शैली में विभिन्न साहित्यिक रूपों को ग्रहण किया। उदाहरण के लिए, पेट्रार्क ने भाषा, अलंकार और काव्य छंद को बहुत अधिक महत्व दिया। उन्होंने इतालवी बौद्धिक जीवन को प्रेरित किया। उनकी कृतियों ने काफी हद तक मानवीय गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित किया। दांते अपने प्रेम कार्यों के लिए काफी प्रसिद्ध थे। उन्होंने सांसारिक मामलों और मानवीय भावनाओं से जुड़े हुए काव्य की रचना की। दांते का रचना द डिवाइन कॉमेडी को पुनर्जागरण विचारों के सबसे शुरुआती लेखन में से एक के रूप में देखा जाता है। बोकासिओ उनके रचना डीकैमरोन के लिए उनकी प्रशंसा की गई (100 कहानियों का एक संग्रह)। ज्यादातर कहानियाँ गैर-धार्मिक और आम लोगों के दैनिक जीवन के साथ जुड़ी हैं। इस तरह के लेखन ने नई सोच को बढ़ावा दिया, जिसने मानव व्यवहार की समझ में एक नई जानकारी प्रदान की।

हालांकि, व्यक्तिवाद और यथार्थवाद के विचारों के प्रचार के लिए एक वाहन के रूप में साहित्य, लोरेंटाइन चांसलर कोलूचो सालूटार्टीन के तहत अपने चरमोत्कर्ष तक पहुँच गया था। उनके विचारों ने नागरिक मानवतावाद की धारणा में योगदान दिया। नागरिक मानवतावादियों ने यह विचार कि– नागरिकों में समुदाय के जीवन और गतिविधियों के संबंध में नैतिकता और नैतिक सिद्धांत का विकास होना चाहिए, इसको प्रोत्साहित किया। उनका मानना था कि सार्वजनिक मामलों में भागीदारी एक सदगुण और कर्त्तव्य था।

कुछ अन्य साहित्यिक प्रसिद्ध व्यक्ति –लुडोविको एरियोस्टो, प्लांटस और टेरेंस थे। उनका साहित्यिक प्रारूपों जैसे काव्य, व्याकरण, निबंध और नाट्य-कला पर एक शक्तिशाली प्रभाव

था जो उस समय की सामाजिक परिस्थितियों को दर्शाता था। उच्च पुनर्जागरण के अंत की ओर अर्थात मध्य-पंद्रहवीं शताब्दी के चरण में, मुद्रण की मशीन के आगमन ने सार्वजनिक क्षेत्र में एक बड़ी मात्रा में सामग्री उपलब्ध कराई। ऑक्सफोर्ड, कैंब्रिज और हाइडलबर्ग के विश्वविद्यालय, साहित्य और कलात्मक गतिविधियों के केंद्र के रूप में उभरे।

जोहान गुटेनबर्ग ने मध्य-पंद्रहवीं शताब्दी में जर्मनी में पहली मुद्रण की मशीन स्थापित की। मुद्रण ने बाइबल, पुरातन मूल-ग्रंथ, और कानून, दर्शनशास्त्र और विज्ञान के विषयों पर किताबों के अनुवाद को सुगम बनाया। मुद्रण संस्कृति के दूरगामी परिणाम थे। किताबों का वितरण और परिसंचरण एक अभूतपूर्व तरीके से बढ़ा और पहली बार नए विचार और जानकारी अत्यधिक श्रोताओं तक पहुंची।

8.6 राजनीतिक सिद्धांत और दर्शन शास्त्र

पुनर्जागरण के मानवतावादी अपने पूर्ववर्तियों अर्थात यूनानियों के, दर्शनशास्त्र के विकास के लिए, बहुत आभारी थे। मध्ययुगीन चर्च ने स्वयं एक अभेद्य प्रणाली का निर्माण करने के लिए कुछ सिद्धांत और राजनीतिक चिंतन की शास्त्रीय अवधारणाओं का उपयोग किया। शुरुआत अरस्तू की इस धारणा से हुई कि मनुष्य प्राकृतिक रूप से एक राजनैतिक और सामाजिक प्राणी है। सेंट थॉमस एक्विनास ने सत्ता की एक पदानुक्रमित संरचना और भगवान और लौकिक शासक और के प्रति मनुष्य के संबंधों में शामिल दायित्व की धारणा को विकसित किया। शायद नव-लेटोनिज्म का नया दर्शन पांडित्य-दंमिता के भवन को तोड़ने का एक प्रयास था।

मानवतावादियों में से एक जिन्होंने राजनीतिक दर्शन में योगदान दिया, निकोलो मैकियावेली हैं। उनकी सबसे प्रसिद्ध रचना द प्रिंस है। इस रचना में मैकियावेली ने ऐतिहासिक संदर्भों के माध्यम से राजनीतिक और सैन्य कार्रवाई के रूपों की जाँच-पड़ताल करने की कोशिश की, जो एक शासक के राजनीतिक अस्तित्व को सुनिश्चित करने की संभावना रखते थे। अपनी किताब में, वह एक सफल सरकार के कामकाज के लिए बेईमानी और विश्वासघात के उपयोग को उचित ठहराता है। इसलिए यह विचार कि – अंत साधनों को तर्कसंगत बनाता है; मैकियावेलियन सोच का मुख्य निष्कर्ष बन गया। उन्होंने राजनीति के लिए वह करने का प्रस्ताव रखा जो उनके समय में चित्रकारों ने परिदृश्य कला (लैंडस्केप आर्ट) के क्षेत्र में किया था, अर्थात अंशशोधित (कैलिब्रेटेड) परिप्रेक्ष्य से दृश्य की जाँच करना और उसका उचित रूप से चित्रण करना। अपनी दूसरी कृति डिसकोर्सेज ऑन लिवी में उन्होंने इसपर जोर दिया था कि शास्त्रीय अतीत (रोमन गणतंत्र) के अध्ययन के आधार का राजनीतिक कार्रवाई के परिणामों के निगमन बनाने में उपयोग किया जा सकता है। यह किताब उनके द्वारा उस समय की सामाजिक.राजनीतिक जरूरतों की प्रतिक्रिया के रूप में, परंतु अतीत के प्रकाश में, एक नए प्रकार का राजनीतिक चिंतन विकसित करने का प्रयास था।

कुछ अन्य दर्शन थे जो इस समय विकसित हुए। स्टोइसिज़्म और एपिकुरियनिज़्म अन्य चिंतन के मत थे, जिन्होंने पुनर्जागरण काल के दौरान जड़े जमाना प्रारंभ कर दिया था। स्टोइसिज़्म का दर्शन प्राप्त ज्ञान के पूर्ण सत्य के विचार पर संदेह करने के बारे में था। स्टोइकवाद के लिए, कोई भी ज्ञान निरपेक्ष नहीं हो सकता है और उन्होंने ज्ञान की मौजूदा प्रणाली के भीतर भी नए विचारों की खोज की संभावनाओं की परिकल्पना की। उनके विचार में सदगुण ज्ञान पर आधारित था। इसमें लोग सुख और दर्द के प्रति तटस्थ रहते हैं। एपिकुरियनिवाद को परम आनंद के स्रोत के रूप में देखा गया।

अंततः पुनर्जागरण ने एक नई भाषा, नई भावना और लोकाचार का निर्माण किया। राजनीतिक चिंतकों और विद्वानों ने, एक व्यापक जनता के लिए, इस तरह के विचारों और दर्शनशास्त्र का प्रसार किया जिसने एक नया बौद्धिक जागरण पैदा किया।

बोध प्रश्न-1

1) 'पुनर्जागरण काल' पारिभाषिक शब्द से आप क्या समझते हैं ?

.....

.....

.....

2) पुनर्जागरण साहित्य को प्रमुखता देते हुए मानवतावाद पर एक संक्षिप्त टिपण्णी लिखिए।

.....

.....

.....

8.7 कला और कला के रूप

पुनर्जागरण काल प्रतिभा का एक काल था। पुनर्जागरण काल की अवधारणाएँ निरंतर विकसित होती रहीं और इस आधुनिक विश्व में आधुनिकता की स्रोत हैं जिसमें व्यक्तिगत प्रयासों को मान्यता दी गई। यह उन विश्वासों की जबरदस्त जाँच-पड़ताल और जटिल पुनर्निरीक्षण काल था जो शताब्दियों से अपनी पकड़ बनाए हुए थे। यह वह काल था जब दार्शनिकों, कवियों, कलाकारों और मानवतावादी विद्वानों ने अपना ध्यान मानव की नियति और उसकी भूमिका और नियति और समय की दुसाध्य गति द्वारा लादी गई सीमाओं पर केंद्रित किया था। इनमें से सबसे गहरे विद्वानों ने मानव अनुभव और प्रत्येक मानव के जीवन की विलक्षणता को जबरदस्त महत्व दिया।

यह कहा जा सकता है कि कला और वास्तुकला के क्षेत्र में पुनर्जागरण काल के परिवर्तन समाज में हो रहे परिवर्तनों से बहुत निकटता से जुड़े हुए थे अर्थात भौतिकवाद और व्यापार में वृद्धि, पूँजीपति वर्ग के उदय से। इन विकासों के परिणामस्वरूप एक ऐसी कला का विकास हुआ जो अधिक सांसारिक थी। जे. एच. प्लम्ब द्वारा इस बिन्दु का सुन्दरता से सार किया गया है जिन्होंने लिखा है कि ''कला समाज को, उसकी महत्वाकांक्षाओं, भ्रमों और विरासत को दर्शाती है''।

कला की अधिकतर कृतियाँ कुलीन वर्ग और व्यापारियों द्वारा शुरू कारवाई गई थी, जिनका ध्यान दैवत्व की शक्ति और रहस्य की बजाय आदमी की क्षमता पर केंद्रित था। वर्तमान समय तक पुनर्जागरण काल की कला और वास्तुकला अपने मौलिक रूप में जीवित है। शास्त्रीय अवधारणाओं के पुनर्जीवन के साथ, पुनर्जागरण काल की कला का विकास गोथिक से बरोक शैली में अपनी विशिष्ट विशेषताओं के साथ चार चरणों में विकसित हुआ।

पहला चरण आरंभिक पुनर्जागरण काल का चरण था, जिसने गोथिक और रोमन स्थापत्य शैलियों का पुनर्जीवन देखा। यह एक ऐसी कला थी जो धार्मिक गतिविधियों के इर्द-गिर्द केंद्रित थी और जिसका एक प्रयोजनात्मक उद्देश्य था। इस शैली की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएँ हैंः गोल गुम्बद, विशाल दीवारें, छोटी खिड़कियाँ, तपस्या के भाव और दूसरी दुनिया की अवधारणा को प्रस्तुत करने के लिए सादे और काले रंग के चर्च। इस स्वरूप में शास्त्रीय अवधारणाएँ परंपरा के साथ मिश्रित हो गई थी, जैसा कि मडोना की मूर्तियों और संतों के चित्रों में देखा जा सकता है।

परंतु धीरे-धीरे पंद्रहवीं शताब्दी के पश्चात, उच्च पुनर्जागरण अवधि में कला ने नए स्वरूपों को ग्रहण किया। कला न केवल कला के उद्देश्य के लिए उभरती है, परंतु प्रतिभाशाली पुरुषों

ने कला को उसके शिखर पर पहुँचायाः लिओनार्दो दा विंची, माइकल एंजेलो, राफेल और टिटियन। कला की सभी कृतियाँ न केवल एक सौंदर्यवादी परिप्रेक्ष्य से परिपक्वता को दर्शाती हैं, परंतु कला का व्यक्ति के साथ महत्व जुड़ा होने के कारण भी। पुनर्जागरण काल के कलाकारों ने कला को जीवन की नकल के तौर पर देखा, जिसके लिए प्रकृति और मानव शरीर रचना विज्ञान की निकटता से अवलोकन की आवश्यकता थी। कलाकारों ने प्रकाशिकी और ज्यामिति का प्रयोग किया और अपने शिक्षण का प्रयोग करके एक वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य विकसित किया। सामंजस्य, उत्तमता और सुन्दरता के लिए प्रेम पुनर्जागरण काल की कला की मुख्य विशेषताएँ थी। कला को अब विशेष रूप से केवल अपने धार्मिक महत्व के लिए नहीं देखा गया।

लिओनार्दो दा विंची ने अपने *'ट्रिटिस ऑन पेंटिग'* में लिखा कि एक अच्छे चित्रकार के पास चित्र बनाने के लिए दो मुख्य चीज़ें थी – मानव और मानव मस्तिष्क के प्रयोजन। वह अपनी कृतियों के द्वारा हमें यह याद दिलाते हैं कि सभी वस्तुओं के अपने प्राकृतिक आयाम होते हैं जैसे फसल काटता किसान या पहाड़ों पर चर रही भेड़ें।

इस काल के कुछ प्रसिद्ध कृतियाँ थी लिओनार्दो दा विंची का वर्जिन ऑफ द रॉक्स, द लास्ट सपर और मोनालिसा; द पिएटा अर्थात वर्जिन मैरी मृत यीशु के शरीर पर शोक करती हुई और सिस्टीन चेपल (गिरिजाघर) की छतों पर माइकल एंजेलों द्वारा बनाए गए भित्तिचित्र जो बूनारोत्ती के शीर्षक से जाने जाते हैं, विशेष रूप से उनकी कृति द लास्ट जजमेंट जिसमें शास्त्रीय अवधारणाओं और व्यक्तिगत अनुभव को एकीकृत किया गया था। यदि कोई द लास्ट सपर को उसके ऐतिहासिक संदर्भ में देखता है तो इसकी श्रेष्ठता एक धार्मिक और मानव रूपक के तौर पर बिल्कुल संदेह से परे है। यह चित्र भय, दुःख और शोक के उन भावों को दर्शाता है जो यीशु के शिष्यों के चेहरों पर उनमें से किसी एक के द्वारा धोखा दिए जाने की घोषणा पर देखे जा सकते थे। विन्ची की मोनालिसा मुस्कुराहट के चित्रण के द्वारा एक व्यक्ति के व्यक्तित्व का चित्रण करने का प्रयास करती है, जबकि यह अब तक वह एक चेहरा है जो हमेशा नज़रों को खींचता है। मोनालिसा एक लोरेंस निवासी व्यापारी की पत्नी थी, सिस्टीन चेपल एंजेलो की प्रतिभा की शक्ति और सीमा को प्रदर्शित करता है। बहु-तथ्यात्मक विषय-वस्तुओं को एक परिप्रेक्ष्य देने के लिए उसने छत को 3 क्षेत्रों में विभाजित किया था। सबसे निचले क्षेत्र में उसने यीशु के बाईबल-संबंधी पूवर्जों के वीर प्रसंगों का चित्रण किया। दूसरे क्षेत्र में पुराने टेस्टामेंट के पैगम्बरों को समाविष्ट किया। तीसरे क्षेत्र में जेनेसिस की पुस्तक से प्रसंगों का चित्रण किया गया। इन भित्तिचित्रों में, एंजेलो ने पुनर्जागरण काल में प्रसिद्ध नव-प्लेटोनिक धारणा को अभिव्यक्त किया –जीवन मुक्ति और ईश्वर से मिलन की ओर की एक यात्रा है। यह जीवन और संपूर्ण जगत के अर्थ में दार्शनिक जाँच-पड़ताल की ओर संकेत देती है।

इसी काल में जिन अन्य कलाकारों ने रचनाएँ रची, उनमें एक थे टिटियन, जो भड़कीले रंगों के प्रयोग के लिए प्रसिद्ध थे और राफेल, जो स्त्री सौंदर्य के आदर्श से संबंधित थे।

टिटियन की *द एंटोम्बमेंट* में विनीशियन शैली की सुन्दरता का उदाहरण प्रस्तुत किया गया है, जिसमें रंगों और गति की भावनाओं को चित्रित किया गया है। राफेल की ला बेल्ला जार्डीनेएर यथार्थवाद की प्रवृत्ति में प्रगति को दर्शाती है। द स्कूल ऑफ एथेंसराफेल द्वारा बनाया गया एक भित्तिचित्र है, जिसमें दो महान पुरुषों – अरस्तु और प्लेटो – को एक दूसरे के साथ बहस करते हुए चित्रित किया गया है जो यह दर्शाता है कि पुनर्जागरण काल शास्त्रीय रचनाओं के पुनर्जीवन से संबंधित था।

सेन्ड्रो बोत्तीशेल्ली की *थ्री ग्रेसेज़* शक्ति और जीवन शक्ति का अचूक प्रदर्शन है। इस प्राचीन विषय-वस्तु में पर सेन्ड्रो ने अपने युग के लालित्य, परिष्करण और सुघड़ना को जोड़ा।

मज़ाचिओ की *द ट्रीब्यूट मनी* में मानव आकृतियों के निपुणता से किए गए चित्रण के तथ्य को देखा जा सकता है, जो भारी, ठोस और वास्तविक हैं। शरीर और परिधान के बीच के संबंध को, और निकटता से परिभाषित करके यह चित्र के सौंदर्य को और बढ़ाता है।

उच्च पुनर्जागरण चरण में मूर्तिकला कला एक नए स्वरूप में उभरी। अनेक चित्र, प्रतिमाएँ और घुड़सवार शासकों की मूर्तियाँ बनाई गई जिसमें व्यक्तिवाद पर बल दिया गया। माइकल एंजेलों पुरुष मानव शरीर के महिमामंडन से संबंधित थे। उदाहरण के लिए, हम पिएरो दी मेडीसी और लोरेंज़ो दी मेडीसी की अर्धमूर्ति प्रतिमा का उल्लेख कर सकते हैं जो पुनर्जागरण काल के पुरुषों के बीच आत्मविश्वास की भावना का साक्ष्य देते हैं। एंड्रिया डेल वेरोचिओ की एक लड़के की डॉलफिन के साथ मूर्ति गति के प्रयोग में उल्लेखनीय थी। माइकल एंजेलो का कार्य डेविड एक युवा की नग्न मूर्ति है, जो पिएज़्ज़ा डेल्ला सिगनोरिया में एक रोमन शेर के पेट के नीचे स्थित है। इसने एंजेलो को इटली के सबसे अधिक माँग में होने वाले कलाकारों में से एक बना दिया।

उच्च पुनर्जागरण काल ने रीतिवादी कला का मार्ग प्रशस्त किया जिसकी पहचान इस काल के विकृत, शास्त्रीय-विरोधी और उस युग की यंत्रणा और हिंसा को प्रतिबिम्बित करती थी। कला का यह रूप इटली में सामाजिक-आर्थिक और राजनैतिक संकटों के प्राकृतिक परिणाम के तौर पर उभरा। कला का पतन *मडोना ऑफ द लॉन्ग नेक* चित्र में दिखाई देता है जिसमें पूर्णता, समरूपता और सामंजस्य की कमी हैं।

अन्य व्यापक रूप से प्रंशसित चरण कला की बरोक शैली थी। बरोक कलाकारों ने कला की कृतियों के आवर्धन के लिए प्रत्येक उपकरण का प्रयोग किया क्योंकि उनका ध्यान भव्यता और अत्यधिक अलंकरण पर केंद्रित था। रोम में सेंट पीटर का प्रधान गिरजाघर बाहर से बरोक शैली में बनाया गया है।

पुनर्जागरण काल की प्रत्येक कलाकृति एक तकनीकी परिवर्तन, परिप्रेक्ष्य और अनुपात में दुस्साहस और रंगों के प्रयोग में एक क्रांति के रूप में उभरी। पुनर्जागरण काल के कलाकार अपने गुरुओं के अधीन प्रशिक्षुकओं के तौर पर प्रशिक्षित हुए। पहली बार उस कलाकार के लिए एक ऐसा स्थान बनाया गया जिसकी व्यक्तिगत तौर पर समाज में पहचान थी, और उसने अपने शिल्प को परिष्कृत करने का प्रयास किया। उन्होंने अलग-अलग रचनाओं पर अपने हस्ताक्षर किए और संस्मरण और वृत्तांत लिखे।

यद्यपि यीशु के सूली पर चढ़ाए जाने और पिएटा के असंख्य चित्र गहरी आस्था की अर्थपूर्णता को दर्शाते हैं, परंतु हमें पाठकों को यह स्मरण कराना चाहिए कि उच्च पुनर्जागरण चरण में बाईबल और ईसाई नायकों के दृश्यों को साधारण स्त्रियों और पुरुषों के जीवन में धरती पर पुनःस्थापित किया गया। कला के सभी रचनाएँ मानव भाव, उत्साह और पीड़ा से जुड़ी हुई थी। कला की ये शानदार रचनायें शास्त्रीय अवधारणाओं और पुनर्जागरण से ग्रहण किए गए नए मूल्यों का एक मिश्रण थी।

पुनर्जागरण काल के दौरान बड़ी संख्या में चर्च और गिरजाघरों का निर्माण हुआ। से सभी भव्य इमारतें पोप के द्वारा अधिकृत और प्रभावशाली परिवारों के द्वारा संरक्षित थी। आरंभिक पुनर्जागरण काल की शैली की विशेषताएँ सेंट एंड्रिया के प्रधान गिरिजाघर में प्रदर्शित हैं। इसके रोमन मेहराब वाले स्तंभ, गुम्बद और फुटपाथ साफ तौर पर शास्त्रीय पुनर्जीवन की व्याख्या करते हैं, जो कि पुनर्जागरण भावना के लिए मूल आधार था। अन्य शास्त्रीय इमारतों में सेन लोरेंज़ो का पूजा-सामग्री कक्ष (सेक्रीस्टी) थी, जो मेडीसी परिवार द्वारा बनवाया गया एक ग्रामीण चर्च था और पाज्जी गिरजाघर थी।

फिल्लिप्पों ब्रुनेल्लेशी द्वारा लोरेंस में प्रधान गिरिजाघर वास्तुकला की सबसे शानदार कृति है। इस वास्तुकला को कभी-कभी कागज़ वास्तुकला भी कहा गया है, और कुछ हद तक इन

वास्तुकला के डिज़ाइनों को कागज़ पर उतारने की प्रक्रिया को पत्थर पर संरक्षित करता है। अपने अभियांत्रिकी कौशल के लिए इसकी प्रंशसा हुई। उसने शास्त्रीय शैलियों के स्तंभों और फुटपाथों को भी अपनाया।

दृष्टिगत रूप से पुनर्जागरण काल सबसे समृद्ध सांस्कृतिक आंदोलनों में से एक था। पुनर्जागरण काल सांस्कृतिक रूप से सक्रिय था जिसने ज्ञान, शास्त्रीय स्वरूपों, समरूपता और कलात्मक सृजन को पुनःप्रस्तुत किया। नगर-राज्य प्रतिस्पर्धा में थे, और कला और वास्तुकला की कृतियों को शुरू करवाकर अपने शहरों को जीवंत और गतिशील बनाने का दृढ़ भाव रखते थे।

ब्रूनेल्लेशी, लिओनार्दो दा विंची और मेस्सशिओ जैसे अधिकतर वास्तुकलाकारों और चित्रकारों ने निपुणता और सटीक प्रस्तुतीकरणों के लिए गणितीय सटीकता और ज्यामितीय ज्ञान को अविभाज्य माना। कलाकारों द्वारा अपने रचनाओं में मानव शरीर के विस्तृत अध्ययनों में वैज्ञानिक चेतना भी दिखाई देती थी। इसके परिणामस्वरूप पुनर्जागरण कलाकारों और शिल्पकारों ने वैज्ञानिक क्रांति के लिए एक सहायक वातावरण का निर्माण किया।

8.8 विज्ञान

विज्ञान और पुनर्जागरण के मध्य महत्वपूर्ण अंतर्सम्बंध से इनकार नहीं किया जा सकता है। खगोल विज्ञान में अध्ययनों ने भौतिक ब्रह्मांड की प्रकृति के बारे में अत्यंत महत्वपूर्ण विचारों के विकास को जन्म दिया। इस तरह के विचारों को ब्रह्मांड के संदर्भ में मौजूदा पांडित्यदंभी और धर्मवैज्ञानिक प्रणाली पर हमले की तरह माना गया।

मध्ययुगीन धर्मशस्त्रियों ने खगोलीय पिंडों को ब्रह्मांड की अपनी कठोर संकल्पना के ढाँचे के भीतर ही देखा था।

टॉलेमी ने ब्रह्मांड का भू-केंद्रित सिद्धांत प्रतिपादित किया, जिसके अनुसार पृथ्वी ब्रह्मांड का केंद्र थी। यह टॉलेमिक प्रणाली थी। ब्रह्मांड की ऐसी समझ बाईबिल-संबंधी पुस्तकों और धार्मिक तर्क से उत्पन्न हुई थी जिसे परम सत्य का स्रोत माना जाता था। लेकिन पंद्रहवीं शताब्दी तक, वैज्ञानिक जिज्ञासा बढ़ रही थी और एक पोलिश खगोलशास्त्री ने चौंकाने वाला सच बताया कि पृथ्वी और ग्रह सूर्य के चारों ओर घूमते हैं, न की विपरीत क्रम से। वह और कोई नहीं, निकोलस कोपरनिकस थे। उन्होंने सूर्य केन्द्रित सिद्धांत विकसित किया जिसने पृथ्वी को एक गोले के रूप में वर्णित किया था जो एक वर्ष के दौरान सूर्य के चारों ओर घूमती थी, और हर चौबीस घंटे में अपनी धुरी पर। व्यापक रूप से, टॉलेमिक दृश्य में विश्वास के कारण यह विचार लंबे समय तक अस्वीकार्य रहा। अंत में कोपरनिकस ने अपनी रचना तैयार की रिवोल्यूशन ऑफ द हेवनली बॉडीज़, जिसकी चर्च अधिकारियों द्वारा कड़ी निंदा की गई थी।

इस रचना का अध्ययन गैलीलियो गैलीली ने किया था, जो खगोल विज्ञान के बाद के विकास के लिए जिम्मेदार थे। वह काफी हद तक प्लेटोनिक विचारों से प्रभावित थे और उन्होंने ब्रह्मांड के अरस्तूवादी व्यवस्था को चुनौती दी थी। गैलीलियो ब्रह्मांड की एक नई तस्वीर की कल्पना करने में सक्षम थे, विशेष रूप से इसलिए कि उन्होंने ब्रह्मांड को अपने समय की सबसे बड़ी खोज के माध्यम से देखा था –टेलीस्कोप। उनके अध्ययन ने बृहस्पति के उपग्रहों और शनि के छल्ले पर प्रकाश डाला, और इस तथ्य को स्थापित किया कि पृथ्वी किसी अन्य ग्रह की तरह ही थी। इस प्रकार उन्होंने सौर प्रणाली पर एक नया दृष्टिकोण प्रदान किया। चर्च द्वारा इन विचारों को सहन नहीं किया गया था। इतालवी में उनकी प्रसिद्ध रचना डायलॉग इन द टू चीफ वर्ल्ड सिस्टम्स ने उन्हें लोकप्रिय बना दिया, लेकिन चर्च ने उस विधर्म का मुकदमा में लाद दिया।

वैज्ञानिक क्रांति मानवतावाद का एक महत्वपूर्ण पहलू था क्योंकि इसने अनुभववाद को जन्म दिया था। इस पद्धति के अनुसार, ज्ञान को अवलोकन, प्रयोग करके और आँकड़ों के संयोजन के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता था, और फिर सामान्य नियमों के निर्माण के लिए इसका उपयोग किया जाना था।

जैसा कि स्टुअर्ट एंड्रयूज ने चर्चा की है, इस पद्धति के प्रधान मार्गदर्शक फ्रासिंस बेकन थे। उन्होंने आगमन पद्धति की बौद्धिक नींव रखी। बेकन ऐसा मानने लग गए थे कि ज्ञान जो लोगों के लिए व्यावहारिक उपयोग का था उसे 'सच्चे ज्ञान' के रूप में वर्णित किया जा सकता है। उन्होंने अपने विचारों को उनकी सबसे प्रभावशाली रचनाओं में से दो में समझाया और उनकी चर्चा की–द *एडवांसमेंट ऑफ लर्निंग* 1605 में प्रकाशित और 1625 में संशोधन की गई और द *न्यू अटलांटिस*। वह 1660 में स्थापित रॉयल सोसाइटी के संस्थापकों के लिए एक महत्वपूर्ण प्रेरणा स्रोत थे।

इस समय की एक और महान दार्शनिक रेने देकार्त ने यह तर्क दिया कि, प्राकृतिक विज्ञान के अध्ययन के लिए सबसे महत्वपूर्ण उपकरणों में से एक गणित था। तार्किक निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए उनकी पद्धति को निगमतात्मक तर्क (डिडक्टिव रीजनिंग) कहा जाता था। उनका तर्क था कि :

1) हम जो भी सोच सकते हैं, हमारे दिमाग में जो भी विचारों की कल्पना कर सकते हैं– वह अस्तित्व में और सत्य होता है।

2) क्योंकि हम ईश्वर के बारे में सोच सकते हैं, उनकी कल्पना कर सकते हैं– हमें यह समझ लेना चाहिए कि ईश्वर अस्तित्व में होते हैं।

3) इस प्रश्न के संदर्भ में कि, क्या हमें अपनी इंद्रियों पर भरोसा करना चाहिए– उन्होंने कहा था कि ईश्वर हमारे साथ झूठ नहीं बोलेंगे, हमें भटकायेंगे नहीं।

देकार्त के अनुसार, वास्तविकता दो प्रकार की होती हैः एक होती है, 'चिंतनशील पदार्थ' अर्थात मस्तिष्क। दूसरा होती है 'विस्तारित पदार्थ' जिसका अर्थ है मस्तिष्क के बाहर कुछ भी हो सकता है और जिसे मापा जा सकता है। इस विचार को 'कार्तीय द्वैतवाद' के रूप में वर्णित किया गया है।

बाद में आधुनिक विज्ञान को विलियम हार्वे, जो रक्त के परिसंचरण के लिए प्रसिद्ध हैं, रॉबर्ट बॉयल, जिन्हें तापमान पर उसके नियम के लिए जाना जाता है, और रॉबर्ट हुक, जिन्हें एक प्रसिद्ध जीवविज्ञानी के रूप में जाना जाता है, के प्रयासों से संस्थागत किया गया था। हरबर्ट बटरफील्ड जैसे कई इतिहासकारों ने यह कहा है कि वैज्ञानिक और चिकित्सा संबंधी पुस्तकों का उत्पाद अपेक्षाकृत ज्यादा था। क्लेब की संदर्भ ग्रंथ-सूची के अनुसार (1930) 1500 से पहले मुद्रित, कई लेखकों द्वारा 1,044 शीर्षकों के 3,000 से अधिक संस्करण थे जो इतालवी प्रेस से आए थे, और उनमें विज्ञान और पुनर्जागरण की गहरी भावना थी।

बोध प्रश्न-2

1) पुनर्जागरण चित्रकला की विशेषताओं का लगभग 250 शब्दों में उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

2) पुनर्जागरण काल के दौरान विज्ञान के क्षेत्र में उपलब्धियों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

.....

8.9 सारांश

यह इकाई पश्चिमी विश्व के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण अवधियों में से एक को समाविष्ट करती है; पुनर्जागरण काल जिसका अर्थ 'पुनर्जन्म' या 'पुनः जागृति' होता है। पुनर्जागरण काल किसी एक घटना का नाम नहीं है। बल्कि यह घटनाक्रम और नए विचारों की एक श्रृंखला थी जिसने अंततः आधुनिकता के युग को जन्म दिया। प्रारंभिक पंद्रहवीं शताब्दी और अठारहवीं शताब्दी के अंत की अवधि के दौरान यूरोप में कला, साहित्य, दर्शनशास्त्र खगोल विज्ञान और प्राकृतिक विज्ञान के क्षेत्रों में एक शक्तिशाली, नई ऊर्जा और सर्जनात्मकता का प्रसार हुआ अर्थात, दूसरी शब्दों में, सभी प्रकार के शिक्षण के क्षेत्रों में। बौद्धिक दृष्टि से, मध्यकालीन चर्च द्वारा समाज पर थोपे गए विश्व-दृष्टिकोण से यह एक निर्णायक अंत था।

विद्वानों और विभिन्न प्रकार के सर्जनशील व्यक्तियों द्वारा यूनान और रोम की शास्त्रीय संस्कृतियों की पुनः जांच प्रारंभ की गई। उतना ही महत्वपूर्ण था उनके द्वारा जिसे मानवतावाद के रूप में जाना गया उसका अध्ययन, जिसमें 'मानव', 'मनुष्य', ब्रह्मांड में मनुष्य का महत्व और उसका स्थान और उसके साथ-साथ व्यक्ति का महत्व महत्वपूर्ण विषय-वस्तु थे। इसमें जीवन के एक नए तरीके का अग्रदूत संकेन्द्रित था, जिसने भगवान के अस्तित्व को स्वीकार किया लेकिन इस विचार को बढ़ावा दिया कि मनुष्य और ईश्वर के बीच सीधा संबंध था। इसने जाँच-पड़ताल की भावना को भी प्रोत्साहित किया, और सांसारिक सरोकारों और मानवीय प्रयासों की वैधता को स्वीकृति प्रदान की। भौगोलिक दृष्टि से, मानवतावाद की उत्पत्ति लोरेंस, इटली में हुई।

सामाजिक-आर्थिक दृष्टि से, यह वह समय था जब सामंतवाद समाप्त हो रहा था और पूँजीवाद अपना प्रारंभिक प्रारूप ग्रहण कर रहा था। इटली में परिवर्तन सबसे अधिक चिह्नित थे, जहाँ सामंतवाद ने बहुत गहरी जड़ें विकसित नहीं की थीं और जहाँ इसके विभिन्न स्वतंत्र शहर-राज्यों में वाणिज्य फल-फूल रहा था। फिर, धीरे-धीरे समाज में एक व्यक्ति की प्रतिष्ठा निर्धारित करने के लिए जन्म और परिवार से सम्पदा अधिक महत्वपूर्ण हो गई। विश्राम और अतिरिक्त पैसे का अंतिम परिणाम वास्तुकला सहित कला के कार्यों की शुरुआत में हुआ। लिओनार्दो दा विंची और माइकल एंजेलो इस काल के प्रेरित दो सबसे प्रसिद्ध कलाकार थे। विश्वविद्यालयों में चर्चाएँ और बहसें जीवंत थी।

पुनर्जागरण काल के दौरान प्राकृतिक विज्ञान में बढ़ती रुचि थी और प्राकृतिक दुनिया का अध्ययन करने के लिए उपकरणों में वृद्धि हुई। टेलिस्कोप का आविष्कार हॉलैंड में किया गया था, और फिर इटली में एक प्राकृतिक वैज्ञानिक, दार्शनिक और गणितज्ञ, जिसका नाम गैलीलियो गैलीली था उन्होंने खुद के लिए एक टेलिस्कोप बनाया। उन्होंने वर्षों तक इसके माध्यम से ब्रह्माण्ड का अध्ययन किया। अंततः उन्होंने ब्रह्माण्ड के कोपर्निकस के सिद्धांत को सही साबित किया। चर्च के शक्तिशाली नेताओं ने इसे आसानी से नहीं माना। उन्होंने उनपर विधर्म का मुकदमा चलाया, जिसका अर्थ रोमन कैथोलिक चर्च के स्वीकृत सिद्धांत को चुनौती देना था।

गैलीलियो के कार्य का यह उदाहरण हमें यह समझने में मदद करता है कि वैज्ञानिक क्रांति मानवतावाद का एक महत्वपूर्ण पहलू था क्योंकि इसने अनुभववाद को जन्म दिया था। इस पद्धति के अनुसार, ज्ञान केवल सत्ताधारियों द्वारा ही प्राप्त नहीं किया जा सकता था बल्कि इसे अवलोकन, प्रयोग करके और आँकड़ों के संयोजन के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता था, और फिर सामान्य नियमों के निर्माण के लिए इसका उपयोग किया जाना था। यह कोई

आश्चर्यजनक बात नहीं है कि गैलीलियो को 'वैज्ञानिक पद्धति के जनक' के रूप में वर्णित किया गया है। पुनर्जागरण काल की महत्ता का आज भी अध्ययन किया जा रहा है और इस पर आज भी बहस हो रही है। 'पुनर्जागरण काल' शब्द का आविष्कार स्वयं उन्नीसवीं शताब्दी के इतिहासकारों द्वारा किया गया था।

8.10 शब्दावली

प्लेटोनिक विचार (Platonic Ideas) : प्राचीन यूनानी दर्शनशास्त्री प्लेटो (428 बी.सी.ई.-348 बी.सी.ई.) के विचार। संवाद और दर्शन में द्वंद्वात्मक रूप के एक प्रर्वतक।

बारोक काल (Baroque Period) : वास्तुकला, संगीत और नृत्य, पेंटिंग और मूर्तिकला की एक शैली जो 1600 सी.ई. से यूरोप में फली-फूली। यह पुनर्जागरण कला और रीतिवाद के बाद अस्तित्व में आई।

8.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1) भाग 8.3 देखें।

2) भाग 8.4 देखें।

बोध प्रश्न-2

1) भाग 8.7 देखें।

2) भाग 8.8 देखें।

8.12 संदर्भ ग्रंथ

गिलमोर, एम. (1952). *द वर्ल्ड ऑफ ह्यूमनिज्मः 1453-1517*. न्यूयॉकः हार्पर।

हेल, जे. ऑर. (1971). *रैनासं यूरोपः द इंडिविजुअल एंड सोसायटी 1480-1520*. यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्नियाः बर्कल।

बर्नल, जे. डी. (1939). *द सोशल फंक्शन ऑफ साइंस*. लंदनः जी. रोटिलेज एंड सन लिमिटेड।

बटरफील्ड, एच. जे. (1958). *द ओरिजन्स ऑफ मॉडर्न साइंस 1300-1800*. न्यूयॉर्कः द मैकमिलन कंपनी।

मैथ्यू, ऑर. टी. एंड डी. विट प्लाट. (1995). *द वेस्टर्न ह्यूमेनिटिज भाग 2: द रैनासं टू द प्रेजेंट*. यूनिवर्सिटी कैलिफोर्निया प्रेस।

एंड्रियूज़, एस. (1964). *एटींथ सेंचरी यूरोपः द 1680 ज़ टू 1715* यू. केः लोंगमैन।

इकाई 9 धर्म सुधार*

इकाई की संरचना

9.0 उद्देश्य

9.1 प्रस्तावना

9.2 धर्म सुधार की उत्पत्ति

9.3 सामाजिक पृष्ठभूमि

9.4 जर्मनी में धर्म सुधार

9.5 मार्टिन लूथर और प्रोटेस्टेंट धर्म सुधार

9.6 लूथर और कृषक युद्ध

9.6.1 लूथर का धर्म

9.7 हुल्द्रिख या उलरिख ज्विंगली

9.8 अनाबैप्टिस्ट्स

9.9 फ्रांस में धर्म सुधार

9.10 जॉन कैल्विन

9.10.1 कैल्विनवाद का प्रसार

9.11 इंग्लैंड में धर्म सुधार

9.12 प्रभाव

9.12.1 राजनीतिक प्रभाव

9.12.2 सामाजिक प्रभाव

9.12.3 आर्थिक प्रभाव

9.13 सांराश

9.14 शब्दावली

9.15 बोध प्रश्नों के उत्तर

9.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप निम्नलिखित चीजों को समझ सकेंगेः

- धर्म सुधार की अवधारणा और इसकी ऐतिहासिक उत्पत्ति,
- धर्म सुधार की सामाजिक पृष्ठभूमि,
- धर्म सुधार का प्रसार,
- सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों में धर्म सुधार के प्रभाव।

* कुमारी नीतिका वर्मा, शोध विद्यार्थी, इतिहास संकाय, इग्नू

9.1 प्रस्तावना

धर्म सुधार को यूरोप के इतिहास में एक मील का पत्थर माना जा सकता है। यह चर्च के इतिहास में केवल एक घटना नहीं थी, जो पश्चिमी कैथोलिक चर्च का विखंडन या प्रोटेस्टेंट धर्मशास्त्र का उद्‌भव है। बल्कि, यह सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी के यूरोप के सामाजिक और राजनीतिक माहौल में क्रांतिकारी बदलाव ले कर आया।

परिभाषा– पारंपरिक अर्थों में धर्म सुधार का अर्थ है रोमन कैथोलिक चर्च में मतभेद या उससे सम्बंध विच्छेद जो कि सदियों से यूरोप में पोप के तहत कार्यरत था और धर्म सुधार का एक ही हिस्सा था। इसने ईसाई धर्म के भीतर कई कट्टरपंथी और उदारवादी धाराओं का निर्माण किया, जैसे कि लूथरन, केल्विनिस्ट, पुरीटैन, एनाबैपिस्ट, एंग्लिकन, आदि।

उपक्रम– ईसाई चर्च ग्यारहवीं शताब्दी के मध्य तक प्रभावी रूप से एकीकृत था। हालांकि, पश्चिमी और मध्य यूरोप पोप के नियंत्रण में आया, जबकि बाइजंटाइन चर्च कुस्तुतुंनियाँ के धर्म प्रधान के प्रभाव में उभरा। वर्चस्व और चर्च की आय के सवाल पर दोनों प्रमुखों के बीच कड़वे टकराव थे। 1054 सी.ई. में ईसाई चर्च में विभाजन हुआ। तब से पश्चिमी चर्च को कैथोलिक (सार्वभौमिक) कहा जाने लगा और बाइजंटाइन साम्राज्य में चर्च को रूढ़िवादी चर्च के रूप में जाना जाने लगा।

कैथोलिक चर्च एक मजबूत बंधन था जिसने कई सामंती इकाइयों को धार्मिक एकरूपता प्रदान की। राजनीतिक एकता के अभाव में, चर्च ने सामाजिक संबंधों के स्थायीत्व में मदद की। पोप शासकों के आंतरिक, राजनीतिक और वित्तीय मामलों में हस्तक्षेप करते थे। एक तरह से कैथोलिक चर्च ने यूरोपीय सामंतवाद को एकता प्रदान की। मध्ययुगीन काल से सामंती संरचना के कमजोर पड़ने के कारण चर्च पर भी प्रभाव पड़ना भी लाजिमी था।

9.2 धर्म सुधार की उत्पत्ति

चौदहवीं और पंद्रहवीं शताब्दी में पोप की सत्ता को आध्यात्मिक नेतृत्व को देने में असफलता जिसके कारण कैथोलिक चर्च को संस्थागत समस्याओं का सामना करना पड़ा। समकालीन लेखन निर्विवाद रूप से बढ़ती भ्रष्टाचार और अक्षमता की स्थिति को दर्शाता है। चर्च के नेताओं ने व्यक्तिगत धर्मनिष्ठा के लिए लोगों की तृष्णा को संतुष्ट करने में असमर्थता दिखाई।

आर्थिक परिवर्तनों और सामंती संकट ने कैथोलिक चर्च पर वित्तीय भार डाला था। यह महत्वपूर्ण कारकों में से एक था जिसके परिणामस्वरूप पोप की सत्ता की आलोचना बढ़ी। पोप के पद ने अपनी व्यापक नौकरशाही संरचना और राजकोषीय प्रणाली विकसित की थी। पोप ने दूर-दराज के चर्चों के अधिकारियों से विभिन्न प्रकार के अंशदान प्राप्त किए। इनमें दसाँश (आय का एक दसवाँ हिस्सा पोप को भेजा जाना था), प्रथम फल (फसल की शुरुआत के साथ जुड़ा हुआ चढ़ावा), आदि शामिल थे। सभी अंशदानों में सबसे विवादित था क्षमा-पत्रों की बिक्री (चर्च को भारी भुगतान देने पर गंभीर पाप से क्षमा के पर्चे)। चर्च की आर्थिक समस्याओं ने ऊपरी और निचले पादरी के बीच बढ़ते अलगाव को जन्म दिया। उच्च अधिकारी जो कार्डिनल, बिशप आदि जैसे कुलीन वर्ग से आए थे, उन्होंने विशाल सम्पदा अर्जित की, जबकि निचले पादरी गरीब बने रहे और सामान्य-जन से आए।

9.3 सामाजिक पृष्ठभूमि

मध्ययुगीन दुनिया एक बंद समाज थी जिसपर सामंतवाद और कैथोलिक चर्च और उसके पुजारियों का प्रभुत्व था। चर्च जीवन का केंद्र बिंदु था और जन्म से लेकर मृत्यु तक लोगों के जीवन के हर पहलू को छूता था। मध्य युग के अंत में महत्वपूर्ण घटनाक्रम हुए, जिसने

धर्म सुधारकों को आधार दिया। यह तर्क दिया जाता है कि जनसंख्या में गिरावट कृषि उपज के साथ-साथ विर्निमाण में गिरावट थी। इसने सामंती ताने-बाने के समाज के परिवर्तन के कार्य को तेज कर दिया। लगान के गिरावट के कारण राजस्व में जो गिरावट हुई उससे भूस्वामी भी गंभीर रूप से प्रभावित हुए थे। पश्चिमी जर्मनी में, विशेष रूप से आर्थिक कारकों ने जर्मनी के कुलीनों को क्षेत्रीय राजाओं पर अधिक निर्भर बना दिया, जिनके अधिकार में लगातार वृद्धि हो रही थी। कारीगर और किसान विशेष रूप से कम मजदूरी और उच्च कीमतों से त्रस्त थे। इन तीव्र आर्थिक संकटों, भटकाव और आक्रोश को मार्टिन लूथर और केल्विन की तर्कसंगत अनुरोध में अभिव्यक्ति मिली। मार्क्स और एंगेल्स ने धर्म सुधार की अवधि को एक सामाजिक परिवर्तन के रूप में देखा जो पूँजीपति वर्ग का उदय है। धर्म सुधार आम लोगों के शिक्षित आभिजात्य वर्ग के उत्थान को दर्शाता है, जो अविश्वसनीय पादरियों के आध्यात्मिक और प्रशासनिक कार्यों को संभालने के लिए तैयार और उत्सुक था। सबसे महत्वपूर्ण धर्म-वैधानिक परिवर्तन था– मोक्ष में संस्कारों की भूमिका में कमी जिसने पादरी के अधिकार और प्रतिष्ठा को कम किया और लोगों की स्वतंत्रता और आत्मविश्वास में वृद्धि की। पवित्र रोमन सम्राट की शक्तियों की कमी ने पोप की जागीरों को कमजोर कर दिया। धर्म सुधार, हालांकि धार्मिक कारकों के कारण, उस समय की धर्मनिरपेक्ष आवश्यकताओं द्वारा संभव बनाया गया था। गैर-धार्मिक तत्व में पुनर्जागरण धर्म सुधार का एक कारण था जिसने परिणामस्वरूप सत्ता के प्रति एक आलोचनात्मक दृष्टिकोण दिया। प्रोटेस्टेंट धर्म सुधार पर मानवतावादियों के आंदोलन का प्रभाव ऐतिहासिक बहस का विषय रहा है। धर्म सुधार को मानवतावाद के उदय के तार्किक और अनिवार्य परिणाम के रूप में देखा गया था। पुनर्जागरण को स्वीकारने से, पोप का पद अपने स्वयं के अंत का कारण बना क्योंकि इससे गंभीर आलोचना के साथ बौद्धिक गतिविधि में वृद्धि हुई। पुनर्जागरण के विचारों ने धर्म सुधार को गति दी। इतावली मानवतावाद ने त्याग के मठवासी सदगुणों को स्पष्ट रूप से खारिज कर दिया और धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया। जैसा कि एलिस्टर मैकग्राथ बताते हैं, इस प्रकार, सामाजिक और वैचारिक कारकों के एक जटिल विषम साँचें से धर्म सुधार उत्पन्न हुआ। राष्ट्रवाद के उदय ने, दक्षिण जर्मन राज्यों और स्विस शहरों की बढ़ती राजनीतिक शक्ति ने, व्यक्तिगत व्यक्तित्वों के उद्भव ने, बौद्धिक आंदोलनों और चर्च में बढ़ते संकटों के समय की धार्मिक जागरूकता ने धर्म सुधार आंदोलन का मार्ग प्रशस्त किया, हालांकि यह हर क्षेत्र में एक दूसरे से अलग था ।

9.4 जर्मनी में धर्म सुधार

जर्मनी की राजनीति और सामाजिक आर्थिक स्थिति प्रोटेस्टेंट धर्म सुधार के उद्भव और प्रसार के लिए अनुकूल थी। मैक्स स्टिनमेट्स का सुझाव है कि जर्मनी की आर्थिक स्थिति वाणिज्यिक उत्पादन में तेजी द्वारा परिलक्षित थी, फिर भी ग्रामीण इलाकों में सामंतवाद मजबूत था। पादरी अक्सर किसानों के बीच विद्रोह की भावना को बढ़ावा देने वाले जमींदार की भूमिका निभाते थे, और कैथोलिक चर्च अभी भी जर्मनी में भूमि के एक बड़े हिस्से का स्वामी था। पंद्रहवीं शताब्दी के अंत तक चर्च के शोषण के खिलाफ एक मजबूत भावना विकसित होने लगी। इसलिए, पोपवाद विरोध और पादरीवाद का विरोध जर्मन क्षेत्र की दो मुख्य विशेषताएँ बन गए।

मार्टिन लूथर ने 1520 के अपने प्रसिद्ध धर्म सुधारक ग्रंथ – *एन अपील टू जर्मन नोबेलिटी* में पोप और पादरियों के दुरुपयोगों को सूचीबद्ध किया। मानवतावाद के उदय ने व्यक्तिगत चेतना और मानव व्यक्तित्व के विचार पर जोर दिया, जिसने औचित्य के सिद्धांत में नई रुचि पैदा की कि कैसे मनुष्य भगवान के साथ एक सम्बंध में प्रवेश कर सकता है। उन्होंने अपने उदारवादी दृष्टिकोण और क्षमा-पत्रों की बिक्री के प्रचलन के खिलाफ लोकप्रिय आक्रोश के कारण व्यावहारिक सफलता हासिल की। क्षमा-पत्रों की बिक्री धन्यवाद की अभिव्यक्ति और

धन या दान के उपहार के रूप में शुरू हुई । प्रारंभ में क्षमा का अर्थ था चर्च द्वारा नैतिक पाप के लिए लगाई गई सजा में छूट। बाद में यह केवल चर्च की ही नहीं बल्कि ईश्वर द्वारा नरक (पाप मोचन स्थल) के दंड में छूट बन गया। इस प्रकार भगवान की कृपा व्यावसायिक रूप से पोप के एजेंटों द्वारा ब्रांडेनबर्ग के अल्ब्रेक्त और फुगर्स के बैंकिंग घरानों के माध्यम से बेची जा रही थी।

9.5 मार्टिन लूथर और प्रोटोस्टेंट धर्म सुधार

मार्टिन लूथर (1438-1546) किसान पृष्टभूमि से थे। उनका धर्म की ओर रुझान था और 1505 में उन्होंने एक भिक्षु बनने का फैसला किया। वह विटेनबर्ग विश्वविद्यालय में धर्मशास्त्र के प्रोफेसर थे। लूथरन रिफॉर्मेशन सरल प्रश्न से शुरू हुआ– 'ईश्वर की क्षमा पाने के लिए क्या करना चाहिए।'

1517 में, मार्टिन लूथर ने विटेनबर्ग में चर्च के दरवाजे पर अपने नाइनटी फाइव थीसिस चिपका दिया और सीधे तौर पर क्षमा-पत्रों की बिक्री को चुनौती दी। उनके कार्यों ने तुरंत पूरे यूरोप का ध्यान आकर्षित किया। एंगेल्स ने लूथर के रोमन कैथोलिक चर्च के खिलाफ विद्रोह को 'लूथरस लाइटेनिंग स्ट्रक होम' (लूथर की बिजली घर पर गिरी) के रूप में वर्णित किया।

थीसिस में उन्होंने तीन तर्क प्रस्तुत किए– 1) संबंधित वित्तीय दुर्व्यवहार, 2) सिद्धांतों के दुरुपयोग पर ध्यान देना, और 3) धार्मिक मुद्दों पर हमला।

1520 की गर्मियों में, लूथर ने अपनी '*थ्री ट्रीटीस*' प्रकाशित की। इसमें, 1) जर्मन राष्ट्र के ईसाई कुलीन वर्ग को संबोधित था जिसमें जर्मन प्रांतों को चर्च में धर्म सुधार के लिए आह्वान किया था। यहाँ, उन्होंने धर्म सुधार सिद्धांत 'प्रेइस्टहूड ऑफ आल बिलीवर्स' के बारे में बताया कि सभी ईसाई चर्च में एक समान है। 2) लूथर ने चर्च की पवित्र-संस्कार व्यवस्था पर सवाल उठाया और घोषणा की कि सात के बजाय केवल तीन पवित्र संस्कार हैं बपतिस्मा, विवाह और उरिव्रज्म, 3) सबसे उग्र परिवर्तन यह था कि लूथर ने ईसाई आदमी को मुक्ति प्रदान करने में चर्च और पुजारी की भागीदारी से इनकार किया। उन्होंने 'जस्टिफिकेशन बाय फेथ' के सिद्धांत से धार्मिक और नैतिक निहितार्थ का विकास किया।

जब पोप ने बहिष्कार का एक आदेश जारी किया (एक रोमन कैथोलिक चर्च उद्घोषणा), तो लूथर ने सार्वजनिक रूप से उसे जला दिया। 1521 में, पवित्र रोमन सम्राट ने लूथर को मुकदमें का सामना करने के लिए वर्म्स में डाइट (संसद) के सामने उपस्थित होने के लिए कहा। लूथर ने अपने पक्ष को त्यागने से इनकार कर दिया और इस तरह वह जर्मनी में सर्वोच्च सत्ता द्वारा गैरकानूनी घोषित कर दिया गया। वह जीवनभर मौत की सजा के अधीन रहे लेकिन वह एलेक्टर ऑफ सक्सोनी– फ्रेडरिक द्वारा परिरक्षित और समर्थित थे, जो व्यक्तिगत रूप से एक अकादमिक केंद्र में पोप के हस्तक्षेप को पसंद नहीं करते थे। लूथर ने छुपते हुए इरास्मस के ग्रीक पाठ से जर्मन भाषा में नए नियम (न्यू टेस्टामैंट) का अनुवाद किया। उनके विचारों के समर्थकों को लूथरन या प्रोटेस्टेंट कहा जाने लगा।

बोध प्रश्न-1

1) धर्म सुधार शब्द से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

2) जर्मनी में धर्म सुधार के उभरने के बारे में चर्चा करें।

.....

.....

.....

9.6 लूथर और कृषक युद्ध

पोप के चर्च के साथ लूथर टकराव ने जर्मन किसानों को 1525 में विद्रोह करने के लिए प्रेरित किया। किसान युद्ध एक समन्वित विद्रोह नहीं था और इसमें अनेक नेता थे। थोड़े समय के लिए थॉमस मुन्जर ने आंदोलन का सफलतापूर्वक नेतृत्व किया। उन्होंने सांमती भू-स्वामियों और चर्च शोषण के खिलाफ संघर्ष का आयोजन किया। कार्रवाई के लिए उनका 'बारह अनुच्छेद' एक कार्यक्रम था, जो काफी उदारवादी था और पूरी तरह से सामंती व्यवस्था को नष्ट करने का उद्देश्य नहीं रखता था। मार्क्सवादी लेखों से पता चलता है कि किसान युद्ध सामाजिक-आर्थिक संघर्ष की अभिव्यक्ति था और बुर्जुआ क्रांति का एक शुरुआती चरण था, जबकि धर्म सुधार इसकी वैचारिक अभिव्यक्ति थी। स्टीनमेट्ज का तर्क है कि यह मार्टिन लूथर द्वारा शुरू किया गया एक राष्ट्रीय आंदोलन था, जिसके द्वारा पोप चर्च के खिलाफ मध्य पूँजीपति वर्ग के नेतृत्व में सभी वर्गों (चर्च-सम्बंधी को छोड़कर) को साथ लाया गया था। दूसरी ओर, पीटर ब्लिकल का सुझाव है कि किसान युद्ध सामाजिक और भू-सम्पत्ति सम्बंधों को पुनः आकार देने और सामंतवाद के संकट को दूर करने का एक क्रांतिकारी प्रयास था। हालांकि, किसान युद्ध पोप शक्ति के साथ लूथर के बहादुर टकराव से प्रेरित था, लूथर कुलीन वर्ग का समर्थन खोना नहीं चाहता था, जिनको किसानों ने धमकी दी थी और इसलिए उन्होंने विद्रोही किसानों पर जोरदार हमला किया। लूथर का राजनीतिक सत्ता का सिद्धांत किसानों के युद्ध की पृष्ठभूमि के खिलाफ विकसित हुआ। लूथर ने शिकायतों के निपटारे के साधन के रूप में विद्रोह के सभी रूपों की निंदा की। उसने तर्क दिया कि एक सच्चे ईसाई को गलत को सहना चाहिए और राजा की सत्ता से लड़ने के बजाय बुराई को सहना चाहिए। इसलिए लूथर के विचारों को शासकों के एक बड़े वर्ग ने समर्थन दिया।

9.6.1 लूथर का धर्म

लूथर का धर्म सुधार इस सवाल पर शुरू हुआ कि किसी व्यक्ति को बचाने के लिए क्या करना चाहिए। इससे 'जस्टिफिकेशन बाय फेथ' का उनका सिद्धांत विकसित हुआ। लूथर का मानना था कि चर्च ने क्षमा की बिक्री जैसी प्रथाओं को अपनाकर धर्म-सिंद्धात और ईसाई धर्म के सच्चे सार को गलत समझा था।

लूथर के संगी प्रोफेसर मेलानक्थन ने लूथर के धर्म को एक संगठनात्मक संरचना और एक निश्चित आकार दिया था । उन्होंने लूथर को तीन पुस्तिका तैयार करने और ईसाइयों का एक नया संप्रदाय स्थापित करने में मदद की। लुथरन नामक ईसाइयों के इस नए समूह ने आस्था की सर्वोच्चता में विश्वास किया जिसने पुजारियों की विशेष स्थिति को उनके रहस्यमय कार्यों के साथ नष्ट कर दिया। लूथर ने घोषणा की कि प्रत्येक ईसाई अपना पुजारी था। लूथर के लिए चर्च की बाहरी व्यवस्था का महत्व गौण था। स्वतंत्रता एक आंतरिक आस्था थी और ना की एक बाहरी सामाजिक और राजनीतिक स्वतंत्रता थी। उसने पोप से लेकर पुजारियों तक चर्च के अधिकारियों के पदानुक्रम को समाप्त कर दिया। लूथरन आंदोलन ने ईसाई चर्च के भीतर एक तीव्र विभाजन किया और पोप के वर्चस्व को नष्ट कर दिया। लूथरवाद की सामान्य लोकप्रियता को इस तरह से प्रदर्शित किया गया था कि लोगों ने नैतिक मुद्दों के साथ एक प्रकार के सिद्धांत के रूप में इसे स्वीकार किया और इसने

आर्थिक धर्म सुधारों का भी सुझाव दिया जिसने पोप के पद को प्रभावित किया और देश की आर्थिक व्यवस्था में परिवर्तन किया।

इस प्रकार, हम कह सकते हैं कि जर्मनी में धर्म सुधार वास्तव में एक महान विकास नहीं था, बल्कि इसमें कई अलग-अलग स्थानीय धर्म सुधार शामिल थे। जिनमें से प्रत्येक को नगर परिषद या राजकुमार द्वारा आयोजित किया गया था जो अलग-अलग धार्मिक सिद्धांतों की देखभाल करते थे और इसे बढ़ावा देने की कोशिश करते थे।

9.7 हुल्द्रिख और उलरिख ज्विंगली

उलरिख ज्विंगली (1484-1531) लूथर के समकालीन थे जिन्होंने ज्यूरिख के स्विस संघ में धार्मिक धर्म सुधारों को अंजाम दिया। ज्विंगली का धर्म सुधार मानवतावादी विचारों पर आधारित था। उन्होंने अपने प्रचार के दौरान नए विचार प्रस्तुत किए। उनका वास्तविक धर्म सुधार 1520 में शुरू हुआ और पाँच साल के भीतर पूरा हुआ।

ज्विंगली के तहत स्विस धर्म सुधार ने चर्च के कॉर्पोरेट (सामूहिक) स्वरूप पर जोर दिया। यह माना जाता था कि पादरी और आम आदमी एक 'पवित्र समुदाय' का गठन करते थे। ज्यूरिख में धर्म सुधार का एक महान सामाजिक प्रभाव था। मठों को समाप्त कर दिया गया और मठ की दानशीलता एक सामूहिक सरोकार बन गई। चर्च और नैतिक अनुशासन का चर्च और राज्य द्वारा संयुक्त रूप से पर्यवेक्षण किया जाना था। मिलकर उन्हें 'पवित्र समुदाय' का गठन करना था।

लूथरन और ज्विंगली के धर्म सुधार के बीच कुछ समानताएँ थीं। दोनों ने मध्ययुगीन पवित्र संस्कारों को खारिज कर दिया और भगवान को महत्व दिया। इन दोनों ने विभिन्न कारणों से शिशु बपतिस्मा की पारंपरिक प्रथाओं को बरकरार रखा।

9.8 अनाबैप्टिस्ट्स

अनाबैप्टिस्ट्स ने शिशु बपतिस्मा के सिद्धांत को खारिज कर दिया और माना कि सच्चा ईसाई वह है जिसने एक वयस्क के रूप में फिर से बपतिस्मा लिया था। वे 'जस्टिफिकेशन बाय फेथ' के सिद्धांत में विश्वास करते थे और यह मानते थे कि केवल वे जो ईश्वर में दृढ़ विश्वास रखते हैं वे सच्चे चर्च के सदस्य बन सकते हैं और उन्होंने अन्य सभी को बाहर कर दिया।

जैसा कि शिशु बपतिस्मा को प्रोटेस्टेंट और कैथोलिक दोनों द्वारा एक पवित्र संस्कार माना जाता था, अनाबैपिस्टों के तर्क ने उनके सिद्धांत के लिए खतरा पैदा किया। इसके अलावा, अनाबैप्टिस्टों ने नागरिक सरकार में पहचान या भाग लेने, निष्ठा की शपथ लेने या सेना में सेवा करने से और सरकार में करों का भुगतान करने से इनकार कर दिया। उनका तर्क था कि सच्चे मसीहियों को कभी भी तलवार का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए या कानून की अदालतों में नहीं जाना चाहिए और न ही अदालती कार्य करना चाहिए। इन समूहों ने गरीब लोगों की आकांक्षाओं को प्रतिबिंबित किया और वे मसीह के दूसरे आगमन की तैयारी के लिए सभी संस्थाओं में सामाजिक धर्म सुधार चाहते थे।

जहाँ कहीं भी अनाबैपिस्ट बस गए, स्थानीय शासकों ने उन्हें प्रताड़ित किया, प्रोटेस्टैंटो ने उन्हें पानी में डुबो दिया और उन्हें मौत के घाट उतारने का आदेश दिया जबकि कैथोलिकों ने उन्हें जिंदा जला दिया। उनके प्रमुख नेताओं जैसे बाल्थासार हुमायेर और जैकब हटरहेड ने कुछ कुलीनों को अपने विश्वास में बदल दिया, लेकिन अंत में उन्हें यातना और मौत का सामना करना पड़ा। लेकिन लोकतांत्रिक विचार और आर्थिक समानता की उनकी परंपरा बनी रही।

9.9 फ्रांस में धर्म सुधार

धर्म सुधार के संबंध में फ्रांस की स्थिति जर्मनी के समान थी। हालांकि सरकार का विकेंद्रीयकरण इतना महान और मजबूत नहीं था। उदारवादी कैथोलिकों के प्रयासों के कारण जर्मनी की तुलना में फ्रांस में चर्च के धर्म सुधार के लिए आधार बेहतर तरीके से तैयार किया गया था। लूथर के विचारों को जल्द ही आयात किया गया और व्यापक रूप से पढ़ा गया। सबसे मजबूत विरोध पेरिस की संसद से हुआ। फ्रान्सिश I ने अपनी विदेश नीति की जरूरतों के लिए देशी धार्मिक नीति को गौण कर दिया। 1560 के दशक में, फ्रांस के फ्रान्सिश I ने पोप लियो X के साथ कॉनकॉर्डाट ऑफ बोलोग्ना का समापन किया, जिसके द्वारा ताज को फ्रांसीसी पादरी वर्ग की नियुक्तियों का वास्तविक नियंत्रण दिया गया था।

फ्रांस में, धर्म सुधार आंदोलन कैल्विन और उनके दर्शनशास्त्र से बहुत प्रेरित था।

9.10 जॉन कैल्विन

फ्रांस के जॉन कैल्विन (1509-64) धर्म सुधारकों की दूसरी पीढ़ी के थे। यूरोप के विभिन्न हिस्सों पर उनके शक्तिशाली प्रभाव के कारण उन्हें सबसे प्रभावशाली धर्म सुधारक माना जाता है। केल्विन एक विद्वान थे और उनका तार्किक मस्तिष्क था। उनके कई विचार बाइबल से प्राप्त हुए लेकिन वे सेंट ऑगस्टीन से भी प्रभावित थे। शासकों द्वारा किए गए धार्मिक प्रताड़ना के कारण केल्विन को फ्रांस छोड़ने के लिए मजबूर किया गया था।

कैल्विन अपने समय के इरास्मस और अन्य मानवतावादियों से प्रभावित थे। उन्होंने लूथर के साथ आस्था द्वारा मुक्ति में विश्वास साझा किया और भगवान के साथ मनुष्य के प्रत्यक्ष संचार के सिद्धांत का समर्थन किया। परमेश्वर की परम संप्रभुता पर उनके जोर ने उनकी शिक्षाओं को एक अनूठा चरित्र दिया।

लूथर की तरह, उन्होंने भी केवल दो पवित्र संस्कारों को बरकरार रखा– बपतिस्मा और यूखरिस्ट। केल्विन का पहला संस्करण द इंस्टीट्यूट्स ऑफ द क्रिश्चियन रिलिजन (1536) प्रोटेस्टेंट धर्मशास्त्र का सबसे प्रभावशाली रचना बन गई, जिसने उनकी तेज बुद्धि और कानूनी दिमाग को प्रतिबिंबित किया। पूर्व-नियतिवाद के सिद्धांत ने केल्विन के सामाजिक विचार के सबसे महत्वपूर्ण तत्व का गठन किया। माना जाता है कि उनके सामाजिक विचारों से अप्रत्यक्ष रूप से व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ावा मिला।

9.10.1 कैल्विनवाद का प्रसार

प्रोटेस्टेंटवाद का प्रकार जो आधुनिक सामुदायिक और धर्म सुधार चर्चों के लिए आधार था, वह कैल्विनवाद था। ज्विंगली की मृत्यु के बाद कैल्विनवाद की स्थापना की गई थी। नए स्विस प्रोटेस्टेंटवाद को नेतृत्व एक फ्रांसीसी जॉन कैल्विन (1509-34) द्वारा प्रदान किया गया था। कैल्विनवादियों की नैतिकता गतिशील और सामाजिक थी। लूथर की विचारधारा उत्तरी जर्मनी और स्कैंडेनेविया में अधिक सफल थी क्योंकि यह इन क्षेत्रों के शासकों के अनुकूल थी। लेकिन कैल्विनवाद ने उन राज्यों में जड़ें जमा लीं, जहाँ उसने मौजूदा राजनीतिक और धार्मिक प्रतिष्ठानों का जोरदार विरोध किया। कैल्विनवाद उत्तरी नीदरलैंड और जर्मन राज्यों का आधिकारिक धर्म था। इसने समाज और वित्त, उद्योग और वाणिज्य के विकास को सीधे प्रभावित किया। कैल्विनवाद का आर्थिक महत्व लंबे समय तक विवाद का कारण रहा है। कैल्विनवादी राजनीतिक विचार ने स्कॉटलैंड में राजशाही के नियंत्रण को तोड़ने और कैथोलिक और कुलीन पादरियों की शक्ति को तोड़ने के लिए मध्यम वर्ग के प्रयास को मजबूत किया। इसलिए कैल्विनवाद ने कुलीनों से अनुयायियों को जीत लिया और इसे कुलीन परिवारों से समर्थन प्राप्त था। फ्रांसीसी केल्विनवादी कहे जाने वाले हुगुएनोट विशेष रूप से दरबारों और संसदों में मजबूत थे।

9.11 इंग्लैंड में धर्म सुधार

जब जर्मनी और फ्रांस में धर्म सुधार आंदोलन पहले ही अपनी जड़ें जमा चुका था, तब इंग्लैंड में भी अपना सुधार-आंदोलन दिखा। शुरुआत धार्मिक के बजाय राजनीतिक थी। यह एक विड़म्बना थी कि अंग्रेजी धर्म सुधार की शुरुआत उसी शासक ने की थी – हेनरी VIII (1509–47), जो मार्टिन लूथर के धर्म सुधारों के प्रबल आलोचक थे। हेनरी VIII अपनी पत्नी कैथरीन से तलाक लेना चाहता था जो एक स्पेनिश राजकुमारी थी लेकिन पोप इसे मंजूर नहीं कर सकता था क्योंकि कैथोलिक चर्च में तलाक की अनुमति नहीं थी और इस तथ्य के कारण भी कि रोम के शहर पर स्पेनिश सम्राट की सेना का नियंत्रण था। पोप उसके खिलाफ नहीं जा सका। हेनरी तीन साल के इंतजार के बाद बेसब्र हो गए, और उन्होंने मामलों को अपने हाथ में लेने का फैसला किया। एक अधीनस्थ-संसद के माध्यम से (जिसे धर्म सुधार संसद 1529-34 भी कहा जाता है), उन्होंने पोप के साथ सभी संबंधों को समाप्त कर दिया। उन्होंने पोप की सत्ता को अस्वीकार कर दिया और 1534 में एंग्लिकन चर्च की स्थापना की जिसमे राजा को सर्वोच्च प्रमुख घोषित किया । हेनरी के तहत परिवर्तन मठों का दमन और बाइबिल का स्थानीय भाषा में उपयोग था।

धर्म सुधार ने अंग्रेजी राजतंत्र को मजबूत करने और राष्ट्रीय चर्च बनाने में मदद की। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अंग्रेजी धर्म सुधार अन्य देशों से काफी अलग था क्योंकि यहाँ शासकों ने व्यक्तिगत कारणों से इसे शुरू करने की पहल की थी। इसे राजनीतिक साधनों के माध्यम से लागू किया गया था। एंग्लिकन चर्च सेटलमेंट (1559) किसी अति से बचने और प्रोटेस्टेंटवाद और कैथोलिकवाद के बीच एक मध्य मार्ग को अपनाने का एक प्रयास था।

9.12 प्रभाव

सोलहवीं शताब्दी का यूरोपीय धर्म सुधार यूरोप के राजनीतिक और सामाजिक आर्थिक जीवन पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावी होने के साथ एक जटिल और विषमरूपीय आंदोलन था। चूंकि ईसाई धर्म शासकों के जीवन से जुड़ा हुआ था, इसलिए उन पर इसका कुछ असर होना तय था।

9.12.1 राजनीतिक प्रभाव

प्रोटेस्टेंट धर्म सुधार ने राज्य और चर्च के बीच संबंधों की विभिन्न धारणाओं का उत्पादन किया। धर्म सुधार के पहले परिणामों में से एक कैथोलिक चर्च का कई भागों में टूटना था जो अत्यधिक संगठित थे और उन्होंने राजनीतिक, नैतिक और सामाजिक व्यवहार के सख्त मानदंडों को निर्धारित किया।

प्रोटेस्टेंटवाद ने अप्रत्यक्ष रूप से राजनीतिक एकता के विचार में योगदान दिया। कुछ इतिहासकारों ने यह भी तर्क दिया है कि प्रोटेस्टेंटवाद ने यूरोपीय राष्ट्र राज्यों के स्वाभाविक विकास को चिह्नित किया है।

प्रोटेस्टेंटवाद की व्याख्या उभरते राष्ट्र राज्यों की अवधारणा के साथ-साथ राष्ट्रीय पहचान उभरने के उत्प्रेरक के रूप में की गई थी।

9.12.2 सामाजिक प्रभाव

प्रोटेस्टैंटों ने मानव जीवन के केंद्र में परिवार को रखा और पति और पत्नी के बीच आपसी प्रेम पर जोर दिया। मध्ययुगीन काल से अधिकांश यूरोपीय लोगों के रोजमर्रा के जीवन में धर्म ने बहुत बड़ी भूमिका निभाई। प्रोटेस्टेंट और कैथोलिक धर्म सुधार दोनों ने लोकप्रिय संस्कृति को, लोकप्रिय अनुष्ठानों और त्योहारों को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

धर्म सुधार ने कला और संगीत में नई रचना को भी प्रेरित किया। लूथर एक कला की प्रशंसा करता है और भगवान के शब्द के बाद संगीत को रखता है। हालांकि, स्विट्जरलैंड में ज्विंगली और केल्विन इसके खिलाफ थे। वे संगीत को व्याकुलता का स्रोत मानते थे और पूजा के शुद्ध रूप पर जोर देते थे।

कैथोलिक धर्म सुधार 'बारोक' नामक कला की नई शैली के संरक्षण का एक महत्वपूर्ण स्रोत बन गया, जो पुनर्जागरण काल में विकसित हुई थी।

9.12.3 आर्थिक प्रभाव

धर्म सुधार को कभी-कभी एक क्रांतिकारी घटना के रूप में देखा जाता है क्योंकि यह सामंतवाद के लिए एक नए वर्ग की चुनौती का प्रतिनिधित्व करता है। कुछ इतिहासकारों के अनुसार, यह धार्मिक व्यक्तिवाद मानवतावाद के बौद्धिक व्यक्तिवाद का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था और यह पूँजीवाद के विकास को प्रोत्साहित करता है।

एम. जे. कित्च ने कहा कि ''ऐतिहासिक रूप से प्रोटेस्टेंटवाद और पूँजीवाद के बीच एक मजबूत संबंध प्रतीत होता है।'' यह सम्बंध बहुत बहस का विषय रहा है। मैक्स वेबर, जर्मन समाजशास्त्री और अर्थशास्त्री इस संबंध में विस्तार से सुझाव देने वाले पहले लोगों में से एक थे। वह प्रोटेस्टेंट नैतिकता और पूँजीवाद की भावना के बीच एक स्पष्ट संबंध बताता है। उनके शब्दों में, उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा है कि धर्म सुधार से पहले देशों की आर्थिक प्रगति को प्राप्त करना मुश्किल था।

वेबर प्रोटेस्टेंटवाद और पूँजीवाद के बीच कार्य-कारण संबंध बताते हैं कि कैसे प्रोटेस्टैंट आदर्शकारी विचारों ने एक मानसिक और बौद्धिक वातावरण बनाया जिसमें पूँजीवाद विकसित हुआ।

उनकी रचना *रिलिजन एंड दी राइज ऑफ कैपिटलिज्म* ने अमूर्त वाक्यांश 'स्पिरिट ऑफ कैपिटलिज्म' को समाप्त किया। दूसरे उन्होंने पूँजीवाद के आर्थिक पहलुओं पर जोर दिया, इसे सामाजिक आध्यात्मिक ढाँचे से बाहर निकाला।

क्रिस्टोफर हिल ने प्रोटेस्टेंटिज्म और पूँजीवाद के बीच द्विभार्गी घनिष्ठ सम्बंध के टॉनी के सिद्धांत का भी समर्थन किया। हिल के अनुसार, प्रोटेस्टेंटिज्म ने अस्थिर सिद्धांतों का एक समुच्चय प्रदान किया, जिसने ''पहले के समय के कठोर वैचारिक ढाँचें'' की मजबूत पकड़ को तोड़ने में मदद की।

बोध प्रश्न-2

1) लूथर और केल्विन के विचारों के प्रसार पर चर्चा करें।

.....

.....

2) धर्म सुधार के सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक प्रभाव की चर्चा करें।

.....

.....

9.13 सारांश

इस प्रकार, यह कहा जा सकता है कि धर्म सुधार ने कई क्षेत्रों को अपनाया – दोनों नैतिकता और चर्च और समाज की संरचनाओं में सुधार ईसाई अध्यात्म की पुनर्व्याख्या और उसके सिद्धांत का सुधार। धर्म सुधार आंदोलनों की लोकप्रियता को सिर्फ धार्मिक प्रकाश में ठीक

से नहीं समझा जा सकता। बल्कि इन्हें अपने ऐतिहासिक, राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक संदर्भ में रखना होगा। धर्म सुधार रोमन कैथोलिक चर्च में दुरुपयोगों के खिलाफ निर्देशित एक आंदोलन से कहीं अधिक था। यह मध्ययुगीन अतीत में गहराई से दबी हुई जड़ों के साथ एक जटिल स्थिति की परिणति थी।

9.14 शब्दावली

कृषक युद्ध : जर्मन कृषक युद्ध 1524-25 के बीच मध्य यूरोप में व्यापक रूप से लोकप्रिय विद्रोह थे। आभिजात्य वर्ग के तीव्र विरोध और उत्पीड़न के कारण विद्रोह विफल रहे।

शिशु बपतिस्मा : प्रोटेस्टैंटों और कैथोलिक दोनों द्वारा प्रचलित बपतिस्मा छोटे बच्चों का नामकरण करने का व्यवहार। शिशु बपतिस्मा को कुछ विश्वास परंपराओं में नामकरण के रूप में भी जाना जाता है।

9.15 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1) भाग 9.1 और 9.2 देखें।

2) भाग 9.4 देखें।

बोध प्रश्न-2

1) भाग 9.5, 9.6, 9.10 और उप-भाग 9.10.1 देखें।

2) उप-भाग 9.12.1, 9.12.2, 9.12.3 देखें।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

इकाई 10 मुद्रण आधारित सार्वजनिक क्षेत्र का उद्भव*

इकाई की रूपरेखा

10.0 उद्देश्य

10.1 प्रस्तावना

10.2 मुद्रण संस्कृति का उद्भव और पुनर्जागरण

10.3 मुद्रण संस्कृति का उद्भव एवं धर्म सुधार

10.4 सारांश

10.5 शब्दावली

10.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

10.7 संदर्भ ग्रंथ

10.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप समझने में सक्षम हो सकेंगे :

- विशेष रूप से उस तरीके को जिससे प्रारंभिक आधुनिक यूरोप में मुद्रण संस्कृति का विकास हुआ;
- हमारे समय में मुद्रण संस्कृति के विकास के मद्देनजर ज्ञान के विकास में आए बदलाव; तथा
- मुद्रण संस्कृति के विकास से साक्षर यूरोपीय संस्कृति में आई क्रांति।

10.1 प्रस्तावना

यह इकाई प्रारंभिक आधुनिक यूरोप में विकास के एक महत्वपूर्ण पहलू यानि मुद्रण संस्कृति के विकास का वर्णन करती है। जैसाकि आप जानते हैं कि मध्ययुगीन काल में यूरोपीय ज्ञान प्रणालियाँ मूल रूप से, लिपिकीय संस्कृति द्वारा तैयार हस्तलिखित पांडुलिपियों पर आधारित थीं, जिनकी प्रसार और सुरक्षा के लिए नकल बनाकर रखी जाती थी। स्वभावतः यह एक सीमित उद्यम था और नकल की गई पांडुलिपियों का सीमित प्रचलन ही ज्ञान अर्जित करने का एकमात्र तरीका था। ये पांडुलिपियाँ यूरोप के पुस्तकालयों या धार्मिक मठों में अलग-अलग हिस्सों में रखी जाती थी और इनका उपयोग सीमित लोगों द्वारा ही किया जाता था। इन पांडुलिपियों के बिखरे हुए स्वरूप ने इन पांडुलिपियों में निहित ज्ञान को समेटने, तुलना करने और उनका विश्लेषण करने का काम कठिन काम बना दिया। इसका मतलब था कि इस कार्य में सीमित संख्या में लोग ही शामिल हो सकते थे। मुद्रण के उद्भव से इनकी उपलब्धता में विस्तार हुआ और नए आयाम उत्पन्न हुए जिनकी हम आगे चर्चा करेंगे।

10.2 मुद्रण संस्कृति का उद्भव और पुनर्जागरण

आपने पहले वाली इकाई में पुनर्जागरण के बारे में पढ़ा है। यह तर्क दिया जाता है कि पुनर्जागरण के उदय ने मानवतावाद और व्यक्तिवाद के एक विशिष्ट लोकाचार को बढ़ावा दिया। इसने वास्तव में सोचने और सीखने के पुराने तरीके में क्रांतिकारी बदलाव लाया और शास्त्रीय शिक्षा में रुचि को पुनर्जीवित किया। मुद्रण क्रांति का उद्भव वास्तव में अतीत के

* श्री अजय माहुरकर, इतिहास संकाय, इग्नू

ज्ञान को पुनर्प्राप्त करने की दिशा में किए गए प्रयास का परिणाम था। ज्ञान की पिछली प्रणालियों को पुनर्गठित करने का प्रयास किया गया। हालांकि अब जो अलग था वह यह था कि विद्वानों के बिखरे हुए समुदाय की सहायता के लिए एक नई तकनीक (मुद्रण) का उद्‌भव हुआ। परिणामस्वरूप पिछली कृतियों, विलुप्त होती भाषाओं, ग्रंथों और संवादों का 'संचय एक अभूतपूर्व रूप में शुरू हुआ'। डॉ. आइजेनस्टीन के अनुसार, मुद्रण संस्कृति के उदय के साथ व्यक्तिवाद के विकास को बढ़ावा मिला। अब संतों और राजाओं की जीवनी के साथ आम लोगों की जीवनी भी लिखी जाने लगी जो 'विषम' व्यवसायों में थे। पांडुलिपि संस्कृति व्यक्तिगत रचनाओं या पेटेंटिंग या कॉपीराइट का संरक्षण करने में सक्षम नहीं थी, जिसे मुद्रण संस्कृति ने अब संभव बना दिया था। इसके अलावा मुद्रण संस्कृति ने सार्वजनिक जीवन में निजी विचारों और व्यक्तिगत विलक्षताओं के प्रसारण को संभव बनाया। पांडुलिपि संस्कृति की अपनी सीमाओं के कारण पुनर्जागरण के प्रणेताओं जैसे कि लोरेंटाइन कलाकारों की रचनाओं का ज्यादा प्रचार और प्रसार नहीं हो पाया। मुद्रण संस्कृति के आने से इनके रचनाओं का प्रचार और प्रसार कई गुना बढ़ गया। इसके अलावा उनके व्यक्तिगत योगदान पर प्रकाश डाला गया और उन्हें बड़े पैमाने पर जाना गया। मुद्रण तकनीक की मदद से कलाकारों और उनके रचनाओं के वुडकट चित्र उपलब्ध कराए गए थे, जिससे कलाकारों के चेहरों के साथ नामों का मिलान करना आसान हो गया। इससे पहले पांडुलिपि संस्कृति के दौरान ज्यादातर कलाकारों के अनुमान पर आधारित बनाए गए चित्र उपलब्ध थे। अब वुडब्लॉक मुद्रण तकनीक की मदद से वैज्ञानिक और इंजीनियरिंग की उपलब्धियाँ बड़ी संख्या में लोगों को उपलब्ध होने लगी और उनकी लोकप्रियता का मतलब था कि नई इंजीनियरिंग और वैज्ञानिक स्थल यूरोप के विभिन्न हिस्सों में नए पर्यटन स्थल बन गए।

पुनर्जागरण के पांडुलिपि संस्करण और मुद्रण संस्कृति के उदय से संभव संचार के प्रसार के कारण पुनर्जागरण को दो चरणों में देखना संभव हुआ। पहला चरण इतालवी कलाकारों और लेखकों की उच्च उपलब्धियों का है, जहाँ पुनर्जागरण ने अपना गौरव हासिल किया और दूसरे चरण में मुद्रण संस्कृति ने पुनर्जागरण की उपलब्धियों को दूर–दूर तक फैलाया। वास्तव में मुद्रण क्रांति ने ही इस संचार क्रांति को संभव बनाया। तथ्य यह है कि नई मुद्रण तकनीक ने पुनर्जागरण की उपलब्धियों और दृष्टिकोण का काफी प्रसार किया जिसके कारण पुनर्जागरण, जो शुरू में एक सीमित दायरे तक था, अब इसका दायरा काफी व्यापक हो गया और यह बड़ी संख्या में लोगों के लिए सुलभ हो गया। इसका मतलब यह भी था कि इसका प्रभाव अधिक स्थायी हो गया। इसे ध्यान में रखते हुए आइजेनस्टीन का मानना है कि ''इटली में मानवतावादी आंदोलन के क्रम में यह भ्रामक लगता है कि यह तथाकथित पुरातन शास्त्रीय शिक्षण और सहायक विषयों के विकास की कोशिश कर रहा था। मानवतावाद ने काल निरूपण में भ्रम के प्रति संवेदनशीलता और पुरातनता के सभी पहलुओं के बारे में त्वरित जिज्ञासा के कारण शास्त्रीय अध्ययन की खोज को प्रोत्साहित किया हो सकता है; लेकिन यह 'उदय' शब्द में निहित निरंतरता के नए तत्व की आपूर्ति नहीं कर सका। विलुप्त होते ग्रंथों और मृत भाषाओं से संबंधित खोजों को अभूतपूर्व ढंग से संचित करना शुरू कर दिया, क्योंकि पंद्रहवीं शताब्दी के क्राट्रो सेंटो इटली में कुछ विशिष्ट लोकाचारों के कारण नहीं, बल्कि इसलिए कि एक नई तकनीक को विद्वानों के दूर-दराज के समुदाय के उपयोग के लिए रखा गया था।

पांडुलिपि संस्कृति से मुद्रण संस्कृति में संक्रमण ने एक ऐसी स्थिति बनाई जहाँ किसी नए व्यक्ति का विकास संभव था। इस नए व्यक्ति ने पांडुलिपि संस्कृति और मुद्रण दोनों में अपने पैर फैला दिये और इसलिए उनमें बहुमुखी प्रतिभा थी। लियोनार्डो दा विंची ने इस संक्रमण चरण के बहुमुखी पहलुओं को अपने सामान्य और वैज्ञानिक चित्रों में प्रदर्शित किया। मुद्रण की वृद्धि के साथ इस बहुमुखी प्रतिभा को कॉपीराइट और पेटेंट भी किया जा सकता था। 1469 और 1474 के बीच की अवधि में वेनिस में हम उन कानूनों के विकास को देखते हैं जिन्होंने

मुद्रित रचनाओं और आविष्कार को पेटेंट के अधिकार के तहत वैधता प्रदान की। इन कानूनों ने ''अज्ञात कलाकारों को युगांतरकारी आविष्कारक में बदल दिया, श्रेणी की गोपनीयता की अवस्था से व्यक्तिगत पहल को आजाद कर दिया, और प्रसिद्धि की चमक दिलाकर उनकी प्रतिभा को काफी लोकप्रिय बना दिया और साथ-साथ उन्हें भाग्य बनाने का अवसर दिया।''

यह तर्क दिया जा सकता है कि इन घटनाओं के साथ-साथ स्वतंत्रता की एक नई भावना और अपने माता-पिता और पूर्वजों से अलग जीवन को आकार की भावना का विकास हुआ। कुछ विद्वानों द्वारा इटली के लोकाचार के लिए जिम्मेदार ठहराए गए दावों के विपरीत हाल के अध्ययनों से पता चला है कि मुद्रण की संस्कृति से इसे कैसे मदद मिली। स्वयं करें नियमावली और सेल्फ हेल्प बुक्स का प्रसार हुआ। ये सभी क्षेत्रों में जैसे स्वयं की मदद कैसे करें, स्वयं चित्र बनाने में मदद के लिए आसान चरण, पारिवारिक प्रार्थना कैसे करें, मिट्टी का मिश्रण करना, खेतों का सर्वेक्षण करना, भवन डिजाइन करना, मशीनों का निर्माण करना इत्यादि में मददगार था। इसने लोगों के लिए नए विज्ञान और शिल्प सीखने के अवसरों को बढ़ाया। इन स्व-निर्देशात्मक साहित्य ने व्यक्ति को बिना कक्षा में गए अपने आत्म-विकास के लिए मार्ग प्रदान किया और शिक्षण के पूर्वाग्रहों से दूर एक वातावरण में नए कौशल में महारत हासिल की। इस साहित्य का एक उदाहरण थॉमस मॉर्ले का 'प्लेन ऐंड इजी इंट्रोडक्शन टू प्रैक्टिकल म्यूजिक' है।

इन विकास कार्यों को पूरा करने के साथ पुस्तकालय की अवधारणा में परिवर्तन आता है। पांडुलिपि अवधि के दौरान पुस्तकालय एक संकीर्ण बंद जगह होती थी। पांडुलिपियों को धार्मिक स्थानों और मठों में संकीर्ण दायरे के भीतर रखा जाता था। अब मुद्रण संस्कृति के उदय के साथ लाइब्रेरी को एक खुली जगह के रूप में देखा गया, जहाँ मुद्रित रचनाओं की कई प्रतियाँ अधिक से अधिक लोगों के लिए उपलब्ध होती थीं। पाठकों में वृद्धि का मतलब इन रचनाओं तक अधिक पहुंच और इनपर चर्चा करने के लिए बड़े स्थान की अधिक आवश्यकता हुई। इसका मतलब यह था कि इन रचनाओं को मौखिक रूप से और मुद्रण में टिप्पणी और विश्लेषण करना शुरू हुआ। इसके बाद पुस्तकालय वास्तविक संग्रह से लेकर चाय की दुकानों और सभाओं तक एक खुली जगह में बदल गया जहाँ इस तरह की चर्चाएँ हो सकती थीं।

आइजेनस्टीन यह भी सुझाव देती हैं कि हम उभरता हुआ पूँजीवाद या औद्योगीकरण जैसे कारकों पर विचार करने से पहले स्क्रिप्टोरियम (पांडुलिपि कार्यशाला) से मुद्रण के कार्यशाला की ओर अधिक ध्यान देना चाहिए। मुद्रण की कार्यशाला के सामाजिक संबंध इस धारणा को विकसित करने में महत्वपूर्ण थे कि दोनों दिमाग और हाथ, पुस्तक द्वारा शिक्षा के साथ-साथ व्यावहारिक गतिविधियाँ दुनिया के बारे में ज्ञान के समान मूल्यवान स्रोत प्रदान कर सकती हैं। पहले के स्क्रिप्टोरियम और बाद के संपादकीय कार्यालय के विपरीत मुद्रण कार्यशाला एक ऐसी जगह थी जहाँ कारीगरों और विद्वानों ने एक साथ काम किया। कारीगरों ने बौद्धिक मुद्दों की सराहना करना सीखा, जबकि विद्वानों ने संपादक की दिमागी मेहनत के साथ-साथ शारीरिक श्रम का भी स्वाद चखा। इस प्रकार शिक्षा की पुनर्जागरण की धारणा 'मुद्रण' कार्यशाला में अधिक उभर कर आई थी। जिसे गिलमोर, एक पुनर्जागरण विद्वान ने इस प्रकार समझायाः ''चलायमान टाइप के मुद्रण का आविष्कार और विकास ने पश्चिमी सभ्यता के इतिहास में बौद्धिक जीवन की स्थिति में आमूल परिवर्तन किए। इसने शिक्षा और विचारों के संचार में नए क्षितिज खोले। इसका प्रभाव मानव गतिविधि के हर पहलू में देर सबेर महसूस किया गया।''

यहाँ यह बताया जा सकता है कि मुद्रणर की कार्यशाला में इस परस्पर अंतःक्रिया ने एक नया मिश्रित सांस्कृतिक आदान-प्रदान किया और साथ ही साथ नए व्यावसायिक समूहों द्वारा शुरू में अनुभव किया गया, जो मुद्रण की शुरुआत के साथ बड़ी संख्या में पैदा हुए। किसी

विशेष कार्य के प्रेस से बाहर आने से पहले ही संपादकों, अनुवादकों, चित्रकारों और अन्य टाइपफाउंडर, लिपि सुधारकों, पांडुलिपि सम्पादकों, संपादकों के बीच रचनात्मक विचार विमर्श होते थे, जिन्होंने संपादकीय रचनाओं को आगे बढ़ाया। शुरुआती मुद्रण अपने प्रेस के रचनाओं के अलावा अन्य मुद्रण के रचनाओं को भी पढ़ते थे। इसके परिणामस्वरूप बौद्धिक गतिविधियों में वृद्धि हुई और रचनात्मक विचारों को बढ़ावा मिला। पुस्तक उत्पादन के उभरते हुए तरीके ने किताब पढ़ने वालों और मेकेनिकों को एक साथ ला दिया। इसने विद्वान मुद्रक– एक नए व्यक्ति का निर्माण किया जो ग्रंथों के संपादन की गतिविधियों के साथ-साथ मशीनों से काम कर सकता था और उत्पादों के मार्केटिंग को भी सीख सकता था, प्रबुद्ध समितियों का निर्माण कर सकता था, डेटा संग्रह के नए तरीकों को बढ़ावा दे सकता है और प्रबुद्ध विषयों को आगे बढ़ा सकता है। नतीजतन मुद्रण की दुनिया में सिद्धांत और व्यवहार के नए रूप सामने आए, जिन्होंने मठों के पुस्तकालयों को घुटन वाले वातावरण से निकाल कर व्यावसायिक प्रतिष्ठानों की हलचल में ला खड़ा किया।

रचनाओं के मुद्रित संस्करणों ने ज्ञान सृजन के एक नए पथ को सुगम बना दिया। ज्ञान के चयन करने का काम अब पाठकों के एक व्यापक समुदाय द्वारा किया जा सकता था जिनके पास एक समान ग्रंथ अधिक आसानी से उपलब्ध थे। वे अब पाठ्य सूचनाओं की तुलना और मिलान करने में समन्वित प्रयास विकसित कर सकते थे। वे त्रुटियों को सुधारने, विसंगतियों को खोजने और नई जानकारी प्राप्त करने में एक साथ मिलकर काम कर सकते थे। एक प्रतिपुष्टि (फीडबैक) प्रक्रिया विकसित हुई जो कि ज्ञान में सुधार लाती है जो ग्रंथों द्वारा सामने रखी जाती है। शिक्षा को फिर पांडुलिपि संस्कृति द्वारा पुनर्प्राप्ति को प्रोत्साहन देने की प्रक्रिया से बदल दिया गया क्योंकि अब खोज के रूप में ज्ञान को बढ़ाने की दिशा में सतत प्रयास किये गये, न केवल ग्रंथों की प्रतिलिपियाँ ही तैयार की जाती थी। इस ज्ञान को फिर से और आगे बढ़ाया जा सकता था और आगे की पीढ़ी के लिए ज्ञान के प्रसार को सुगम बनाया जा सकता था।

बोध प्रश्न-1

1) पुनर्जागरण के दो चरणों के बीच के अंतर को स्पष्ट करें। मुद्रण संस्कृति के उद्भव ने पुनर्जागरण को व्यापक बनाने में कैसे मदद की?

.....

.....

.....

2) ज्ञान की प्रक्रिया ज्ञान की पुनर्प्राप्ति से ज्ञान की खोज में कैसे बदल गई? व्याख्या करें।

.....

.....

.....

10.3 मुद्रण संस्कृति का उद्भव एवं धर्म सुधार

जबकि पुनर्जागरण के अध्ययन अक्सर धर्म सुधार के मामले में मुद्रण संस्कृति के प्रभाव को नजरअंदाज करते हैं, पर इसका योगदान शायद ही भूला जा सकता है। जैसा कि ज्योफ्रोय एटकिंसन बताते हैं कि धर्म सुधार पहला धार्मिक आंदोलन था जिसमें प्रिंटिंग प्रेस ने योगदान दिया था।' हम तब वास्तव में एक आंदोलन देखते हैं जिसे शुरू से प्रेस की शक्तियों ने आकार दिया था। वास्तव में प्रिंटिंग प्रेस ने धर्म सुधार की शुरुआत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आगे यह तर्क दिया जा सकता है कि धर्म सुधार अपने आंदोलन को लोकप्रिय

समर्थन देने के उद्देश्य से एक जन माध्यम के रूप में प्रेस का उपयोग करने वाला पहला आंदोलन था। लूथर ने स्वयं बताया कि मुद्रण 'ईश्वर का सर्वोच्च कार्य है, जिसके द्वारा धर्म शिक्षा (गॉस्पेल) का कार्य संपन्न होता है।'

1542 में जोहान स्लीडन ने मुद्रण को जनता के लिए एक महत्वपूर्ण भाग्यशाली भूमिका निभाने की पुनः पुष्टि की थी, जब उन्होंने तर्क दिया कि "जैसा कि इस बात का प्रमाण देने के लिए कि ईश्वर ने हमें एक विशेष मिशन को पूरा करने के लिए चुना है, हमारी भूमि पर एक अद्भुत और नई सूक्ष्म कला, मुद्रण की कला का आविष्कार हुआ। इसने जर्मन लोगों के ज्ञान में वृद्धि की और अब यह अन्य देशों में भी प्रबुद्धता ला रहा है। प्रत्येक व्यक्ति अपने पहले के अल्पज्ञान पर विस्मय की भावना महसूस किए बिना, ज्ञान के लिए उत्सुक हो गया।" वास्तव में मुद्रण को धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष (प्रोटेस्टेंट और प्रबोधनकालीन विचारकों) दोनों ने एक अद्भुत उपकरण के रूप में देखा, जिसने पुजारी वर्ग के द्वारा शिक्षा के एकाधिकार को समाप्त कर दिया, जिसने अज्ञानता और अंधविश्वास को दूर किया, पोप का मुकाबला किया और पश्चिमी यूरोप को अंधे युग से बाहर आने में मदद की।

जैसा कि विभिन्न इतिहासकारों ने बताया है कि स्थापित चर्च के साथ विवाद होना कोई नई बात नहीं थी। लूथर ने चर्च के भीतर मौजूद विवादों के लिए पहले से मौजूद स्थान को अपने पिचानवें शोधों तक विस्तार करके उसका उपयोग किया था। अपने आप में यह कार्रवाई क्रांतिकारी नहीं थी क्योंकि धर्मशास्त्र के पारंपरिक प्रोफेसरों में क्षमापत्रों जैसे मुद्दों पर विवाद था। लूथर ने खुद पोप लियो X को बताया कि ''यह मेरे लिए एक रहस्य है कि मेरे शोध, मेरी अन्य रचनाओं की तुलना में वास्तव में इतने अधिक स्थानों पर अन्य प्राध्यापकों तक कैसे पहुंचे। वे हमारे अकादमिक हलकों के लिए विशेष रूप से यहाँ थे ... वे इस तरह की भाषा में लिखे गए थे कि आम लोग उन्हें शायद ही समझ सकें। वे अकादमिक वर्गीकरण का उपयोग करते हैं।''

जर्मन में अनुवाद, थिसिस की मुद्रण और उनके वितरण ने उनके व्यापक प्रचार को संभव बनाया। जब तक हम इन प्रक्रियाओं को नहीं देखते हैं, यह समझना संभव नहीं होगा कि अकादमिक हलकों में कुछ लोगों के लिए निर्देशित एक संदेश इतनी व्यापक लोकप्रियता कैसे प्राप्त कर सकता है। इसका मतलब है कि हमें मुद्रण, अनुवादक, प्रूफ रीडर्स और वितरकों की गतिविधियों को एक समान रूप से देखने की आवश्यकता है और संयोजन में यह देखना संभव हो जाता है कि कैसे जर्मनी के तीन अलग-अलग शहरों में थीसिस के तीन अलग-अलग संस्करणों को एक साथ मुद्रित और प्रचारित किया गया। इसके अलावा, नौअर्ट बताते हैं कि इस समय अकादमिक विवाद के श्रोतागण का विस्तार चर्च और विश्वविद्यालय से परे आम लोगों तक विद्वान मुद्रण के उद्भव के कारण हो चुका था। इसका मतलब यह था कि मुद्रण संस्कृति तक पहुंच के कारण विभिन्न कस्बों में आम लोगों के छोटे समूह लुथरन विवादों को आगे बढ़ाने के लिए विभिन्न कस्बों और गांवों में किताबों को घूमकर बेचने वालों के संजाल पहले से मौजूद प्रथाओं के कारण बेचने की प्रक्रिया कर सकते थे, जो पहले से ही मुद्रित रचनाओं और पुस्तकों की घर-घर जाकर बिक्री करते थे। इस प्रकार मुद्रण द्वारा शुरू की गई नई प्रचार तकनीकों ने लूथर के संदेश को दूर-दूर तक ले जाने में मदद की।

धर्म सुधार के कारण कैथोलिक-प्रोटेस्टेंट विभाजित हो गए। यह पश्चिम में ईसाई धर्म के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण पड़ाव बन गया था। इसने बाइबिल परंपरा और बाइबिल के प्रसारण के तरीकों पर फिर से सोचने को मजबूर किया। बाइबिल की परंपरा में शामिल किए जाने वाले प्रश्न वास्तव में प्रिंटिंग प्रेस के उदय के साथ बदल गए जब बाइबिल की मौखिक, लोक और लिखित परंपरा में बड़ी संख्या में रचनाएँ लिखी गई। वास्तव में इसने बड़ी संख्या में लोगों द्वारा उस परंपरा की जाँच करने को संभव बनाया इस परंपरा के अनुसरण में दिखने वाली रचनाओं की संख्या इसकी गवाही देती है।

एक महत्वपूर्ण सवाल जो प्रोटेस्टेंटवाद के उदय के साथ आता है, वह है नए दृष्टिकोण का उदय जो अक्सर बढ़ते पूँजीवाद के उद्‌भव में मितव्ययिता और कठोर परिश्रम की संस्कृति से जुड़ा होता है। इन नए दृष्टिकोणों के उदय पर अक्सर मार्क्सवादी या वेबरियन दृष्टिकोण के अनुयायियों द्वारा बहस की जाती है। हालांकि जो बात अक्सर चरितार्थ होती है वह वास्तविक लोगों के साथ किया जाने वाला अवास्तविक व्यवहार है। डॉ. आइजस्टीन के अनुसार मुद्रणों की जीवन और कार्य-शैली और पांडुलिपि लेखन करने वालों के बीच एक विपरीत चित्रण करके हम प्रारंभिक आधुनिक यूरोप के लोगों के उभरते व्यवहारों को अधिक बारीकी से समझ सकते हैं। यहाँ यह बताया जा सकता है कि धार्मिक लेखन-कक्षों के लिपि लेखक अपने पापों का प्रायश्चित करने के लिए धार्मिक रचनाओं की नकल कर सकता है या धर्मशास्त्रों को उत्तम विज्ञान का स्रोत मान सकता है। लेकिन जब एक प्रिंटर आर्थिक मुनाफे के लिए भक्तिपूर्ण और धार्मिक रचनाओं की छपाई करवाता है तो वह इसका मूल्यांकन इसके बिक्री मूल्य के संदर्भ में करता है। व्यवसाय में बने रहने के लिए उन्हें रूढ़िवादी धर्मशास्त्र या भिक्षुओं द्वारा प्रचारित ईसाई सदगुणों से प्रभावित होने की संभावना कम थी।

वास्तव में नए संस्करणों को प्रकाशित करने वाले मुद्रण धर्म और सुधार में नए रुझानों की प्रतिबिंबित महिमा का आनन्द उठा रहे थे। उन्होंने हमेशा इस धारणा को सु.ढ़ किया कि वे उत्तम व्यवसाय में काम कर रहे थे। लेकिन जोर उनकी स्वायत्त स्थिति पर था। एक ओर उन्हें अपने व्यवसाय को निम्न, चापलूसी वाला और स्वार्थ-लोलुप बताये जाने के खिलाफ संघर्ष किया और दूसरी ओर वे भिक्षुक या अन्य धार्मिक पूर्वाग्रहों में शामिल होने के खिलाफ समान रूप से संघर्ष करते रहे। इस अर्थ में उन्होंने अपने लिए एक स्वायत्तता बनाने की कोशिश की और अक्सर खुद को 'एक उत्कृष्ट और महान व्यवसाय में स्वेच्छा से काम करने वाले 'फ्रीमैन' के रूप में' चित्रित किया।

वास्तव में उन्होंने अपने लिए एक ऐसी स्थिति में काम करने की लय निर्धारित की, जहाँ वे हड़तालों और अंदरूनी धार्मिक कलह के प्रति काम रुकवाने के प्रति अति-संवेदनशील थे। उनके काम की गति उनकी अथक मशीनों की आवश्यकताओं से निर्धारित होती थी। प्रतियाँ बनाने का काम ठेके पर दिया गया और शुरुआती प्रिंटरों ने अपने कर्मचारियों को हर समय व्यस्त रखने के लिए समय और गति अध्ययन भी विकसित किया। इस प्रक्रिया में एक कार्य संस्कृति का विकास हुआ जिसने व्यर्थ की गपशप को हतोत्साहित किया और अवैयक्तिक दक्षता के लिए मित्रता को गौण कर दिया। इसके अलावा हास्य और व्यंग्य की एक संस्कृति विकसित हुई जो धार्मिक पुजारियों और भिक्षुकों के जीवन की विसंगतियों पर आधारित थी। धीरे-धीरे चुटकुलों और हास्य को पादरी के खिलाफ निर्देशित सार्वजनिक घोटाले में बदल दिया गया।

पादरियों के प्रति विरोध-भाव किसी खास वर्ग तक सीमित नहीं था। वास्तव में इसने कुलीन वर्ग और आम लोगों, मध्यवर्ग और समाज के बुर्जुआ वर्गों के बीच अभिव्यक्ति पाई और हेक्सटर के अनुसार, यह सामान्य लोग बनाम पादरी, धर्मनिरपेक्ष बनाम धार्मिक या चर्च बनाम राज्य के अनुसार ध्रुवीकरण की स्थिति उभरी जो वर्ग और सामाजिक स्थिति से परे थी।

इसके अलावा पढ़ने पर जोर देने की एक नई संस्कृति का विकास हुआ। जैसा कि जॉन हेल बताते हैं कि कुलीन जन केवल द्वंद्वयुद्ध और शिकार पर ध्यान केंद्रित करते थे और यह नहीं जानते थे कि पुस्तकों को कैसे संभालना है, उनकी प्रतिष्ठा को नुकसान हुआ। लॉरेंस स्टोन बताते हैं कि शाही पार्षदों को 'स्पष्ट रूप से सोचने, स्थिति का विश्लेषण करने, मसौदा तैयार करने, कानून की तकनीकी जानने और एक विदेशी भाषा बोलने के लिए कहा जाता था।' दरबार में बने रहने के लिए विभिन्न विषयों पर पुस्तकों को पढ़ने और आत्मसात करने की क्षमता की आवश्यकता थी। चूंकि सोलहवीं शताब्दी के शुरुआती दौर में कुलीनों ने

तलवारबाज और पादरियों को पीछे छोड़कर निजी पुस्तकालयों का अधिग्रहण शुरू कर दिया था। पढ़कर शिक्षा अब उतनी ही महत्वपूर्ण होती जा रही थी जितना कि कार्य द्वारा शिक्षा। एक कानूनी नौकरशाही का उदय हुआ, जो नियमों, विशेषाधिकारों आदि को पढ़ने और व्याख्या करने में अपनी दक्षता के दम पर अपने लिए एक जगह बना रही थी।

हालांकि आम लोगों के साक्षर और शिक्षित होने का मतलब नए सामाजिक वर्ग का उत्थान और विकास नहीं था। इसका मतलब विशेषाधिकार प्राप्त अभिजात्य वर्ग के बच्चों के लिए एक नए और अलग तरह के स्कूली शिक्षा से था। इस बात पर जोर दिया गया कि 'जब राजा को किसी विदेशी राजदूत को जवाब देने के लिए किसी की आवश्यकता होती है, तो वह चाटुकारिता करने वाले कुलीनों की तरफ नहीं बल्कि शिक्षित ग्रामीण की ओर रुख करेगा।' इस संदर्भ में जब स्पेनिश दरबारियों ने निम्न कुल में जन्मे पार्षदों को नियुक्त करने के बारे में हब्सबर्ग के सम्राट चार्ल्स पंचम से शिकायत की तो उन्होंने करते हुए उनसे कहा कि वे यह देखें कि उनके बच्चे बेहतर शिक्षित हों। डॉ. आइजस्टीन के अनुसार सोलहवीं शताब्दी में स्कूली शिक्षकों और पाठ्य पुस्तक प्रकाशकों का उदय भलीभांति हुआ। उनके अनुसार पूँजीपति वर्ग के उदय से इसे अलग करके देखा जाना चाहिए। इस प्रक्रिया ने वास्तव में यूरोपीय आभिजात्य वर्ग का पुनर्निर्माण किया। 'किताबी शिक्षा के उदय के कारण कुछ विद्यालयों से पादरी बाहर निकाले नये और फिर यह किताबी शिक्षा ग्रामीण इलाकों में फैल गई, और ग्रामीण कुलीन जन जिन्होंने शहरी विद्यालयों में अध्ययन किया था, वह अपनी जागीरों और भूसम्पदा की ओर लौट रहे थे, जिसके कारण गाँवों में भी शिक्षा का प्रसार शुरू हुआ। प्रारंभिक आधुनिक यूरोप में हमें पढ़ने वाले लोगों के उदय को मध्य वर्ग के उदय के समान नहीं समझना चाहिए। यह स्वयं आभिजात्य वर्ग था जो अब पढ़े-लिखे लोगों के रूप में स्वयं को पुनर्निमित रहा था। वे वास्तव में मुक्त विचारक और उदारवादी पारखी, विशेषज्ञों, मेहनती और शौकीनों के रूप में विकसित हुए जो पांडित्य प्रदर्शन से प्रभावित नहीं थे और लैटिन भाषा के बजाय क्षेत्रीय भाषा का इस्तेमाल करते थे।

इसके अलावा किताबों के उत्पादन में मठों के स्थान पर मुद्रण कार्यशाला के आने से दीर्घावधि में चर्च-संबंधी प्रभाव को कम करने में योगदान दिया। पाठ्य पुस्तकों के बाहर लाने और पाठ्यक्रम को आकार देने के मुद्दे चर्च और नागरिक अधिकारियों के बीच एक गहन संघर्ष का विषय बन गए। पहले विश्वविद्यालय स्टेशनर्स की दुकानें और बुक स्टॉल विश्वविद्यालय और इसके कॉलेजों के अधीन थे, लेकिन अब विद्वान मुद्रणों के उदय के साथ मुद्रण कार्यशाला स्वतंत्र केंद्र बन गए, जिसमें न केवल पारितोषिक और प्रतिष्ठा प्रदान करने की क्षमता थी, बल्कि पहले के समय के मठों की तरह धार्मिक विद्वानों और छात्रों को आकर्षित करने की क्षमता भी थी। नई व्यवसाय-सथों के नेताओं ने अब स्वयं जरूरतमंद छात्रों और विद्वानों को संरक्षण, नौकरी और बोर्डिंग और ठहरने की सुविधा दी। इस संदर्भ में विद्वानों ने ज्ञान और शिक्षा के पादरी वर्ग के एकाधिकार को चुनौती दी। इसने इरास्मस जैसे विद्वानों के नए मानवतावाद के उदय को संभव बनाया जो शिक्षा और अध्ययन की नई संस्कृति के निर्माण के लिए पादरी वर्ग की रूढ़िवादियों को खुली चुनौती दे सकता था। जैसा कि डॉ. आइजस्टीन बताते हैं कि 'इरास्मस ने दिखाया कि किस प्रकार प्रेस की नई शक्तियों का उपयोग करके वे अपनी कलम का उपयोग करके विद्वान लोगों को मुवक्किल की स्थिति से मुक्ति पा सकते थे।'

इसी तरह यूरोप में मुद्रण कार्यशालाओं का प्रसार भी गैर-रूढ़िवादी था। हालांकि पूरे प्रिंटिंग प्रेस का प्रोटेस्टेटवादी क्षेत्रों की ओर आकर्षण था जो कई अलग-अलग चर और समवर्ती परिवर्तनों से प्रभावित था। जिनेवा में 1550 के दशक में मुद्रण को प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए धनी धार्मिक शरणार्थियों की भूमिका के बारे में डॉ. आइजस्टीन का कहना है कि उनके इस तर्क के बाद तर्क दिया जा सकता है कि धर्म ने मुद्रण केंद्रों के विकास में अप्रत्याशित

और विरोधाभासी तरीके से भूमिका निभाई। कैथोलिक-विरोधवादी विभाजन के संदर्भ में विशुद्ध रूप से मुद्रण के उदय को नहीं देखा जा सकता है। यहाँ वह मध्ययुगीन काल से आने वाले व्यापार प्रारुपों और नए प्रारुपों की ओर भी इशारा करती है जो पूँजीवादी और व्यापारिक विकास के मद्देनजर सामने आया है। हालाँकि यहाँ भी मुद्रण उद्योग के विकास की विशिष्टता को ध्यान में रखना होगा। जैसा कि उन्होंने बताया कि 'मुद्रण उद्योग का विस्तार संभवतः कई अन्य उद्यमों के विकास की दर को प्रभावित करता है – केवल इसलिए नहीं कि टाइपफाउंडिंग धातु विज्ञान, कागज के मिल, कपड़ा निर्माण, प्रचार और बिक्री के लिए विज्ञापन से संबंधित है, बल्कि इसलिए भी क्योंकि तकनीकी नवाचार की दर और कुशल श्रम की आपूर्ति उन क्षेत्रों में सबसे तेजी से विकसित होने की संभावना थी जहाँ मुद्रण भी फल-फूल रहे थे और पुस्तक बाजार भी बढ़ रहे थे।'

यह मुद्रण उद्योग की वृद्धि का ऐसा तरीका था जिसने मुद्रण की संस्कृति के लिए मापदंडों को निर्धारित किया। यह संस्कृति जींवत अनुभव और धर्मशास्त्र के प्रति हठधर्मिता के खिलाफ थी। डॉ. आइजस्टीन को फिर से उद्धृत किया जाए तोः ''कास्टेलियो के समय से वोल्टेयर तक, के मुद्रण उद्योग स्वतंत्रतावादी, विधर्मी और सार्वदेशिक दार्शनिकों का प्रमुख स्वाभाविक सहयोगी था। बाजारों का विस्तार करने और उत्पादन में विविधता लाने के लिए उत्सुक उद्यमी प्रकाशक संकीर्ण दिमाग का स्वाभाविक दुश्मन था।'' यह मुद्रण उद्योग की विशेषता थी जिसे हेगेल ने मानव मस्तिष्क कहा, उसके विकास पर अगली कुछ शताब्दियों में एक विशेष ध्यान देना था। यहाँ तक कि जब हम शिक्षित पाठकों के विकास और बाद की शताब्दियों में एक स्वतंत्र प्रेस की वृद्धि की देखते हैं, तो यह विशेष रूप से यह खुली मानसिकता सामने आती है। यह फिर से वह विशेषता है जिसने प्रबोधनकालीन दार्शनिकों के उदय की विशेषता बताई है जिनकी वंशावली विशेष धर्मों या रूढ़िवादिता तक सीमित नहीं की जा सकती है, लेकिन जिसे मानव विचारों को व्यापकतम मानवतावादी आयामों की ओर धकेलने के प्रयास के रूप में माना जा सकता है, भले ही उन्हें कुछ धार्मिक आयामों के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है।

यहाँ यह बताया जा सकता है कि व्यापक विचारधारा वाले मानवतावादी विचारों के प्रसार का आधार बहुत हद तक सुधारकों, इरास्मसियों और शिक्षित लोगों द्वारा तैयार किया गया था। इसके कारण पढ़ने वाले लोगों का दायरा बढ़ा। हालांकि पादरी के कुछ वर्गों ने महिलाओं, प्रशिक्षुओं और खेतिहर किसानों द्वारा बाइबल पढ़ने पर आपत्ति जताई गई, लेकिन इन आपत्तियों को दूर कर दिया गया और एक पढ़ने वाली जनता के दायरे में और अधिक सामाजिक समूहों को लाने की दिशा में रास्ता साफ कर दिया गया। इसके अलावा साक्षरता की सामाजिक पैठ जो बाईबल पढ़ने के विस्तार के साथ आई, उसने समूह की पहचान के चरित्र को भी बदल दिया और शिक्षा से बढ़ती उम्मीदों को हवा दी। वास्तव में, जैसा कि विभिन्न इतिहासकारों ने बताया है कि कई निम्न वर्ग के लंदनवासियों ने अपने जीवन में प्रिंटिंग प्रेस और शिक्षा के महत्व का हवाला दिया। वे पुस्तक द्वारा शिक्षा में लगे रहे और उन्होंने खुद को 'मुक्त जन्मे' व्यक्तियों के रूप में घोषित करने वाले आलेख और पैम्फलेट बनाए। शिक्षा के साथ एक जानकार राजनीतिक संस्कृति भी पैदा हुई। वाद-विवाद और राजनीतिक लामबंदी ने इस नई राजनीतिक संस्कृति के उदय को चिह्नित किया। नई मुद्रण संस्कृति के उदय के साथ गृहस्थों की स्थिति में भी बदलाव आया। '*अ वर्क फॉर हाउसहोल्डर्स* (1530) गृहस्थों के लिए एक नियमावली है जो गृहस्वामी की मदद करता है कि वह पूजा प्रार्थना कैसे करें और यहाँ तक कि अपनी सांसरिक गतिविधियों को भी कैसे पूरा करें। जैसा कि राइट बताते हैंः ''प्रार्थना और ध्यान के माध्यम से, जिनके लिए प्रतिमान वे पुस्तकों में खोज सकते थे, दर्जी, कसाई, इत्यादि जल्द ही पादरियों की सहायता के बिना भगवान से संपर्क करना सीख गए। लंदन के नागरिकों ने अपने परिवार में पूजा करना सीख लिया। निजी नागरिक देवता की उपस्थिति में मुखर हो गए थे।''

बोध प्रश्न-2

1) चर्च के साथ लूथर की शैक्षणिक विवाद किस प्रकार एक महान धर्म-सुधार बन गया? विस्तार से व्याख्या करें।

.....

.....

2) मुद्रण संस्कृति के उद्भव के साथ धर्म सुधार के दौरान दृष्टिकोणों में होने वाले परिवर्तनों की व्याख्या करें।

.....

.....

10.4 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप समझने में सक्षम हुए कि :

- प्रारंभिक आधुनिक यूरोप में पांडुलिपि लेखन और मौखिक प्रसार की संस्कृति से मुद्रण संस्कृति का उद्भव कैसे हुआ।
- मुद्रण संस्कृति के उद्भव ने पुनर्जागरण की प्रकृति को किस प्रकार प्रभावित किया।
- मुद्रण संस्कृति के उद्भव ने धर्म सुधार को किस प्रकार आकार दिया।

10.5 शब्दावली

मानवतावाद : पुनर्जागरण के मध्य आंदोलन जिसने मध्यकाल के विपरीत ईश्वर की जगह मनुष्य को ब्रह्मांड के केंद्र में माना।

विषम व्यवसाय : विभिन्न प्रकार के व्यवसाय के विकल्प जो प्रारंभिक औद्योगिक और वाणिज्यिक विकास के बाद सामने आए।

10.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1) भाग 10.2 देखें।

2) भाग 10.2 देखें।

बोध प्रश्न-2

1) भाग 10.3 देखें।

2) भाग 10.3 देखें।

10.7 संदर्भ ग्रंथ

ऐलिजाबेथ एल. आइजनस्टीन, *द प्रिंटिंग प्रेस एज ऐंजट ऑफ चेंज*, खंड 1 और 2, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, कैम्ब्रिज, लंदन, 1979 .।

पीटर बर्क, *ए सोसल हिस्ट्री ऑफ नॉलिज*, वाल्यूम 1, पॉलिटी प्रेस, लंदन, 2000।

इकाई 11 यूरोपीय राज्य प्रणाली*

इकाई की रूपरेखा

11.0 उद्देश्य

11.1 प्रस्तावना

11.2 नई निरंकुश राजशाहियों (Absolute Monarchies) का उद्‌भव

11.3 पश्चिमी निरंकुशवाद (Western Absolutism) की विशेषताएँ

- 11.3.1 राजा की नौकरशाही
- 11.3.2 थलसेना
- 11.3.3 व्यापार
- 11.3.4 कूटनीति
- 11.3.5 वित्त और कराधान

11.4 पूर्वी निरंकुशवाद (Eastern Absolutism) की विशेषताएँ

- 11.4.1 सामंती अभिजात वर्ग
- 11.4.2 कृषि-दासता (serfdom) का समेकन
- 11.4.3 अंतर्राष्ट्रीय दबाव
- 11.4.4 युद्धों की भूमिका
- 11.4.5 पूँजीपति वर्ग की अनुपस्थिति

11.5 यूरोपीय निरंकुशवाद– कुछ विशेष अध्ययन

- 11.5.1 पश्चिमी निरंकुशवाद
  - 11.5.1.1 स्पेन
  - 11.5.1.2 फ़्रांस
  - 11.5.1.3 इंग्लैंड
  - 11.5.1.4 स्वीडन
- 11.5.2 पूर्वी निरंकुशवाद
  - 11.5.2.1 प्रशा
  - 11.5.2.2 ऑस्ट्रिया
  - 11.5.2.3 रूस

11.6 सारांश

11.7 शब्दावली

11.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

11.9 संदर्भ ग्रंथ

* डॉ. स्मिता मित्रा, जेडीएम, दिल्ली विश्वविद्यालय

11.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात आप समझ सकेंगेः

- आरंभिक आधुनिक पश्चिम में राज्य प्रणालियाँ कैसे विकसित हुईं;
- निरंकुश राजशाही के उदय के द्वारा राज्य प्रणालियों का विकास किस तरह चिह्नित हुआ;
- निरंकुश राजशाही किस तरह युद्धों और राज्य विस्तार की खोज को परिलक्षित करती है;
- पूर्वी और पश्चिमी यूरोप किस तरह निरंकुश राजशाही में भिन्न थे; और
- पूर्वी यूरोप की तुलना में पश्चिमी यूरोप पूँजीपति वर्ग के विकास द्वारा किस तरह चिह्नित हुआ, जो कि पूर्व की तुलना में शक्ति के भिन्न संतुलन द्वारा चिन्हित था जहाँ पूँजीपति वर्ग का अस्तित्व मौजूद नहीं था।

11.1 प्रस्तावना

निरंकुशवाद उस निरंकुश राजशाही को संभोदित करता है जिसका उदय आरंभिक आधुनिक यूरोप में मध्यकालीन राजशाहियों के पतन से हुआ था। नई राजशाहियाँ मज़बूत राष्ट्र-राज्य थे और विशिष्ट शक्तिशाली अधिनायकों पर आश्रित थे। दोनों को मज़बूत करने के लिए गिरजाघर, सामंती स्वामियों और मध्यकालीन प्रथागत कानून द्वारा केंद्रीय शासन पर लगाए गए अंकुश को घटाना आवश्यक था। पूर्व के ऐसे अंकुशों के विरुद्ध राज्यों के पूर्ण प्राधिकार का दावा करते हुए नए राजशाहों ने स्वयं के पूर्ण प्राधिकार का दावा किया। निरकुंश राजशाही की सबसे सुलभ प्रतिरक्षा में यह दावा किया गया कि राजाओं को यह अधिकार ईश्वर से प्राप्त हुआ है। नए राष्ट्रीय सम्राटों ने सभी मामलों में अपने अधिकार का दावा किया और राज्य के साथ-साथ गिरजाघर के भी प्रमुख बनने की ओर अग्रसर हुए।

15वीं शताब्दी के अंत और 16वीं शताब्दी के दौरान यूरोपीय राजशाहियों की सत्ता, क्षमता और विकास के नए स्तरों पर कायापलट, सामंती राजशाहियों और युद्ध के विध्वंसों, प्लेग महामारी और आर्थिक कष्टों से बचने के लिए आवश्यक थे। 1453 से पूर्व यूरोपीय राज्य प्रकृति में संप्रभु से अधिक सामंती थे, 1559 के पश्चात ये सामंती से अधिक संप्रभु थे। सामंती राज्य में राज्य के विषेशाधिकारों पर– अर्थात युद्ध करने, शुल्क लगाने, शासन करने और कानून लागू करने के अधिकार – सैन्य ज़मीनदार अभिजात वर्ग के सदस्यों द्वारा कानूनी और आनुवंशिक अधिकारों के प्रारूप में निजी स्वामित्व था। सम्राट और धनाढ्य, शाही शासक और बड़े ज़मींदारों के मध्स सत्ता का विभाजन मध्यकालीन राजशाहियों की केंद्रीय विशेषता थी। राजशाही का राजा एक ओर विकेंद्रित सामंती सरकार और दूसरी तरफ संप्रभु राज्य के मध्य में खड़ा हुआ एक राजनैतिक प्रारूप था। सामंती राजशाही व्यक्तिगत राजभक्तों के तंत्र और स्वामी और ज़मींदार के बीच सामंती संबंध से बनाए गए दायित्वों के द्वारा लोगों से जुड़ा हुआ था।

परन्तु 15वीं शताब्दी के अंत और 16वीं शताब्दी में यूरोप ने एक भिन्न शैली की राजशाहियों का उद्भव देखा जो प्रकृति से निरंकुश और संप्रभु थीं और उन्हें निरंकुश राजशाहियों के नाम से जाना जाता है। यह परिवर्तन विस्तृत रूप से एक व्यापक सामान्य संकट के प्रति राजसी प्रतिक्रिया थी जो 14वीं शताब्दी में यूरोप में फैला जिससे मध्यकाल में प्रबल सामंती उत्पादन प्रणाली में अक्षमताएँ और आंतरिक संघर्ष, लम्बे विनाशक युद्ध और बूबोनिक प्लेग (Black Death) के विनाशकारी प्रकोप सामने आए थे।

सैन्य उद्देश्यों और निरंतर बढ़ती हुई अपव्ययी जीवनशैली के कारण सामंती स्वामियों की राजस्व के लिए बढ़ती हुई माँग ने सामंती उप्तादन प्रणाली पर अतिरिक्त दबाव डाला। 14वीं शताब्दी का यह सामंती संघर्ष यूरोप के भाग्य को बदलने का एक महत्वपूर्ण बिंदु था।

निरंतर युद्धों की भयावयता ने अनेक यूरोपीय राज्यों के भाग्य का विनाश किया। ईसाई राजकुमार स्पेनिश प्रायद्वीप से बंजर भूमि को अलग करने में व्यस्त थे। जर्मनी ने छिट-पुट गृह युद्ध देखे। मध्य यूरोप तुर्की आक्रमणों को पीछे धकेलने और बोहेमियन प्रजा के विधर्म का शमन करने में व्यस्त था। फ़्रांस और इंग्लैंड सौ वर्ष के विनाशकारी युद्धों में व्यस्त थे।

11.2 नई निरंकुश राजशाहियों (Absolute Monarchies) का उद्भव

इस संघर्ष से उत्पन्न हुई नई राजशाहियाँ पूर्ववर्ती सामंती राजशाहियों से भिन्न थीं। सरकार में निरंकुशवाद शक्तियाँ पूर्ण रूप से निहित और अप्रतिबंधित थीं। जैसा कि राजनैतिक सिद्धांतवादी जीन बोडिन (Jean Bodin) ने कहा है, ''संप्रभुता का भेद करने वाला चिह्न यह है कि ये किसी भी तरह किसी अन्य के द्वारा आदेश का विषय नहीं हो सकता, इसमें प्रजा के लिए केवल वही पहले से बने हुए कानून का अभिनिषेध और पूर्ण कानून में संशोधन करता है।''

कार्ल मार्क्स (Karl Marx) ने निरंकुशवाद को स्थिर थलसेना, पुलिस, नौकरशाही, पुरोहित वर्ग, न्यायतंत्र, राष्ट्रीय कराधान, संहिताबद्ध कानून के साथ राज्य की केंद्रीकृत शक्ति व्यवस्था और सामंतवाद के विरुद्ध समाज के नए मध्यक्रम के लिए काम करने वाले एक एकीकृत बाज़ार के आरंभ के रूप में पारिभाषित किया।

फ्रेड्रिक ऐंजल्स (Friedrich Engels) ने कहा कि निरंकुशवाद पुराने सामंतवादी अभिजात वर्ग और नए शहरी पूँजीपतियों के मध्य वर्ग संतुलन की एक उपज था चूंकि अभिजात वर्ग का प्रभुत्व समाप्त होना था। परंतु यह पूर्वी यूरोप के संबंध में सत्य नहीं है वहां पर पूँजीपति वर्ग दबा हुआ था।

पैरी एंडरसन (Perry Anderson) के शब्दों में, निरंकुशवाद सामंती प्रभुत्व प्रणाली का एक पुनः वितरित और पुनः उत्साहित यंत्र था जिसे धन ऋण के बड़े पैमाने पर विनिमय के बावजूद किसान जनसमूहों को दोबारा उनके परंपरागत सामाजिक स्थान में धकेलने के लिए तैयार किया गया था। निरंकुश राज्य कभी भी अभिजात वर्ग और नौकरशाही का मध्यस्थ नहीं था और यह राज्य नौकरशाही के विरुद्ध नए पूँजीपति वर्ग के एक यंत्र मात्र भी नहीं था।

क्रिस्टोफर हिल (Christopher Hill) का विचार था कि पूर्ण राजशाही सामंती राजशाही से भिन्न था और शासक वर्ग समान रहा। अभिजात वर्ग की राज्य सत्ता का नया स्वरूप वस्तु उत्पादन और विनिमय के फैलाव से निर्धारित हुआ था। नए राजशाह सत्ता की इच्छा के लिए मुखर थे, मध्यकालीन जाल के साथ असंबद्ध। उन्होंने प्रजा में उत्पन्न हो रही राष्ट्रीय भावनाओं के दमन के द्वारा अपनी सत्ता को बढ़ाने का प्रयास किया और उन्होंने शासन के बेहतर यंत्र, बेहतर सैनिक और नौकरशाह विकसित किए। पूरे यूरोप में यह राजशाही और अभिजात वर्ग के बीच मिलाप का एक युग था।

परंतु वहाँ पश्चिमी यूरोप और पूर्वी यूरोप में निरंकुश राजशाहियों में चिह्नित भिन्नताएँ थीं। भिन्नताओं के कारण सामाजिक अंतर थे जिसमें निरंकुशवाद का उद्भव हुआ। पश्चिमी और पूर्वी यूरोप में सामाजिक रचना दासत्व और पूँजीपतियों के संबंध में महत्वपूर्ण रूप से भिन्न थे। पश्चिमी यूरोप में धन ऋण में बकाए का विनिमय होने के साथ दासत्व गायब हो गया था, वहीं पूर्वी यूरोप में दासत्व पुनः मज़बूत हुआ। नए पूँजीपतियों का पश्चिमी यूरोप में उदय हुआ परंतु पूर्वी यूरोप में यह दबा हुआ था। और इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है कि सभी नए राजशाहों ने आदर्श राष्ट्र–राज्यों के निर्माण का प्रयास नहीं किया था। जर्मनी के कुछ राजकुमार और इटली के कुछ राज्य क्षेत्रीय आधार पर आद्य राष्ट्र-राज्यों की स्थापना

करने का प्रयास कर रहे थे, जैसा कि राजशाहियाँ अटलांटिक समुद्र.मंडल के साथ प्राप्त कर रही थीं।

11.3 पश्चिमी निरंकुशवाद (Western Absolutism) की विशेषताएं

फ़्रांस, इंग्लैंड और स्पेन की केंद्रीय राजशाहियाँ पूर्व की सांमती सामाजिक रचनाओं से भिन्न थीं। यहाँ इन निरंकुश राज्यों की प्रकृति के बारे में निरंतर बहस होती रही है।

दासत्व के धीरे-धीरे गायब होने, गुलामी प्रथा के धीरे-धीरे पतन, अधिपतियों को सामंती करों के भुगतान के कर्तव्यकी समाप्ति और मध्यकालीन कस्बों में विकसित हुए व्यापारिक पूँजीपतियों के उद्भव ने सामंती स्वामियों की वर्ग सत्ता को कमज़ोर किया।

राजनैतिक-कानूनी प्रताड़ना और ऊपर उठकर एक केंद्रीय निरंकुश राज्य में विस्थापित हो गई। नई राजशाही को नई और असाधारण सत्ता प्राप्त हुई। इसने शाही सत्ता के यंत्र को सुदृढ़ किया जिसने सामाजिक वंशवाद के अंत में खड़े कृषक जनसमूहों को दबाने का कार्य किया।

रोज़ेज़ के युद्ध, सैंकड़ों वर्षों के युद्ध और द्वितीय कास्टीलियन गृह युद्ध की अत्यधिक अराजकता और उथुल-पुथल से लेकर फ़्रांस के लुइस. XI, स्पेन में फर्डिनंड और इज़ाबेल्ला, इंग्लैंड में हेनरी-VII और ऑस्ट्रिया के मेक्समिलियन के शासन काल के दौरान लगभग एक ही समय पर प्रथम नई राजशाहियाँ उभरीं।

ये नए निरंकुश राज्य युद्धों के लिए बनाए गए यंत्र थे। इन्होंने पेशेवर थलसेना की खोज की, जो राष्ट्रीय भर्तियों और विदेशी किराए के सैनिकों की एक मिश्रित टुकड़ी थी जिसने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

नौकरशाही में कार्यालय बेचने के द्वारा सामंती अभिजात वर्ग निरंकुश राज्यों में एकीकृत था। कार्यालयों की बिक्री की वृद्धि एक गौण उत्पादन थीः

क) आरंभिक आधुनिक अर्थव्यवस्थाओं में बढ़ा हुआ मुद्रीकरण, और

ख) व्यापारिक और विनिर्माण पूँजीपति वर्ग के भीतर सापेक्ष वृद्धि में। इसने राज्य को अतिरिक्त राजस्व उपलब्ध कराया।

1560 के दौरान पश्चिमी यूरोप की राजशाहियों ने क्षेत्रीय एकीकरण, प्रशासनिक केंद्रीकरण और शाही सत्ता के विस्तार के क्षेत्र में बहुत बड़े कदम उठाए जिसने उन्हें सामंती राजशाहियों से संप्रभु प्रादेशिक राज्यों में परिवर्तित किया। अपनी प्रशासन की नव विधियों के कारण उन्हें नई राजशाहियों के तौर पर पहचाना गया। इन नव प्रशासनिक संस्थाओं की स्थापना पर 17वीं और 18वीं शताब्दी की महान संप्रभु राजशाहियों ने अपनी महानता का निर्माण किया।

फ़्रांस, स्पेन और इंग्लैंड के ''नए राजशाहों'' ने नौकरशाही, थलसेना, कर-प्रणाली, व्यापार और कूटनीति में नवीनीकरण के साथ संप्रभु नियम का प्रयोग किया।

11.3.1 राजा की नौकरशाही

सिद्धांत और व्यवहार दोनों में प्रशासनिक वंशावली के शीर्ष पर राजा ही होता था। उसने राज्य के परिषद् और अधिकारियों के द्वारा शासन किया। 16वीं शताब्दी के मध्य में परिषद् केवल राजा पर आश्रितपूर्ण शासन का एक यंत्र बन गया। इसकी रचना स्वयं राजा के द्वारा निर्धारित थी। परिषद् का कार्य केवल राजा की इच्छाओं और नीतियों का पालन करना था।

स्थानीय स्तर पर यद्यपि राजा सर्वोच्च था, स्थानीय शासन का अधिकारी कॉर्रेगिडर, जैसा कि कैसिल क्षेत्र में, ही वास्तविक प्राधिकारिक कार्य करता था। इंग्लैंड में स्थानीय शासन

शांति के न्यायाधीश के हाथों में था जिसने ट्यूडर के राजाओं की कुशलता से सेवा की। इन अधिकारियों ने हेनरी-VIII और रानी एलिज़ाबेथ के अधीन अपूर्वता से कार्य किया जिसने उन्हें आर्थिक रूप से शक्तिशालियों के बीच लोक सेवा और राजनीतिक गतिविधि की परंपरा को स्थापित करने में सहायता की।

फ़्रांस में स्थानीय शासन के मुख्य अधिकारी बेल्लिस (Baillis) थे जिनकी भर्ती अभिजात वर्ग की उच्च श्रेणी से की गई थी। परंतु अधिकतर ये अधिकारी अपनी प्रशासनिक कर्त्तयों से अनुपस्थित रहते थे और स्थानीय प्रशासन के वास्तविक कार्य अधीनस्थ अधिकारियों द्वारा किए जाते थे, लेटीनेंट विधि-स्नातक होता था या फिर एक पूँजीपति। परंतु लेटीनेंट की नियुक्ति अक्सर स्वयं बेल्लिस द्वारा की जाती थी या फिर अभिजात वर्ग की राय से चुना जाता था।

इस अवधि के दौरान शाही कार्यालयों की बिक्री इस अवधि की सबसे महत्वपूर्ण प्रशासनिक नवीनता थी। राजाओं ने अपनी कुछ शाही शक्तियों और नियंत्रण के धन के लिए वित्तीय और न्यायिक अधिकारियों की नियुक्ति के बदले त्याग किया। आरंभिक 16वीं शताब्दी के दौरान फ़्रांस और स्पेन में शाही कार्यालयों में भ्रष्टाचार बहुत आम बात हो गई थी। परंतु कार्यालयों की भ्रष्टाचार की गतिविधियों ने शाही सत्ता के प्रभावी कार्यान्वयन में बाधा उत्पन्न की।

परंतु महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि पहली बार प्रभावी राजनीतिक शक्ति बहु-अध्यात्मिक और लौकिक स्वामियों के बीच विभाजित होने के बजाय राजा और उसके अधिकारियों के हाथों में थी।

11.3.2 थलसेना

किराए की थलसेना का रख-रखाव नई राजशाहियों की एक और ध्यान देने वाली विशेषता थी। सामंतवाद के अधीन स्थाई सेना का रख-रखाव और निजी स्वामित्व रईसों या सामंती स्वामियों का था। परंतु राजशाही के एक बार संप्रभु सत्ता बन जाने पर सेना का स्वामित्व और रख-रखाव उसके निहित हो जाता था। 1460 और 1560 के बीच यूरोप की बढ़ती हुई समृद्धि और बारूद से संबंधित विभिन्न प्रौद्योगीकियों के नवीनीकरण से नए यूरोपीय राज्यों ने नई थलसेना का निर्माण शुरू कर दिया था।

फ़्रांस की नई थलसेना की रचना फ़्रांसिस-I के शासन काल के दौरान हुई थी। परंतु यह सौ वर्षों के युद्ध के अंतिम वर्षों के दौरान हुआ कि चार्ल्स-VII ने तीरंदाज़ घुड़सवारों द्वारा समर्थित भारी घुड़सवारों को शामिल करते हुए थलसेना के निर्माण में प्रथम कदम उठाया। ताज की नियमित और स्थाई सेवा में ये आदमी स्वयं सेवक थे जिनको श्रेष्ठ पदों के माध्यम से भुगतान किया जाता था। 1448 में चार्ल्स-VII ने प्रत्येक टोली को शाही थलसेना के लिए एक तीरंदाज़ को तैयार और प्रस्तुत करने का आदेश दिया। फ़्रांसिस-I के राजा बनने तक (1515-1547) पैदल सेना पेशेवर किराए की थलसेना बन चुकी थी। सेनापतियों की नियुक्ति या भर्ती फ़्रांसीसी राजा द्वारा संगठित भालों और बंदूकों से सुसज्जित पैदल सेना से की गयी। भर्ती केवल शाही थी परंतु उसमें राष्ट्रीयता की भावना नहीं थी। कुछ पैदल सेना फ़्रांसीसी थी तो शाही अंगरक्षक स्कॉटलैंड और स्विट्ज़रलैंड से भाले वाले योद्धा थे।

इस प्रकार की फ़्रांस और स्पेन की सेनाओं ने केंद्रीकृत संप्रभु राज्यों के निर्माण के शाही प्रयासों को पीछे से मज़बूती दी। परंतु ये सेनाएँ शाही नियंत्रण तंत्र से अपूर्ण थीं। जब इन्हें भुगतान नहीं किया गया तो ये लुटेरी भीड़ बन गईं और निर्दयता से शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों का विनाश करती गईं। यहाँ तक कि जिन्हें भुगतान भी किया उनकी वफ़ादारी केवल ताज तक नहीं थी। अधिकतर कस्बों ने अपनी सेना को बनाए रखा। हालांकि, फ़्रांस और इंग्लैंड का महान अभिजात वर्ग कमतर रईसों के साथ संरक्षक, पारिवारिक संबंधों और नातेदारियों

के जटिल जाल का केंद्र बना रहा। 16वीं शताब्दी के राजशाहियों ने अपने मध्यकालीन पूर्वजों की तुलना में सैन्य तंत्र पर कहीं बेहतर तरीके से नियंत्रण रखा।

11.3.3 व्यापार

अर्थव्यवस्था और राज्य की शक्ति की समृद्धि के संयुक्त हितों में वणिकवाद ने अर्थव्यवस्था के कार्यों में राजनैतिक हस्तक्षेप का समर्थन किया। वणिकवाद ने वस्तुओं के उत्पादन के लिए एकीकृत घरेलू बाज़ार के निर्माण के लिए प्रयास और राष्ट्रीय क्षेत्र में व्यापार की बाधाओं को समाप्त करने की माँग की। माल के निर्यात को बढ़ावा दिया गया जबकि अन्य सभी राज्यों के सापेक्ष अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए बहुमूल्य वस्तुओं का निर्यात प्रतिबंधित था।

जैसा कि **डयूक डी कोसेल (Duc de Choiseul)** ने कहा हैः नौसेना पर उपनिवेश बस्तियाँ निर्भर होती हैं, उपनिवेश बस्तियाँ वाणिज्य पर निर्भर होती हैं और वाणिज्य राज्य की अनगिनत सेनाओं के रख-रखाव, जनसंख्या वृद्धि और सबसे गौरवमय और उपयोगी उद्यमों को संभव बनाने की क्षमता पर निर्भर करता है।

11.3.4 कूटनीति

कूटनीति पश्चिमी निरंकुशवाद राज्य की एक और बाहरी गतिविधि थी– युग का एक महान संस्थागत नवाचार, पुनर्जागरण काल के राज्यों का एक जन्म-चिह्न। इसका आरंभ 15वीं शताब्दी में इटली में हुआ और 16वीं शताब्दी में स्पेन, फ़्रांस, इंग्लैंड, जर्मनी और पूरे यूरोप में इसे अपनाया गया।

11.3.5 वित्त और कराधान

पुनर्जागरण काल के राजकुमार कई मोर्चों पर धन के लिए व्याकुल थे। पुनर्जागरण काल के प्रत्येक शासक की मुख्य समस्या उनके अपनी आय से अधिक व्यय की थी। उन्हें बार-बार के युद्ध के व्ययों के लिए वित्त की व्यवस्था करनी होती थी। महत्वपूर्ण शक्तियों द्वारा मुख्य अभियानों की शुरुआत 1494 और 16वीं शताब्दी के अंत के बीच की गई थी। फ़्रांसीसी और स्पेन की सेनाओं का औसत आकार लगभग क्रमशः 20,000 और 25,000 योद्धा थे। अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति के लिए तीव्र व्यय अवस्था आवश्यक है (फ़्रांस ने स्विस, जर्मन राजकुमारों और इंग्लैंड के हेनरी-VIII की मित्रता को सुरक्षित रखने के लिए बहुत बड़ी राशि का भुगतान किया)। वित्त की आवश्यकता शाही अधिकारियों के वेतन, शाही घरेलू व्ययों, शानदार दरबारों के रख-रखाव और महलों के निर्माण के लिए भी थी।

शासकों ने विभिन्न स्रोतों से अपने राजस्व को प्राप्त कियाः

क) शाही जागीरों ने सामंती पदक्रम के प्रधान के लिए किरायों और बकायों की उगाही की।

ख) विभिन्न प्रकार की वस्तुओं पर सीमा-शुल्क और बिक्री कर लगाया गया था। लगभग हर जगह कराधान का भार गरीबों पर आ गिरा (फ़्रांस में ''टेल्ले'' (*Taille*) या ''गबेल्ले'' (*Gabelle*) और स्पेन में ''सरवितोर'' (*Servitor*)। **बोरिस पोर्शनेव (Boris Porshnev)** ने इन करों को पूर्व के ''स्थानीय सामंती किराया'' के स्थान पर लगाया गया ''केंद्रीकृत सामंती किराया'' कहा।

ग) उधार लेना (कुछ ऋण जबरन थे और बड़े शहरों के पूँजीपति इसके बड़े पैमाने पर शिकार थे)। जब राजा शाही जमावड़े पर और अधिक निर्भर नहीं रह सकते थे तो उन्होंने सरकारी अंशों और चल सार्वजनिक ऋणों को बेचना आरंभ कर दिया था।

घ) अभिजात वर्ग को नौकरशाही के कार्यालय बेचना और पूँजीपति वर्ग का उद्भव।

(ड.) प्रत्यक्ष कराधान। इसने पारंपरिक विचार की अवहेलना की जिसके अनुसार राजा को केवल शाही क्षेत्रों से प्राप्त राजस्व और अप्रत्यक्ष कराधान पर जीवन-निर्वाह करना चाहिए और राजा द्वारा प्रजा पर उसकी सहमति के बिना किसी भी प्रकार का कराधान नहीं लगाया जा सकता। हालांकि, फ़्रांस और स्पेन के राजाओं ने सार्वजनिक सहमति के सिद्धांत को स्वीकार करने से मना कर दिया और इस प्रकार उन्होंने अपने राज्यों में प्रतिनिधि संस्थाओं को कमज़ोर कर दिया। पूरी 16वीं शताब्दी के दौरान शाही मंत्रियों ने प्रत्यक्ष करों के लिए इन प्रतिनिधि संस्थाओं से समझौता किया। यह काफ़ी हद तक ताज की शक्ति और वित्तीय नौकरशाही की कुशलता के कारण था जिसने आबादी को प्रत्यक्ष कराधान की नीतियों के लिए प्रस्तुत किया।

अंग्रेज़ी राजाओं का बिना सहमति के नियमित कर लगाने के लिए कोई अपरिहार्य सैन्य उद्देश्य नहीं था क्योंकि इंग्लैंड जलडमरू द्वारा सुरक्षित था और 15वीं शताब्दी के मध्य के बाद मुश्किल से ही युद्धों में शामिल हुआ था। इंग्लैंड की स्थाई थलसेना नहीं थी और कुछ किराए के सैनिकों को भाड़े पर रखा गया था। सैनिकों की भर्ती और प्रशिक्षण स्थानीय अभिजात लोगों द्वारा किए गए थे न कि पेशेवरों द्वारा। इसके अतिरिक्त प्रत्येक व्यक्ति करों का भुगतान करता था, अभिजात वर्ग के साथ-साथ साधारण लोग भी।

परंतु 17वीं शताब्दी के दौरान इंग्लैंड में सीमित राजशाही की ओर परिवर्तन हुआ और फ़्रांस में निरंकुशवाद का विकास हुआ। फ़्रांसीसी राजाओं ने कर में छूट के द्वारा शासक वर्ग का सहयोग खरीद लिया और अंग्रेज़ी राजाओं ने पादरी क्लीमेंट-VII (Pope Clement-VII) के साथ राजनैतिक संकट के संघर्ष के दौरान धन की पूर्ति और जनमत को संगठित करने और सहयोग के बदले में संसद की इच्छाओं के अनुसार अपनी नीतियों में कांट-छांट की सम्मति दिखाई।

11.4 पूर्वी निरंकुशवाद (Eastern Absolutism) की विशेषताएँ

पूर्वी निरंकुशवाद को सामाजिक संरचना में पूँजीपति वर्ग की अनुपस्थिति से चिह्नित किया गया। इसने जिस तरह से आकार लिया उसके महत्वपूर्ण परिणाम होने थे।

11.4.1 सामंती अभिजात वर्ग

पूर्वी निरंकुशवाद का उद्भव सामंती अभिजात वर्ग के वर्ग-स्तर को इसके विदेशी शत्रुओं और देशी किसानों दोनों से रक्षा करने के लिए हुआ था। पूर्वी निरंकुशवाद उग्र केंद्रीकृत था क्योंकि सामंती वर्ग को राज्य संरचना में सैन्य उद्देश्य के लिए आवश्यक सेवा अभिजात वर्ग में भर्ती के द्वारा अंतर्लीन कर लिया गया था। या तो भूमि वाले लोग राज्य की सेवा करने वाले थे या फिर राज्य की सेवा करने वाले ही भूमि खरीद सकते थे। सेवा अभिजात वर्ग सामंत सम्पत्ति की तरह थी जिसका अस्तित्व पहले पश्चिम में था। पहले पूर्व में इसे गंभीरता से नहीं लिया गया था। जब निरंकुशवाद के कारण पश्चिम में सामंत सम्पत्ति समाप्त होने लगी तो पूर्व में इसका निरंकुशवाद के कारण उद्भव होने लगा। भूमि पर स्थिर अधिकार के कारण अभिजात वर्ग ने समृद्धि और शक्ति को अपनी ओर खींचा, न कि राज्य में अस्थाई रूप से ठहरने के कारण।

11.4.2 कृषि-दासता (Serfdom) का समेकन

पूर्व में निरंकुशवाद राज्य कृषि-दासता के समेकन के लिए एक यंत्र भी था और स्वायत्त शहरी जीवन या प्रतिरोध के निष्कासन के लिए भी। पैरी एंडरसन ने लिखा है कि ''यह सामंती वर्ग के लिए दमन का एक उपकरण था जिसने गरीब की पारंपरिक सांप्रदायिक स्वतंत्रता को मिटा दिया था''। युद्ध और नागरिक अव्यवस्था तीव्र मज़दूर संघर्ष का कारण थे। जनसांख्यिकीय हानि ने कृषि के कार्य-क्षेत्र के लिए ग्रामीण मज़दूरों की निरंतर कमी का निर्माण किया अथवा

इसे बढ़ाया। भूस्वामी वर्ग ने कृषकों की गतिशीलता को अपनी गिरफ्त में लेने का प्रयास किया और कृषकों का वर्ग-संघर्ष सांमती भूमियों का सामूहिक परित्याग था। कृषकों को मिट्टी से बांधने वाले सामंती कानून उचित तरीके से लागू नहीं किए जा सके।

रूस में कृषि-दासता की स्थापना और निरंकुशवाद का निर्माण निकटता से सहयोगी थे। 1648 में कृषि–दासता ग्रामीण जनसंख्या के लिए संहिताबद्ध और सार्वभौमिक थी; राज्य का कस्बों और निवासियों पर नियंत्रण संस्थागत था; अभिजात वर्ग की भूमियों की सैन्य सेवा के लिए औपचारिक देयता सुनिश्चित और जुड़ी हुई थी। रूसी राजशाही और अभिजात वर्ग के बीच सामाजिक संधि पर मुहर लगी हुई थी जो कृषि-दासता को अंतिम रूप देने के बदले निरंकुशवाद की स्थापना कर रही थी।

पोलैंड में 'द्वितीय कृषि-दासता' की सांस्कृतिक भूमि पर किसी निरंकुश राज्य का कभी उद्भव नहीं हुआ। हंगरी में 17वीं शताब्दी के आने तक ऑस्ट्रिया-तुर्की युद्ध के पश्चात कृषकों का दासत्व पूर्ण हुआ।

11.4.3 अंतर्राष्ट्रीय दबाव

पूर्वी निरंकुशवाद अंतर्राष्ट्रीय राजनैतिक व्यवस्था द्वारा निर्धारित था जिसमें पूर्ण क्षेत्र एकीकृत था। यह आवश्यक रूप से पश्चिमी निरंकुशवाद का दबाव था जिसका विश्वास था कि इस विस्तार का प्राथमिक स्वरूप विजय थी न कि वाणिज्य। पूर्वी क्षेत्र का दायित्व था कि वह पूँजीवाद के तुलनात्मक परिवर्तन होने से पूर्व पश्चिम की राज्य संरचना के अनुरूप हो जाए। यह एक निरंतर क्षेत्रीय युद्धों की सभ्यता में उनके जीवित रहने की कीमत थी।

11.4.4 युद्धों की भूमिका

युद्ध का प्रभाव पश्चिम की तुलना में पूर्वी यूरोप में अधिक प्रमुख था। प्रशिया में राज्य उपकरण शासक वर्ग की सैन्य व्यवस्था का एक उप-उत्पाद था और नौरकरशाही थलसेना की एक शाखा थी। ऑस्ट्रिया में युद्ध तंत्र निरंतर निरंकुशवाद का अनुरक्षक था परंतु उतना नहीं जितना प्रशिया में था। 1650 के पश्चात फ्रेडरिक महान द्वारा प्रशियाई निरंकुशवाद का निर्माण बड़े पैमाने पर उपस्थित स्वीडिश खतरों के लिए एक प्रत्यक्ष प्रतिक्रिया थी। होहेज़ोल्लर्न निरंकुशवादता के लिए स्थाई थलसेना को अधार-शिला होना था और 1653 में बाल्टिक क्षेत्रों में निकटस्थ युद्ध की परिस्थिति से निपटने के लिए जुनकरों (Junkers) द्वारा इनकी कर प्रणाली को अपनाया गया था। रूस में भी स्वीडिश विस्तार के क्रमिक चरणों के दौरान निरंकुशवाद की ओर परिवर्तन के काफ़ी निर्णायक चरण उत्पन्न हुए थे। इस प्रकार पूर्वी निरंकुशवाद के लिए स्वीडन एक गंभीर प्रतिक्रिया था।

11.4.5 पूँजीपति वर्ग की अनुपस्थिति

पूर्व में कोई पूँजीपति वर्ग नहीं था और वहां नौकरशाही कार्यालयों की बिक्री भी नहीं होती थी। सामंती स्वामियों ने स्वयं व्यापार और वाणिज्य को अपने हाथ में लिया था। 18वीं शताब्दी में पूर्वी निरंकुशवाद ने पश्चिमी निरंकुशवाद का दमन कर दिया था।

बोध प्रश्न-1

1) पश्चिमी निरंकुशवाद की विशेषताओं की चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

2) पूर्वी निरंकुशवाद की विशेषताओं की चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

11.5 यूरोपीय निरंकुशवाद – कुछ विशेष अध्ययन

निरंकुशवाद को समझने के लिए हमें उन तरीकों को समझना पड़ेगा जिसमें राजशाहियों ने आंतरिक रूप से गिरजाघर, सामंती स्वामियों और मध्यकालीन प्रथागत कानूनों के द्वारा लागू कठोरता और विदेशी देशों से शत्रुता पर अपनी शक्ति को स्थापित करने का प्रयास किया। युद्ध पर घरेलू नियंत्रण के लिए कुशल और प्रभावी नौकरशाही और प्रशासन से लेकर विदेश और व्यापार पर प्रभुत्व के लिए कूटनीति, काराधान और सामाजिक-कानूनी सुधारों, सबके लिए वित्त व्यवस्था तक निरंकुश राजशाहियों ने अपनी सुविधानुसार स्वयं को सशक्त किया। उन जटिल तरीकों पर ध्यान देना होगा जिसमें राजाओं, राजकुमारों, शहरों और रियासतों ने राजनैतिक प्राधिकार के लिए बेहतर तरीके से उपयोग, आदान-प्रदान या प्रतिस्पर्धा की। यह स्पेन, फ्रांस, इंग्लैंड और पश्चिमी यूरोप में स्वीडन एवं रूस, पूर्वी यूरोप में प्रशिया और ऑस्ट्रिया में आधुनिक राज्य प्रणाली के निर्माण का अध्ययन करने में सहायता करेगा।

11.5.1 पश्चिमी निरंकुशवाद

11.5.1.1 स्पेन

मूरों (Moors) द्वारा विजित सात देश और ईसाई साम्राज्यों के मध्य संघर्षों के कारण स्पेन को यूरोप में 16वीं शताब्दी से पूर्व सबसे अधिक राजनैतिक उथल-पुथल का सामना करना पड़ा। कुछ शासकों, जैसे कैसिल (Castile) का फर्डिनंड महान, ऐरागोन का योद्धा अलफोंसो और रॉड्रिगो डियाज़ जैसे वीर सेनापतियों ने मूरों को प्रायद्वीप से *रिकोंक्वीस्ता* (पुनः विजय) के द्वारा बाहर निकालने का निश्चय किया था। 1469 में जब **कैसिल की रानी इसाबेल्ला ने ऐरागोन के राजा फर्डिनंड** से विवाह किया और साझा विरासत, संस्कृति और धर्म की मान्यतानुसार अपने साम्राज्यों पर शासन किया तब ईसाई साम्राज्यों– ऐरागोन, कैसिल, नवार्रे (Navarre) और पुर्तगाल के बीच संघर्ष कम हो गए थे।

राजा फर्डिनंड और रानी इसाबेल्ला के शासन काल की सबसे बड़ी उपलब्धि अभिजात वर्ग की कीमत पर शाही प्राधिकार का विस्तार था जिसमें मूरों से निरंतर युद्ध के कारण स्वतंत्र इकाई के तौर पर लड़ने योग्य सैन्य आदेशों सहित महत्वपूर्ण शक्तियाँ एकत्रित थीं। शाही प्राधिकार का समेकन धीरे-धीरे निम्नलिखित के द्वारा प्राप्त किया गयाः

क) ऐरागोन और कैसिल दोनों के विधान-मंडलों की शक्तियों को कम करके;

ख) ऐरागोन और कैसिल के दो शाही परिषदों को सभी आंतरिक मामलों और न्याय के पर्यवेक्षण का उत्तरदायित्व देकर;

ग) अभिजात वर्ग पर और अधिक प्रभावी नियंत्रण;

घ) ऐरागोन और कैसिल की *कुरिया रेजिस* (*Curia Regis*) अर्थात महान परिषदों में कानूनी प्रशिक्षण प्राप्त शाही नौकरों से अभिजात वर्ग के प्रमुख सदस्यों को बदलना, ताकि वे राजशाहों और स्पेन में शासन चलाने के लिए गठित अन्य परिषदों को सलाह दे सकें।

ड.) मतदान के लिए अभिजात वर्ग के अधिकार का त्याग;

च) कमतर अभिजात वर्ग को ऊपर उठाना और पूँजीपति वर्ग को बड़े सामंती स्वामियों की शक्तियों को कम करने के लिए ईनाम देना; और

छ) स्थानीय प्रशासन में शाही अधिकारियों की नियुक्ति के द्वारा।

नए शाही अधिकारियों को कॉर्रेगिडर (Carregidors) के नाम से जाना जाता था जो कैसिल में न्यायिक और प्रशासनिक कर्त्तव्यों के लिए संयुक्त उत्तरदायित्व निभाने के लिए नियुक्त किए गए थे, जिन्हें मध्यकाल में उनकी स्वयं की विधानसभाओं सहित अर्ध-स्वतंत्रता प्रदान की गई थी और इन अधिकारियों को रेजिडोर (Regidors) कहा जाता था। डकैती रिकोंक्युस्ता की हिंसक अवधि का उप-उत्पाद थी जो संता हर्मंदाद (पवित्र भाईचारा) के पुनः प्रवर्तन के साथ कम हो गई थी। संता हर्मंदाद को गिरतारी, नज़रबंदी और संक्षिप्त न्याय की शक्तियाँ प्रदान की गई थीं।

राजशाहियों ने पूर्व में अलग की गई भूमि और संपत्ति के पुनः आरंभ से वित्तीय संचय के निर्माण और अल्कबाला नामक कर के और अधिक गहनता से उपयोग द्वारा कोर्टेस (विधान-मंडल) पर निर्भरता को धीरे-धीरे कम कर दिया था। 1475 और 1503 के बीच 28 वर्षों में कैसिल के विधान-मंडल को केवल नौ बार बुलाया गया और 1482 और 1498 के बीच 16 वर्षों में इसे कभी नहीं बुलाया गया।

चार्ल्स-I 1516 से 1556 तक स्पेन का राजा था और चार्ल्स-V 1519 से 1558 तक पवित्र रोमन शासक के तौर पर था। पवित्र रोमन शासक के तौर पर चार्ल्स-V की राजनीतिक महत्वकांक्षाएँ बढ़ने लगीं और उसने स्वयं को ईसाई जगत (Christendom) का धर्मनिरपेक्ष नेता माना जिसकी भूमिका सार्वभौमिक साम्राज्य की स्थापना और विधर्म को समाप्त करने की थी।

चार्ल्स-V के प्रादेशिक उत्तरदायित्व बहुत विशाल थे क्योंकि उसने स्पेन को भी सम्मिलित कर लिया था। पवित्र रोमन साम्राज्य का विस्तार जर्मनी से उत्तरी इटली सहित बरगंडी और ऑस्ट्रिया (जिन पर उसने चार्ल्स-V के तौर पर शासन किया), दक्षिणी इटली के अधिकृत प्रदेश नेपल्स, सिसिली और सार्डिनिया तक था। वह अपने पूर्ण साम्राज्य के लिए प्रशासन की एक प्रणाली का निर्माण नहीं कर सका। इसका परिणाम यह हुआ कि प्रत्येक उपनिवेश ने स्वयं की संवैधानिक व्यवस्थाओं के मार्गदर्शक सिद्धांत का विकास कर लिया था जो सामान्यतः एक प्रशासन को बनाए रखने के लिए थे और चार्ल्स की अनुपस्थिति में कार्य कर सकते थे।

फर्डिनंड और इसाबेल्ला द्वारा बनाए गए परिषद्ों की व्यवस्था का प्रयोग ताज की शक्तियों को बढ़ाने के लिए था। सलाहकार और विभागीय परिषद्ों ने युद्ध के परिषद्, राज्य के परिषद्, वित्त के परिषद् और अमरीकी प्रदेशों के लिए इंडीज़ के परिषद् को जोड़ा था। इसमें कोई संशय नहीं कि परिषद्ों की व्यवस्था जटिल बन गई थी, परंतु उन प्रशासकों की असाधारण योग्यता के कारण इसने बहुत अच्छा कार्य किया जिनको चार्ल्स-I ने अपनी अनुपस्थिति के दौरान अधिकार सौंपे हुए थे। जबकि नौकरशाही की वृद्धि होती रही विधान-मंडल अपनी शाही नीति की सीमा को कम करते हुए निरंतर पतन की ओर जाता रहा। स्पेन की सभी संस्थाएँ एक महत्वाकांक्षी विदेशी नीति के लिए संसाधन उपलब्ध कराने के सिद्धांत के अधीन थीं जिसने यूरोप के अधिकतर भाग को प्रभावित किया।

चार्ल्स ने अपने शासन काल का बेहतर हिस्सा तुर्कों (Ottomans), फ्रांसीसियों और पवित्र रोमन साम्राज्य में प्रोटेस्टेंटों के साथ सैन्य संघर्षों में और यूरोप में संतुलन बनाए रखने में व्यतीत किया।

हैप्सबर्ग राजवंश (1516-1700) के अधीन स्पेन प्रथम वैश्विक शक्ति बना। स्पेन साम्राज्य की

प्रथम बहुसंख्या 1492-1540 के उन्मत्त/प्रचंड विस्फोट की गतिविधि से बनी। इस अवधि के दौरान स्पेन ने कैरेबियन क्षेत्र को खोजा, जीता और बसाया, पेरू के इंका (Incas) और मैक्सिको के एज़्टेक प्रदेशों को हड़प लिया और स्वयं इन्हें इटली में उपनिवेशी शक्ति के तौर पर स्थापित किया। यूरोप में स्पेन ने कमतर देशों को भी नियंत्रित किया।

1556 में चार्ल्स-I ने अपने पुत्र फिलिप के पक्ष में नीदरलैंड और स्पेन पर अपने दावे को और अपने भाई फर्डिनंड के पक्ष में शाही ताज को त्याग दिया। उसकी विरासत ख़त्म हो गईः जर्मनी धर्म के नाम पर बुरी तरह विभाजित हो गया था, स्पेन कंगाली के निकट था और नीदरलैंड में विद्रोह थे।

चार्ल्स का पुत्र फिलिप 1556 में अपने पिता के पदत्याग पर फिलिप-II के तौर पर स्पेन का राजा बना और 1598 में अपनी मृत्यु तक शासन किया। फिलिप-II के शासन काल के दौरान स्पेन साम्राज्य ने अपनी महानतम शक्ति और प्रभाव को देखा और इसने अपनी सीमा का दूर तक घेराव किया। 1492 में कोलंबस के द्वारा नए विश्व से सामना होने पर स्पेन के विजेता अमरीका के नए प्रदेशों पर विजय प्राप्त कर रहे थे। जब तक फिलिप तख़्त पर बैठा स्पेन ने पुर्तगालियों द्वारा नियंत्रित ब्राज़ील को छोड़कर कैरेबियन, उत्तरी अमरीका के भागों और पूरे मध्य और दक्षिण अमरीका पर नियंत्रण किया। फिलिप-II ने प्रशांत महासागर में फिलीपीन द्वीपों में औपनिवेशिक बस्ती स्थापित की और 1580 में पुर्तगाल पर साम्राज्य द्वारा कब्ज़ा कर लिया गया।

फिलिप-II के शासन काल के दौरान जब स्पेन का साम्राज्य अपने शीर्ष पर था तो स्पेन की अर्थव्यवस्था की क्षति के द्वारा उसके पतन के बीज भी बो दिए गए थे। फिलिप-II को साम्राज्य महत्वपूर्ण ऋण के साथ विरासत में मिला था। कैथोलिक स्पेन द्वारा विद्रोही देशों के विरुद्ध लड़े गए अनेक युद्ध साम्राज्य के लिए धन का बड़ा सौदा था जैसा कि नीदरलैंड में विद्रोहियों को दबाने के प्रयासों में किया गया था। स्पेन सोने और चाँदी पर निर्भर हो गया था जो अमरीका की खानों से प्रशासन चलाने के लिए लाया गया था। यहाँ तक कि स्पेन ने 1557, 1560, 1575 और 1596 में कंगाली की घोषणा कर दी। स्पेन की अर्थव्यवस्था का यह अतिविस्तार अगली शताब्दी में साम्राज्य के पतन का एक प्रमुख कारण था।

फिलिप-II का विश्वास प्रशासन में व्यक्तिगत भागीदारी में था और उसके प्रमुख उत्तरदायित्वों में पक्षपात रहित न्याय देना, गिरजाघर और न्यायिक जाँच की सुरक्षा करना और विधर्म को उखाड़ फेंकना था। कर्त्तव्यों को सौंपने में उसकी अयोग्ता और नीति के सूत्रीकरण पर अधिक ध्यान देने ने प्रशासन को धीमा कर दिया था। परिषद् व्यवस्था ने पुर्तगाल के परिषद् और लैंडर के परिषद् के साथ प्रादेशिक आधारों को बढ़ाना जारी रखा। इटली और पुर्तगाल के परिषद् सफल थे परंतु लैंडर का परिषद् स्पेन के शासन के विरूद्ध नीदरलैंड के विद्रोह को समाप्त नहीं कर सका।

फिलिप-III, जिसने 1598 से 1621 तक शासन किया, के राज्यभिषेक के समय स्पेन पर विशाल राष्ट्रीय ऋण और अनसुलझे संघर्ष थे। वर्ष 1610 में दक्षिण अमरीका से चाँदी के आयात का चरम देखा गया। परंतु इसके परिणामस्वरूप भारी मुद्रास्फीती ने अर्थव्यवस्था को और धीमा कर दिया।

फिलिप-II के द्वारा स्पेन के जिन अभिजात वर्गों और भद्र व्यक्यिों (Grandees) की शक्तियाँ कठोरता से घटा दी गई थीं जल्दी ही फिलिप-III के द्वारा वे शक्तियाँ सौंपने पर वे और मज़बूत हो गईं। राज्य की आम कमज़ोरियों में शाही साम्राज्य का पतन दिखने लगा था। युद्ध की थकावट के साथ आई वित्तीय क्षति ने नीदरलैंड, इंग्लैंड और फ्रांस के साथ युद्धविराम की ओर कदम बढ़ाया।

चार्ल्स-II (1665-1700) स्पेन के हैप्सबर्ग राजवंश का अंतिम शासक और मैक्सिको से फिलीपीन तक विदेशी स्पेन साम्राज्य का संप्रभु था। उसकी मानसिक और शारीरिक अयोग्यता के कारण फिलिप-II का शासन काल स्पेन के लिए यंत्रणा के वर्ष थे और उसके अधिकतर शासन काल के दौरान उसकी माता ने राज्य-प्रतिनिधि की तरह काम किया। 1700 में उसकी मृत्यु पर हैप्सबर्ग सदन की स्पेन की शाखा विलुप्त हो गई। उसकी मृत्यु ने 1701 में स्पेन में उत्तराधिकार का युद्ध छेड़ दिया।

11.5.1.2 फ्रांस

फ्रैंकों के राजा शारलेमेन (लगभग 786-814) ने रोमन साम्राज्य के वरेण्य/प्रतिष्ठित युग के बाद पहली बार पश्चिमी और मध्य यूरोप के अधिकांश हिस्से को एकीकृत किया था। परंतु शारलेमेन की मृत्यु के बाद विशाल कैरोलिनगियन साम्राज्य टूट गया और सम्राट की उपाधि यूरोप के पूर्वी भाग के जर्मन शासकों के पास चली गई। 10वीं शताब्दी के अंत में ह्यूग कैपेट (लगभग 987-996) ने फ्रांस के राजाओं के कैपेटियन राजवंश की स्थापना की जिसने देश पर अगले 800 वर्षों तक शासन किया।

फ्रांस अनेक जागीरों (ड्यूकों के क्षेत्र) में बंट गया था जिन पर ड्यूक शासन कर रहे थे। कैपेटियन एक परिवार था जिसने पेरिस केंद्रित क्षेत्र और उससे सटे हुए आसपास के प्रदेशों और ऑलींस तक फैले क्षेत्रों को नियंत्रित किया। सर्वप्रथम कैपेटियन द्वारा फ्रांस के ड्यूकों के अन्य क्षेत्रों पर नियंत्रण नाम के लिए था क्योंकि कई अर्ध-स्वतंत्र साम्राज्य थे। धीरे-धीरे, राजाओं ने शक्तिशाली राजशाही की स्थापना की जिसने फ्रांस में ड्यूकों के सभी क्षेत्रों पर शासन किया। गिरजाघर के साथ साझेदारी ने आरंभिक कैपेटियन राजाओं को बहुत मज़बूती दी। शाही क्षेत्र के भीतर ही कैपेटियन ने कुरिया रेजिस अर्थात राजा के दरबार पर अपना नियंत्रण बढ़ा लिया था।

फ्रांसीसी कैपेटियन के विकास में एकमात्र सबसे महत्वपूर्ण तथ्य राजाओं के सबसे शक्तिशाली जागीरदार नॉरमैंडी के ड्यूकों के साथ संबंध था। 11वीं शताब्दी के मध्य में ड्यूकों ने अपने जागीरदारों को सैन्य सेवा प्रदान करने के लिए बाध्य करते हुए अपने स्वयं के क्षेत्रों के प्रशासन को केंद्रीकृत कर दिया था। यहाँ तक कि नॉरमैंडी के ड्यूक विलियम (विजेता विलियम के नाम से भी इन्हें जाना जाता है) ने 1066 में इंग्लैंड को जीत लिया, वह और उसके उत्तराधिकारी तब भी कैपेटियन के जागीरदार बने रहे। धीरे-धीरे नॉर्मन अपने कैपेटियन अधिपतियों से अधिक शक्तिशाली बन गए और वे कभी भी उनके विरुद्ध नियमित युद्ध करने से हिचकते नहीं थे।

फिलिप-III या फिलिप ऑगस्टस (1180-1223) ने फ्रांसीसी साम्राज्य को चार गुना बढ़ा दिया था। उसके पूर्वज फ्रैंकों के राजाओं के तौर पर जाने जाते थे परंतु 1190 के बाद फिलिप स्वयं को फ्रांस का राजा बनाने वाला प्रथम शासक बना। एंग्लो-फ्रांसीसी युद्धों (1202-1214) में फिलिप ने न केवल अंग्रेज़ी ताज के अधीन शक्तिशाली एंग्विन साम्राज्य को नष्ट करने में सफलता प्राप्त की, बल्कि उसने 1214 में बुवाइंस (Bouvines) की लड़ाई में तीन शक्तियों के संघटन– अंग्रेज़ी, जर्मन और लेमिश सेनाओं– को भी हराया।

लुइस-IX (1226-1270), संभवतः सभी मध्यकालीन राजाओं में सबसे महान, के साथ शाही शक्तियों में नई उन्नतियाँ आईं। उसने गिरजाघर के प्रति अपनी व्यक्तिगत श्रद्धा को अपने शाही विशेषाधिकारों को धर्माध्यक्षों (Bishops) या पोप द्वारा किए जा रहे उल्लघंन के विरुद्ध बचाव करने से नहीं रोकने दिया। लुइस-IX ने यह घोषणा कर दी थी कि फ्रांस में गिरजाघर की संपत्ति राजा और उसके क्षेत्र की आवश्यकताओं के लिए है, न कि रोम द्वारा लूटे जाने के लिए। कस्बों के लिए शाही न्याय का विस्तार पारलेमेंट्स में मध्यवर्ग के प्रतिनिधियों या राजा के पूँजीपतियों द्वारा विचार-विमर्श में लाकर सुरक्षित कर दिया था।

लुइस के पोते फिलिप-IV (1285-1314), जिसे फिलिप के नाम से भी जाना जाता था, के शासन काल के दौरान पुराने निष्पक्ष सम्मेलनों का पालन किया जाने लगा। उसने शाही शक्तियों को कठोरता से बढ़ाया और अपनी शाही नियंत्रण को कस्बों, अभिजातों और गिरजाघर पर समेकित किया। राजा के आदमियों ने झूठ और प्रपंच के प्रसार द्वारा राजा को छोड़कर सभी प्राधिकारों को कमज़ोर कर दिया। शाही न्याय प्रणाली ने सामंती न्याय प्रणाली को निगल लिया था। शाही दरबार या कुरा रेजिस अपने करीबी सलाहकारों को सम्मिलित करने से एक गोपनीय परिषद् बन गया था। सलाहकारों का बड़ा समूह जिसमें अन्य स्वामी और उच्च पादरी सम्मिलित थे पूर्ण परिषद् कहलाया।

इंग्लैंड के साथ युद्ध ने फिलिप को अधिकतर उसके शासन काल में नकदी के लिए दबाव में बनाए रखा। अनिवार्य ऋण, सिक्कों का विलापन, अतिरिक्त सीमाशुल्क बकाया और वाणिज्यिक लेन-देन पर भारी करारोपन शाही आय में जोड़ दिया गया। 1296 में पोप बोनिफेस-VIII ने राजाओं और राजकुमारों को अपने देश के पुरोहितों पर बिना पुरोहितों की सहमति के कर लगाने के लिए मना कर दिया था। इसकी प्रतिक्रिया में फिलिप ने फ़्रांस से बहुमूल्य धातुओं, आभूषणों और मुद्रा के निर्यातों पर घाटबंधी अधिरोपित कर दी। इस घाटबंधी ने पोप के पद की वित्तीय प्रणाली को हिला दिया जिसके कारण पोप को अपना आदेश वापस लेना पड़ा। परंतु इसके पश्चात पोप के साथ झगड़ों ने फिलिप को फ़्रांसीसी पोप चुनने के लिए बाध्य कर दिया, जो कभी भी रोम नहीं गया, जिसके साथ ही अविग्नॉन (1350-1378) में पोप के पद के बेबीलोनियन कैदीकरण की अवधि आरंभ हुई। फिलिप ने यहूदियों और इटली के साहूकारों का धन और संपत्ति भी छीन ली। 1314 में फिलिप-IV की मृत्यु के पश्चात फ़्रांस की कैपेटियन राजशाही ने कुशल और निष्ठावान नौकरशाहों के द्वारा एक आदर्श बसे हुए राज्य की स्थापना की। फ़्रांस जल्द ही इंग्लैंड के साथ एक अंनत/अपार संघर्ष (सौ वर्षों का युद्ध) में उलझ गया जिसने राजशाही को एक शताब्दी के लिए अशक्त कर दिया।

1328 के बाद ताज फिलिप-IV के भतीजे वैलिस (Valois) के फिलिप, फिलिप-VI (1328-1350) को मिल गया। तब वैलीयन (Valois) राजवंश ने कैपेटियन राजवंश को सफल किया परंतु उत्तराधिकार को वैध करना था क्योंकि इंग्लैंड का राजा एडवर्ड-III इसाबेल्ला का पुत्र था जो फिलिप-IV की पुत्री थी।

फ़्रांस के तख़्त पर एडवर्ड का दावा केवल 1378 के युद्ध के प्रकोप के कारण नहीं था। इंग्लैंड ने एक्वाइटिन और बौर्डिओक्स के बंदरगाह, जो एकीकृत फ़्रांस में एक असंगति थे, पर निरंतर अधिकार बनाए रखा। फ़्रांस के राजा ने इंग्लैंड के राजा के सामंती अधिकार भी छीन लिए।

फ़्रांसीसी राजा लुइस-XI (1461-1498) ने प्रादेशिक एकीकरण के समेकन और सक्षम केंद्रीय प्रशासन के द्वारा मज़बूत राजशाही के लिए नींव रखी। उसने अपनी प्रजा को उच्चतर करों के भुगतान के लिए बाध्य किया और मध्यवर्ग का व्यक्तियों का पक्ष लेते हुए उन्हें प्रशासनिक पद प्रदान किए। लुइस-XI ने गैलिक (Gallican) गिरजाघर पर पोप के नियंत्रण को सीमित किया। परंतु लुइस-XI को जिस सबसे बड़े खतरे का सामना करना था वो था– बरगंडी के डची (Dutchy) का खतरा। बरगंडी के ड्यूकों की शक्ति पूर्वी फ़्रांस के भागों तक फैल गई और कमतर देशों के बड़े भाग को घेर लिया। फ़्रांस और बरगंडी के बीच शक्ति की निर्णायक परीक्षा बरगंडी के ड्यूक चार्ल्स दी बोल्ड के अधीन हुई। लुइस-XI द्वारा आर्थिक सहायता प्राप्त स्विस थलसेना ने चार्ल्स को 1476 और 1477 में तीन बार हराया और बाद में वह मारा गया। बरगंडी के डची और पूर्वी फ़्रांस के अन्य भागों को फ़्रांसीसी साम्राज्य में आत्मसात कर लिया गया। केवल एक मुख्य क्षेत्र जो ताज के नियंत्रण के बाहर बचा था वह ब्रिटनी था और यह क्षेत्र लुइस-XI के पुत्र चार्ल्स-VIII (1483-1498) के द्वारा शाही नियंत्रण के अधीन लाया गया।

फ़्रांसीसी निरंकुशवाद केंद्रीकृत राजशाही राज्य की ओर क्रमिक प्रगति पर थी जो प्रांतीय विघटन में खामियों और पूर्ण रूप से एक स्थाई राजनैतिक संरचना के स्थापित होने तक अराजकता के कारण बाधित हुई। जिन तीन बड़ी राजनैतिक घटनाओं ने स्थिर राजनैतिक संरचना को बाधित किया वे थीं सौ वर्षों का युद्ध, 16वीं शताब्दी के धार्मिक युद्ध और 17वीं शताब्दी के गोफन (Fronde) विद्रोह। लुइस-XIV, सूर्य राजा (Sun king) (1643-1715) के शासन काल से शाही प्राधिकरण के पंथ का निर्माण किया गया। उसके शब्द ''मैं ही राज्य हूं'' पूर्ण राजशाही की भावना को बताते हैं जिससे राजा ने सभी राजनैतिक प्राधिकारों को अपने हाथ में ले लिया था। वह स्वयं को ईश्वर के प्रत्यक्ष प्रतिनिधि के रूप में देखता था। उसने अपने शासन काल की शुरुआत प्रशासनिक और राजकोषीय सुधारों से की। उसने जीन बैप्टिस्ट कोलबर्ट को वित्त का महानियंत्रक चुना, जिसने जल्दी ही सुधारों को लागू कर दिया व तेजी से घाटे को कम किया और उद्योग की वृद्धि को बढ़ावा दिया। कोलबर्ट व्यापारवादी सिद्धांत में विश्वास रखते थे, जिसमें वाणिज्य का विस्तार और व्यापार के अनुकूल संतुलन ही राज्य की समृद्धि की कुंजी थी। लुइस-XIV के युद्ध मंत्री लौविस (Louvois) ने फ़्रांसीसी थलसेना का विस्तार और पुनर्संगठन किया। सौ वर्षों का युद्ध राजशाही को मध्यकालीन राजनीति की राजकोषीय और सैन्य सीमाओं से मुक्त करने में सफल रहा। युद्ध पर विजय केवल शूरवीर सेवा पर सामंती प्रतिबंध प्रणाली को त्यागने और नियमित रूप से वेतन प्राप्त थलसेना के निर्माण, जिसकी तोपें निर्णायक हथियार सिद्ध हों, के द्वारा की जाती थी। फ़्रांसीसी अभिजात वर्ग की सहमति से 1439 में टेल-रोयल (taille-royale) को एकत्रित किया गया। अभिजात वर्ग, पादरी वर्ग और कुछ विशेष कस्बे इस भुगतान से बाहर थे। चार्ल्स-VII (1422-1461) के शासन काल और लुइस-XII (1498-1515) की मृत्यु के बीच टाउलुस में नए पारलेमेंट्स (संसद) की स्थापना की गई। बौर्डिओक्स, डीजाँ (Dijon) और रूऑन (Rouen) में भी इसकी स्थापना हुई। पारलेमेंट्स में अभिजात तंत्र का स्थान सहायक समितियों के खर्च पर सुदृढ़ किया गया।

सौ वर्षों के युद्ध के पश्चात राजशाही के पुनर्जीवन के साथ सम्पदा-सार्विक (Estates General) को एक नया जीवन मिला। परंतु राजशाही शक्ति के राजनैतिक भ्रष्ट होने के साथ सम्पदा-सार्विक का समेकन स्थाई राष्ट्रीय संस्थान के तौर पर असफल रहा। जिसके परिणामस्वरूप फ़्रांसीसी राजा राष्ट्रीय विरासतों से इच्छानुसार वित्तीय योगदान प्राप्त करने में असफल रहे। स्थानीय सामंती शक्ति की गहरी जड़ता ने फ़्रांस के पुनर्जागरण काल (Renaissance) में एक राष्ट्रीय संसद के विकास को क्षति पहुंचाई।

16वीं शताब्दी के पहले आधे भाग में फ्रांसिस-I (1515-1547) और हेनरी-II (1547-1559) ने एक समृद्ध देश की अध्यक्षता की और विदेशी नीतियों के शाही विशेषाधिकार बनने को प्रवृत्ति दी। विधिक अधिकारियों ने राजशाही के न्यायिक अधिकारों को विस्तार दिया और पेरिस के पारलेमेंट लिट्स दी जस्टिस के विशेष सत्र राजा की उपस्थिति में संचालित किए गए। परंतु राष्ट्रीय नौकरशाही अब भी प्रांरभिक स्तर पर थी।

1589 में नवार (Navarre) के हेनरी या हेनरी-IV (1589-1610) बर्बन (Bourbon) राजवंश के प्रथम राजा के तौर पर सिंहासन पर बैठा। 16वीं शताब्दी के अंत तक प्रोटेस्टैंट दक्षिण-मध्य और दक्षिण-पश्चिम फ़्रांस में सबसे मज़बूत थे। फ़्रांसीसी अभिजात वर्ग ने प्रोटेस्टैंट मत के कारण को अपना लिया और अभिजातों के बीच स्थानीय सामंती स्वतंत्रता ने केंद्रीकृत कैथोलिक राजशाही का प्रतिरोध करने के लिए प्रोत्साहित किया। 1562 में धर्म के फ़्रांसीसी युद्ध शुरू हए और कैथोलिक अभिजातों ने गीस/ग्वीस (Guise) परिवार के नेतृत्व में एक शक्तिशाली संघ का आयोजन किया और दोनों ही ओर से विदेशियों से सहायता के लिए बातचीत शुरू हो गई। कैथोलिकों ने स्पेन व प्रोटेस्टैंटों ने इंग्लैंड का साथ दिया। हेनरी-IV ने पेरिस को बंदी बना लिया और 1598 में नांत/नांते (Nantes) का अध्यादेश द्वारा फ़्रांसीसी

धर्म युद्धों का अंत हुआ। नांत/नांते का अध्यादेश धार्मिक सहिष्णुता का एक मुख्य प्रतीक था जिसने कैथोलिकवाद को फ़्रांस के आधिकारिक धर्म के रूप में स्थापित किया परंतु इसने प्रोटैस्टैंटों को भी अधिकार और प्रतिरोध की स्वतंत्रता प्रदान की। 1598 में स्पेन के साथ वर्विंस (Vervins) की संधि ने स्पेन के हस्तक्षेप का अंत किया और फ़्रांस में स्पेन द्वारा विजित सभी प्रदेशों पर फ़्रांसीसी ताज को फिर से स्थापित किया। यह आरंभिक आधुनिक यूरोप में मुख्य शक्ति के तौर पर फ़्रांस के उद्भव को चिह्नित करता है।

हेनरी-IV की हत्या के पश्चात राजमाता मेरी डे मेडिसी ने अपने पुत्र लुइस-XIII (1610-1617) की ओर से शासन किया। सिंहासन के लिए गुटों में विवाद से देश की सुरक्षा पर खतरा था। बर्बन राजवंश को सबसे महान मंत्री कार्डिनल रिकेलियु द्वारा बचा गया था। उसका पहला उद्देश्य विद्रोहों को कुलचना था जिनका मंचन अभिजातों ने किया था। शाही निरंकुशवाद को मज़बूत करने में रिकेलियु का ह्यूगनॉटों (Huguenots) के साथ संघर्ष हुआ जो कुछ समय में हार गये। आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के लिए रिकेलियु ने टेपेस्ट्री, शीशा, रेशम, क्षोमवस्त्र और ऊनी कपड़ों के उत्पादन को बढ़ावा दिया। फ़्रांस के औपनिवेशिक हितों और व्यापार के विरोध के लिए उसने एक नौसेना का निर्माण किया जिसके पास 1642 तक 63 जहाज़ थे।

रिकेलियु की विदेश नीति न केवल महत्वाकांक्षी थी बल्कि महंगी भी थी। वार्षिक सरकारी व्यय 1620 से 1640 तक तीन गुना था, थलसेना को जाने वाले धन का दो-तिहाई। युद्धों में दिए जाने के लिए करों में अत्यधिक वृद्धि से 1630 में प्रांतीय विद्रोहों की झड़ी लग गई। राजशाही की बढ़ती हुई माँगों से जनता में रोष इस तथ्य के साथ बढ़ गया था कि इन वर्षों में समृद्धि के लंबे चक्रों के अंत को चिह्नित किया गया जिसमें 16वीं शताब्दी के अधिकांश भाग थे और लुइस-XIV के शासन काल के माध्यम से आर्थिक संकटों की अवधि की शुरुआत हुई थी। फसल की बर्बादी ने कीमतों में उतार-चढ़ाव और अकाल ने कष्टों को और बढ़ा दिया था।

हालांकि ये विद्रोह मंत्री के विदेशों में फ़्रांसीसी शक्ति को स्थापित करने के प्रयासों से अनिच्छित बाधाएँ थी, परंतु इन्होंने कोई क्रांतिकारी खतरा पैदा नहीं किया। फैले हुए और असंयोजित, इन्हें अस्थाई रियायतों के संयोजन द्वारा रखा गया था जैसे कि अलोकप्रिय करों को एकत्र करने के प्रयासों का निलंबन और कुछ नायकों का अनुकरणीय निष्पादन।

रिकेलियु कोई अन्वेषक नहीं था, उसने राजा के प्राधिकार को सुरक्षित रखने के लिए ना तो नई प्रशासनिक प्रक्रियाएं तैयार कीं और ना ही कराधान की कोई नई विधि। निश्चित ही, सरकारी आवश्यकताओं के साथ अतिरिक्त युद्ध राजस्व के लिए कोषाध्यक्ष की शक्तियों में वृद्धि हुई जिसने शाही निरंकुशवाद के लिए एक अलग खतरा पैदा कर दिया।

11.5.1.3 इंग्लैंड

1066 में नॉर्मन विजय के पश्चात इंग्लैंड मुख्य शक्ति के रूप में सर्वप्रथम उभरा था। विजेता विलियम (William the Conqueror) के नेतृत्व में नॉर्मन की सेना द्वारा ऐंग्लो-सैक्सन सेनाएँ पराजित हुई थीं। यह नॉर्मन विस्तार में एक महत्वपूर्ण चरण को चिह्नित करता है जो 10वीं और 11वीं शताब्दी तक फैला और ब्रिटिश द्वीपसमूह से दक्षिणी इटली तक पहुँच गया था। 1087 में विलियम की मृत्यु तक अंग्रज़ी राजशाही फ़्रांस से अधिक मज़बूत थी जिसे दो सौ वर्ष से भी अधिक के लिए होना था।

1307 में बलवान और सफल एडवर्ड-I की मृत्यु और गुलाबों के युद्ध (1455-1485) के अंत के मध्य सौ वर्षों के युद्ध और साधारण शासकों द्वारा अभिजात वर्ग या संसद को अपने शाही प्राधिकारों के आत्मसर्मण से उपजे राजनैतिक कलह के कारण शाही प्राधिकार कमज़ोर हुए,

इन शासकों ने धन और घरेलू मामलों पर नियंत्रण प्राप्त कर लिया था। शाही परिवार (लैंकेस्टर के सदन का प्रतीक लाल गुलाब और यॉर्क के सदन का प्रतीक सफेद गुलाब था) के शत्रु गुटों के बीच गुलाबों के युद्ध ने इंग्लैंड को तीस वर्षों के पीड़ादायक गृह युद्ध में डुबो दिया। परंतु 15वीं शताब्दी के अंत होते-होते गुलाबों के युद्ध की समाप्ति के साथ जब ट्यूडर (Tudor) राजवंश के हेनरी-VII ने शाही शाक्ति का दावा किया तब इंग्लैंड राष्ट्रीय राजशाही के तौर पर उभरा।

हेनरी-VII (1485-1509) ने अंग्रेज़ी सिंहासन पर बैठते ही अनेक समस्याओं का सामना किया। हेनरी ने औपचारिक रूप से लैंकेस्टर और यॉर्क के सदन के बीच की दरार को यॉर्की उत्तराधिकारिणी, एडवर्ड-IV की पुत्री, एलिज़ाबेथ से विवाह करके भर दिया था। हेनरी ने पर्किन वारबेक नाम के ढोंगी द्वारा की गई गुटबाजी का दृढ़ता से सामना किया। उसने खुद को एलिज़ाबेथ का भाई होने का दावा किया था। उसने अभिजातों को उनकी निजी सेना से वर्दी (स्वामी की वर्दी) और रखरखाव के लिए मना करके वंचित कर दिया था। उसने अभिजातों द्वारा शाही दरबारों में हस्तक्षेप करने की आदतों पर प्रतिबंध लगाने के लिए कदम उठाए। स्थानीय स्तर पर उसने शांति के न्याय (Justice of Peace) का उपयोग किया और केंद्र में उसने ''स्टार चेंबर'' के तौर पर प्रशासनिक दरबार के द्वारा कार्य किया। यह राजा के परिषद् की विशेष समिति थी, इसे यह देखने का कार्यभार दिया गया था कि कहीं कानूनी तंत्र का स्थानीय दुर्व्यवहारों और विशेषाधिकारों के लिए दुरुपयोग तो नहीं हो रहा। न्याय में तीव्रता लाने के लिए न्यायपीठ द्वारा जाँच सहित आम कानून की प्रथागत प्रक्रियाओं को नज़रअंदाज़ कर दिया गया था। हेनरी-VII ने अच्छी तरह भरा हुआ खज़ाना और एक समृद्ध देश छोड़ा। उसने गृह विद्रोह की लम्बी अवधि के बाद इंग्लैंड में कानून और व्यवस्था की पुनर्स्थापना की। उसकी नीतियों ने उसके प्रसिद्ध उत्तराधिकारियों – हेनरी-VIII और एलिज़ाबेथ-I – के सबसे नाटकीय शासन कालों के लिए एक मंच तैयार कर दिया था।

ट्यूडर इंग्लैंड ने हेनरी-VIII (1509-1547) के अधीन करदानक्षम सरकारी वित्तों और समृद्ध समाज दोनों का ही आनंद लिया। इस राष्ट्रीय संपत्ति का विस्तार विदेशी युद्धों से अनुचित रूप से नहीं हुआ था। हेनरी की छः पत्नियों और उसके उदार दरबार ने इंग्लैंड को भिखारी नहीं किया जैसा कि चार्ल्स-V और फिलिप-II के युद्धों ने स्पेन को भिखारी कर दिया था। हेनरी-VIII ने कभी भी महाद्वीप पर सेना का जोखिम नहीं उठाया और शक्ति के संतुलन का सतर्क खेल खेला। उसने मठों की संपत्ति को जब्त करके शाही राजस्व में शामिल करने और इन जब्त भूमियों को अपने निष्ठावान अनुयायियों को पुरस्कार में देने के लिए अंग्रेज़ी पुनः संरचना द्वारा वहन किए गए अवसरों का उपयोग किया। इस प्रकार ताज के निष्ठावान एक नए अभिजात वर्ग का निर्माण किया गया। हेनरी-VIII ने अपने पिता की प्रशासनिक नीतियों को जारी रखा, केंद्रीय प्रशासन को मज़बूत किया और शांति के न्याय पर पर्याप्त निरीक्षण बनाया जो अंग्रेज़ी स्थानीय प्रशासन का मुख्य सिद्धांत था।

हेनरी-VIII की मृत्यु के बाद उसके पुत्र एडवर्ड और फिर उसकी बड़ी पुत्री मैरी ने सिंहासन संभाला। 1558 में अंग्रेज़ी सिंहासन हेनरी-VIII की सबसे छोटी पुत्री एलिज़ाबेथ-I (1558-1603) को मिल गया। एलिज़ाबेथ की परवरिश एक प्रोटेस्टैंट (प्रतिवादी) की तरह हुई थी और ऐंग्लिकन गिरजाघर पूर्ण रूप से स्थापित हो गया था। 1563 की प्रार्थना-पुस्तक और 39 अनुच्छेद एलिज़ाबेथ के अधीन जारी किए गए जो आज तक ऐंग्लिकन मत के आवश्यक दस्तावेज़ बने हुए हैं। शाही प्राधिकार का विकास रानी की व्यक्तिगत लोकप्रियता के रूप में हुआ जिसने उसे नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया। संस्थागत रूप से गुप्त परिषद् रानी के शासन काल के प्रथम भाग में स्थाई हुआ। जासूसी और आरक्षी (Police) तंत्रों का मुख्य कार्य कैथोलिक गतिविधियों को दबाना था। संसद ने सरकार की नीतियों की स्वतंत्र आलोचना शुरू कर दी थी। शताब्दी की समाप्ति तक लोक सदन का आकार 300 से बढ़कर 460

सदस्य हो गया, जिसमें देश के भद्रपुरुष सदस्य तेज़ी से बढ़े। ट्यूडर शासन के अंतिम वर्ष अनियंत्रित और अशांत संसद के रूप में चिह्नित हुए, जिनकी राजकोषीय बाधा के कारण एलिज़ाबेथ को आगे चलकर शाही भूमियों को बेचना पड़ा ताकि वह संसद पर कम से कम आश्रित हो सके। एलिज़ाबेथ के अंतर्गत इंग्लैंड ने स्थाई या पेशेवर सेना का निर्माण नहीं किया। सैन्य टुकड़ियाँ भाड़े के सैनिक, स्कॉटों और जर्मनों से संयुक्त थीं। अंग्रेज़ी निरंकुशवाद की सैन्य हीनता ने मुख्यभूमि को विस्तारवादी लक्ष्यों से बचाया।

एलिज़ाबेथ ने कभी विवाह नहीं किया और उसने अपने आरंभिक शासन काल में विदेश नीति के उत्कृष्ट परिणामों के लिए विदेशी और घरेलू विवाह प्रस्तावकों को एक दूसरे के विरुद्ध खेला। उसके शासन काल में नाटकीय संकट स्पेन के साथ युद्ध था जो 1588 में स्पेन के महान लड़ाई के जहज़ों के बेड़े (Armada) की हार के बाद सुलझा।

एलिज़ाबेथ का काल युद्धों, विद्रोहों, व्यक्तिगत गुटबाज़ी और कड़ी प्रतियोगिता का एक काल था। तब वहाँ राज्य और समाज के अधीन एक ठोस आधार था जिसने साहित्य, संगीत, वस्तुकला, विज्ञान, संपत्ति और एलिज़ाबेथ काल की विजयों का निर्माण किया। एलिज़ाबेथ-I के काल में अंग्रेज़ी संस्कृति के लेखन के प्रतीक शेक्सपियर, फ़्रांसिस, बेकत, स्पेंसर और अन्य कई फले-फूले थे।

1603 में ट्यूडर राजवंश पर स्टुअर्टों द्वारा पदारोहण करने ने राजशाही के लिए एक नई राजनैतिक परिस्थिति पैदा कर दी। जेम्स-I (1603-1625) के राज्यभिषेक के साथ स्कॉटलैंड इंग्लैंड के साथ संघटित हो गया। अंग्रेज़ी विकास की प्रवृति पर स्कॉटिश प्रभाव अंग्रेज़ी निरंकुशवाद के भाग्य के लिए जटिल सिद्ध होना था। संसद ने अब अभिजात शक्ति के केंद्रीय बिन्दुपथ का प्रतिनिधित्व किया। राजशाही के देवीय अधिकार सिद्धांत धर्म में उच्च गिरजाघर (High Church) के कर्मकांडों के अनुरूप थे। परमाधिकार न्याय का प्रयोग आम कानून, एकाधिकार की बिक्री और कराधान के संसदीय इनकार के विरुद्ध कार्यालयों के विरुद्ध होता था। नीदरलैंड को छोड़कर अन्य देशों में कृषि और व्यापारी पूँजीवाद ने अधिक तीव्र गति से उन्नति दर्ज की।

चार्ल्स-I (1625-1649) ने और अधिक उन्नत निरंकुशवाद के निर्माण का कार्य हाथ में लिया। तीस वर्षों के युद्ध में हस्तक्षेप करने में अंग्रेज़ी असफलता फ़्रांस के साथ एक असफल युद्ध के द्वारा संयुक्त हो गई। संसद को अनिश्चितकाल के लिए भंग कर दिया गया था क्योंकि इसने लॉर्ड बकिंघम और युद्ध के संचालन में विफलता की निंदा की थी। साथियों को विशेषाधिकार प्रदान करके अभिजात वर्ग में जन्म और पद के वंशवाद को पुनः जीवित करने के द्वारा राजशाही उच्च अभिजात वर्ग के निकट आ गई। चार्ल्स-I ने युद्ध के बढ़ते हुए खर्चों को पूरा करने और एक बढ़े राज्यतंत्र को व्यवस्थित करने के लिए बिना संसद की सहायता के सामंत और अन्य हर स्रोत से राजस्व का सहारा लिया। आयरिश विद्रोह को दबाने के क्रम में अंग्रेज़ी थलसेना को नियंत्रित करने के संघर्ष में संसद और राजा गृह युद्ध (1642-1651) में खिंच आए और एक सफल पूँजीपतियों की क्रांति का नेतृत्व किया। स्टुअर्ट राजाओं और संसद के बीच संघर्ष ताज के विशेषाधिकारों और संसदीय सुविधाओं के लिए थे। ये असहमतियाँ धार्मिक शत्रुता और वित्तीय विवादों के कारण बढ़ गई थीं। राजशाही ने अपने प्राधिकार को बढ़ाने के लिए बिना संसद की सहमति के अतिरिक्त वैध-कर लगाने का प्रयास किया। अंग्रेज़ी अभिजात वर्ग, जिसका सामाजिक प्रभाव उसके भूस्वामित्व के कारण था और शक्तिशाली पूंजीपति वर्ग जिसको संसद में बहुमत प्राप्त था, का उद्भव सुरक्षित संसदीय विशेषाधिकारों के साथ गृह युद्ध से हुआ।

जेम्स-II (1685-1688) की फ़्रांस-समर्थक और कैथोलिक-समर्थक नीतियाँ और उसकी निरंकुश राजशाह बनने की स्वयं की महत्वाकांक्षी योजना और एक कैथोलिक उत्तराधिकारी के रूप

में जन्म ने राजा और संसद के बीच के तनाव को बढ़ाया जिसके परिणाम में 1688 की गौरवशाली क्रांति हुई। उसका तीन वर्ष का शासन काल ताज और संसद के बीच सर्वोच्चता के लिए एक संघर्ष था जिसका परिणाम उसका अपदस्थ होना था। इसने अधिकारों के विधेयक का मार्ग प्रशस्त किया जिसने राजा की अनके विशेषाधिकार शक्तियों को घटा दिया। 1689 के पश्चात राजशाही संसदीय राजशाही बन गई।

11.5.1.4 स्वीडन

स्वीडन में निरंकुशवाद का उद्भव पश्चिमी यूरोप के अन्य देशों की तुलना में अधिक तीव्र था। यह दासत्व संकट या सामंतवाद के आंतरिक मतभेदों या व्यापारिक पूँजी और शहरी अर्थव्यवस्था के उद्भव के कारण नहीं हुआ था। इसको गति दानिश आक्रमण से मिली जिसने सत्तारूढ़ ज़िद्दी अभिजात तंत्र को हराया और उसे समाप्त करके स्वीडन पर अपना प्राधिकार जमा दिया था।

स्वीडन का निरंकुशवाद अनोखा था। जबकि पश्चिमी निरंकुशवाद की रचना गैर-सेवारत किसानों और प्रधान कस्बों से हुई थी, पूर्वी निरंकुशवाद की रचना सेवारत किसानों और अधीन कस्बों से हुई थी। स्वीडन के निरंकुशवाद की रचना गैर-सेवारत किसानों और महत्वहीन कस्बों के इर्द-गिर्द विदेशी अधीनता के द्वारा हुई।

सामाजिक संरचना स्थिर थी क्योंकि अभिजात तंत्र किसानों पर कोई भी अत्याचार करने के लिए सक्षम नहीं थे और अभिजात तंत्र की राजनैतिक शक्ति को चुनौती देने के लिए महत्वहीन कस्बों में समृद्ध पूँजीपति भी नहीं थे।

उस समय राजशाही की शक्ति और उसके अभिजातों के साथ संबंध में कंपन था। राजशाही जब अल्पसंख्यक थी तो अभिजातों ने घोषणापत्रों के द्वारा उसकी शक्ति पर नियंत्रण कर लिया था। जब राजशाही ने अपना समर्थन पुनः प्राप्त किया तो उसने अपनी खोई हुई शक्ति भी पुनः प्राप्त कर ली। अभिजात वर्ग के भीतर विभाजन और मतभेद इन कंपनों के मुख्य कारण थे। परंतु अभिजातों ने शाही राज्य से प्रतिनिधि राज्य में बदलाव के लिए आसानी से सामंजस्य कर लिया। यहाँ पर स्पेन, फ्रांस या इंग्लैंड की तरह ऊथल-पुथल नहीं थी।

केवल विदेशी दबाव ने स्वीडन को अस्थिर किया।विदेश में तेज़ी से किए जा रहे विस्तार के दौरान स्वीडन के निरंकुशवाद ने सबसे सुचारू रूप से कार्य किया। शाही सेनापतियों, जैसे गुस्तावस एडोल्फस (1611-1632), चार्ल्स-X और चार्ल्स-XII (1697-1718) के शासन कालों के दौरान राजशाही और अभिजात वर्ग में समरसता अधिकतम थी।

स्वीडन निरंकुशवाद की अर्थव्यवस्था और सैन्य शक्ति का रहस्य उसके खनिज संसाधन थे। इनकी तुलना स्पेन के सोने और चाँदी की उनके स्थानीय निरंकुशवाद पर प्रभाव से की जा सकती है।

गुस्तावस वासा, अभिजात वर्ग का एक सदस्य, ने दानिश प्रभुत्व को उखाड़ फेंका और स्वीडन पर अभिजातों, स्वतंत्र किसानों और ल्युबेक के सहयोग से अपना शासन स्थापित किया। ल्युबेक डेनमार्क का एक शत्रु था। वह हेंसियाई क्षेत्र से था जिसमें बाल्टिक और उत्तरी समुद्र को छूने वाले यूरोपीय देश भी सम्मिलित थे।

गुस्तावस वासा ने स्वीडन में एक स्थिर राजशाही की स्थापना के लिए निम्नलिखित कदम उठाएः गिरजाघर की संपत्तियों को कब्ज़े में लिया और बिशपों द्वारा लोगों से कन (Tithe) (कर का दस प्रतिशत) का दो-तिहाई वसूल किया गया; चाँदी की खानों का शोधन किया; लोहे की छड़ों के निर्यात को बढ़ावा दिया; राज्य के राजस्व का सूक्ष्मता से निरीक्षण किया; कारिदों की संख्या को तिगुना करके प्रशासनिक तंत्र का विस्तार किया और नौकरशाही केंद्रीकृत की; अभिजातों की जागीरों को सौंपे गए विशेष प्रशासनिक कार्यों के लिए विशेष

शाही राजस्व आवंटन के द्वारा बदल दिया था (इसने अभिजात वर्ग का विरोध नहीं किया क्योंकि वासा किसान विद्रोहियों और ल्युबेक को हराने में सफल हुआ था); रईसों का पारंपरिक सदन राजनैतिक महत्व के मामलों को सलाह देने के लिए संरक्षित था परंतु यह प्रतिदिन के प्रशासन से बाहर था; जागीरों की विधानसभा (रिक्सडाग) (Riksdag) को शाही नीतियों को वैध करने के लिए लोकप्रिय स्वीकृति की मुहर के साथ नियमित रूप से बुलाया जाता था (यहाँ तक कि जागीरों की विधानसभा ने निर्वाचित राजशाही के वंशवादी राजशाही में बदलाव की मंजूरी दे दी थी)।

गुस्तावस करों में अधिक वृद्धि किए बिना विशाल अधिशेष का संचय करने में सक्षम था। उसने एक शानदार राज्य की रचना की जिसने अभिजात तंत्र के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखे।

उसके बाद सिंहासन संभालने वाले उसके पुत्र और भाई (cousin) उसकी विरासत की बराबरी नहीं कर सके। एक समय पर, अभिजाततंत्र के साथ विवाद आसन्न हो गया था क्योंकि विनम्र मूल के लोगों को तेज़ी से लाभ दिए गए जब तक अभिजात वर्ग के पास कुल लाभ का एक-तिहाई ही था।

गुस्तावस वासा का भतीजा, गुस्तावस एडोल्फस जब स्वीडन का राजशाह बना तो अभिजात तंत्र ने 1612 के घोषणापत्र के साथ अपनी श्रेष्ठता का दावा किया जिसके तहत नौकरशाही में अभिजातों की प्रधानता आश्वस्त थी। यह राजशाही और अभिजात तंत्र की सुलह और एकीकरण का समय था। वे यूरोप में आधुनिक और शक्तिशाली प्रशासन और थलसेना का हिस्सा बन गए थे। शासनात्मक प्रणाली को पांच केंद्रीय विद्यापीठों में अभिजात नौकरशाहों द्वारा पुनः संगठित किया गया। एक गुप्त परिषद् नियमित रूप से राष्ट-नीति पर विचार-विमर्श करता था। अभिजात तंत्र तीन श्रेणियों में विभाजित था। स्वीडन स्वामी-प्रतिनिधि के तौर पर अभिजातों के अध्यक्ष के अंतर्गत 24 प्रांतीय इकाइयों में विभाजित था। अडोलफस ने 1620 में अनिवार्य सैन्य सेवा के परिवर्तित स्वरूप को आरंभ करते हुए यूरोप में सबसे बेहतरीन थलसेना के आधार का निर्माण किया और यह सुनिश्चित किया कि उसकी टुकड़ियाँ आधुनिक हथियारों का प्रयोग करती थीं, विशेष रूप से छोटे नोंक और हल्के आग्नेय-शस्त्र, और इन दोनों ने लड़ाई में स्वीडन के स्तंभों की गतिशीलता को बढ़ाया। अपनी टुकड़ियों में आधुनिक स्तर का अनुशासन पैदा करने से अडोलफस तीस वर्षों के युद्ध में उल्लेखनीय विजय प्राप्त करने के लिए सक्षम हुआ था। शिक्षा प्रणाली का आधुनिकीकरण किया गया। स्वीडन के शासक वर्ग की गॉथीय (Gothic) जातीयता प्रशंसनीय थी। तांबे की खानों पर भारी पथकर लगाए गए थे। शाही निर्यात संगठन/संस्था का गठन तांबे की पूर्ति और स्थिर कीमत स्तरों को एक कोने में करने के लिए किया गया था। उनके युद्धों के लिए लोहे और तांबे के स्रोतों पर बड़े डच ऋण लिए गए थे। प्रशिया पथकर, जर्मन लूट के माल, फ्रांस की रियायतों ने उसके युद्ध के आय-व्ययक (budget) को पूरा किया था जिससे वह तीस वर्षों के युद्ध अैर बड़ी संख्या में भाड़े के सैनिकों को अपनी सेना में भर्ती करने में सक्षम हुआ था। नौसेना के व्यय में छःतह और देसी सेना के व्यय में चार गुना वृद्धि हो गई थी। तांबा और लोहा निरंकुश राज्य के लिए न केवल राजस्व का स्रोत थे बल्कि ये इसकी सेना के लिए भी अपरिहार्य थे। इसने विदेश में सेना को विस्तार के लिए मंच उपलब्ध कराया।

गुस्तावस एडोल्फस ने अपने पिता द्वारा डेनमार्क से शुरू किए असफल युद्ध को समाप्त करने के लिए एक महंगी संधि की शुरुआत की। 1617 में स्टोलबोवो की संधि के द्वारा स्वीडन को फिनलैंड की खाड़ी पर पूर्ण नियंत्रण देते हुए इन्ग्रिया और करेलिया को प्राप्त कर लिया गया। 1621 में पोलैंड के द्वारा रिगा पर कब्ज़ा कर लिया गया और लिवोनिया पर 1625-26 में विजय प्राप्त की गई। 1629 में स्वीडन ने पोलैंड पर आक्रमण किया और 1630 में पोमेरानिया पर पहुँचा जो दक्षिणी बाल्टिक समुद्र के किनारे पर पोलैंड और जर्मनी के आर.

पार तक फैला हुआ था। उसके बाद इसने तीस वर्षों के युद्ध में जर्मनी के लिए संघर्ष में हस्तक्षेप किया। वेस्टफ़ेलिया की संधि ने जर्मनी में लम्बे युद्ध के बाद फ़्रांस के साथ स्वीडन को सह-विजेता का कद दिया।

1644 में क्रिस्टीना सिंहासन पर बैठी और उसने अभिजात वर्ग के पदों में वृद्धि की और अभिजातों को अपार पैमाने पर भूमि और कर दिए। समान रूप से राज्य की आय में कमी हुई। कृषक वर्ग अभिजातों पर निर्भर हो गया और उसने सख्ती से प्रतिक्रिया दी। रानी की लापरवाही के द्वारा जिन्हें कोई लाभ प्राप्त नहीं हुआ था उस निचले दर्जे के अभिजातों की शत्रुता से यह सुनिश्चित किया गया कि संपत्ति के पुराने स्वरूप को पुनः लागू किया जाएगा।

1654 मेंक्रिस्टीना के पदत्याग के पश्चात चार्ल्स-X ने सिंहासन संभाला, वह आक्रामक विस्तारवाद के लिए स्वीडन वापस आया। उसने पोलैंड में पोज़्नन, वॉरसॉ और क्रेकोव (Cracow) को ले लिया। पूर्वी प्रशिया स्वीडन की जागीर बन गया और लिथुआनिया स्वीडन से जुड़ गया। परंतु प्रतिशोध और स्वीडन पर दानिश हमले ने इन विजयों को नष्ट कर दिया।

चार्ल्स-XI ने रईसों के विशेषाधिकारों से समझौता करने के लिए रिक्सडाग का प्रयोग किया और अलग-थलग भूमियों और राजस्वों पर वंश का दावा किया। अस्सी प्रतिशत भूमि बिना किसी मुआवज़े के पुनः प्राप्त कर ली गई थी। कर-मुक्त नई संपत्ति का निर्माण वर्जित था। प्रादेशिक काउंटियों और बरोनियों को नष्ट कर दिया गया था। ये वसूलियाँ विदेशी आधिपत्य में अधिक गहन थीं। अधिकतम कर कृषि पर लगाया गया था। रिक्सडाग (जागीरों की विधानसभा) ने विनम्रता से उसकी बढ़ी हुई शक्तियों को स्वीकृति दे दी थी। विशेष भूमि के आवंटन से टुकड़ियों को घर पर भुगतान देना कम कर दिया था। थलसेना और नौसेना ऊपर पहुँचे। राजा को उसके क्षेत्र पर पूर्ण संप्रभुता के देवीय अधिकार की स्वीकृति के साथ रिक्सडाग का अंत हो गया।

अंतिम वासा योद्धा-राजा, चार्ल्स-XII, निरंकुश शक्ति में अपने पिता से भी श्रेष्ठ था। वह अपने प्रशासन का विघटन किए बिना विदेश (नौ वर्ष तुर्की की कैद में) में अट्ठारह वर्ष बिताने में सक्षम था। परंतु स्वीडन ने संचालन से अधिक अनुपात में विस्तार कर लिया था। अपने पड़ोसियों और शत्रुओं से संयुक्त दुश्मनी के विरुद्ध अपने प्रसार को बनाए रखने के लिए उसका जनसांख्यिकीय और आर्थिक आधार बहुत छोटा था।

चार्ल्स-XII का शाही निरंकुशवाद उसके साथ ही गायब हो गया। अभिजात वर्ग ने चतुराई से एक संवैधानिक प्रणाली बनाई जिसमें जागीरों को राजनैतिक रूप से सर्वोच्च और राजशाही को अस्थाई रूप से शून्य/नगण्य रखा।

गुस्तावस-III के सिंहासन पर आने से निरंकुश राज्य और राजशाही की शक्ति को पुनः स्थापित किया गया। जब अभिजात वर्ग ने विरोध किया तो राजा ने निचली जागीरों को सामाजिक समतावादी राहत का वादा किया, जैसे कि सिविल सेवा और न्यायपालिका में पहुँच और अभिजातों की भूमियाँ खरीदने का अधिकार।

स्वीडिश निरंकुशवाद के अंतिम चरण का 'प्रतिभाओं के लिए एक खुली आजीविका' और अभिजात वर्ग के निजीकरण पर अंकुश के विषम वातावरण में निर्वाह हुआ।

11.5.2 पूर्वी निरंकुशवाद

रूस, प्रशिया और ऑस्ट्रिया ने पूर्वी यूरोप में पश्चिमी यूरोप से अलग सामाजिक संरचना प्रकट की, जिसके तहत उत्पादन का सामंती प्रारूप था। इस प्रकार, पूर्वी यूरोप में जो निरंकुशवाद विकसित हुया वह पश्चिम से भिन्न था।

प्रशिया, जिसे जर्मन सैन्यवाद और अधिनायकवाद के लिए कहावत बनना था, ने जर्मनी से बाहर अपना इतिहास आरंभ किया। जर्मनी में लोग इसे प्रूसेन कहते हैं जो बाल्टिक के दक्षिण.पूर्वी भूमि पर बसे थे, ये लोग दास थे और इनका लिथुआनिया और लाटविया से संबंध था। 13वीं शताब्दी में ट्यूटनिक योद्धाओं ने इन्हें जीता और बलपूर्वक ईसाई धर्म में परिवर्तित किया और इन्हें पवित्र भूमि से हटा दिया गया। जर्मन किसानों को भूमि पर खेती करने के लिए लाया गया और 1350 के आसपास जर्मन जनसंख्या बहुसंख्यक थी। अगली शताब्दी में पोलों (Poles) द्वारा प्रशिया के एक भाग पर कब्ज़ा किया गया, जिसने शूरवीरों को पूर्वी प्रशिया के साथ छोड़ा। इसी दौरान जर्मनी ने पश्चिम का ब्रांडेनबर्ग को जीत लिया और ब्रांडेनबर्ग के मार्गरव्स (Margraves) अर्थात कूच करने वाले स्वामी (marcher lords) पवित्र रोमन साम्राज्य के निर्वाचक बन गए। ब्रांडेनबर्ग और पूर्वी प्रशिया दोनों होहेंज़ोलर्न परिवार के नियंत्रण में आ गए जिसने ब्रांडेनबर्ग में जुनकरों (Junkers) को वंशवादी अभिजात वर्ग में निपुण किया और यूरोप में शक्ति के लिए लम्बी यात्रा का आरंभ किया जिसका अंत प्रथम विश्व युद्ध के साथ और 1918 में कैसर के पदत्याग से होना था।

ब्रांडेनबर्ग-प्रशिया की कथा राजनैतिक कौशल की विजय और प्रतिकूल परिस्थितियों में साहस का उदाहरण देती है। बिखरी हुई आबादी और कम संसाधनों वाले ब्रांडेनबर्ग को 1648 में बिखरे हुए प्रादेशिक टुकड़ों की संप्रभुता मिली। इसके शासक फ्रेडरिक विलियम (1640-88) को दूर तक फैली हुई संपत्ति के एकीकरण और सुरक्षा में समस्या का सामना करना पड़ा, जिसमें प्रशिया का डची शमिल था। यह 1619 में विरासत में मिला परंतु यह पोलिश आधिपत्य के अधीन था और भौगोलिक स्थिति में ब्रांडेनबर्ग के निर्वाचन क्षेत्र से अलग था; 1614 में जीते गए राइनलैंड और वेस्टफ़ेलिया क्षेत्र में क्लेवेस, मार्क और रैवेनबर्ग की काउंटियाँ ये ब्रांडेनबर्ग से भी दूर थीं और एक-दूसरे से जुड़ी हुई नहीं थी और 1648 की संधि में पूर्वी पोमेरानिया और अनेक छोटी भूमियों को प्राप्त किया गया। कूटनीतिक चतुराई से, जैसे कि अनेक बार स्वीडन और पोलैंड के बीच और फ्रांस और शासक के बीच पक्ष बदलने से इसने अपने क्षेत्र और उसके भीतर प्राधिकरण को बढ़ाया और मज़बूत किया; इसके अतिरिक्त इसके ड्यूक और महत्वपूर्ण बिशपों ने मैगडेबर्ग के प्रदेश को अर्जित कर उसने प्रशिया पर प्रत्यक्ष शासन किया।

फ्रेडरिक विलियम के द्वारा इन्हें प्राप्त करने में जो उपकरण और उसके अनुवर्ती पुरस्कार थे वह थी थलसेना, 30,000 अनुशासित पेशेवरों की एक स्थाई टुकड़ी, पर्याप्त वित्त सहयोग जिसने उसकी सरकार के हर पहलू को तय किया। करों से भारी मात्रा में राजस्व के लिए एक समृद्ध अर्थव्यवस्था, प्रोत्साहन और दिशा की आवश्यकता होती है जिसमें व्यापारवादी सिद्धांत एक मुख्य उपक्रम था। लगभग 20,000 कुशल फ्रांसीसी विद्रोही (ह्यूगनॉट) शरणार्थियों के प्रवाह से महान निर्वाचक (Great Elector) के बाद के शासन काल में आर्थिक वृद्धि की गति में आई। राज्य के प्रशासन की व्यापक क्षेत्र प्रणाली ने इस आर्थिक और राजकोषीय प्रणाली को शुरू किया और इसके परिणाम में पेशेवर नौकरशाही का निर्माण हुआ जिसने महान निर्वाचक को बिना जागीर की भागीदारी के अनिवार्य रूप से प्रशासन चलाने के लिए अनुमति दी।

भूस्वामी अभिजात वर्ग ने अपने राजकुमार को उनके किसानों का शोषण करने की स्वतंत्रता दी क्योंकि वे उन्हे उपयुक्त लगे थे। इन तरीकों से फ्रेडरिक विलियम ने नींव रखी जिसे निरंकुशवाद शासन राज्य बनना थाः मज़बूत अर्थव्यवस्था द्वारा सक्षम होना, दृढ़ता से प्रशासन चलाना, प्रभावशाली राजकोषीय संगठन और साम्राज्यीय और यूरोपीय मामलों में मुख्य भूमिका निभाने के लिए शक्तिशाली थलसेना।

महान निर्वाचक को उसके प्रयासों का पुरस्कार 1701 में मिला जब उसके उत्तराधिकारी, फ्रेडरिक-III (1688-1713), ने स्वयं को फ्रेडरिक-I, प्रशिया के राजा (प्रशिया के शासकों ने स्वयं को शाही उपाधि प्रदान करने के लिए पुनः अंकित किया) की शैली में ढालने का अधिकार शासक से प्राप्त किया (जिसे स्पेन के अनुक्रमण के लिए ब्रांडेनबर्ग की थलसेना की आवश्यकता थी)। 1713 के युद्ध की समीक्षा पर राजा की उपाधि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध हुई। सैक्सोनी के साथ प्रतिस्पर्धा में ब्रांडेनबर्ग के लिए इसका बहुत महत्व था, उत्तरी जर्मनी में श्रेष्ठता के लिए जिसका शासक 1697 में पोलैंड का राजा बना था।

ब्रांडबेन के दुर्जेय फ्रेडरिक विलियम को महान निर्वाचक के नाम से भी जाना गया, उत्तरी जर्मनी राज्यों में ब्रांडबेन-प्रशिया को सबसे शक्तिशाली बनाया, कुशल थलसेना और किलेबंद बर्लिन का निर्माण किया। उसका पुत्र फ्रेडरिक-III (1688-1713) अपने पिता के अनुरूप नहीं था, वह हर मामले में फ़्रांसीसी था और सम्राट लियोपोल्ड-I की सहायता के पुरस्कार के रूप में ताज की तलाश में था। ब्रांडेनबर्ग का कोई राजा नहीं हो सकता था क्योंकि वह साम्राज्य का हिस्सा था और प्रशिया का भी कोई राजा नहीं हो सकता था क्योंकि इसका कुछ हिस्सा पोलैंड में था। उसने एक बड़े उत्सव के साथ कोनिग्ज़बर्ग में फ्रेडरिक-I के तौर पर ताज पहना और बर्लिन में राजधानी के साथ प्रशियायी साम्राज्य का निर्माण किया। यद्यपि तब से प्रशियायी साम्राज्य सैद्धांतिक रूप से जर्मनी का भाग था जिसकी निष्ठा सम्राट के प्रति थी, परंतु कार्यकारी के तौर पर वह प्रशियायी साम्राज्य का भाग था।

फ्रेडरिक और उसकी दूसरी पत्नी, हेनोवर (Hanover) की सोफिया शार्लोट जो इंग्लैंड के जॉर्ज-I की बहन थी, ने बर्लिन में अपने दरबार को लघु वर्सेल्स में बदल लिया था जहाँ प्रथम भाषा फ़्रांसीसी थी और फ़्रांसीसी शिष्टाचार का अनुसरण किया जाता था।

यह फ्रेडरिक का पुत्र और उत्तराधिकारी, फ्रेडरिक विलियम-I (1713-1740) था जो इतिहास के सर्जेंट-मेजरों में से एक था, जिसने अपने क्षेत्र को सैन्य निरंकुशवादिता में परिवर्तित कर दिया था जिसने प्रशिया को स्थाई प्रतिष्ठा दी। इसने 1740 तक शासन किया और इसके पुत्र फ्रेडरिक द ग्रेट (1740-1786) ने बदले में उसकी थलसेना का प्रयोग 18वीं शताब्दी के अंत में प्रशिया को मुख्य यूरोपीय शक्ति में परिवर्तित करने के लिए किया। उसने राज्य-संरचना के संयोजन, उत्पादन ऊर्जा, सैन्य शक्ति और नैतिक अभियान को उत्तम बनाया जिनकी पहचान आधुनिक प्रशिया में हुई। ''सोल्जर किंग'' (Soldier King) के नाम से पहचाने जाने वाले फ्रेडरिक विलियम ने 80,000 से अधिक व्यक्तियों के सैन्य बल में स्थाई थलसेना का निर्माण किया। यद्यपि प्रशिया यूरोप में केवल सबसे अधिक जनसंख्या वाला 13वें देश था, महाद्वीप में इसकी चौथी सबसे बड़ी थलसेना थी (फ़्रांस, रूस और ऑस्ट्रिया के बाद), एक शानदार अभ्यासरत और शस्त्रों से युक्त सैन्यबल जो कि मुख्य रूप से सुरक्षा के उद्देश्य के लिए थी। केवल किसान और किराए के सैनिक पदों पर कार्यरत थे, जबकि मध यमवर्ग इस ढाँचे से बाहर था परंतु अपने घरों से चौथाई सैनिकों के लिए बाध्य था। एक बड़े युद्ध की तिजारी ने विदेशी अनुवृत्ति और विश्वसनीय राजस्व को कम कर दिया, इससे 70 प्रतिशत से अधिक सेना के लिए गया जिसने काफ़ी हद तक सहयोग दिया।

राज्य द्वारा भूमि और लोगों को बिना हानि पहुँचाए उच्च करों को निरंतर लागू किए रखने के लिए देश को समृद्धि के स्तर को बढ़ाना था। इसलिए फ्रेडरिक विलियम ने कृषि और विनिर्माण को प्रोत्साहित करने के लिए एक आक्रामक नीति (कैमरालिस्म के नाम से जाना जाता है) का लक्ष्य रखा जबकि अनावश्यक खर्चों को कम किया; यहाँ तक कि उसके दरबार के कई शाही श्रृंगार भी छीन लिए गए। संरक्षित कच्चे माल का निर्यात प्रतिबंधित किया गया और व्यय-विषयक कानूनों की विलासिताओं के अतिभोग को सीमित किया गया। कस्बों के प्रशासन शाही आयुक्तों के अधीन थे, इनकी शक्तियों में शहरी उत्पादन का निरीक्षण शामिल था। शीर्ष से एक लोकाचार से भरा हुआ समाज था।

1740 राजा फ्रेडरिक विलियम के लिए एक आदर्श वर्ष था। चार्ल्स-VI (ऑस्ट्रिया और पवित्र रोमन साम्राज्य का आर्कड्यूक) बिना किसी पुरुष उत्तराधिकारी के मृत्यु को प्राप्त हो गया। उसके जीवन के अंतिम वर्ष यूरोपीय शक्तियों को व्यावहारिक स्वीकृति के लिए मनाने में निकल गए जिसके तहत उसकी पुत्री मारिया थेरेसा को हब्सबर्ग उपनिवेशों के शासक के तौर पर आश्वासन देगा। ऑस्ट्रिया की राजकुमारी, बोहेमिया और हंगरी की रानी बनने पर मारिया थेरेसा ने स्वयं को बावेरिया के निर्वाचक द्वारा चुनौती दिया हुआ पाया जिसने हब्सबर्ग उपनिवेशों के लिए उसकी उम्मीदवारी को बढ़ाया। फ्रेडरिक ने अवसर का लाभ उठाया और कहा कि वह प्रशिया की ओर से आश्वासन देता है कि ऑस्ट्रिया के प्रदेश पर अतिक्रमण नहीं किया जाएगा; जिसके बदले में उसे सिलेसिआ का भाग चाहिए था। उसने प्रशिया की टुकड़ियों को सीमा के आर-पार भेजा और सिलेसिया पर कब्ज़ा कर लिया। फ्रेडरिक ने तुरंत अपने इस कार्यवाही के औचित्य प्रदान किया, 'हमारी भौगोलिक स्थिति के अनुसार हम यूरोप की महानतम राजकुमारी के पड़ोसी हैं; ये सभी पड़ोसी हमसे इर्ष्या करते हैं और ये हमारी शक्ति के गुप्त शत्रु हैं। 'इनमें से ऑस्ट्रिया सबसे ज़्यादा खतरनाक था और सिलेसिया फोज के अड्डे की तरह था, जो प्रशिया के हृदय पर आक्रमण कर सकता था। प्रशिया के हाथों में सिलेसिया की सेना निश्चित ही लाभकारी रही होगी क्योंकि इसने दूरी को काफ़ी बढ़ाया होगा जिससे ऑस्ट्रिया की थलसेना को बर्लिन से पहले शत्रु के क्षेत्र तक पहुँचने के लिए पैदल चलना पड़ता होगा। रणनीति के तहत, इसने सैक्सोनी को पोलैंड से अलग कर दिया होगा, दोनों ही एक शासक के अधीन थे और ऑस्ट्रिया की ओर मैत्री भाव रखते थे। वाणिज्यिक कारणों से भी सिलेसिया वांछनीय था, क्योंकि ऑडर नदी घाटी से बाल्टिक तक के मुख्य व्यापार मार्ग इसी में थे और उत्तरीमध्य यूरोप में पूर्वी-पश्चिमी व्यापार की धुरी था। ऐक्स-ला-चेपेल्ले (1748) संधि के द्वारा प्रशिया को सिलेसिया पर उसके दावे को मान्यता मिली। परंतु फ्रेडरिक को अपनी सफलता के लिए मंहगा भुगतान करना था। मारिया थेरेसा इस मामले को ऐसे ही जाने नहीं दिया होगा और फ्रेडरिक के लिए व्यक्तिगत तौर पर गहरी शत्रुता रखी होगी।

प्रशिया संभवतः निर्धन रहा होगा, परंतु राजशाही का किसानों और अभिजात वर्ग पर बहुत हद तक नियंत्रण था। 16वीं और 18वीं शताब्दी के अंत के अनेक अन्य जर्मन राज्यों की तरह प्रशिया को घरेलू और विदेशी शत्रुओं से हानि पहुँची थी।

जनसंख्या ह्रास एक बड़ी समस्या थी। समाज की कुल संपत्ति और इसकी उत्पादन क्षमता बहुत बुरी तरह गिर गई थी। प्रत्येक राजकुमार को संपत्ति जुटाने में बहुत सावधान रहना था और अद्यतन, ठीक से अनुशासित और ठीक से पूर्ति की आवश्यकत थी। फ्रेडरिक विलियम साम्राज्य में 30 प्रतिशत भूमि पर दावा करने के योग्य था, यह मज़बूत थलसेना औरअभिजात वर्ग की स्वतंत्रता को कम करने और आय और शक्ति के आधार पर स्वयं की स्वतंत्रता को हासिल करने के कारण संभव था।

इस संपत्ति का प्रयोग प्रभावशाली नौकरशाही प्रशासन को लागू करने के लिए जाना था। फ्रांस की तुलना में, जहाँ पर कार्यालय पीढ़ी के लिए बेच दिए गए थे, वहीं प्रशिया में कार्यालय बहुत कम ही बेचे गए और 1740 के पश्चात बिल्कुल भी नहीं बेचे गए। फ्रेडरिक विलियम-I और फ्रेडरिक-II यह करने में सक्षम इसलिए हो पाए क्योंकि वे करदानक्षम और बहुत शक्तिशाली थे जिससे उन्होंने अभिजातों और अधिकारियों पर समान रूप से अनुशासन बनाए रखा।

इन समृद्ध और कठोर राजाओं की सबसे बड़ी उपलब्धि संभवतः नया शासक वर्ग था जिसका इन्होंने निर्माण किया था। फ्रेडरिक विलियम और उसका संस्कारी पुत्र दोनों ने ही स्वयं कों पुराने भूस्वामी अभिजात वर्ग और जुनकर्स के प्रति संरक्षक और आश्रयदाता माना था, सेना को आदेश देने के लिए उन पर ये आश्रित थे और जिस पर उनकी शक्ति पूर्ण रूप से

आधारित थी। परंतु इसके साथ-साथ वे ये भी जानते थे कि उन्हें योजना और प्रशासन के तकनीकी पहलुओं जिसमें उद्योग और व्यापार नीति भी शामिल थे उनकी देखरेख के लिए शिक्षित लोगों की आवश्यकता थी। प्रशिया, हमेशा की तरह अभिजात वर्ग और मध्यमवर्ग में से ऐसे वर्ग के निर्माण में सबसे ज़्यादा सफल था।

प्रशिया के ये नौकरशाह 18वीं शताब्दी के व्यापारियों की तरह व्यवासायिक और मौलिक सामाजिक तकनीकीतंत्री दोनों ही थे। प्रशिया न केवल एक थलसेना के निर्माण में बल्कि कुशल उद्योग के केंद्र के निर्माण में भी सफल था, और 18वीं शताब्दी में चौथा विनिर्माण देश बन गया था।

परंतु प्रशिया निरंकुशवाद प्रणाली की कुछ सीमाएँ थीं। यद्यपि, प्रशिया आर्थिक रूप से विकासशील था, और अपने स्वभाव में पूर्णरूप से सत्तावादी था। विशेषरूप से कल्याण जिसमें प्रशिया कल्याण राज्य ने राज्य का कल्याण करने का प्रयास किया। व्यक्तिगत रूप से इसके कोई मायने नहीं थे सिवाए इसके कि उसके अस्तित्व ने निगमित निकाय और शासक के हितों को लाभ पहुँचाया। वर्ग के तौर पर किसान सुरक्षित थे, परंतु कोई भी किसान परिवार दूसरे के द्वारा बदले जाने पर ज़ब्त किया जा सकता था। भद्र लोगों को पर भी उनके निजी जीवन में कड़ा नियंत्रण था। उदाहरण के लिए, बिना अनुमति के उन्हें देश छोड़ने की आ़ज्ञा नहीं थी जो कि कभी प्रदान ही नहीं की जाती थी।

महत्वपूर्ण कारकों की अनदेखी से व्यवस्था की सफलता निरंतर बढ़ती गईः

उदाहरण के लिए, लूट की भूमिकाः फ्रेडरिक विलियम-I की सफलता अधिकतर ज़ब्ती के धन के द्वारा प्राप्त की गई थी, फ्रेडरिक विलियम-II के द्वारा इस सेना के प्रयोग से सिलेसिया पर विजय प्राप्त की गई थी (राज्य 25 प्रतिशत तक बढ़ गया था)। यद्यपि इस लूट ने सफलता का आश्वासन नहीं दिया। फ्रेडरिक विलियम-II की बचतें (राज्य का चार वर्ष का राजस्व) सात वर्ष के युद्ध के समाप्त होने से पहले तककाफ़ी लम्बी चलीं। युद्ध के लिए वित्त की व्यवस्था जीते गए सैक्सानी पर बर्बरतापूर्ण करों को लागू करने से किया जाना था, और बाद में पोलैंड के विभाजन से। प्रशिया की अधिकतर अर्थव्यवस्था बड़े पैमाने पर चोरी पर ही थी।

कुछ अन्य तथ्य जिन्हें प्रशिया के कल्याणकारी राज्य की प्रकृति पर चर्चा के समय नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है, यह कि प्रशिया जनसंख्या का लगभग 1/9 हिस्सा सात वर्ष के युद्ध में मारा गया था। फ्रेडरिक के लिए ऐसे युद्ध लड़ना एक दुर्भाग्यपूर्ण आवश्यकता नहीं थी। प्रशिया की प्रणाली राजशाही, केंद्रीकृत शासन व्यवस्था की सामान्य समस्याओं से बची हुई नहीं थी। मुख्य खतरा यह था कि शासक सुखद हो गए थे और अपने लूट की अधिकतक राशि उत्पादन या यहाँ तक कि सेना पर खर्च करने की बजाए अनावश्यक तरीकों, संरक्षण और महलों पर खर्च करने लग गए थे।

फ्रेडरिक दी ग्रेट का पुत्र, फ्रेडरिक विलियम-II ने अपने पिता की 52 मिलियन थेलर्स की बचत खर्च कर दी थी और 40 मिलियन थेलर्स का कर्जा चढ़ा दिया था।सौभाग्यवश, वह राज्य को मलबे का ढेर बनाने से पहले मृत्यु को प्राप्त हो गया था। नए सुधारों (नेपोलियन से शर्मनाक पराजयों के बाद) ने प्रशिया को नया जीवन उधार दिया। इस संकट में निरंकुशवाद सरकार ने व्यापार पर से व्यापारवादी प्रतिबंधों को हटाने का जोखिम लिया, विशेषाधिकारों और समाज की अधिकतर व्यवस्थाओं को बेकार कर देने के तथ्य के कारण प्रशिया की 19वीं शताब्दी की सफलता आंशिक थी।

11.5.2.2 ऑस्ट्रिया

14वीं शताब्दी के आरंभ से 16वीं शताब्दी के दौरान मध्य-पूर्वी और उत्तरी पूर्वी यूरोप में मध्यकालीन राज्यों में सिंहासन पर शासन के आधिपत्य की होड़ में शाही घरानों की श्रृंखला

में उभरने वाले हब्सबर्ग्स सबसे अंतिम थे। पवित्र रोमन साम्राज्य में परिवारों का आरंभ स्वीटज़रलैंड के पूर्वी प्रदेशों में भूमि पर कब्ज़ा करने वाले अस्पष्ट मामूली जर्मन अभिजात वर्गों के रूप में हुई। 1273 में अस्पष्टता से हब्सबर्ग का उदय आरंभ हुआ था जब विधिपूर्वक साम्राज्य के जर्मन निर्वाचक के द्वारा हब्सबर्ग के काऊंट रूडोल्फको पवित्र रोमन शासक के रूप में चुना गया (1273-1291) क्योंकि उसकी अस्पष्टता को राजकुमार के तौर पर कमज़ोरी माना गया। रूडोल्फ के शासन काल के दौरान ऑस्ट्रिया की भव्य रियासत को हब्सबर्ग के आधिपत्यों की नई हृदय भूमि के तौर पर स्थापित किया गया था। इसके पश्चात परिवारों ने इसकी भूमि का विस्तार जारी रखा और जर्मनी में प्राथमिक तौर पर शाही सिंहासन पर दावा बनाए रखने के लिए विवाह गठबंधनों की एक निपुण राजनैतिक नीति के द्वारा हब्सबर्ग 16वीं शताब्दी के दौरान पूरे यूरोप में सबसे समृद्ध और सबसे शक्तिशाली शासक घराने में परिवर्तित हो गया।

1386 में अराग्यु के स्विस केंटन के हब्सबर्ग में स्विस किसानों को उनके मूल स्थान से बेदख़ल करने के पश्चात हब्सबर्ग ने ऑस्ट्रिया घराने के नाम से पहचान पाई। तत्पश्चात ऑस्ट्रिया घराने के द्वारा अधिकृत सभी भूमियों के संदर्भ के लिए ऑस्ट्रिया एक अनौपचारिक तरीका बना गया।

पवित्र रोमन साम्राज्य के निर्वाचक-राजकुमार होने के कारण आमतौर पर एक कमज़ोर, निर्भर शासक को प्राथमिकता दी जाती थी, शक्तिशाली हब्सबर्ग राजवंश ने 1291 में रूडोल्फ की मृत्यु के पश्चात 150 वर्षों में कदाचित ही शाही उपाधि रखी। 1452 (शासन 1452.93) में फ्रेडरिक-III के चुनाव के पश्चात, हालांकि, राजवंश ने जर्मन अभिजात वर्ग के बीच प्रमुख स्थान का आनंद लेना शुरू किया जो कि पवित्र रोमन साम्राज्य के बाकी के 354 वर्षों के इतिहास में केवल एक गैर-हब्सबर्ग चयनित शासक था।

हब्सबर्ग साम्राज्य एकीकृत प्रदेशों के सर्वोच्च राष्ट्रीय समूह था जो घटनावश हब्सबर्ग द्वारा एक ही शासन के अधीन थे, और अनेक प्रदेश पवित्र रोमन साम्राज्य का भाग नहीं थे। इसके विपरीत, पवित्र रोमन साम्राज्य ने एक राजनैतिक और प्रादेशिक अस्तित्व को परिभाषित किया जिसकी पहचान जर्मन राष्ट्र के रूप में पहचाने जाने वाले राष्ट्रीय.राज्य ने यूरोपीय राजनीति में अधिक महत्व ग्रहण किया।

यद्यपि हब्सबर्ग रेखा से पवित्र रोमन शासकों के पदारोहण ने ऑस्ट्रिया घराने को जर्मनी और यूरोप में बहुत सम्मान दिया, परिवार की वास्तविक शक्ति का आधार भूमि पर आधिपत्य था, वही हब्सबर्ग का साम्राज्य है। यह इसलिए था क्योंकि पवित्र रोमन साम्राज्य एक शिथिल संगठित सामंती राज्य था, जिसमें शासक की शक्तिसाम्राज्य के अन्य राजकुमारों, स्वामियों और धर्मनिरपेक्ष और गिरजाघर संबंधी दोनों, संस्थानों के अधिकारों और विशेषाधिकारों के द्वारा प्रतिभारित थी।

1453 में हब्सबर्ग की शक्ति महत्वपूर्ण तरीके से बढ़ी, जब फ्रेडरिक-III ने अधिकारों और विशेषाधिकारों को सुनिश्चित किया, हब्सबर्ग द्वारा संशयात्मक रूप से दावा किया गया, जो उन निर्वाचक-राजकुमारों के समानांतर था जिनकी उपाधियों पर परिवार बैठे भी नहीं थे। इसके अतिरिक्त, 1453 में हब्सबर्ग के अधिकृत भूमि विरासत योग्य बन गई जिसने हब्सबर्ग को मज़बूत किया। 1453 में जिस भूमि को अपने पास रखा था वह वंशानुगत भूमि के रूप में सामूहिक तौर पर पहचानी गई, और सल्ज़बर्ग और ब्रिक्सन के मुख्य धर्माध्यक्षों के द्वारा अधिकृत प्रदेशों को छोड़कर आधुनिक ऑस्ट्रिया और जर्मनी, फ्रांस, इटली, क्रोशिया और स्लोवेनिआ के भाग शामिल थे।

जबकि यह निश्चित है कि राजशाही के प्राधिकार को मज़बूत करना हब्सबर्ग का आदर्श बना रहा, एक पूर्ण राजशाही को केवल दूर का लक्ष्य था, जिसने ऑस्ट्रिया की राजशाही को

विशेष संरचना दी, यह कुछ साम्राज्यों के मुक्त गठबंधन से बना था जिसमें अनेक जागीरें (स्टेंडे) शक्तिशाली बनी रहीं। अपने हिस्से को राज्य के प्रमुखों के तौर पर निभाने के लिए उत्सुक हब्सबर्ग ने हमेशा राजशाही की शक्ति को मज़बूत करने की ओर ध्यान दिया, परंतु वे बोहेमिया प्रारूप के साथ स्वयं को संतुष्ट करने के लिए बाध्य थे। बदले में जागीरों की शक्ति ने अभिजात वर्ग (हेर्रेन्स्टेंड) को प्रतिबिंबित किया, व्यक्ति जो नियंत्रित भूमि की संपत्ति के स्वामी थे, न केवल प्राथमिक खाद्य उत्पादों के उत्पादन पर बल्कि आर्थिक गतिविधियों के मुख्य भाग पर भी और अपनी प्रजा पर प्राधिकार जिसमें राज्य का उन पर अधिक या कम न्यागत था, सभी पर पूर्ण वर्चस्व रखता था। हंगरी या ऑस्ट्रिया में, यदि किसान कानूनी रूप से भूस्वामी से बंधा हुआ नहीं होने पर भी उसे कभी भी गाँव छोड़ने की अनुमति नहीं थी जिस पर पादरी या भूस्वामी का नियंत्रण था। संरक्षण के माध्यम के अधिकार से भूस्वामी गिरजाघर के अधीनस्थ मंत्री बनाने में सफल हुआ था।

हैप्सबर्ग का शासक लियोपोल्ड-I (1658-1705) जीवन भर लुइस-XIV का शत्रु रहा, जिसमें यूरोपीय मामलों में प्रभुत्व के लिए सफलतापूर्वक फ्रांस की बोली निहित रही, इस प्रकार शक्ति का संतुलन बनाता रहा। उसका शासन काल भी युद्धों के लिए जाना जाता है। पश्चिम में फ्रांसीसियों और पूर्व में तुर्कों के बीच में स्थित होने के कारण लियोपोल्ड को अक्सर दोनों से एक साथ लड़ना पड़ता था। 1683 में, तुर्की सेनाओं ने ओटोमेन ग्रेंड वीज़िइर, कारा मुस्तफा के नेतृत्व में विएना को घेर लिया था। लियोपोल्ड ने ईसाई राजकुमारों से सहायता संघटित की और अंततः पोप के आशीर्वाद वाली एकजुट सेना ने तुर्कीयों को हरा दिया। 1687 तक, लियोपोल्ड एक बार फिर से अपने साम्राज्य और ट्रांसेलवानिआ रियासत का स्वामी बन गया था। 1690 में तुर्कीयों ने हंगरी को सिर्फ हराए जाने का पुनः प्रयास किया।

तुर्की कब्ज़े और पुनर्विजय के युद्ध ने हंगरी के ग्रामीण प्रदेशों का विनाश कर दिया और कृषि भूमि के हिस्से खाली पड़े रहे। कृषि को पुनर्जीवित और हंगरी के विद्रोहियों संभव असर को बेअसर करने के लिए लियोपोल्ड ने सर्ब, बोहेमिया और जर्मन किसानों को शाही करों और दासत्व के कर्त्तव्य से सीमित स्वतंत्रता का वादा करते हुए भूमियों को पुनः व्यवस्थित करने के लिए प्रेरित किया। इस पुनः स्थापन ने हंगरी में धार्मिक स्थिति को जटिल बना दिया, जहाँ एक शताब्दी से हंगरीवासी कैथोलिकों के साथ कालविनिस्ट्स, लुथेरंस, पूर्वी रूढ़ीवादी और मुस्लिम धर्म के ऊपर विभाजित रहे थे।

हब्सबर्ग ने उन भूमियों पर शासन किया जो फ्रांस के लुइस-XIV से अधिक सामाजिक रूप से ध्रुवीकृत थे। शीर्ष पर रईस थे जो शानदार तरीके से अमीर थे। रईस परिवार संख्या में कम थे, परंत उनका हब्सबर्ग के साथ सहयोग सरकार की कार्य पद्धति को सुचारू रूप से चलाने के लिए आवश्यक था और उन्होंने केंद्रीय और स्थानीय स्तरों पर हब्सबर्ग के प्रशासन पर अपना प्रभुत्व बनाए रखा। बहुसंख्यक लोग भूमि से बंधे हुए ग्रामीण प्रदेशों में कृषक दास के रूप में रह रहे थे। सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दियों में दासत्व का विस्तार हुआ क्योंकि पूर्वी यूरोपीय भूस्वामियों ने सफलतापूर्वक किसानों को पश्चिमी यूरोपीय बाज़ार के लिए अनाज और लकड़ी उत्पादन वाले मज़दूर बल के तौर पर मिट्टी से बांध दिया था। तीस वर्ष के युद्ध की अव्यवस्था के दौरान इन्होंने किसानों को अन्य अधिक शांतिपूर्ण स्थानों पर भागने से रोकने के लिए मिट्टी का बंधक बना दिया था।

भूस्वामियों ने अपने कृषक दासों से अपनी जागीरों में बिना किसी हर्जाने के काम करवाया। लियोपोल्ड ने गैर-हर्जाने वाले काम को सप्ताह में तीन दिन करके कम करने का प्रयास किया, परंतु उसकी सफलता सीमित थी क्योंकि कृषक दासों पर प्रत्यक्ष नियंत्रण भूस्वामी वर्ग का था न कि हब्सबर्ग का। इस प्रकार लियोपोल्ड की नीतियाँ प्रभावी होने से पूर्व कुलीनों के स्वयं-हितों को समायोजित करती थी।

चूंकि लियोपोल्ड का प्रत्यक्ष शासन उसकी प्रजा समूह पर बहुत सीमित था, उसने कभी भी केंद्रीकृत और हस्तक्षेप काने वाले राज्य की स्थापना नहीं की जैसा कि लुइस-XIV और लुइस-XV ने फ्रांस में की थी। हब्सबर्ग राज्य का वर्णन उच्च स्तर के संजातीय और धार्मिक विविधता द्वारा भी किया जाता था, विशेषरूप से हंगरी में। हब्सबर्ग ने इन समूहों समुदायों में मतभेदों की भावना को बढ़ाने के परिणाम के साथ अपने उद्देश्यों के लिए बहकाया।

11.5.2.3 रूस

13वीं शताब्दी के मध्य से 15वीं शताब्दी के अंत तक रूस के टैर्टार के आक्रमण का प्रभाव इतिहासकारों के बीच बहस का केंद्र रहा है। एक विद्यालय का मत है कि आक्रमणों का अनुभव कहीं न कहीं लाभदायक ही था क्योंकि इसने मॉस्को के राजकुमारों के केंद्रीय प्रभाव को प्रबल होने में सक्षम बनाया। दूसरी तरफ, वहाँ विद्वान हैं जिनका मत है कि टैर्टार की थलसेना की कुशलता के बावजूद, रूस की तुलना में वे निम्न संस्कृति के वाहक थे। यह राजनैतिक अव्यवस्था की अवधि के दौर में था जिसमें मॉस्को के राजकुमारों ने स्वयं दावा करते हुए नेतृत्व को ग्रहण किया।

मॉस्को की भौगोलिक स्थिति बहुत ही अनुकूल थी, यह महान जल-विभाजक के निकट था जिसमें रूस की नदियों का बहाव उत्तर में बाल्टिक या काले सागार के की ओर था। एक बार टैर्टारने अपने आक्रमण बंद किए तो इन मार्गों के द्वारा व्यापार फिर से खुल गया। मॉस्को अद्भुत और चतुर राजकुमारों और प्रशासकों की पंक्ति के द्वारा भी सौभाग्यशाली था जो अपने प्रदेशों के भीतर अपने प्राधिकार को बढ़ाने और समेकित करने के लिए उत्सुक थे। इन्होंने शक्तिशाली परिवारों में विवाह किया, और खरीद द्वारा, बंधकों को प्रतिबंधित और विरासत के द्वारा भूमि अर्जित की।बाद में इन राजकुमारों ने टैर्टार पर अपनी विजय का दावा किया और रूस में मुक्ति के विजेता बन गए। राजकुमारों ने रूसी गिरजाघर के समर्थन को भी सुरक्षित किया।

ईवान-III (1462-1505) ने कीव के प्रधानों के उत्तराधिकारी के रूप में अपनी उम्मीदवारी को आगे किया और प्राचीन रूसी प्रदेशों को पुनः प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त की जो टैर्टार और पोल्स से हार गए थे।1492 में, लिथुआनिआ के राजकुमार को ईवान-III को सभी रूसी लोगों के लिए संप्रभु मानने के लिए बाध्य किया गया था।यह राष्ट्रीय याचिका एक धार्मिक याचिका द्वारा भी दृढ़ थी, संप्रभु ईवान होने के अतिरिक्त वह कैथोलिक पोल्स और मोसलिम टैर्टारों के विरुद्ध एक रूढ़िवादियों का विजेता भी था। ईवान ने ऑटोक्रेट (अपने ससुर कोंस्टेनटाइन-XI की मृत्यु के पश्चात) की बीजांटिन उपाधि ग्रहण की और बीजांटिन डबल ईगल को अपनी मुहर की तरह प्रयोग किया। ईवान III ने इस पूरे पुनरूत्थान के दैरान अपने पोमेस्टे प्रणाली के साथ रूसी तानाशाही की नींव रखी थी, जिसमें रूस के भूस्वामी वर्ग (टैर्टार और प्राच्य मूल के अनके प्रधान और अभिजात वर्ग) से भूमि के बड़े इलाकों को ज़ब्त कर लिया गया और उन पर नए अभिजात वर्ग (सैन्य सेवा वर्ग) को बसाया। पोमेस्टे को त्सर की सेनाओं में मौसमी अभियान की आवश्यकता थी। अधिकतम पोमेस्टे भूमियाँ टैर्टारों (मध्य एशिया की सेनाएं, जिसमें मंगोल और तुर्की भी शामिल हैं) के साथ इसके स्थाई लड़ाई के मैदान मध्य और दक्षिणी रूस के निकट थीं। अभिजात वर्ग और प्रधानों की भूमियों में औसतन 520 किसान परिवारों की तुलना में पोमेस्टे की भूमियाँ छोटी थीं जिसमें प्रत्येक पर 5 से 6 किसान परिवार थे। छोटे आकार और इन भूमियों के दोहन पर प्रशासन के नियंत्रण के कारण उत्पादन क्षमता कम थी। रूसी कृषि को कानूनी तौर पर दास बनाने का पहला कदम ईवान-III की सुदेबनिक आदेश था जिसने प्रतिवर्ष दो सप्ताह के लिए कृषिदासों की गतिशीलता पर प्रतिबंध लगा दिया था।

इसके उत्तराधिकारी ज़ार ईवान-IV, भयानक (1534.1548) ने अपने अभिजातों से सलाह लेना

बंद कर दिया था, वह स्वतंत्र रूप से अपने कृषिदासों के पक्ष में था और प्रवृत रूप से स्वयं चुनकर उन्हें दण्ड देता था। उसने शत्रु भूस्वामियों की भूमियों पर कब्ज़ा कर उस पर एक आंतकवादी रक्षक दल (ओपरिचनिकी) का निर्माण किया जिन्हें उनकी सेवाओं के लिए भूमि की जब्ती प्रदान की गई थी, यह करके उसने प्रशासन का विस्तार किया और उसे कट्टर बनाया। इसने थलसेना में भारी तोपखाने का व्यापक प्रयोग और पैदल सैनिकों की सेना का आरंभ किया, दोनों ही विदेशी विस्तार के लिए जटिल थीं। पूर्व में टैर्टार की शक्ति को तोड़ते हुए उसने अस्त्राखान के खनाते को संलग्न किया। पोमेस्टे प्रणाली (भूमि कार्यकाल प्रणाली) बोयर्स (अभिजात वर्ग) और त्सर के पक्ष में त्सर वोतचिना जागीरों के बीच शक्ति के संतुलन को बदलने के लिए आगे बढ़ा था, इन जागीरों का स्वामित्व विरासत भी हो सकता था और जिनके स्वामियों के प्रशासनिक और कानूनी अधिकार थे, उन्हें सेवा के लिए उत्तरदायी बनाया गया। मठवासी जागीरों की वृद्धि की जाँच की गई थी। बोयार डुमा या विधानसभा की भूमिका को कम किया गया था। त्सर को युद्ध और शांति के मामलों में सहायता देने के लिए परामर्श निकाय ज़मेस्की सोबोर (भूमि विधानसभा) को बनाया गया जिसमें अभिजात, पादरी और कस्बों के प्रतिनिधि शामिल थे। जिसमें छोटे अभिजातों को प्रतिनिधित्व के लिए प्रमुखता से बुलाया गया। सैन्य सेवा वर्ग को पोमेस्टे भूमियों में बसाया गया था और उन्हें किसानों से उनकी भूमि से निकाले जाने वाले किराए को निर्धारित करने का अधिकार था। प्रशासनिक और कर प्रणाली को आधुनिक किया गया था। प्रांतीय अधिकारियों की तरह वेतन को समाप्त कर दिया गया था। केंद्रीय खज़ाना का निर्माण राजकोषीय प्राप्तियों के लिए किया गया था। सेवा अभिजात वर्ग ने स्थानीय स्वयं-प्रशासन को संचालित किया और आगे राजशाही के प्रशासनीय उपकरण में एकीकृत हो गया। इन सभी ने त्सारवादी राज्य की शक्ति की माप को बढ़ाया।

रूस निरंतर युद्ध या युद्ध की तैयारी की स्थिति में रहा। शताब्दियों तक लम्बे राष्ट्रीय आपातकाल ने निरंकुशवाद-राज्य के निर्माण की ओर बढ़ाया। अधिक महत्वपूर्ण रूप से, मॉस्को में सामंतवाद ने आत्म-सचेत अभिजातों के एकीकृत वर्ग का विकास नहीं किया था जो अपने विशेषाधिकारों के लिए बढ़ती हुई राजशाही के विरुद्ध लड़ता। इसके बजाए मॉस्कोवासी अभिजात वर्ग ने अनेक गुटबाजी की जिनके साथ राजशाह प्रत्येक से को निपट सकता था। पश्चिम में, गिरजाघर सामंती समाज का एक भाग था और इसके विशेषाधिकारों से अति उत्साही था। परंतु रूस में, गिरजाघर राजशाही का मित्र बन गया। कुस्तुंतुनिया के गिरने के बाद गिरजाघर के लोगों ने प्रसिद्ध सिद्धांत को फैलाया जिसने मॉस्को को पूर्व की दो राजधानियों– रोम और कुस्तुंतुनिया का उत्तराधिकारी बना दिया। गिरजाघर ने यह भी दावा किया कि रूसी त्सर को बायजेंटाइ वासी और यहाँ तक कि बेबीलोनिया वासियों से विरासत में विशेष राजचिन्ह और पारितोष भी मिले थे।

1462 में ईवान-III के राज्यभिषेक और 1689 में पीटर दी ग्रेट के राज्यभिषेक के बीच में निरंकुशवाद-राज्यशासन ने पुरानी अभिजात वर्ग के विपक्ष पर काबू पाने में सफलता प्राप्त कर ली थी। एक नए सैन्य-सेवा अभिजात वर्ग का निर्माण किया गया जिसका सबकुछ त्सर को ऋणी था। आरंभ में ये जागीरें (पोमेस्टी) सेवा के बदले जीवन के लिए दिया गया था, अंत में यह वंशवादी हो गईं। पुरानी अभिजात वर्ग की जागीरें (वोचिना) हमेशा से वंशानुगत रहीं थीं परंतु उन पर वे सेवा के लिए ऋणी नहीं थे वे भी सेवा-जागीरें बनीं।

1613 में जेमेस्की सोबर ने माइकल रोमनोव को अगला त्सर निर्वाचित किया। इस प्रकार रोमनोव राजवंश 1613 से लगातार 1917 की रूसी क्रांति तक सत्ता में रहा। हालांकि 1623 के पश्चात, ज़ेमेस्की सोबर को केवल युद्ध की घोषणा या शांति बनाने की सहायता करने, नए कराधान को मंजूर करने और महत्वपूर्ण नए कानून निर्माण के लिए तलब किया गया। सभी भूमियाँ वोत्विना और पोमेस्टे को वंशानुगत बनाया और सैन्य सेवा के लिए उत्तदायी कर

दिया। गरीब व्यापारी और कारीगर राज्य के कृषिदास बन गए थे। उलज़ेहनिइ कानून के तहत सभी दास और स्वतंत्र किसान एक नए अपरिवर्तनीय वंशानुगत कृषिदासों के वर्ग के तौर पर समेकित किया गया था, जिसने रूसी निरंकुशवाद के आधारों में से एक की तरह कार्य किया। निरंकुशवाद के अन्य आधार में राजशाही और अभिजात वर्ग के बीच एकता और समंजस्य था जिससे अभिजात वर्ग राजा के प्रति निष्ठा का ऋणी था और राजा ने दासों को अभिजात वर्ग को जागीरों के भाग के रूप में प्रदान किया जो विरासत में पिता या पूर्वजों से मिला हो सकता है। रोमनोव राजवंश ने गुबाया प्रांतीय जंमींदारों के स्वयं-प्रशासन तंत्र को समाप्त कर दिया और मॉस्कों से नियुक्त गवर्नर के पद से बदल दिया गया।

पीटर द ग्रेट (1682-1725) की सेवा के तहत राज्य विश्वव्यापी बन गया। मॉस्को में एक केंद्रीय कार्यालय युद्ध के समय कर्मचारियों और उनके दायित्वों की जनगणना रखी। पूर्ण निंकुशता के साथ दासत्व के संस्थान रूसी समाज की विशेषता का लक्षण था। 16वीं और 17वीं शताब्दी में पीड़ादायक कृषि और राजनैतिक संकट की अवधि में सरकार को यह सलाह दी गई कि वह अपने किसानों को मिट्टी से जोड़े रखने के लिए सेवा अभिजात वर्ग की सहायता करे। 1861 तक रूसी कृषिदासों को स्वतंत्र नहीं किया गया।

पीटर द ग्रेट ने नई श्रेणीक्रम प्रणाली की रचना की जिसमें अभिजातों और जागीरदारों को समान रूप से राजनैतिक ढाँचे में रखा गया। डेनमार्क और स्वीडन से ली गई काऊंट और बैरूऑन जैसी नई उपाधियों के साथ अभिजात वर्ग में परिष्कृत अनुक्रम को प्रस्तुत किया था। स्वतंत्र रईस शक्ति को बुरी तरह दबाया गया। नियुक्त सीनेट के द्वारा बोयर डुमा को बदला गया। आधुनिक थलसेना और प्रशासन के केंद्र के रूप में अभिजात वर्ग को पुनः सम्मिलित किया गया। कृषिदास भूमि जिसे वो जोतते थे, की बजाए भूस्वामियों के बंधी थे इसलिए उन्हे बेचा जा सकता था।

गिरजाघर राज्य के अधीनस्थ था। पितृसत्तात्मक, यानी वे कार्यालय जो विस्तृत ईसाई परिवार पर निरंकुशवाद अधिकार का प्रयोग कर रहे थे उन्हें समाप्त कर दिया गया।

त्सर ने औद्योगीकरण का प्रयास किया जो धीमा तो था परंतु व्यापक रूप से सफल रहा। रूस के मख्य निर्यात खानों और लकड़ी उद्योग पर आधारित था।

सेंट पीटर्सबर्ग में पश्चिमीकृत एक नई राजधानी बनाई गई। प्रशासनिक व्यवस्था गुबरनिआस, प्रांतों और जिलों में विभाजित थी। नौकरशाही को दुगनी हो गई थी। वहाँ नौ केंद्रीकृत विद्यालय या विभाग थे जिन्हें एक सामूहिक समिति चला रही थी। 1700 और 1708 के बीच किसानों पर पाँच गुना कर वृद्धि के द्वारा आय-व्ययक विस्तृत रूप से चार गुना हो गया था। आय-व्ययक का लगभग तीन-चौथाई हिस्से का प्रयोग आधुनिक थलसेना और नौसेना का निर्माण करने के लिए किया गया। परंतु भ्रष्टाचार और गबन की परंपरा निहित होने के कारण शायद कर एक-तिहाई ही राज्य तक पहुँचता था।

केथरीन-II (1762-1796) 1762 में त्सरीना बनी। वह राजनैतिक ज्ञान के प्रतिष्ठित होना चाहती थी। इसलिए, उसने नई शिक्षा प्रणाली को शुरू किया, गिरजाघर भूमियों को धर्मनिरपेक्ष किया और रूस की अर्थव्यवस्था को विकसित करने के लिए व्यापारवाद के प्रोत्साहन दिया। मुद्रा स्थिर हुई, लौह उद्योग का विस्तार हुआ और विदेशी व्यापार में वृद्धि हुई।

तुर्कीयों और क्रिमिया के टैर्टार खनाते को पीछे धकेलने के बाद संगठित कृषिदास कृषि यूक्रेन तक पहुँच बढ़ गई थी। स्वतंत्र और अर्ध-स्वतंत्र निवासियों को केंद्रीय किसानी के स्तर तक कम कर दिया गया और कृषिदासों द्वारा भुगतान किए गए धन ऋण में कई गुना वृद्धि हुई। राज्य के कृषिदासों को निजी शोषण के लिए अभिजातों को सौंप दिया गया था। इसने निम्न वर्गों के सभी समूहों को शासक वर्ग के विरुद्ध एक बड़े विद्रोह की ओर बढ़ाया। परंतु विद्रोह को कुचल दिया गया।

1785 के अभिजात वर्ग के घोषणा ने अभिजातों को सभी विशेषाधिकारों का आश्वासन दिया, उनके अनिवार्य कर्त्तव्यों को समाप्त किया, उन्हें ग्रामीण मज़दूर पर नियंत्रण दिया और प्रांतीय प्रशासन को अभिजात वर्ग को सौंप दिया। राजशाही और अभिजात वर्ग के बीच सौहार्द था।

कैथरीन ने अपने शासन काल में एक दर्ज़न से अधिक विद्रोह देखे। कैथरीन के शासन को खतरा पैदा करने वाले अनेक विद्रोहों में से सबसे खतरनाक 1773 का था, जब एमिलियन पुगचेव के नेतृत्व में एक शस्त्रयुक्त कोस्सेक्स और किसानों के समूह ने रूस के निम्न वर्ग और कृषिदासों की कठोर सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों के विरुद्ध विद्रोह छेड़ दिया था।

अंतर्राष्ट्रीय सफलताओं ने रूसी निरंकुशवाद की ताकत को पोषित किया। रूस पोलैंड के विभाजन का मुख्य प्रारंभकर्ता और लाभार्थी बन गया। प्राचीन क्षेत्र में यह केवल एक देश था जिसने निपोलिओनिक युद्धों के दौरान फ्रांसीसी आक्रमणों का सामना किया। वाणिज्य दूतावास द्वारा नियोजित पूँजीपति विद्रोह को दबाने के लिए पहली बार रूसी थलसेनाओं को पश्चिमी देशों (इटली, स्वीटज़रलैंड और होलैंड) में भेजा गया।

वियना समझौते (1815) से उभरी त्सरवादी राज्य संरचना का यूरोप में कहीं भी समानांतर नहीं था। राज्य आधिकारिक तौर पर एक निरंकुशवाद-राज्यशासन घोषित कर दिया गया। राज्य प्रणाली में एक सामंती वंशानुक्रम पुख्ता हो गया था। 1917 तक विभिन्न प्रशासनिक कार्यों के लिए राजनैतिक प्रणाली द्वारा अभिजात उपाधियां और विशेषाधिकार जारी रहे।

बोध प्रश्न-2

1) फ्रांसीसी और स्वीडिश राजशाही के प्रकरण की तुलना और उनका भेद निरूपण कीजिए।

.....

.....

.....

2) रूसी और ऑस्ट्रियन राजशाही के प्रकरण की तुलना और उनका भेद निरूपण कीजिए।

.....

.....

.....

11.6 सारांश

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात आप समझने योग्य होंगे:

- पश्चिमी और पूर्वी यूरोप में निरंकुशवाद के अलग-अलग लक्षण,
- कैसे पूँजीपति वर्ग की अनुपस्थिति ने पूर्वी यूरोप में पश्चिमी यूरोप से अलग निरंकुशवाद को आकार दिया, और
- अलग-अलग अध्ययन बताते हैं कि किस तरह पश्चिमी और पूर्वी यूरोप में निरंकुशवाद ने विशेष रूप से आकार लिया।

11.7 शब्दावली

कोर्रीगडर (Corregidore) : स्पेन में एक कस्बे के जज का मुख्य अधिकारी

बेल्लिस (Baillis) : न्यायिक, वित्तीय और सैन्य शक्तियों वाले उच्च अधिकारी

टेल्ले (Taille) : फ़्रांस में प्रत्यक्ष भूमिकर

गबेल्ले (Gabelle) : फ़्रांस में नमक कर

सर्विटोर (Servitor) : समाजिक वरिष्टों की सेवा करना

कोटर्स (Cortes) : स्पेन में विधानमंडल

सिनोरियल (Seigneurial) : सामंती स्वामी

कुरिया रेजिस (Curia Regis) : राजा के दरबार की शाही परिषद्

संसद (Parlement) : फ़्रांसीसी प्रांतीय याचिका कोर्ट

लिस्ट दी जस्टिस (Lits de Justice) : राजा के अध्यक्षता में पेरिस के संसद के सत्र

गैलिक (Gallican) : फ़्रांस के प्राचीन गिरजाघर

कारिदा (Bailiffs) : कानून अधिकारी जिसके पास किसी भी व्यक्ति की संपत्ति या अधिकृत प्रदेश को ज़ब्त करने की शक्ति थी यदि वह अपने ऋण चुकाने में असमर्थ हो

गुप्त परिषद् (Privy Council) : राजा द्वारा नियुक्त पार्षदों या सलाहकारों का निकाय

हेर्रेन्स्टेंड (Herrenstand) : ऑस्ट्रिया की उच्च अभिजात वर्ग या अभिजात वर्ग

स्अेंडे (Stande) : अलग-अलग सामाजिक स्तर वाले समूह

पोमेस्टे (Pomest'e) : सैन्य सेवा के बदले अभिजात वर्ग को प्रदान की गई सामंती जमीन जायदाद

ओपरिचनिकी (Oprichniki) : रूस में आतंकवादी रक्षक दल

ज़ेमेस्की सोबर (Zemsky Sobor) : विभिन्न सामाजिक वर्गों के प्रतिनिधियों की विधानसभा

वोत्चिना (Votchina) : रूस में आनुवंशिक भूमि सम्पदा

रिक्सडाग (Riksdag) : स्वीडन में राज्य विधानसभा

11.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1) भाग 11.3 देखें, विशेष रूप से उप-भाग 11.3.1 से 11.3.5

2) भाग 11.3 देखें, विशेष रूप से उप-भाग 11.4.1 से 11.4.5

बोध प्रश्न-2

1) उप-भाग 11.5.1 देखें, विशेष रूप से फ़्रांस और स्वीडन

2) उप-भाग 11.5.2 देखें, विशेष रूप से रशियाऔर ऑस्ट्रिया

11.9 संदर्भ

कामेन, हेनरी. (1996). *यूरोपीयन सोसायटी, 1500-1700*. लंदनः रूटलेज ।

ली, स्टीफन. (1984). *ऐस्पेक्टस ऑफ यूरोपियन हिस्ट्री 1494-1789*. लंदन मिथुइन एंड कंपनी लिमिटेड।

फिनले, एम. आई. (1983). *पॉलिटिक्स इन द एन्सिएंट वर्ल्ड*. कैंब्रिजः कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

हिल्टन, ऑर. (1973). *बॉन्ड मैन मेड फ्रीः मदीवेल पेज़ेंट मूवमेंट्स एंड द इंग्लिश राइजिंग ऑफ 1381*. लंदनः रूटलेज ।

ली गौफ, जे. (1992). *मदिवल सिविलाइजेशन, 400-1500*, (जूलिया बारो द्वारा अनुवादित), ऑक्सफोर्ड यूके एंड यूएसएः ब्लैकवेल ।

कैमरन, यूआन. (संपा.) (2001). *अर्ली मॉडर्न यूरोप, एन ऑक्सफोर्ड हिस्ट्री*. ऑक्सफोर्डः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस ।

कटीका, सीज़ेर एंड ग्लेन बर्गेस. (संपा.) (2011). *मोनारर्किस्म एंड एब्सलूटिज्म इन अर्ली मॉडर्न* यूरोप. लंदनः रूटलेज ।

अर्टमैन, थॉमस. (1997). *बर्थ ऑफ द लेविथानः बिल्डिंग स्टेट्स एंड रिजिम्स इन द मदीवेल एंड अर्ली मॉडल यूरोप*. कैंब्रिजः कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस ।

क्यूमिन, बीट. (संपा.) (2013). *द यूरोपियन वर्ल्ड 1500 -1800ः एन इंट्रोडक्शन टू अर्ली मॉडर्न हिस्ट्री*. न्यूयॉर्कः रूटलेज ।